Thirteenth Loksabha

Session : 9
Date : 30-04-2002

Participants : Chatterjee Shri Somnath ,Pandian Shri P.H. ,Palanimanickam Shri S.S. ,H.D. Deve Gowda Shri ,Chakraborty Shri Ajay ,Atkinson Shri Denzil B. ,Uma Shree Bharati Kum. ,Geete Shri Anant Gangaram ,Fernandes Shri George ,Chaturvedi Shri Satyavrat ,Alvi Shri Rashid ,Yadav Shri Devendra Prasad ,Abdullah Shri Omar ,Inder Singh Capt. ,Varma Shri Ratilal Kalidas ,Advani Shri Lal Krishna ,Yadav Shri Mulayam Singh ,Gandhi Smt. Sonia ,Yerrannaidu Shri Kinjarapu ,Vaiko Shri ,Rashtrapal Shri Praveen ,Mahtab Shri Bhartruhari ,Aiyar Shri Mani Shankar ,Yadav Shri Mulayam Singh ,Chandra Shekhar Shri ,Pawar Shri Sharad Chandra Govindrao ,Banerjee Kum. Mamata ,Pathak Shri Harin ,Singh Dr. Raghuvansh Prasad ,Paswan Shri Ram Vilas ,Banatwalla Shri Gulam Mehmood ,Baxla Shri Joachim ,Owaisi Shri Sultan Salahuddin ,Vajpayee Shri Atal Bihari

g>

12.04 hrs.
Discussion Under Rule-184

Discussion on motion regarding EXPRESSING GRAVE CONCERN OVER FAILURE OF

ADMINISTRATION IN ENSURING SECURITY OF MINORITY COMMUNITY IN VARIOUS PARTS OF THE COUNTRY,

SPECIALLY IN GUJARAT. **(Concluded and motion negatived)**

MR. DEPUTY-SPEAKER: Hon. Members, I have to inform the House that Shri Ramji Lal Suman in whose name the item is listed has requested me to allow Shri Mulayam Singh Yadav to initiate the discussion on his behalf. I have allowed Shri Mulayam Singh to raise the discussion.

Shri Mulayam Singh Yadav.

श्री मुलायम सिंह यादव : उपाध्यक्ष महोदय,, मैं निम्नलिखित प्रस्ताव करता हूं :-

> " कि यह सभा देश के विभिन्न भागों, विशेरूप से गुजरात मे, अल्पसंख्यक समुदाय की सुरक्षा सुनिश्चित करने में प्रशासन की असफलता पर अपनी गंभीर चिन्ता व्यक्त करती है और सरकार से अनुरोध करती है कि वह अल्पसंख्यक समुदायों में विश्वास बहाल करने और उनकी रक्षा करने के लिये प्रभावी कदम उठाए ।"

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपका आभार व्यक्त करता हूं कि आपने गुजरात ही नहीं, देश की गम्भीर और महत्वपूर्ण स्थिति पर बोलने का मौका दिया।

हम आपको बधाई देते हैं कि आपने नियम 184 के तहत हमारी नोटिस को स्वीकार करते हुए, बहस करने की अनुमति देकर देश के सामने सही स्थिति रखने का अवसर दिया। इसके लिए भी आप बधाई के पात्र हैं कि सरकार तथा मल्होत्रा जी की जिद के कारण संसद के दोनो सदनों का कामकाज ठप था, वह फिर से शुरू हुआ । ...(व्यवधान) हमारे कारण तो चेयर ने फैसला कर दिया कि हम सही थे और सरकार गलत थी । आप इसलिए भी बधाई और धन्यवाद के पात्र है कि पूरा देश देख रहा था कि आखिर लोक सभा क्यों नहीं चल रही है। आखिर सरकार बहस कराने से क्यों कतरा रही है, बहस स्वीकार क्यों नहीं कर रही है। ऐसे वक्त पर पूरा देश ही नहीं, दुनिया इस बात की प्रतीक्षा कर रही थी इस पर आपका क्या निर्णय होगा। आपने नियमानुसार हमारी समाजवादी पार्टी की तरफ से भी और पूरे विपक्ष की भावनाओं और देश की जनता की भा वनाओं का आदर करते हुए यह बहस स्वीकार की। वहीं हमें इस बात का अफसोस है कि देश का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रधान मंत्री जी और सत्ता पक्ष में बैठे कई साथियों ने आपके इस निर्णय पर जो टिप्पणी की, वह अशोभनीय थी और वह इसलिए भी अशोभनीय है कि समय-समय पर कई अवसरों पर आदरणीय प्रधान मंत्री जी कहते हैं कि संसद की मर्यादा भंग हो गई है। लेकिन अपने को कभी नहीं देखते हैं कि कहां-कहां मर्यादा भंग कर रहे हैं। अध्यक्षपीठ से जो भी फैसला होता है उसका सबसे पहले सम्मान सत्तापक्ष को करना चाहिए । देश का प्रतिनिधित्व करने वाले इस सदन के नेता की चेयर के फैसले के संबंध में टिप्पणी अशोभनीय है और मर्यादा को भंग करने वाली है। प्रधानमंत्री जी इसे स्वीकार करेंगे, क्योंकि आप मर्यादा को कायम रखने का बहुत ध्यान रखते हैं। लेकिन जब प्रधानमंत्री जी पर आती है तो पता नहीं क्यों भंग हो जाती है। क्या वजह है, यह भी बता दें कि आखिर क्या कारण था।

उपाध्यक्ष महोदय : मुलायम सिंह जी, प्लीज।

श्री मुलायम सिंह यादव : उपाध्यक्ष महोदय, यह भी बहुत बड़ी बात है ...(व्यवधान) इसका जिक्र यहां नहीं होगा तो कहां होगा। ... (व्यवधान)

SHRI KIRIT SOMAIYA (MUMBAI NORTH EAST): Sir, I am on a point of order. The issue has already been settled. The hon. Prime Minister has already said that he has not said anything of that kind.

उपाध्यक्ष महोदय : वहीं मैं खुद उन्हें बोलने वाला था।

श्री मुलायम सिंह यादव : हम प्रधान मंत्री जी को गुस्सा करना नहीं चाहते। माननीय उपाध्यक्ष जी प्रधानमंत्री जी हो सकता है कि हमारे भााण से नाराज हों पर हम जानबूझकर उन्हें गुस्सा करने के लिये कोई बात नहीं कहेंगें ।

श्री किरीट सोमैया : उपाध्यक्ष महोदय, यह रिकार्ड से निकाल देना चाहिए, Already the issue has been settled. This must be expunged.

डॉ.विजय कुमार मल्होत्रा (दक्षिण दिल्ली) : मुलायम सिंह जी, आपको चेयर की इज्जत करनी चाहिए।

श्री मुलायम सिंह यादव : हम चेयर को ही देख रहे हैं।...(व्यवधान) आप हमें देखो।

उपाध्यक्ष महोदय : मुलायम सिंह जी, मैं आपसे तथा सबसे विनती करता हूं कि यह बहुत ही सैन्सिटिव इश्यु है, यदि इसमें टोका-टोकी होगी तो हमारा पांच घंटे का आधा टाइम टोका-टोकी में ही चला जायेगा। इसलिए मैं आप सबसे विनम्रतापूर्वक विनती करता हूं कि इसे आप सीरियसली सुनें। यदि आप कुछ आपत्तिजनक समझते हैं तो जब आपकी बारी आयेगी, आप उसका जवाब दीजिए। अब आप शुरू कीजिए।

श्री मुलायम सिंह यादव : उपाध्यक्ष महोदय, 27 फरवरी को गोधरा में जो दंगे की घटना हुई, पता नहीं बार-बार कहा जाता है कि हमने उसकी निन्दा नहीं की। 27 फरवरी को हम राजनीतिक कारणों से लखनऊ में बहुत व्यस्त थे और राज्यपाल को हमने अपनी सरकार बनाने का दावा भी पेश किया था। सुबह जब मीडिया के माध्यम से अखबारों में पढ़ा, सुना और टी.वी. पर देखा तो उसी दिन हमारी पार्टी की बैठक हुई और बैठक में इस घटना की निन्दा का प्रस्ताव पास किया। लेकिन उसके बावजूद भी बार-बार यह कहना कि विपक्ष और विशोकर समाजवादी पार्टी ने निन्दा नहीं की, वह गलत है । और भी कई अवसरों पर निन्दा की गई । लेकिन उसकी निन्दा आज फिर कर रहे हैं कि वह जघन्य अपराध था, कानून को हाथ में लेने का अधिकार किसी को नहीं था, न है। उनको सज़ा मिले जिन्होंने यह जघन्य अपराध किया गोधरा में, लेकिन यह कहना कि वह निर्दोा थे और बाकी गुजरात में जो अहमदाबाद में हुआ, क्या वह दोाी थे? इसलिए आज यह पूरे देश और दुनिया के सामने आ जाना चाहिए कि कौन दोाी है और कौन र्निदोा है। हम गृह मंत्री जी और प्रधान मंत्री जी से पूछना चाहेंगे कि साबरमती एक्सप्रेस में, पूरे फरवरी माह में जब स

वारियाँ भर भर के अयोध्या जा रही थीं तो वे किनके आरक्षण पर जाते थे उसमें रिजर्वेशन क्या सांसदों के पास के माध्यम से था, भूतपूर्व विधायकों या पूर्व सांसदों के माध्यम से था, उनके रेलवे पास का इस्तेमाल तो नहीं हुआ । कितने लोगों का आरक्षण था, उनके क्या नाम हैं ? इसकी जांच होनी चाहिए । क्योंकि यह बात मीडिया में उठी है। फिर जब भर-भरकर गाड़ियां जाती थीं तो यात्रियों के साथ भेदभाव किया जाता था और उनको आरक्षण से भी अलग कर दिया जाता था। यहां तक कि जो हिन्दू लोग थे, उनके पूरे परिवार को एक बर्थ पर ही बैठने हेतु मजबूर किया गया और जितने मुसलमान थे, उनको निकालकर धक्केमार कर उतार दिया। इसकी जांच होनी चाहिए। उसके बाद जिन स्टेशनों से ट्रेन गुजरती थी उन स्टेशनों पर खोमचे और ठेले वालों से यात्रियों को जो कुछ खाने को मिल गया उसे जर्बदस्ती ले लेते थे लेकिन पैसा नहीं देते थे तथा खा जाते थे । ये घटनाएं क्या सही नहीं हैं ? जो छपी हैं और उसके बाद जब गोधरा में पहुंचे तो वही हालत वहां पर यात्रियों ने उत्पन्न की । फिर वहां एक घंटे संघर्ा हुआ, तो उस वक्त गोधरा का जिला प्रशासन या रेलवे पुलिस क्यों मौन थी? क्यों नहीं उनको रोका गया? जब उन छोटे दुकानदारों, खोमचे वालों, ठेके वालों की लूट मचाई तो उसको रोका क्यों नहीं गया? उसके बाद एक घंटा तनाव और संघर्ा रहा तो सरकार की जो भी प्रशासनिक एजेन्सी थी, उसने क्या किया ? वहां के जिला प्रशासन ने क्या किया? क्या उनकी दुकानें बचाने का काम किया? क्या जिन्होंने दुकानदारों पर हमला किया, उनको पकड़ने का काम किया? इसके लिए कौन जिम्मेदार है? यदि प्रशासन सर्तक होता, तथा गुण्डों से निर्दोा स्टेशन की दुकान वालों की हिफाजत की होती तो गोधरा की नृशंस घटना नहीं घटती ।

उपाध्यक्ष महोदय : मुलायम सिंह जी, आप पहले मोशन को औपचारिक रूप से मूव कीजिए।

श्री मुलायम सिंह यादव : मैंने शुरू में ही बोल दिया था।

उपाध्यक्ष महोदय : मेरे ख्याल से नहीं बोला।

श्री मुलायम सिंह यादव : अगर कहीं कोई नुक्ता कमी होगी तो आप चेयर की तरफ से उसको पूरा कर दीजिए।

उपाध्यक्ष महोदय : मेरे ख्याल से आप बोले होंगे मगर रेकार्ड पर नहीं आया, इसलिए मैं कह रहा हूँ। आप एक बार मोशन को पढ़ दीजिए।

…(व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूँ :

" कि यह सभा देश के विभिन्न भागों, विशो रूप से गुजरात में, अल्पसंख्यक समुदाय की सुरक्षा सुनिश्चित करने में प्रशासन की असफलता पर अपनी गंभीर चिन्ता व्यक्त करती है और सरकार से अनुरोध करती है कि वह अल्पसंख्यक समुदायों में विश्वास बहाल करने और उनकी रक्षा करने के लिए प्रभावी कदम उठाए।"

उपाध्यक्ष महोदय, हम कहना चाहते हैं कि वह निर्दोा थे तो उसकी प्रतिक्रिया गोधरा में क्यों नहीं हुई, उसकी प्रतिक्रिया अहमदाबाद में क्यों हुई? क्या यह सही नहीं है कि प्रशासन और पुलिस के संरक्षण में गोधरा में जो घायल थे, या जिनकी हत्याएं हुईं, या अधजले हुए लोग थे, उनकी लाशों को लेकर पुलिस के संरक्षण में रास्ते में नारे लगाकर तीन-चार घंटे बाद क्या अहमदाबाद नहीं ले जाया गया? क्या वहां उत्तेजना नहीं फैलाई गई ? यह करने का मौका क्यों दिया गया। ऐसे मौकों पर तो रोका जाता है। समाजवादी कार्यकर्ता की हत्या भी कर दी जाती है और रातोंरात दाह-संस्कार भी कर दिया जाता है। उसके घर वालों को भी नहीं बुलाया जाता है । वहां लाशों को, घायलों को अहमदाबाद तक ले जाने की मंशा क्या थी ? ... (व्यवधान) पूरे रास्ते व शहर में लाशों को प्रर्दशित करने की आवश्यकता क्या थी ?

श्री रतिलाल कालीदास वर्मा (धन्धुका) : वहां उनके रिश्तेदार थे। किसी का भाई था किसी का पुत्र था।...(व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : आपके इस प्रकार से बीच-बीच में बोलने से पता चलता है कि गृह मंत्री जी क्या उत्तर देंगे। यह सत्य है कि अन्य स्थानों पर लाशों को बाद में भेजा गया परन्तु ढाई-तीन घंटे के अंदर अहमदाबाद को रवाना हो गए, यह अन्तर है। उसके बाद कोई भी रोकथाम नहीं की गई और न कोई सावधानी अहमदाबाद की पुलिस, गुजरात की सरकार की तरफ से, गुजरात के मुख्य मंत्री की तरफ से बरती गई, क्यों ? जब वहां यह साबित हो गया कि सरकार के पांच मंत्री शामिल हैं, मुख्य मंत्री दोाी पाए जा रहे हैं और इस बात को हम अकेले नहीं कह रहे हैं, बल्कि मानवाधिकार आयोग जिसके अध्यक्ष, उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश हैं, वे कह रहे हैं, अल्पसंख्यक आयोग, महिला आयोग, विभिन्न संगठन, मीडिया और वहां के विपक्षी दल के लोग सब लोग वहां की सरकार को, वहां के मुख्य मंत्री को दोाी पा रही है और आपके सहयोगी दल के राम विलास पासवान ने इस्तीफा दे दिया, हम उन्हें धन्यवाद देते हैं तथा कुछ और लोगों को धन्यवाद देने के इंतजार में हैं। वह तो हमें देना ही है। आप चाहे कितने ही लोगों को बटोरिए, सिद्धान्तहीन व अवसरवादी लोगों के साथ गठबंधन चलने वाला नहीं है। आपने जो गठबंधन बनाया है वह मुलायम सिंह के खिलाफ सिद्धांदहीन और अवसरवादी लोगों का गठबंधन बनाया है। समाज वादियों के खिलाफ आपका यह काम चलने वाला नहीं है। यह महल तो टूटेगा। अवसरवादी, सिद्धान्तहीन लोगों के साथ बनाया महल तो टूटेगा। इसको टूटने से रोका नहीं जा सकता। अब इसकी शुरूआत हो चुकी है। राम विलास जी ने अच्छा किया। आपके इस महल की ईंट उखड़नी शुरू हो गई हैं। दिग्विजय सिंह जी का भी इंतजार है। हालांकि जार्ज साहब ऐसा नहीं करेंगे,

लेकिन पता नहीं, शायद आत्मा की आवाज सुन लें। सबने गुजरात के मुख्य मंत्री और वहां की सरकार का विरोध किया और आपको इस भावना का आदर करना चाहिए, लेकिन पता नहीं क्या जिद है कि आप वहां के मुख्य मंत्री को नहीं हटाएंगे।

प्रधान मंत्री जी, आपको अपने कार्यों को नहीं भूलना चाहिए। आपने इसी सदन में 1974 में जो आचरण किया, उसे आपको नहीं भूलना चाहिए। 1974 में नवनिर्माण समिति ने, गुजरात में जब आंदोलन चला और बहुत व्यापक रूप से आन्दोलन चला, उस समय पूरे गुजरात में हंगामा था । उस समय की गुजरात सरकार के अत्याचार के खिलाफ खड़ा हो गया, तब यहां इसी सदन में मोरारजी भाई देसाई इस सदन में आसन के पास जाकर धरने पर बैठ गए और उस समय उनके आगे-आगे कौन चल रहा था, वर्तमान प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी, आप स्वयं उस धरने में उनके आगे-आगे थे । क्या प्रधान मंत्री जी उस समय आप सदन में आसन के समक्ष नहीं गए ? उस समय की गुजरात की सरकार, उस समय के गुजरात के मुख्य मंत्री को लेकर क्या आप आसन के समक्ष नहीं गए ? उस समय की केन्द्र की सरकार ने गुजरात के निर्वतमान मुख्य मंत्री श्री चिमनभाई पटेल को बर्खास्त किया । और उन्हें बर्खास्त ही नहीं किया, बल्कि जब गुजरात में नए चुनाव भी कराए गए । यह बात आप क्यों भूल जाते हैं और केन्द्र की वर्तमान सरकार अपने इतिहास को क्यों भूल जाती है और जब हम विरोध करते हैं, तो हमारी मांग को उचित नहीं बताया जाता है। आप तो देश के नेता हैं, उस समय भी देश के नेता थे, उस समय आप आसन के समक्ष क्यों गए ? उस समय के गुजरात के मुख्य मंत्री चिमनभाई पटेल को बर्खास्त किया गया था । आज सबसे ज्यादा वहां मानव हत्या हुई हैं । इसके लिये दोाी वहां के वर्तमान मुख्यमंत्री एवं वहां की भाजपा सरकार रही है। आप कह देंगे कि वह राज्य का मामला है। यह राज्य का मामला कैसे है ? हमारे संविधान में स्पट है कि देश के किसी भी हिस्से में अल्पसंख्यक, महिलाओं और अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजातियों पर होने वाले अत्याचार और जुल्म से रक्षा की जिम्मेदारी केन्द्र सरकार की भी है। आज वहां इन वर्गों पर जो जुल्म हुआ है, उसके लिए केन्द्र सरकार दोाी है। वहां हम यह नहीं कहते कि किसी एक ही वर्ग का नुकसान हुआ है। यह ठीक है कि 10-15 प्रतिशत हिन्दुओं का भी नुकसान हुआ है, लेकिन 80-85 प्रतिशत मुसलमानों की हत्या किया जाना, उनकी दुकानें जला देना, कारखाने जला देना, महिलाओं के साथ बलात्कार करना, बेटियों के साथ सड़कों पर बलात्कार करना, गर्भवती महिलाओं के पेट फाड़कर बच्चों को निकालकर हत्या कर देना कहां तक न्यायोचित कहा जा सकता है। ...(व्यवधान)

श्रीमती भावनाबेन देवराजभाई चिखलिया (जूनागढ़) : उपाध्यक्ष महोदय, महिला आयोग की रिपोर्ट हमने भी पढ़ी है। यह गलत बता रहे हैं। ... (व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : हमने अपने वेदों को पढ़ा है। भारतीय संस्कृति मिली जुली संस्कृति है। हमारे र्धामिक ग्रन्थों में बताया गया है कि राक्षसों के भी इस प्रकार के कारनामे पढने को नहीं मिलते जिस तरह से गुजरात में हुए हैं या हो रहे हैं। हम मौके पर गये । ...(व्यवधान)

श्री प्रकाश परांजपे (ठाणे) : आप हिन्दुओं की बात नहीं सुनते, मुसलमानों की बात सुनते हैं। … (व्यवधान) काश्मीर में 40 हजार लोग मारे गये, उस समय क्या आप सो रहे थे ? … (व्यवधान)

काश्मीर में हिन्दू महिलाओं पर बलात्कार होता है तब आप कहां होते हैं ? …(व्यवधान) उस समय क्या आप सो रहे होते हैं ? … (व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: No running commentary please.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Prakash Paranjpe, please do not interrupt now.

… (*Interruptions*)

श्री प्रकाश परांजपे : उपाध्यक्ष महोदय, यह गलत बोल रहे हैं।

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Prakash Paranjpe, what is going on? You should not shout like this. If you continue to do like this, I will have to send you out. It is a very serious matter. If what he is saying is not relishable to you, you refute it when you speak.

श्री मुलायम सिंह यादव : उपाध्यक्ष महोदय, इससे अंदाजा लगा सकते हैं। गुजरात में 28 फरवरी को समाजवादी पार्टी के महासचिव श्री अमरसिंह, मार्क्सवादी पार्टी के नेता श्री सीताराम येचुरी, सांसद श्री राजबब्बर और श्रीमती शबाना आजमी वहां गये। उन्होंने वहां मुख्यमंत्री से फोन पर कहा कि आप हमें अस्पताल तो देख लेने दीजिए। दंगा क्षेत्र में हमारे जाने से वहां सद्भावना पैदा होगी, तो उन्हें कहा गया कि आपकी भावनायें, आपके विचार और आपकी तस्वीर यहां की जनता जानती है। हम आपकी सुरक्षा करने में असमर्थ हैं। यह वहां के मुख्यमंत्री का जवाब है। उसके बाद हम अभी 24 अप्रैल को वहां गये। मैं अकेला नहीं गया था। मेरे साथ भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री एच.डी. देवेगौड़ा, मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के श्री हरकिशन सिंह सुरजीत, कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया के श्री ए.बी. वर्धन, समाजवादी पार्टी के श्री अमरसिंह, आर.एस.पी. के श्री अबनी राय और फारवर्ड ब्लाक के श्री देवव्रत विश्वास भी गये थे। जब हम लोग वहां पहुंचे तो वहां के पुलिस कमिश्नर और डी.एम. कहते हैं कि आप नहीं जा सकते क्योंकि वहां तनाव है। जब आपके अधिकारी, डी.एम. और पुलिस कमिश्नर खुद कहते हैं कि वहां तनाव है और श्री मुलायम सिंह, हरकिशन सिंह सुरजीत और देवेगौड़ा जैसे नेता गुजरात में जाने के लायक नहीं हैं। मैं जानना चाहता हूं कि आप की सरकार क्या कर रही थी ? वहां आग लगी हुई है और हत्या लूटपाट अभी

जारी है। आधी रात में गृह मंत्री के क्षेत्र में फिर से फायरिंग होती है। यह बात सच है या नहीं लेकिन वहां एक की हत्या हो गई है और एक घायल है। कानून मंत्री जी भी वहां के हैं, गृह मंत्री जी भी वहां हैं। इसके अलावा और भी कई मंत्री वहां के हैं। रक्षा मंत्री जी जब-जब वहां जाते हैं तब-तब वहां और ज्यादा दंगे, हत्यायें, आगजनी और फायरिंग होती है। इसकी क्या वजह है ? क्या इस मामले में केन्द्र सरकार अक्षम नहीं है ? क्या सरकार इसके लिए जिम्मेदार नहीं है ? गृह मंत्री जी आप इसके लिए जिम्मेदार नहीं हैं ? प्रधान मंत्री जी क्या आप उसके लिए जिम्मेदार नहीं है ? आप देश के नेता हैं और इस वक्त देश का नेतृत्व कर रहे हैं। आपको तत्काल वहां जाना चाहिए था।

लेकिन एक महीने चार दिन बाद गए और जाकर जब पहले दिन बोले तो हमें भी अच्छा लगा कि भारत के संघीय लोकतांत्रिक देश के प्रधान मंत्री बोले कि यह राट्रीय शर्म की बात है, यहां के मुख्य मंत्री राजधर्म का पालन करें। हमने सोचा अच्छा बयान दे दिया, अब वे वापिस आते ही मुख्य मंत्री को बरखास्त कर देंगे। पूरे देश की निगाहें थीं कि अब प्रधान मंत्री जी बयान के बाद भावुक हो गए, वहां की हिंसा, आगजनी, और जिस तरह जर्मनी में गैस चैम्बर में लोग जलाए गए, एक एक मकान के घेरे में 158 लोग जलाए गये। ।6-7 हजार घरों को पूरा जला दिया । हमने सोचा कि इसे देखकर शायद भावुक हुए हैं । उसके बाद कहा कि हम विदेश में क्या मुंह लेकर जाएंगे। सिंगापुर गए और अपना चेहरा बचा कर आ गए। गुजरात के मुख्य मंत्री को वहां खलनायक ठहरा कर चले आए । अगर अहमदाबाद में गुजरात हत्याकांड राट्रीय शर्म की बात थी, तो गोवा जाकर वह राट्रीय गौरव में क्यों बदल गयी ? वहां ऐसा भााण दिया कि जैसे स्वयंसेवक संघ का सच्चा सदस्य बोल रहा है, प्रधान मंत्री नहीं बोल रहे है। वहां राट्रीय शर्म की बात और राट्रीय गौरव कैसे बन गया। अहमदाबाद, गुजरात गए तो राट्रीय शर्म की बात और गोवा में जाकर राट्रीय गौरव की बात हो गई। वहां मुख्य मंत्री को डांट कर आए और दूसरी जगह मुख्य मंत्री को शाबाशी दी। इस्तीफा वापिस। आखिर क्यों, क्या है मंशा, क्या चाहते हैं? आज दिल्ली की केन्द्र सरकार के रहते देश की एकता को खतरा है। अब देश के सामने यह सवाल है।

यह गंभीर बहस है, यह कोई राजनीतिक बहस नहीं है। गुजरात में जो हो रहा है, वह हमारी जिम्मेदारी है। जब हम लोग वहां गए, माननीय उपाध्यक्ष जी, जो यहां कह रहे हैं कि हिन्दुओं की बात नहीं की, पहले ही कह दिया, 10-15 प्रतिशत हिन्दुओं का भी नुकसान हुआ है। हमारे देश की सभ्यता और संस्कृति का सत्यानाश किया है। मुसलमानों का ज्यादा नुकसान हुआ है, हिन्दुओं का कम नुकसान हुआ है। वहां किसका नुकसान नहीं हुआ। जब हम वहां जाकर महिलाओं से मिलते हैं तो मुस्लिम महिलाएं कहती हैं कि शर्म करने की क्या जरूरत है। अपने कपड़े अलग करके अपने गुप्तांगों तक की चोटे दिखा देती हैं । यहां भााण देने से, दूरदर्शन, टी.वी. या मीडिया से कल्पना नहीं कर सकते । वे अपने पेटीकोट, धोती खोल कर दिखा देती हैं कि चोट कहां है। हम शर्मिंदगी से भागते हैं और कहते हैं कि ढको। कहां चोट है, जांघ के नीचे चोट है, यहां चोट है, यहां चोट है। दस-दस दिन बाद भी चोट ज्यों की त्यों है। किस तरह उनके हाथ, पैर काटे गए।

क्या वे दोाी थे? क्या वे निर्दोा नहीं थीं? क्या केवल गोधरा के लोग ही दोाी थे तो क्या उनको दोाी नहीं कह सकते जिन्होंने ऐसा किया। उनके खिलाफ क्या कार्यवाही की गई? अभी तक कितने गिरफ्तार हुए? दो घटनाएं ऐसी बताई गईं कि जिन आदमियों की दाढ़ी थी, हिन्दू थे, उनको मार दिया गया। पत्रकार जिन्होंने दाढ़ी रखी हुई थी, उनको प्रमाण देना पड़ा कि मैं पत्रकार हूं। गुजरात में यह हालत कर दी है।... (व्यवधान) आज हालत यह हो गई है कि वहां के पत्रकारों को भी अपनी दाढ़ी मुंडाने के लिए मजबूर होना पड़ा । यह हालत वहां हो गई है।... (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : आठवले जी, आप अपना स्थान ग्रहण करें।

श्री मुलायम सिंह यादव : अगर बजरंग दल और विश्व हिन्दू परिाद के लोगों ने दाढी देखकर गलती से मुसलमान समझकर दो हिन्दुओं की हत्या कर दी । रामदास जी आपको भी पांच-छः महीने तक सावधान रहना होगा और बताना होगा कि हम सांसद हैं और हिन्दू हैं। इसलिए वहां आज यह हालत हो गई है कि वहां दाढ़ी रखना भी अपराध हो गया है। जैसे तालिबान के समय में दाढ़ी न रखना अपराध था, वैसे ही गुजरात में दाढ़ी रखना अपराध हो गया है। एक अखबार ने अपने सम्पादकीय में लिखा है कि अगर वहां कोई एक दाढ़ी वाला सुरक्षित है तो वह है वहां का मुख्य मंत्री नरेन्द्र मोदी। दाढ़ी वाला हिन्दू केवल वही वहां सुरक्षित है। यह एक अखबार के सम्पादकीय में लिखा है।

श्री रतिलाल कालिदास वर्मा : आप गम्भीर चर्चा का मजाक बना रहे हैं। वहां सारे साधु-संत दाढ़ी वाले हैं।

श्री मुलायम सिंह यादव : उपाध्यक्ष जी, यह तो मामूली चित्रण है, जो मैं आपके सामने नमूने के तौर पर वर्णन कर रहा हूं। गुजरात की यह हालत इससे कई गुना अधिक बदतर हो गई है । इसलिए मैंने कहा कि देश की एकता खतरे में है। गुजरात में कच्छ इलाके में जहां सैंकड़ों सालों से हिन्दू-मुसलमान भाईचारे के साथ रहते थे, कभी उनमें भेदभाव नहीं था, वह अब खत्म हो गया है।

श्री पी.एस. गढ़वी (कच्छ) : यह ठीक बात नहीं है।

श्री मुलायम सिंह यादव : वहां के एक स्वयं सेवी संगठन ने गुजरात के होमगार्ड के बारे में कहा है कि उनमें से अधिकांश लोग संघ परिवार से जुड़े हुए निठावान लोग हैं और मुस्लिम विरोधी हैं । छः हजार के करीब होमगार्ड के जवान संघ के प्रशिक्षित स्वयं सेवक है। होमगार्ड के कमाडेंट की पूरी निठा संघ में थी। उसने अल्पसंख्यकों के घर लूटने, आगजनी और हत्या करने में विशे भूमिका निभाई है । ऐसा उस स्वयं सेवी संगठन ने लिखा है। कमांडेंट ने पुलिस अधीक्षक की उपेक्षा करके मनमानी की है और आगजनी तथा हिंसा में हिस्सा लिया तथा दंगे कराये । वह पुलिस अधीक्षक उसके खिलाफ कुछ कार्रवाई करना चाहता था, लेकिन उसका ट्रांसफर कर दिया गया।

इसीलिए हमने कहा कि देश की एकता को खतरा है। इसलिए संसद पर एकता बनाए रखने की जिम्मेदारी है। इसीलिए हमने यहां नियम 184 के तहत इस गंभीर विाय पर चर्चा करने की मांग की थी। अब केन्द्र सरकार की जिम्मेदारी है कि वह देश में एकता बनाए रखे। अगर वह यह काम करती है तो हम उसका इस काम में समर्थन करने को तैयार हैं। देश की रक्षा और एकता के लिए जब-जब सरकार ने कोशिश की है, हम तब-तब उसके साथ मजबूती से खडे हुए हैं । हम उसमें पीछे नहीं रहे हैं। इसलिए भविय में भी जब कभी देश की सुरक्षा और एकता का सवाल आएगा, हम लोग, हमारे कार्यकर्ता कभी भी अपनी जान देने में भी पीछे नहीं रहेंगे। कारगिल में हमने यह बता दिया है। हमारे क्षेत्र के युवा दुश्मनों से लड़ते हुए अपनी जान देने में आगे हैं। लेकिन देश की जिम्मेदारी यह सरकार नहीं निभा रही है। यह देश को तोड़ने का काम कर रही है और इस मानसिकता से सरकार चलाई जा रही है। चाहे दिल्ली में हो या गुजरात में, यह बात सामने आ चुकी है। इसी बात पर हमारी आपत्ति है। इसलिए हम लोग यह निंदा का प्रस्ताव लेकर यहां आए हैं। हमने वहां के मुख्य मंत्री का इस्तीफा मांगा था और अब भी यही मांग कर रहे हैं। हमें उम्मीद है कि सरकार देश हित में आगे आए और यहीं पर गुजरात के मुख्य मंत्री को बर्खास्त करने की घोाणा कर दे। हमें अब भी उम्मीद है कि सरकार इस पर फैसला करेगी। लोकतंत्र में दिल्ली की सरकार को, प्रधान मंत्री जी को और गृह मंत्री जी को जो कदम उठाना चाहिए था, जो जिम्मेदारी निभानी चाहिए थी, वह नहीं निभाई गई। उसका नतीजा है कि सरकार के संरक्षण में गुजरात में यह हो रहा है। आप इसको छिपाकर कहां ले जाएंगे।

एक भूतपूर्व सांसद, जो इसी सदन के सदस्य रह चुके हैं, उन्होंने कांग्रेस पार्टी के नेताओं से लेकर सभी अन्य संभव लोगों से फोन पर 3 घंटे संपर्क कर जान बचाने का निवेदन किया परन्तु उन्हें तथा उनके परिवार के बचाने में सरकार नाकाम रही । हमने भी आपको टेलीफोन किया और यह सही है कि हमारी पार्टी के एक नेता बचा लिए गए। हमने प्रधानमंत्री जी को साढ़े दस बजे या ग्यारह बजे के करीब टेलीफोन कर जगह बता दी, आपने कोशिश की और वे बच गए तथा अज्ञात स्थान पर भाग गए। सबेरे 6 बजे टेलीफोन किया तो वह मोबाइल पर मिल गये कि हम जिंदा हैं लेकिन लोक सभा के भूतपूर्व सांसद को, उनके परिवार के साथ जिंदा जला दिया गया । पूरे मोहल्ले को जलाकर और फिर उस भूतपूर्व सांसद और उनके परिवार को काट-काट कर टुकड़े-टुकड़े करके जला दिया। ...(व्यवधान) यह भी आरोप है कि गुजरात के गृह मंत्री के घर में आतातायी लोग, दंगा करने वाले लोग हथियारों से लैस होकर वहां संरक्षण ले रहे थे और उनके आदेश का पालन कर रहे थे। यह बात पूरी गुजरात की जनता को मालूम है और जब हम वहां गये थे तब हमें यह पता लगा है। अब आपसे बात भी हुई। पुलिस कमिश्नर से बात हुई। पुलिस कमिश्नर भूतपूर्व सांसद के घर भी गये थे और सुरक्षा व्यवस्था की बात करके चले आये उसके बाद क्या वजह हुई कि फिर भी उनकी जान क्यों नहीं बच पायी ? वे कौन लोग हैं, किस मानसिकता के लोग हैं? देश को क्या संदेश दे रहे हैं और देश की क्या छवि पूरी दुनिया के सामने बना रहे हैं? दुनिया के सामने भारतीय लोकतंत्र की क्या तस्वीर पेश करना चाहते हैं? आज तालीबान से लेकर चाहे 11 सितम्बर की अमरीका की घटना हो या 13 दिसम्बर को भारत की

संसद पर हमले की घटना हो या 1 अक्तूबर को जम्मू-कश्मीर की असैम्बली पर आतंकवादियों के हमले की घटना हो, सभी देशों ने मिलकर आतंकवाद के खिलाफ मोर्चा बनाया है और वही लोग क्या बोल रहे हैं, अमरीका, इंग्लैड, जर्मनी और कनाडा और यूरोपीय संघ ने गुजरात के हत्याकांड पर क्या कहा है ? इनके दूतावासों ने गुजरात का दौरा किया, उन्होंने रपट तैयार की जिसमें यह साफ कहा गया है कि गुजरात में मुसलमानों को खास तौर से निशाना बनाया जा रहा है । अमेरिका की उपविदेशमंत्री यहां आईं थीं, उन्होने कहा है कि गुजरात के बाद भारत यह कैसे कह सकता है कि वह पाकिस्तान से बेहतर है । इन देशों ने गुजरात की घटनां को साम्प्रदायिक हिंसा न मानकर इसे नर संहार बताया है । अभी 19 मार्च को इंग्लैड के प्रधान मंत्री ने गुजरात में हो रही घटनाओं की निंदा की है और आपसे उम्मीद और अपेक्षा की है कि वहां के मुसलमानों की सुरक्षा की जाये, वहां शांति और व्यवस्था का वातावरण बनाया जाये। सबसे ज्यादा विनिवेश गुजरात में हुआ है और आज अमरीका ने विनिवेश करने वाली कंपनियों को मना कर दिया है कि आप गुजरात में मत जाइए। क्या इंग्लैड के एक नागरिक की हत्या नहीं की गई और आप कहते हैं कि हमारा आन्तरिक मामला है। क्या यह आन्तरिक मामला है? क्या सन् 1949 में भारत ने जेनेवा सम्मेलन मे मानवाधिकारों के लिए दस्तखत नहीं किये है। भारत विश्वभर में पालन किये जाने वाले मानवाधिकारों वाले रक्षा वाले नियम कानूनों के पालन की गारंटी देता है । फिजी में जो हिंदुओं के साथ हुआ, युगांडा में जो हो रहा है, वहां भारतीय मारे गये व वहां से भगाये गये बांगलादेश में हिन्दुओं के माल व जीवन की रक्षा नहीं हो रही है तो भारत अन्तर्राट्रीय समुदाय के सामने मानवाधिकारों के बारे में किस मुंह से रक्षा की गुहार करेगा ? यह आन्तरिक मामला नहीं है। क्या दक्षिण अफ्रीका में भारत लगातार मानवाधिकारों के हनन के खिलाफ नहीं लड़ा है? यह मानवाधिकार का हनन चाहे दुनिया के किसी भी मुल्क में होगा, हमारे देश की विदेश नीति रही है कि इसके लिये भारत ने सदैव आवाज उठाई है, परन्तु आपने बदल दी हो तो अलग बात है । अन्यथा हमारे देश की विदेश नीति रही है कि सारी दुनिया में जहां भी मानवाधिकारों का हनन होगा, भारत उनके साथ खड़ा होगा और आप कह रहे हैं कि यह हमारा आन्तरिक मामला है। इसे आप आन्तरिक मामला नही कह सकते। आपने दुनिया में हमारे लोकतंत्र की, संघीय ढांचे की तस-वीर को धब्बा लगाया है । आपने स्वयं कहा है गुजरात हत्याकांड राट्रीय कलंक है और वह केन्द्र सरकार और गुजरात की सरकार पर कलंक है, हजारों लोगों की मौत का कलंक है, हत्याओं का कलंक है चाहे हत्या हिन्दू की हो या मुसलमान की हो। व्यापार और उद्योग की दृटि से हिन्दुस्तान में गुजरात अग्रणी राज्य था । शांति और खुशहाली के नाम पर गर्व करता था । उसे बरबादी की तरफ लाने का संगठित प्रयास बी जे पी सरकार ने किया । साबरमती आश्रम पर क्या हुआ? एक महिला लीडर के विचारों के साथ आपका मतभेद हो सकता है, मेघा पाटकर के विचारों के साथ बजरंग दल का मतभेद हो सकता है, सबका मतभेद हो सकता है लेकिन इसका मतलब यह तो नहीं है कि अगर शांति के लिए कोई जूलूस निकालेंगे तो आप उन पर हमला करेंगे? मेघापाटकर को धक्का देकर पटक दिया गया तथा उनके बाल खीचें और जब कैमरा वाले चित्र लेने के लिए आए तो उन पत्रकारों और कैमरामैन को àÉÉ मारा पीटा गया । क्या इस तरह का आतंकवाद जर्मनी

के नाज़ीवाद, एवं हिटलरशाही का प्रतिरूप नहीं है ? ये बातें हम आपके सामने इसीलिए रख रहे हैं कि यह कह कर कि यह गोधरा की प्रतिक्रिया है । इन अत्याचारों को छिपाया नहीं जा सकता है और इस कलंक को नहीं छिपाया जा सकता है।

हम आपसे कहना चाहते हैं कि यह प्रतिक्रिया गोधरा की अहमदाबाद में क्यों हुई। वहां बताया जाता है कि अगस्त से बाकायदा तैयारियां थीं। आप भी कह रहे हैं कि कुछ आतंकवादी इंतजार कर रहे थे। गोधरा के बाद आप खुद कह रहे हैं कि इंतजार कर रहे थे, तो इंतजार करने वालों के खिलाफ आपने क्या कार्रवाई की? कितने गिरफ्तार हुए और किस-किस सगंठन से संबंधित लोग गिरफ्तार हुए? आपने कहा है कि 900 से 1000 तक हत्यायें हुई हैं, लेकिन गैर सरकारी सूत्रों का कहना है कि तीन हजार से ज्यादा हत्यायें हो चुकी हैं और 10 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा का नुकसान हो चुका है। हत्यायें अभी तक जारी हैं। यहां बहस हो रही है, वहां आगजनी और हत्यायें तथा फायरिंग निर्दो लोगों पर हो रही हैं, बेगुनाह लोगों पर हो रही हैं। माननीय प्रधान मंत्री जी एक मुख्य मंत्री को बचाने के लिए देश को तोड़ने की साजिश उचित नहीं है। अगर मुख्य मंत्री को उसी दिन हटा दिया होता और आप तत्काल वहां गए होते, तो आपकी पार्टी, आपकी सरकार और माननीय प्रधान मंत्री जी आपकी छवि अच्छी होती। लेकिन आप गुस्सा हो जायेंगे यदि वास्तविकता बतायी जायेगी कि आप पर दबाव है । कहीं-न-कहीं अप्रत्यक्ष रूप से दबाव है, कहीं-न-कहीं लाचारी है, वरना आप बयान देकर उससे मुकरते नहीं । आप कहेंगे कि मैं दबाव में नहीं चल सकता। आप मुलायम सिंह पर नाराज हो सकते हैं। हम जानते हैं कि आप नाराज हो सकते हैं। लेकिन यह स्वीकार करना पड़ेगा कि आप देश के प्रधान मंत्री हो, केवल भारतीय जनता पार्टी या संघ परिवार के नहीं हो। बजरंग दल के प्रधान मंत्री नहीं हो और न प्रधान मंत्री आप विश्व हिन्दू परिाद् के हो। आप देश के प्रधान मंत्री हो। देश को एक बनाए रखने की जिम्मेदारी आपकी पहले है, फिर हमारी है । इसलिए यह संसद इस जिम्मेदारी को निभाना चाहती है। अगर ऐसा नहीं है, तो साफ-साफ कहिए। तीन-चार दिनों से लगातार खबरें आ रही हैं। संघ परिवार के लोग आपसे मिलते हैं और कहते हैं कि गठबंधन की बैठकें करते रहिए, लेकिन एजेंडा हमारा चलेगा। आपने यहां तक कह दिया है, यह अखबारों में आया है, खबरें हैं, पूरे देश के अन्दर कह दिया है कि सहयोगी दल आपकी कृपा पर हैं। ये सहयोगी दल क्या कर सकते हैं। आप संघ परिवार का एजेंडा, कार्यक्रम लागू कीजिए। सहयोगी दल के लोग कुछ भी नहीं है, ये आपकी कृपा पर निर्भर हैं। ... (व्यवधान) अजित सिंह जी, यह संघ परिवार का विचार है। तथा उन्होनें यह नहीं कहा कि सहयोगी दल आपकी कृपा पर हैं ? आप थोड़ा सा रास्ता दिखाते, तो आप किसी की भी कृपा पर नहीं होते। ...(व्यवधान)

श्रीमती जयाबेन बी.ठक्कर (वडोदरा) : चर्चा को राजनीतिक रूप दिया जा रहा है। ...(व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : हां, आप राजनीति जरूर कर रहे हैं। ... (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय, हम आह्वान करते रहेंगे और यह कहते रहेंगे कि संसद के अन्दर जिनको चिन्ता है, जिनके अन्दर देश भक्ति है, वे हमारे इस प्रस्ताव का समर्थन करेंगे, यह हमारी अपील है।

आज सवाल सरकार का नहीं है, देश का है, देशभक्ति का सवाल है। गांधी जी ने जिस देशभक्ति को जन-जन में पैदा किया था, पूरे देश को खड़ा किया था, उस देशभक्ति का सवाल है, देश का सवाल है। मुख्य मंत्री आएगा, जाएगा, कितनी कोशिश करो तब भी वह नहीं रह सकता। एक मुख्य मंत्री के पीछे देश की एकता को खतरे में मत डालिए । इसलिए हमने कहा कि आज संसद में जितने लोग हैं, उन्हें इस प्रस्ताव का समर्थन करना चाहिए। हम आज आपसे इसलिए यह कहना चाहते हैं क्योंकि गुजरात में जो हो रहा है, उसका प्रभाव केवल गुजरात तक ही सीमित नहीं है, महाराट्र, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और मध्य प्रदेश में भी छोटा-मोटा तनाव पैदा हुआ है। 500 स्थान ऐसे बताए जाते हैं जो हमने मीडिया के माध्यम से पढ़े हैं कि गृह मंत्रालय ने, 500 ऐसे संवेदनशील स्थान चिन्हित किये हैं कि जहाँ जरा भी चिंगारी लगी तो पूरे देश में आग लग जायेगी । यह हालत देश की है। दूसरी तरफ आप कहते हैं कि हम आतंकवाद के खिलाफ लड़ेंगे। आप आतंकवाद के खिलाफ कैसे लड़ सकते हैं, आप अपने ही लोगों को विश्वास में नहीं ले सकते हैं। आज जो इस तरह की परिस्थिति पैदा हो गई है, हिन्दू कहता है कि हम मुसलमान मोहल्ले में नहीं रहेंगे और मुसलमान कहता है कि हम हिन्दू मोहल्ले में नहीं रहेंगे। ये दूरियां किस ने बढ़ाईं, इन दूरियों का परिणाम क्या होगा। ... (व्यवधान) । ... हमने शुरू में ही कहा था कि मोरारजी भाई ने जब धरना दिया था तो माननीय प्रधानमंत्री जी आगे-आगे चले थे, उस समय से कई गुना भयावह स्थिति इस समय गुजरात की है। विपक्ष के लोग जाएं और अपनी जान देकर वहां जो कुछ कर सकते हैं, करें ।

आपसे विश्वास हट रहा है, अब तो यह बचता है कि हम लोग तय करें कि हम अपनी जान देकर देश को बचा सकें या कुछ कर सकें। आपने देखा होगा कि शांति यात्रा के नाम पर एक महिला के बाल पकड़ कर उसे पटक दिया जाता है। उसका चित्र लिया जाता है तो अखबार वालों को मारा जाता है। यह हो सकता है कि हम लोग भी जान दे सकते हैं। हम लोग जान देकर भी वहां बचाने की कोशिश करेंगे, अभी हम आपका थोड़ा इंतजार कर रहे हैं। इसके बाद अगर कुछ नहीं होगा तो हमें अपनी रणनीति बनानी पड़ेगी, हम सब को चलना पड़ेगा। इसलिए हम इस सवाल को, ये राजनीति सवाल नहीं, सच्चाई हैं, राजनीतिक जोड़-तोड. का काम आप कर रहे हैं, आप चुनाव में हार चुके हैं। आप गठजोड़ करके उत्तर प्रदेश में क्या कर रहे हैं, क्या गठबंधन कर रहे हैं, क्या-क्या सौदेबाजी कर रहे हैं। आगे का चुनाव, आगे के वोट, क्या ये राजनीति नहीं है। तेलुगूदेशम पार्टी ने थोड़ी सी आंखें दिखाई हैं, अब कब तक दिखायेंगे, यह पता नहीं है। बहुत से साथी लम्बे समय तक हमारे साथ रहे, साथ-साथ काम किया। हम लोगों के बहुत अच्छे संबंध भी हैं। येरननायडू कब तक आंखें दिखाएंगे। यहां क्या है, वहां क्या है, अंदर पता नहीं क्या है, लेकिन यह क्या राजनीति नहीं है, बंदोबस्त नहीं किया गया कि 13 एमपीज़ आ जाएं, सरकार ले जाएं। मुख्य मंत्री पद बांट रहे हैं। क्या-क्या बांटोगे- देश को बांटोगे। क्या उत्तर प्रदेश को राजनीति करके

बर्बाद एवं तबाह नहीं कर दिया, 50 साल पीछे नहीं कर दिया और अब तो सौ साल पीछे चला जाएगा। हम जानते हैं वहां क्या होने वाला है, किसी को कोई गलतफहमी नहीं होनी चाहिए। हम अपने सिद्धांतों पर कायम हैं और देश की खातिर काम करते रहेंगे। देश की एकता हमारे लिए स र्वोपरि है। हमारी प्राथमिकता देश है और राजनीति द्वितीय प्राथमिकता है । इसलिए देश की खातिर हम इन बातों को रख रहे हैं। पश्चिमी देशों से हमारे रिश्ते ठीक हुए थे लेकिन उन्हीं को आपने अब नाराज कर लिया। वे आपके बारे में क्या बोल रहे हैं। गुजरात में ये ताकतें पहले से ही लगी हुई थीं, शुरुवात तो पहले से हो चुकी थी। सन् 1980-81 में जब माननीय माधवसिंह सोलंकी ने गरीबों, दलितों और पिछड़े लोगों का एक गठबंधन तैयार किया था और 182 सीटों में से 140 सीटें उनके नेतृत्व में लोग जीत कर आये थे। वहां के जितने गरीब, अल्पसंख्यक और दलित लोग थे उनमें उन्होंने जागृति पैदा कर दी थी और उसी समय एक ाडयंत्र के तहत गरीबों और अल्पसंख्यकों के खिलाफ आंदोलन खड़ा किया गया था और उस समय माननीय सोलंकी जी की कांग्रेस ने भी मदद नहीं की थी वरना यह स्थिति आज गुजरात में नहीं आती। आज भी वही ताकतें गुजरात में आग लगा रही हैं और देश को तोड़ने पर आमदा हैं और दिल्ली की सरकार यहां हाथ-पर-हाथ रखकर बैठी है। यह तो वही बात हुई कि रोम जलता रहा और नीरो बांसुरी बजाता रहा। आज भी हमको नहीं लगता है कि सरकार की गुजरात में शांति लाने के लिए कोई सक्रियता है। सरकार गुजरात में और कितनी लाशें गिराना चाहती है और क्या सरकार पूरे हिंदुस्तान में आग लगाना चाहती है। लेकिन जब क्रिश्चियन्स पर हमले हो रहे थे और आपको प्र ाधान मंत्री जी इटली जाना था, पोप का सामना करना था, उनका विश्वास पाना था तब कैसे क्रिश्चियन्स पर हमले रुक गये थे। वह इसलिए रुक गये थे क्योंकि आपको इटली जाना था और वहां पर आपको सफाई देनी पड़ सकती थी लेकिन आज आप गुजरात में दंगे क्यों नहीं रोक रहे हैं।

उपाध्यक्ष जी, सरकार से बड़ा आतंक किसी का नहीं होता है। हम भी सरकार में रहे हैं। इस तरह के दंगों को हमने भी भोगा है । ... (व्यवधान) अगर दंगे न रुके तो मुख्यमंत्री या प्रधान मंत्री बने रहने का कोई औचित्य नहीं है। मुलायम सिंह मुख्यमंत्री नहीं बने, तो भी कोई चिंता की बात नहीं है लेकिन मस्जिद की हिफाजत करके हमने दिखा दिया था कि देश की एकता सर्वोपरि है। हमने दिखा दिया था कि लाखों लोग एक तरफ थे और पुलिस के थोडे से लोग आतंकवादियों का मुकाबला कर सकते हैं। प्रधान मंत्री जी, सरकार का आतंक बड़ा होता है और आज भी अगर सरकार का आतंक खड़ा हो जाएगा तो एक भी जान नहीं जा सकती है, एक भी दुकान नहीं जल सकती है और एक भी मौत नहीं हो सकती है।... (व्यवधान)

उपाध्यक्ष जी, मुजफ्फरनगर की बात करने वाले कोर्ट की अवमानना करते हैं। सुप्रीम कोर्ट ने मेरे पक्ष में फैसला दे दिया है, इसलिए मैंने कहा कि कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनको लोकतंत्र और न्यायालयों पर भरोसा नहीं है। मुजफ्फरनगर की घटना पर उच्चतम न्यायालय ने हमारे पक्ष में, जिला प्रशासन के पक्ष में स्ट्रक्चर पास किया है और कहा है कि बलात्कार का मामला झूठा था।

जितना रुपया मिल गया तो मिल गया लेकिन अब रुपया नहीं दिया जाएगा। ... (व्यवधान) क्या आप सच पर पर्दा डालेंगे। हम तो हमेशा इनकी बातें चुपचाप सुनते रहते हैं। हम सुप्रीम-कोर्ट को बधाई देना चाहते हैं कि उसने सच को बेनकाब कर दिया। और बता दिया कि दोाी कौन लोग थे जिन्होंने ाडयंत्र किया था। क्या आपने नहीं पढ़ा। मैंने पहले कभी इस बारे में जवाब नहीं दिया लेकिन आप न्यायपालिका के निर्णय की धज्जियां उड़ा रहे हो।... (व्यवधान) उसकी अवमानना कर रहे हैं ।... (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : मुलायम सिंह जी, आप और कितना टाइम लेंगे?

श्री मुलायम सिंह यादव : उपाध्यक्ष जी, माननीय प्रधानमंत्री जी ने घोाणा की थी कि मकान बनाने के लिये प्रति परिवार 40-50 हजार रुपया देंगे, ऐसा मैंने सुना और अखबारों में पढ़ा भी है। अब आप देखिये कि छोटे या बड़े मकान वालों को, दुकानदारों, फैक्ट्रियों वालों को क्या दे रहे हैं। यह पहला चैक 800 रुपये का है, दूसरा 1000 रुपये का है,और तीसरा चैक 1350 रुपये का है। ये कितना क्रूर मजाक कर रहे हैं? ये सहायता दे रहे हैं या जले पर नमक डाल रहे हैं? मैं इन चैकों की फोटो कापी दिखा रहा हूं। इनमें रुपये 700 का अगला चैक है, यह 850 रुपये का है, फिर 1000 रुपये का है और फिर 800 रुपये का चैक है।

श्रीमती जयाबेन बी.ठक्कर : उपाध्यक्ष महोदय, लेकिन मैं आपकी जानकारी में लाना चाहती हूं कि 651 लोगों को 15 लाख 82 हजार का पैमेंट हो गया है। मुलायम सिंह जी गलत बयानी कर रहे हैं।

श्री मुलायम सिंह यादव : मैं इसे सभा पटल पर रखता हूं। आप देखिये, क्या हो रहा है? मैंने अभी एक-दो नमूने दिये हैं। प्रधानमंत्री जी, आप इसकी जांच कराइये। गृह मंत्री जी आप भी इसे देखिये। वी.एच.पी. के श्री प्रवीन टोगाड़िया ‘ संदेश ’ अखबार में कह रहे हैं कि अगर गोधरा जैसी घटना घटेगी तो पूरे गुजरात में इस जैसा दंगा प्रभावी रूप से रहेगा। वह यह क्या कह रहे हैं? उन्होंने यह भी बतलाया कि गुजरात में जो कुछ हो रहा है उससे देश की तस्वीर खराब हो रही है, यह गलत है। उनका आगे कहना है कि पीरों की कभी बदनामी नहीं होती है। मैं आपको बतलाता हूं कि वहां क्या हो रहा है - आगजनी, महिलाओं के साथ बलात्कार, हत्या और उन्हें जलती हुई आग में फेंक देना। 10 दिन का बच्चा हो या 20 महीने का हो, उसे काटकर फेंक देते हैं। तभी मैं कहता हूं कि ऐसा तो वेदों में भी नहीं बताया गया कि राक्षसों का कभी इतना आतंक रहा था, ये लोग जो काम कर रहे हैं। उन्होंने जो कहा है, उससे मानवता कराह रही है। आज गुजरात सरकार मानवता को समाप्त करने की अपराधी है, वहां के मुख्यमंत्री अपराधी हैं ...(व्यवधान).

13.00 hrs.

श्री रतिलाल कालीदास वर्मा : मुलायम सिंह जी, आप सीनियर लीडर हैं। जो चैक्स हमने दिये हैं वे कैशडोल्स के हैं। यह पहले पांच रुपये मिलता था, अब यह 15 रुपये दिया गया है। पूरे देश के मुकाबले गुजरात में सबसे ज्यादा दिया है। परसों तक 38123 लोगों को 60.57 लाख रुपये बांटे गये हैं।... (व्यवधान)

श्रीमती भावनाबेन देवराजभाई चिखलिया (जूनागढ़) : आप जो चैक्स दिखा रहे हैं वे कैशडोल्स के हैं ये आवास के नहीं हैं। गुजरात में कैशडोल्स पहले के मुकाबले इस बार सबसे ज्यादा दिया गया है।... (व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : बहन जी, आप समय ले लीजिए उसके बाद मेरे बारे में खूब बोलिये। महोदय, मैं यह बात बड़ी गंभीरता से रखना चाहता हूं कि आर.एस.एस. के सुप्रीमो क्या कहते हैं - हमलावरों के समान खून-खराबा करो, प्रत्येक मोर्चे पर विजयी बनाने की जिम्मेदारी हम आर.एस.एस. वालों की है। ... (व्यवधान) यह क्या बोल रहे हैं, यह आपके आर.एस.एस. के सुप्र ीमो बोल रहे हैं। यह मेरे पास अखबार है, आप इसे देख लें, अखबार का नाम भी है। वी.एच.पी. के एक अग्रणी नेता है। जो ऐसा बोल रहे हैं ।...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : मुलायम सिंह जी, अब आप समाप्त कीजिए। मुझे लंच ऑवर के लिए ब्रेक करने के बारे में हाउस का सुझाव लेना है।

श्री मुलायम सिंह यादव : मैं पांच मिनट में खत्म कर रहा हूं। हम बाधा नहीं डालेंगे, हम आपकी आज्ञा का पालन करेंगे। हमारे भााण के बाद आप लंच कर दीजिए। मैं पांच मिनट से पहले समाप्त कर रहा हूं।

उपाध्यक्ष महोदय : मुझे अमैन्डमैन्ट्स भी मूव करने हैं।

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI (RAIGANJ): Sir, we have already decided in the Business Advisory Committee that there will be no lunch hour today.

MR. DEPUTY-SPEAKER: All right. As decided in the Business Advisory Committee, there will be no lunch hour today. There is no lunch hour, but you can have lunch one by one.

श्री मुलायम सिंह यादव : उपाध्यक्ष महोदय, मैं खत्म कर रहा हूं। वी.एच.पी. के और तमाम इस तरह के नेता हैं, हम कहां तक पढ़ें। ये बाकायदा वी.एच.पी. और आर.एस.एस. के नेताओं के बयान हैं। वह हत्या, आगजनी, महिलाओं के साथ बलात्कार, पुलिस संरक्षण में पिटाई यह सब

दिल्ली में बैठी केन्द्र सरकार की जानकारी में हुआ और गुजरात की सरकार को खुलकर संरक्षण और समर्थन दिया गया। इसलिए हम कहना चाहते हैं कि गुजरात की सरकार इन मानव हत्याओं की अपराधी है। वहां के मुख्य मंत्री इसके लिए दोाी हैं। इसलिए वहां के मुख्य मंत्री को तत्काल बर्खास्त किया जाए और वहां लोगों के पुनर्वास की व्यवस्था की जाए। चाहे वह हिन्दू हो, मुसलमान हो, उनमें ऐसी भावना पैदा की जाए कि उनमें अलग-अलग रहने की भावना खत्म हो। आपसी सद्भाव वहां मजबूत हो। वहां साम्प्रदायिक सद्भाव को बनाये रखने की जिम्मेदारी दिल्ली में बैठी केन्द्र सरकार की है। गुजरात सरकार से अब कोई उम्मीद नहीं की जा सकती। इसलिए प्र ाधान मंत्री जी जब आप भााण दें तो उसी वक्त वहां के मुख्य मंत्री का इस्तीफा लें। अगर वह इस्तीफा न दें तो उन्हें बर्खास्त किया जाए। सच्चाई यह है कि इसमें वहां के मुख्य मंत्री दोाी और अपराधी साबित हो रहे हैं। इसलिए हम केन्द्र सरकार से कहना चाहते हैं कि दिल्ली में बैठी केन्द्र सरकार भी इसमें अक्षम और दोाी है। संविधान में कहा गया है कि इन वर्गों की सुरक्षा करने का दायित्व केन्द्र सरकार का था, जिसे वह निभा नहीं पाई है। इसलिए हम केन्द्र सरकार तथा गुजरात सरकार की इस सदन के माध्यम से घोर निन्दा करते हैं।

MR. DEPUTY-SPEAKER: Motion moved:

> "That this House expresses its grave concern over the failure of the administration in ensuring the security of minority community in various parts of the country, specially in Gujarat, and urges upon the Government to take effective steps to restore confidence of the minority communities and to protect them."

MR. DEPUTY-SPEAKER: Hon. Members, I have received notices of amendments from Shri G.M. Banatwalla, Shri Rupchand Pal, Dr. Raghuvansh Prasad Singh, Shri Somnath Chatterjee, Shri Basu Deb Acharia, Shri Prabodh Panda, Shri Ajoy Chakraborty and Shri Priya Ranjan Dasmunsi. The amendments have already been circulated.

The amendments given by Shri Rupchand Pal, Dr. Raghuvansh Prasad Singh, Shri Somnath Chatterjee, Shri Basu Deb Acharia, Shri Prabodh Panda and Shri Ajoy Chakraborty are identical.

Shri G.M. Banatwalla has indicated that he would move his amendment No. 2. He may move his amendment if he so desires.

SHRI G.M. BANATWALLA (PONNANI): Sir, I beg to move:

That in the motion,--

after the words "effective steps",

insert "and, in case of Gujarat, to advise the President to take action under Article 356,"

(2)

Sir, should I make a speech also?

MR. DEPUTY-SPEAKER: No. You are just required to move your amendment.

SHRI RUPCHAND PAL (HOOGLY): Sir, I beg to move:

That in the motion,--

for the words "in ensuring the security of minority community in various parts of the country, specially in Gujarat",

substitute "in preventing large scale killings, loot and arson of innocent citizens, particularly of the minority community, in the State of Gujarat, which are still continuing unabated, and the total failure of the Government to provide adequate protection, relief and rehabilitation of the victims."

(3)

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI : Sir, I beg to move:

That in the motion,--

for the words "in ensuring the security of minority community in various parts of the country, specially in Gujarat",

substitute "in preventing large scale killings, loot and arson of innocent citizens, particularly of the minority community, in the State of Gujarat, which are still continuing unabated, and the total failure of the Union and the State Governments to provide adequate protection, relief and rehabilitation of the victims."

कुमारी उमा भारती (भोपाल) : उपाध्यक्ष महोदय, आज नियम 184 के अंतर्गत जिस प्रस्ताव को आपने स्वीकार करके चर्चा की अनुमति दी है, मैं कहना चाहती हूं कि यह बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति में चर्चा हो रही है। इस चर्चा में ऐसा कुछ भी नहीं है जिसमें किसी को खुशी हो। इस चर्चा का जो मूल प्रसंग है गुजरात और देश के अन्य हिस्से, जहां पर अत्याचार होते हैं, वह बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएँ हैं। यह किसी के लिए भी आनन्द का विाय नहीं है।

जब हमारे प्रधान मंत्री जी गुजरात विज़िट पर गए थे, संयोग से मैं भी उनके साथ थी। जिस तरह से वह गुजरात की स्थिति को देखकर विचलित हुए और जिस तरह से उन्होंने कहा कि गुजरात की घटनाओं के कारण मेरा माथा शर्म से झुक गया है और जिस तरह से उन्होंने व्यथित होकर कहा कि हम दुनिया के सामने मुंह दिखाने के लायक नहीं रहे, जब प्रधान मंत्री जी ने ये उद्गार कहे, उस समय मैं उनके पीछे खड़ी थी। जिस तरह से वह व्यथित थे, जिस तरह से उनकी आंखों में आंसू भरे हुए थे, क्योंकि गुजरात की घटना ऐसे समय पर घटी है जबकि पूरे संसार में भारत के बारे में एक ऐसी राय बन रही थी, भारत तरक्की कर रहा था, भारत का सम्मान बढ़ रहा था और हमारे पड़ोसी देश आतंकवादियों को शह देने वाला देश प्रमाणित होने की स्थिति में आता जा रहा था, पूरी दुनिया उसको कॉर्नर करती जा रही थी, उस समय गुजरात की दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटी।

सबसे पहले मैं यह बता दूं कि गुजरात की घटना, गोधरा से लेकर आज इस घड़ी तक जो कुछ भी वहां घट रहा है, वह किसी के लिए भी प्रसन्नता या गर्व की बात नहीं है। लेकिन नियम 184 के अंतर्गत आपने जब इस चर्चा के लिए स्वीकृति दी और उसके लिए स्वीकृति देते समय आपने अपनी तरफ से जो आदेश दिया, उसको मैं यहां पर थोड़ा सा सदन को याद दिलाने के लिए पढ़ रही हूँ, यद्यपि उसमें कुछ अमेन्डमेंट भी आ गए हैं।

> "That this House expresses its grave concern over the failure of the administration in ensuring security of minority community in various parts of the country, specially in Gujarat, and urges upon the Government to take effective steps to restore confidence of the minority communities and to protect them."

<u>13.10 hrs.</u> (डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह <u>पीठासीन</u> हुए)

सर, इसका मतलब यह है कि इस चर्चा को स्वीकार करते हुए आपने जो चिन्ता व्यक्त की है वह गुजरात की घटनाओं पर विशो रूप से और इन जनरल देश भर में और अन्य राज्यों में भी जो इस प्रकार की घटनाएं होती हैं, उनके बारे में भी हम यहां पर चर्चा कर सकते हैं।

इसके साथ-साथ मैं एक निवेदन और करना चाहती हूं सदन से क्योंकि आज मेरी पार्टी ने और आपने मुझे इस विाय पर बोलने का अवसर दिया है। इसलिए मैं आज भारतीय जनता पार्टी की एक कार्यकर्ता की तरह नहीं बोलना चाहती हूं। जिनसे मैंने सन्यास की दीक्षा ली है, वे मेरे गुरू कर्नाटक के हैं, उडीपी के। उनको सभी लोग गुरु-तुल्य मानते हैं। जाफर शरीफ जी, आस्कर फर्नान्डीज जी, माननीय अटल बिहारी जी, सब उन्हें गुरू-तुल्य मानते हैं और उस मठ की परम्परा में, दलितों और पिछड़ों को सैकड़ों वाे पहले ही मंदिरों में पूजा करने का अधिकार हमारी गुरू परम्परा में दिया गया है। इसलिए मैं आज इस अवसर को बहुत अच्छा मौका मानती हूं।

श्री रामदास आठवले (पंढरपुर) : सभापति जी, दलितों को मंदिर में प्रवेश मिलना चाहिए और यदि आप यह कहती हैं तो हम आपका अभिनन्दन करते हैं।

सभापति महोदय : श्री रामदास आठवले, कृपया आसन ग्रहण कीजिए।

कुमारी उमा भारती : सर, मैं इसको एक बहुत अच्छा अवसर मानती हूं इस बात के लिए कि हम समस्या की जड़ में जाएं। और यह इसलिए कि यह सदन सर्वोच्च सदन है और सभी दलों के लोग इस घटना को लेकर चिन्तित हैं और जब सभी लोग इन घटनाओं को लेकर चिन्तित हैं, तो हो सकता है कि आज शाम होते-होते हम एक निश्कर्ा पर पहुंच जाएं कि हम इन समस्याओं को हमारे देश से ज़ड़ से उखाड़कर कैसे फेंका जा सकता है। इसलिए मेरा आपके माध्यम से सदन से पूरे सदन से निवेदन है कि आज की चर्चा में किसने कितने मारे, तब किस की सरकार थी, इसमें हम न जाएं, तो बहुत अच्छा होगा बल्कि इन हत्याओं और अत्याचारों को रोका कैसे जाए इसमें जाएं, तो अच्छा होगा और इसकी जड़ में जाएं कि यह कैसे रोकी जा सके, तो बेहतर होगा।

सर, सबसे पहले तो जिस तरह से 184 की डिबेट के लिए हमारे सामने बैठे प्रतिपक्ष के लोगों ने संसद में गतिरोध पैदा किया, यह तो इनके चरित्र का हिस्सा है। जब-जब ये सरकार में नहीं होते हैं, ये दूसरों को सदन में सुख से बैठने नहीं देते। बिना पावर के इनकी आत्मा इतनी बेचैन हो जाती है कि पावर प्राप्त करने के लिए तिलमिला उठते हैं। आप शुरू से स्मरण कीजिए। ये बिना कुर्सी के रह नहीं सकते। महोदय, 1977 में जब जनता पार्टी की सरकार बनी, चौ. चरण सिंह को समर्थन देकर आपने थोड़े समय के लिए प्रधान मंत्री बनाया। फिर ये ऐसे छटपटाए, ऐसे भूखे मरे, बिना कुर्सी के। अन्त में जोड़-तोड़ कर के, तिकड़म कर के, ये वापस लौट आए। इसके बाद में, जब चन्द्र शेखर जी प्रधान मंत्री बने और देश की समस्याओं के निदान के लिए वे जब बहुत अच्छे निर्णय कर रहे थे, उसी समय अचानक इनमें बेचैनी फैली। वी.पी.सिंह जी के बाद जब चन्द्र शेखर जी प्रधान मंत्री बने तब भी इन्होंने अस्थिरता पैदा की और गतिरोध पैदा किया।

इसलिए सबसे पहली चीज तो यह है कि अगर यह गुजरात की घटना नहीं हुई होती, तब भी कांग्रेस को अपने चरित्र के मुताबिक, कुछ न कुछ गतिरोध, कुछ न कुछ अस्थिरता सदन में पैदा करनी ही थी क्योंकि ये तो बिना सरकार के, बिना कुर्सी के भूखों मरने की स्थिति में आ जाते हैं। इसलिए इनकी ऐसी बेचैन आत्मा हो जाती है और तब तक इनको शांति नहीं मिलती जब तक कि ये कुर्सी पर वापस न बैठ जाएं। आप देख लीजिए, जब से एन.डी.ए. की सरकार बनी है, तब से इनकी तो पात्रता भी नहीं है कि ये 184 के अन्तर्गत रखने के लिए कोई बात कह सकें। जब से एन.डी.ए. की सरकार बनी है, तब से आप याद करिए, कुछ न कुछ, हर महीने, हर हफ्ते, जब भी सदन चला, ये करते रहे। अन्त में तो ऐसी स्थिति आ गई 1999 में कि देश का प्यार है हमारे प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के प्रति, नहीं, तो हमारी नेता प्रतिपक्ष आदरणीय सोनिया गांधी जी, एक उल्टा-सीधा कागज, झूठे-सच्चे आंकड़ों का लेकर, राट्रपति जी के पास पहुंच गई थीं कि मैं तो प्रधान मंत्री बनना चाहती हूं। मैया मैं तो चान्द खिलौना लेहूं। उस समय तो ये पहुंच गई थीं की मुझे चान्द चाहिए। उसके बाद, इनकी बेचैनी के कारण देश को जबर्दस्ती इलैक्शन फेस करना पड़ा। इसलिए जब 184 के अन्तर्गत डिबेट हो रही हो, तो जैसा मैंने सबसे पहले कहा कि हम इस डिबेट में कोई राजनीति न करें, लेकिन कांग्रेस की इस डिबेट में पार्टीसिपेशन की

जो पात्रता है, उसको जरूर चुनौती देना चाहूंगी कि इनकी क्या पात्रता है। उसके बाद मैं गुजरात की तरफ लौटूंगी।

सबसे पहले, तो मैं बड़े भाई साहब, मुलायम सिंह जी के भााण से बहुत आश्चर्यचकित हूं।

रेस्ट हाउस में मायावती के बाल खिंचवाकर अपमानित करने वाला मुलायम सिंह ...(व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : यह सब गलत है। आप गलत मत बोलिये। कोर्ट में यह मुद्दा चला गया है। उसमें हम बरी हुए हैं। दूसरे कोर्ट में उस पर स्टे है। ... (व्यवधान) यह ाडयंत्र है, गलत है। ... (व्यवधान) न्यायाधीश ने पूछा कि कहां चोट लगी है, कहां फटे कपड़े हैं। ...(व्यवधान)

हमें पूरा का पूरा बरी कर दिया है। दूसरे कोर्ट में उस पर स्टे है। ... (व्यवधान)

कुमारी उमा भारती : अगर आप कोर्ट का इतना सम्मान करते हैं तो गोधरा और गुजरात की घटना के बारे में, अगर मैं गलत कोट नहीं कर रही हूं तो कर्नाटक के चीफ जस्टिस ... (व्यवधान) मैं आपके माध्यम से इनको बोल रही हूं कि कर्नाटक के चीफ जस्टिस श्री त्रिवातिया और उनके नेतृत्व में श्री जे.सी. बत्रा, श्री किशन सिंह अरिया, श्री जवाहर लाल पाल और प्रो. बी. के कोठारिया गुजरात गये थे। यह हाई कोर्ट के किसी चीफ जस्टिस की गुजरात और गोधरा पर रिपोर्ट है। वैसे तो यह रिपोर्ट बहुत लम्बी है लेकिन उन्होंने जो कन्कलूजन निकाले हैं, उसकी दो-तीन लाइनें मैं आपकी अनुमति से यहां पढ़कर सुना रही हूं। मैं आपके माध्यम से पूछ रही हूं कि अगर श्री मुलायम सिंह जी, कांग्रेस के नेतागण और अन्य सभी लोग कोर्ट का आदर करते हैं तो इन लाइनों को अपने सिर-माथे पर रखकर स्वीकार करें। हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस की रिपोर्ट है जिसके नेतृत्व में वे लोग गये थे जो किसी राजनीतिक दल से संबंधित नहीं हैं। ...(व्यवधान)

मैंने पहले स्वीकार किया है। ...(व्यवधान) मैंने पहले ही कहा है कि इस रिपोर्ट में क्लीयर नहीं है कि वे कहां के चीफ जस्टिस हैं। मैंने पहले ही कहा था, मैं इस गलती को स्वीकार करती हूं क्योंकि इस रिपोर्ट में कोई मैंशन नहीं है कि वे कहां के हैं। ... (व्यवधान) राज्य की गलती हो सकती है। ... (व्यवधान) इस करेक्शन को मैं स्वीकार करती हूं। उस रिपोर्ट में कहा गया है कि

Godhra And After: A Field Study

The Study Team concludes by saying:

"Burning of 58 Hindu pilgrims at Godhra on 27.02.2002 was an act of international terrorism carried out with the evil objective of pushing the country into a communal poison. The plan was to burn

> the entire train with more than 2000 passengers in the wee hours of 27.02.2002. "

श्री मुलायम सिंह जी आप क्या बात करते हैं ? आप कह रहे हैं कि उन लोगों ने दंगों को इन्वाइट किया। आप कह रहे हैं कि ट्रेन के अंदर जो बेकसूर महिलाएं और बच्चे बैठे हुए थे, उन्होंने उपद्रव किया इसलिए दंगे हो गये। आप कह रहे हैं कि खोमचे वालों को लूटा गया। ...(व्यवधान) आप कह रहे हं कि हिन्दुओं ने दंगे किये इसलिए ये दंगे हुए। ... (व्यवधान)

कुंवर अखिलेश सिंह (महाराजगंज, उ.प्र.) : उपाध्यक्ष महोदय, यह कभी नहीं कहा। ... (व्यवधान)

आप गलत बयानी कर रही हैं। ...(व्यवधान)

कुमारी उमा भारती : यह रिपोर्ट क्या कह रही है ? ... (व्यवधान)

कुंवर अखिलेश सिंह : उपाध्यक्ष महोदय, जिस दिन गोधरा की घटना हुई थी, उसी दिन हमने और श्री रामजी लाल सुमन ने कार्य स्थगन का प्रस्ताव दिया था और उस घटना की निंदा की थी।

कुमारी उमा भारती : मैं निंदा और प्रशंसा की बात नहीं कर रही हूं। मैं मानती हूं कि आपने निंदा की। अभी-अभी श्री मुलायम सिंह जी ने भी निंदा की। किन्तु, परन्तु और लेकिन लगाकर निंदा की । मैं उसे स्वीकार करती हूं। मैं आपकी अनुमति से रिपोर्ट की कुछ और लाइनें पढ़ रही हूं। उसमें आगे लिखा है :

> "The plan was to burn the entire train with more than 2000 passengers in the wee hours of 27.02.2002. It was a terrorist action plan "

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI (RAIGANJ): Mr. Chairman, Sir, we would like to know whose report is she quoting… (*Interruptions*)

KUMARI UMA BHARATI: Sir, I am not yielding… (*Interruptions*)…I will not yield… (*Interruptions*)

Sir, the report further says:

> "It was a terrorist action plan that partly says that perpetrators of terrorist acts had received support from *Jehadi* elements operating from Godhra. These include some Congress members of Nagar Palika. "

… (*Interruptions*)

उपाध्यक्ष महोदय, यह रिपोर्ट मैं सदन के पटल पर रखती हूं। *… (व्यवधान)

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI : Mr. Chariman, Sir, the Report which she is quoting should be placed on the Table of the House.… (*Interruptions*)…The Home Minister should reply about the link of terrorism in this incident… (*Interruptions*)…But a Report is being quoted by a Cabinet Minister of the Government. That should be authenticated… (*Interruptions*)

Let the report quoted by the Cabinet Minister, a responsible member of the Council of Ministers, be authenticated and placed on the Table of the House; and

*Laid on the Table of the House.

the hon. Home Minister should justify the international connection of terrorism, in the light of the report which has been quoted by the member of the Council of Ministers. … (*Interruptions*)

कुमारी उमा भारती : मैं सदन के पटल पर सी.डी. कैसेट रख रही हूं जो साबित कर रही है कि यह रिपोर्ट और सी.डी. कैसेट… (व्यवधान) सभापति महोदय, आप इनसे पूछिए कि ये किस रूल के अन्तर्गत खड़े हुए हैं।… (व्यवधान) जब मुलायम सिंह जी बोल रहे थे तो हमारे किसी भी सदस्य ने गतिरोध पैदा नहीं किया।… (व्यवधान) जब भी कोई माननीय सदस्य खड़े हो तो आप यह पूछिए कि वे किस रूल के तहत खड़े हुए हैं।… (व्यवधान)

श्री सोमनाथ चटर्जी (बोलपुर) : उमा जी, तारीख बताइए।

… (*Interruptions*)

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI : Sir, I want your observation on this. She is a Minister and she is speaking on behalf of the Government. The report must be authenticated and placed on the Table of the House.

The reaction of the Government must be made by the hon. Home Minister. … (*Interruptions*)

कुमारी उमा भारती : किस प्रकार गुजरात के कांग्रेस के नेता नगरपालिका, गोधरा के काउंसलर का अभिनन्दन कर रहे हैं, जो लोग ट्रेन को जलाने के लिए अगुवाई कर रहे थे।…(व्यवधान) यह सी.डी. कैसेट… (व्यवधान)

सभापति महोदय : क्या रिपोर्ट है, उसे सदन के पटल पर रखिए।

… (*Interruptions*)

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI (RAIGANJ): Sir, I demand that it should be placed on the Table of the House and the Cabinet Minister should take full responsibility for this. … (*Interruptions*) The document quoted by the Cabinet Minister, as having said by the Chief Justice of the High Court must be authenticated and placed on the Table of the House, along with the date when he said it. … (*Interruptions*)

श्री लाल मुनी चौबे : अगर हम भी ऐसा करेंगे तो ये लोग बोल नहीं पाएंगे।… (व्यवधान)

सभापति महोदय : यह ठीक नहीं है। कृपा करके आसन ग्रहण कीजिए।

…(व्यवधान)

श्री लाल मुनी चौबे (बक्सर) : क्या ये सुनने के लिए तैयार हैं?… (व्यवधान)

सभापति महोदय : श्री चौबे, कृपा करके आसन ग्रहण कीजिए। शान्ति रखिए।

…(व्यवधान)

कुमारी उमा भारती : सभापति महोदय, मैं सदन के पटल पर यह रिपोर्ट और सी.डी. कैसेट रख रही हूं। यदि मैं गलत साबित होऊं तो सदन जो दंड देगा, मैं उसे स्वीकार करूंगी। अगर इस कैसेट को अभी देखना है तो मैं आपके सामने इसे रख रही हूं। आप दासमुंशी जी को अपने कमरे में बिठा दीजिए और वहां सी.डी. कैसेट लगवा दीजिए। …(व्यवधान)

श्री चन्द्रशेखर (बलिया, उ.प्र.) : सभापति महोदय, मैं आपसे निवेदन करूंगा कि इस जोश में ऐसी परम्परा नहीं डालनी चाहिए जो परम्परा सदन की मर्यादा के अनुरूप न हो। …(व्यवधान) यहां

अखबारों को उद्धृत करने की परम्परा है, वह होता है लेकिन अखबार सदन के पटल पर नहीं रखे जाते। अगर कोई रिपोर्ट है, जो सरकारी नहीं है, कोई अधिकृत पार्लियामैंट से पेश रिपोर्ट नहीं है, तो उमा भारती जी यदि उसे कोट करती हैं, कोट करने दीजिए लेकिन सदन के पटल पर उसे रखने और अधिकृत ...(व्यवधान) मुलायम सिंह जी ने किया हो चाहे आपने किया हो। आप कृपा करके इसे सदन के पटल पर रखने की अनुमति मत दीजिए। वे जो भााण करती हैं, उसे आप सुनिए।... (व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : मैंने अधिकारी और अखबार को कोट किया है।... (व्यवधान)

कुमारी उमा भारती : जैसे को तैसे का आचरण तो करना ही पड़ता है। इसलिए मैंने सदन के पटल पर रखने की बात कही।

सभापति महोदय : लेकिन शीलम् परम भूाणम्।

कुमारी उमा भारती : महोदय, आप भी सम्भलकर बोलिएगा, क्योंकि आपके भी दाढ़ी है। मुलायम सिंह जी ने अभी दाढ़ी की बात कही थी। पता नहीं वहां दाढ़ी को लेकर कोई प्राब्लम है या नहीं, लेकिन यहां आ सकती है।

मैं मुलायम सिंह जी को बताना चाहती हूं कि मेरे पास पूरी रिपोर्ट है। मैं यहां रख रही हूं। मुझे पढ़कर नहीं सुनाना चाहिए, क्योंकि बहुत लम्बी रिपोर्ट है।

जिस प्रकार से वहां पर घायलों को, विकलांगों को और मृतकों को सम्भाला गया, यह गुजरात के इतिहास में पहली बार हुआ है। गुजरात के इतिहास में तो 1410 से दंगे हो रहे हैं। जो रिकार्ड मौजूद है, उसके मुताबिक गुजरात में पहला दंगा 1410 में हुआ था। उसके बाद लगातार दंगों का इतिहास गुजरात में रहा है। सबसे भयानक दंगा 1969 में वहां हुआ था। उस समय वहां हितेन्द्र देसाई की सरकार थी। उस समय एक हजार लोग उस दंगे में मरे थे। दो महीने तक आर्मी नहीं बुलाई गई थी। छः महीने तक दंगा चला था। उन दंगों की रिपोर्ट यह बताती है कि कांग्रेस के आपसी झगड़े के कारण वे दंगे भी इस दंगे की तरह कांग्रेस के लोगों ने ही शुरू कराए थे। ... (व्यवधान) उसके बाद 1985 में दंगा हुआ, जिसमें सैंकड़ों लोग मरे। उसके बाद 1989 में जो दंगा हुआ, उसमें भी सैंकड़ों लोग मरे। उसके बाद 1992 में और 1993 में गुजरात में दंगे हुए और सैंकड़ों लोग मरे।

अभी जब गोधरा में घटना घटी। जब वह घटना याद आती है, मुझे सबसे ज्यादा दुख इस बात का होता है कि इस देश का हिन्दू क्या सोचता होगा कि जब उसकी हत्या की भर्त्सना भी कोई करता है तो किंतु और परंतु लगाकर करता है। जिससे इस देश का हिन्दू यह सोचने के लिए मजबूर हो जाए कि चूंकि मैं हिन्दू हूं, अगर मैं जिंदा जला दिया जाऊं तो उसमें किंतु या परंतु

लगेगा, सीधे-सीधे उसकी निंदा नहीं होगी। …(व्यवधान) 16 घंटे के अंदर गुजरात में आर्मी बुला ली गई। आजादी के इतिहास में पहली बार ऐसा दंगा हुआ, जिसमें तीन दिन के अंदर 100 लोग पुलिस फायरिंग से मारे गए। कल रात तक के जो मुझे आंकड़े उपलब्ध कराए गए हैं, उसके अनुसार 846 लोगों में से 179 लोग अकेले पुलिस फायरिंग से मरे। जिस प्रकार से तत्काल आर्मी बुलाई गई पूरे गुजरात के 18,000 गांवों में से केवल 40 जगह दंगा प्रभावित हुईं। जिस प्रकार से तुरंत रिलीफ आपरेशन शुरू हुआ, सिक्योरिटी अलर्ट की गई, पुलिस को लगाया गया, रैपिड एक्शन फोर्सेज को लगाया गया, उसके बारे में भी हमें देखना चाहिए। मैं यह जरूर मानती हूं कि दंगे की विभीाकिा भयंकर थी। गुजरात की घटना का जो प्रभाव लोगों के मन में था, वह भीाण था। उसका एक और विशो कारण था, जिसने दिलों को चीरकर रख दिया। वह विशो कारण यह था कि जब माननीय प्रधान मंत्री गोधरा में गए, मैं भी उनके साथ थी। वहां जो जांच चल रही है, उस जांच से सम्बन्धित एक अधिकारी वहां मौजूद था। मैंने उनसे पूछा कि क्या यह सत्य बात है कि फायर ब्रिगेड जब बोगी में लगी हुई आग को बुझाने के लिए गई, तो उसका रास्ता रोका गया। इस पर उन्होंने कहा कि करीब सात-आठ मिनट तक फायर ब्रिगेड का रास्ता रोका गया। मैं निवेदन करना चाहती हूं, जैसा मैंने पहले कहा था कि हम कोई कम्पैरिजन नहीं करना चाहते। यहां पर कोई यह दावा नहीं कर सकता कि हम रक्षक हैं और तुम भक्षक हो या तुम भक्षक हो और हम रक्षक हैं। ऐसा दावा आज यहां होना भी नहीं चाहिए। आज इस डिबेट को एक अवसर के रूप में मानना चाहिए कि हम एक निर्का पर पहुंच जाएं कि इस समस्या का जड़ से निदान हो।

13.29 hrs. (उपाध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए)

लेकिन मैं याद दिलाना चाहती हूं कि जब उड़ीसा में घटना घटी थी और ग्राहम स्टेंस और उसके दो बच्चों को दरिंदगी से जिस प्रकार जलती हुई जीप में जिंदा जला दिया गया, महीनों तक उसकी चर्चा हुई। लेकिन जिस तरह से गोधरा में उस बोगी में एक मां अपने बच्चे को सीने से चिपकाए थी, जब आग लगातार उस बोगी में फैल रही थी तो उस मां को लगा कि शायद आग बुझाने के लिए कोई आ जाएगा, तब तक मैं अपने बच्चे को बचा लूं। इस पर मां ने बच्चे को नीचे रखा और खुद उस पर लेट गई। यह देखिए उस जली हुई अवस्था में भी मां उस बच्चे के साथ चिपके हुई है। बच्चा नीचे पड़ा हुआ है और वह उसके ऊपर लेटी हुई है। इस आशा से लेटी है कि शायद कोई इस आग को बुझाने के लिए आ जाएगा। आग को बुझाने के लिए जो फायर ब्रिगेड आ रही थी, कुछ पिशाच, कुछ राक्षस उस फायर ब्रिगेड का रास्ता रोक रहे थे।

उस फायर ब्रिगेड का रास्ता रोकने वालों में कांग्रेस के काउंसिलर भी थे। …(व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: If there is any unparliamentary or indecent expression which has to be expunged, that will be taken care of. But for heaven's sake, please hear.

… (*Interruptions*)

SHRI SONTOSH MOHAN DEV (SILCHAR): Sir, whenever any allegation is made, it must be substantiated. She cannot speak like this. We have also read newspapers… (*Interruptions*). She is making an allegation. … (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: What is the allegation?

… (*Interruptions*)

कुमारी उमा भारती : मेरे पास सी.डी. है। जो मैं कह रही हूं अगर वह इस सी.डी. में न निकले तो पूरा सदन जो दंड देगा, वह मैं स्वीकार करने के लिए तैयार हूं।…(व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Now, from your side, when you speak, you can refute it. You can refute it in your speech.

… (*Interruptions*)

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI : Sir, a Commission of Inquiry has been announced by the Government of Gujarat to go into the episode of Godhra. The Home Minister himself has said that the Gujarat Government has appointed an Inquiry so let us not interfere. Now, how can the lady Member of the Government accuse that there is a direct involvement of the Congress Councillor? … (*Interruptions*) Sir, the Commission is yet to report. If she accuses like this, then she will be responsible for the breach of privilege of the House and not myself… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: You have a remedy. You can move a privilege motion on this. If anybody is accusing or misleading, there is a remedy. Let us go according to rules, whether it is this side or that side. I am only appealing to you if she goes on record on something, you can also refute it in your speech. Let us have a peaceful hearing.

कुमारी उमा भारती : हिन्दू और मुसलमान दोनों ने एक दूसरे को बचाया है। …(व्यवधान) सत्य सुनने को ही नहीं देखने को भी मिलेगा और बेकार में प्रियरंजन दास मुंशी जी, …(व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Again, you are standing up. We are discussing a serious matter.

… (*Interruptions*)

कुमारी उमा भारती : जिस तरह से वहां की दोनों कम्युनिटीज के लोग एक-दूसरे के बचाव के लिए आगे आये हैं, उसने एक अलग ही उदाहरण दिया है।…(व्यवधान) वहां की मुस्लिम कम्युनिटी के जो अपने स्टेटमेंट्स थे कि "Today, we are alive because of our Hindu neighbours." जिस तरह से मुस्लिम समाज अपने हिन्दू पड़ौसी को बचाने के लिए आगे आया क्योंकि मैं यह निवेदन करना चाहती हूं कि मैं दंगों पर कोई फिगर्स कोट नही करना चाहती हूं क्योंकि जो मरे हैं, वे इंसान हैं और जिन्होंने मारे हैं, वे हैवान हैं, राक्षस हैं, उनका कोई धर्म नहीं है। मरने वालों का धर्म है कि वह मनुय हैं लेकिन मारने वालों का एक ही नाम है कि वे राक्षस हैं। इसलिए मैं कोट नहीं कर रही हूं लेकिन बहुत बड़ी संख्या में वहां दलित समाज मारा गया है और उनके बचाव के लिए अगर कोई आगे आया तो वह मुस्लिम समाज आगे आया और मुस्लिम समाज के बचाव लिए अगर कोई आगे आया तो वह हिन्दू समाज आगे आया। लेकिन जब दिल्ली की हवाओं में तैरती हुई मैंने एक घटना सुनी और आज तक जिसका कोई सबूत नहीं मिला है कि एक गर्भवती महिला का पेट फाड़ा गया, उसमें से बच्चा निकाला और उसे भाले पर लटकाया और उसका जूलूस निकाला गया। दिल्ली में इस घटना का बड़ा हल्ला था और जब मैं माननीय प्र ाधान मंत्री जी के साथ वहां गुजरात में गई तो वहां पर भी एक-दो जगह पर इसका जिक्र हुआ था। मैंने रात को मुख्य

मंत्री जी से पूछा, मैंने वहां के अधिकारियों से पूछा और कहा कि पता लगाओ कि वह महिला कौन थी? वह बच्चा कौन था और वह क्या घटना थी लेकिन आज तक उसका कोई पता नहीं है।… (व्यवधान) शुरूआत में ही प्रिवेंटिव एक्शन के तौर पर जो 36000 लोग गिरफ्तार किये गये थे, उनमें से 29000 हिन्दू समुदाय के लोग थे। मैं यहां इसिलए बोल रही हूं ताकि यह गलतफहमी पैदा न की जाये जो की गई कि पुलिस ने कोई एक्शन नहीं लिया।

गुजरात में जैसा पुलिस ने एक्शन लिया है, वैसा शायद आजादी से लेकर आजतक किसी भी दंगा प्रभावित राज्य में नहीं लिया गया है। …(व्यवधान) महोदय, अभी तक दो रेप केसेज दर्ज हुए हैं। इसके अलावा कई समाज सेवी संगठनों के लोग यह कहते हैं कि ऐसा हुआ और वैसा हुआ। एक भी समाज सेवी संगठन के महिला या पुरुा, इन दो केसेज के अलावा, पुलिस के पास यह कहने के लिए नहीं गए कि उनके साथ इस प्रकार की घटना घटी है और यह आरोप दर्ज किया जाए। महिला का पेट फाड़कर बच्चे को निकाल कर भाले पर घुमाने की घटना का आज तक कोई सबूत नहीं दे पाये हैं कि कहां की महिला थी, कौन महिला थी, कहां घटना घटी - आज तक कोई नहीं बता पाया है। यहां एक संगठन का मैं नाम नहीं लूंगी, क्योंकि उसके सदस्य यहां पर

मौजूद नहीं है। उस संगठन ने एक रिपोर्ट बनाई है। मैं आज इस सदन से यह निवेदन करती हूं, इस तरह की रिपोर्ट बनाकर उसका इन्टरनेशनल स्तर पर प्रचार करवाया गया। मेरा आपके माध्यम से आग्रह है, गुजरात की सरकार से भी मैं निवेदन करूंगी, इस डिवेट में यह बात शामिल हो जाए, इसलिए मैं कह रही हूं, उस संस्था का नाम ' सहमत' है। उस रिपोर्ट में आए फैक्ट की जांच कराई जाए। अगर वह फैक्ट सही है, तो दोयियों को न छोड़ा जाए। अगर वह फैक्ट सही है तो दोयियों का बचाव करने वालों को न छोड़ा जाए। अगर वह फैक्ट सही है, तो उन फैक्ट छुपाने वालों को न छोड़ा जाए, लेकिन अगर वह फैक्ट गलत है, तो इस संस्था के लोगों को नहीं छोड़ा जाना चाहिए, जिन्होने इस प्रकार से भारत को बदनाम किया है, इन्टरनेशनल स्तर पर बदनाम किया है। इंटरनेशनल लैवल पर हमारी छवि खराब हुई है। हिन्दू और मुसलमानों के संबंध जो खराब किए है और अन्तरराट्रीय स्तर पर जो भारत की बदनामी हुई है, उसमें उनका बड़ा भारी योगदान है। ...(व्यवधान)

श्री रूपचन्द पाल : इसकी जांच हो जाए। ...(व्यवधान)

कुमारी उमा भारती : महोदय, गुजरात में नार्मेल्सी आ रही है। 18 हजार गांवों में से 40 जगहें, जो दंगा प्रभावित रहे हैं, इसके बाद गुजरात में पंचायत के चुनाव हो गए। छः हजार के करीब हाजी हज करके लौट आए, जिनका गांवों में हिन्दू और मुसलमानों ने मिलकर स्वागत किया। टाकोरजी का दर्शन करने के लिए डेढ़ लाख लोग गए। 96 से 98 प्रतिशत, दो फेसिज़ में 10वी और 12वीं कक्षाओं के के एग्जाम हुए, जिनमें बच्चे परीक्षाओं में भाग लेने के लिए गए। कांग्रेस के दो पदाधिकारियों ने एग्जामिनेशन्स का विरोध किया, लेकिन अच्छी बात यह है कि वहां मेरे बड़े भाई कमल नाथ जी उपस्थित थे, उन्होंने इस बात की निन्दा की और उन लोगों को डांटा। मेरा आपके माध्यम से सोनिया जी से निवेदन है कि गुजरात में नार्मेल्सी लाने के लिए नरेन्द्र मोदी जी की सरकार प्रयत्नशील है। आप थोड़ा अपनी पार्टी के लोगों को समझाइए कि इस प्रकार की हरकतें करके, जिस प्रकार का व्यवधान वे वहां खड़ा कर रहे हैं, वह व्यवधान न खड़ा करें। गुजरात में नार्मेल्सी आती जा रही है, आ चुकी है। जो छुट-पुट घटनायें हैं, उनके कुछ कारण हैं और उन घटनाओं पीछे के कुछ निहित स्वार्थ हैं, उन निहित स्वार्थों के प्रति सबको सावधान रहना चाहिए। सभी राजनीतिक दलों के लोगों को सावधान रहना चाहिए। निहित स्वार्थ यह चाहते हैं कि दुनिया के स्तर पर देश की छवि खराब हो। कई जगह मैंने एडिटोरियल पढ़े हैं कि युगोस्लाविया के मिलोचविच, सज्जन हैं या दुर्जन हैं या कौन है, उनके साथ जिस प्रकार का बर्ताव हुआ है, वैसा हो। ऐसा कभी हुआ है, जिसको जैनोसाइड कह रहे हैं, तीन दिन के अन्दर दंगों को रोकने के लिए पुलिस की फायरिंग से 100 लोग मार डाले गए हों। फिर भी उसको जैनोसाड कहा जा रहा है। ... (व्यवधान)

SHRI RUPCHAND PAL : We are demanding an inquiry by a Supreme Court Judge.

कुमारी उमा भारती : सभी दलों से निवेदन है किजरात में शांति कायम हो, अमन-चैन कायम हो, उसका रास्ता यह नहीं है कि नरेन्द्र मोदी की हटा दिया जाए और गुजरात की सरकार को भंग कर दिया जाए। उसका रास्ता यह है कि समस्या की जड़ में जाया जाए। यह देश जिसमें बहुसंख्यक हिन्दू हैं, मैं तो कहूंगी कि हिन्दू जैसा पड़ोसी किसी को नहीं मिल सकता है। हिन्दुस्तान जैसा देश दुनिया में कहीं नहीं मिल सकता है। हिन्दू पड़ोसी जैसा कोई हो नहीं सकता है। भारत का जब बंटवारा हुआ, उस समय जो लोग भारत छोड़कर गए, उनका विश्वास जीतने की बहुत कोशिश हुई। मैं आपसे निवेदन करूंगी, जिनको विश्वास नहीं करना है, वे नहीं करेंगे। आप नरेन्द्र मोदी जी की बात छोड़ दीजिए, जिनको विश्वास नहीं करना है, उन्होंने तो गांधी जी का भी विश्वास नहीं किया, उन्होंने तो नेहरु जी का भी नहीं किया, उन्होंने तो मौलाना अबुल कलाम आज़ाद का भी नहीं किया, केवल जिन्ना का भरोसा किया। जिन्होंने यह फैसला लिया कि हम भारत को छोड़कर जाना चाहते हैं, 1947 में जब बंटवारे की विभीाकिा हुई, उस समय बहुत बड़ी संख्या में मुस्लिम समुदाय के लोग हिन्दू पड़ोसी के भरोसे रह गए। उसने एक बात साबित कर दी कि पाकिस्तान के मुसलमानों की जगह वह भारत के हिन्दू का ज्यादा भरोसा कर सकता है।

भारत के अपने हिन्दू पड़ौसी की गारंटी पर वह यहां रह गया, जिसे अंग्रेजी में सेक्युलरिज़्म कहते हैं। अभी डिबेट सेक्युलरिज़्म के लिए नहीं हो रही है, इसलिए मैं इस पर चर्चा नहीं करूंगी, क्योंकि हम सब इससे सहमत हैं। इसका सबूत है कि 1976 में जब संविधान में संशोधन किया गया था, संशोधन करते समय यह बिन्दु जोड़ा गया था, संविधान में इसीलिए संशोधन किया गया था। मैं आपके माध्यम से नेता प्रतिपक्ष से पूछना चाहूंगी कि देश को बचाने के लिए जब पोटा आया तो आप बिलकुल ठन गई थी कि हम इसे नहीं आने देंगे - चाहे कुछ भी हो जाए। कुर्सी को बचाने के लिए जब मीसा आया तो आप सब ने उसका साथ दिया और देश को बचाने के लिए पोटा आया तो उस समय जो गतिरोध पैदा हुआ, उसे भूलाया नहीं जा सकता। मैं आपको उस समय की याद दिलाती हूं, 1976 में जब संविधान में संशोधन किया गया। For the words "sovereign democratic republic", the words "sovereign socialist secular democratic republic" shall be substituted. इसका मतलब यह नहीं समझना चाहिए, कोई इस मुगालवे में न रहे कि 1976 के बाद भारत सेक्युलर हुआ है, जब से इस देश में हिन्दू था और जब तक वह रहेगा तब तक भारत सेक्युलर रहेगा, क्योंकि हिन्दू का चरित्र सर्व-धर्म-समभाव को मानता है। सभी धर्मों का वह आदर करता है। हिन्दू का चरित्र ऐसा है कि वह प्रार्थना करता है - सर्वे भवंतु सुखिना, सर्वे संतु निरामया। हिन्दू का चरित्र है कि वह धरती से लेकर आकाश तक सब की पूजा करता है। वह नदी को, गाय को मां कहता है। धरती से लेकर आकाश तक सब की वह पूजा करता है। मैं तो उल्टा कहूंगी कि जब हमें अपने कांस्टीट्यूशन में यह जोड़ना पड़ा, जब मैं यह कह रही हूं कि हिन्दू का चरित्र ऐसा है तो मेरा कांग्रेस सज्जनों से नि वेदन है कि आप हमारे एलायंस की तरफ देख कर अपना मंथरा वाला चरित्र यहां मत दिखाएं। आपका जो फूट डालो और राज करो वाला मामला है, उसे यहां मत दिखाएं। जैसे आप वहां

आंखों से इशारेबाजी कर रहे हैं, हम मानते हैं कि इस्लामी ब्रदरहुड का एक सिद्धांत है, हम उसे मान्यता देते हैं। बहुत सारे क्रिश्चयन लोगों ने सामंजस्य बनाने की कोशिश की, हम उन्हें भी मान्यता देते हैं, लेकिन कुछ ऐसे भी लोग हैं जिन्होंने झगड़े डालने की कोशिश की।

महोदय, पहले हमारे देश में डालडा नहीं था, शुद्ध घी होता था, इसलिए शुद्ध घी का प्रयोग होता था, क्योंकि बनावटी घी नहीं होता था। जब बनावटी घी आने लगा तब घी के साथ एडजैक्टिव लगाना पड़ा- शुद्ध घी। हमारे यहां पहले सेक्युलरिज्म प्योर था, इसलिए हमें उसके लिए कांस्टीट्यूशन में कुछ जोड़ना नहीं पड़ा, क्योंकि करेक्टर में सेक्युलरिज्म था। जब करेक्टर में सेक्युलरिज्म था तो हमें कांस्टीट्यूशन में सेक्युलरिज्म नहीं जोड़ना पड़ा, लेकिन जब कुछ सूडो सेक्युलरिस्ट पैदा हो गए तब हमें मजबूरी में इसे जोड़ना पड़ा। जब मार्केट में डालडा घी आ गया तब शुद्ध घी, ऐसा बोलना पड़ा। जब शुद्ध घी हुआ करता था तब नहीं जोड़ना पड़ा।

इस देश की अपनी संस्कृति और परम्परा है। महोदय, आप कभी मेरे गुरू जी के स्थान पर जाएं, वहां हिन्दू, मुसलमान, पिछड़े, दलित, सब मंदिर में जाते हैं। आप कभी अजमेर की दरगाह शरीफ में जाएं, वहां बहुत बड़ी संख्या में हिन्दू भी जाते हैं। मजारों पर बहुत बड़ी संख्या में हिन्दू जाते हैं। मैं आपको अपनी हकीकत बताती हूं। मुझे भोपाल में एक बंगला अलाट हुआ, क्योंकि मैं वहां से मेम्बर ऑफ पार्लियामेंट हूं, मुझे वहां घर दिया गया। आप आश्चर्य करेंगे कि मेरे घर के पीछे मजार है। जब मुझे घर अलाट हुआ तो वहां अलाट करने वाली एजेंसी ने मुझ से कहा कि वहां मजार है, आपको कोई दिक्कत तो नहीं है। मैंने कहा कि मुझे कोई दिक्कत नहीं है, क्योंकि मैं हिन्दू हूं, मेरे दिल में 33 करोड़ देवी-देवता बसते हैं, ये वहां एडजस्ट हो जाएंगे, मुझे कोई दिक्कत नहीं है लेकिन वहां जिन पीर बाबा की मजार है, उनसे कोई पूछने का यदि तरीका हो तो उनसे पूछ लें कि उन्हें तो कोई दिक्कत नहीं है, मैं तो उन्हें सरमाथे पर बिठाऊंगी। महोदय, आप विश्वास करें, मुझे इतनी खुशी हुई, जब मैं उस घर में गई, मैंने माना कि यह भव्य विभूति इस घर में है, जो यह हमारी रक्षा करेगी, अच्छी बात है, हमें इसमें कोई कट नहीं है। हिन्दू का दिल बहुत बड़ा होता है, लेकिन कभी-कभी ऐसे कैसे हो जाता है - जैसे कि श्रीलंका में घटा। जब हम महात्मा बुद्ध का नाम याद करते हैं तो हमें अहिंसा और करूणा की याद आती है। अहिंसा और करूणा के प्रतीक महात्मा बूद्ध, अहिंसा और करूणा पर चलने वाले बौद्ध भिक्षु, जब एक प्रधान मंत्री की तरफ हाथ में घातक हथियार लेकर उनकी हत्या करने के लिए दौड़ पड़े तो ऐसा क्या हो गया कि जिस हिन्दू के दिल में 33 करोड़ देवी-देवता बसते हों, धरती से लेकर आकाश तक, जो सब को पूजता हो, उसकी यह स्थिति क्यों बनी, हमें इसकी जड़ में जाना चाहिए। जिसने पारसियों को अपने देश में स्थान दिया, उनका आदर किया, उनकी मान्यताओं की रक्षा की, जिसने ईरान से आए हुए लोगों की मान्यताओं का सम्मान किया, उनकी रक्षा की।

जिसने एकम सद विप्रा बहुधा वदंति को माना कि सत्य एक और अनेक प्रकार से बोला जाता है और उसका आदर किया। आज ऐसे कैसे इस स्थिति का निर्माण हो गया कि हमारे देश के बारे में

पूरी दुनिया में यह जिक्र हुआ है कि हमारे देश में अल्पसंख्यक असुरक्षित हैं और उनकी रक्षा की जानी चाहिए। हमारे देश के एक राज्य के जो मुख्यमंत्री हैं उनको किसी विदेशी कोर्ट में घसीटा जाना चाहिए क्योंकि इस देश में अल्पसंख्यक खतरे में पड़ गये हैं।

उपाध्यक्ष जी, मैं आपसे निवेदन करना चाहती हूं कि हमारी जो परम्परा, संस्कृति और चरित्र रहा है वह किसी एक नेता या किन्हीं नेताओं की बदौलत नहीं रहा है बल्कि वह भारत की संस्कृति का अंश रहा है। अगर हम कुछ असामाजिक तत्वों को छोड़ दें तो उस संस्कृति की मर्यादा का सभी ने पालन किया है। मैं निवेदन करना चाहूंगी कि हमें उस जड़ में जाना चाहिए कि ऐसा क्यों हुआ, ऐसी स्थिति क्यों आई कि 33 करोड़ देवी-देवताओं को अपने दिल में बिठाने वालों के बारे में यह शंका क्यों खड़ी हो गयी कि तुम्हारे देश में रहने वाले अल्पसंख्यक, तुम्हारे पड़ौस में रहने वाले अल्पसंख्यक असुरक्षा की भावना के बोध से पीड़ित हैं। यह प्रश्न कैसे उसके ऊपर खड़ा कर दिया गया। मैं याद दिलाना चाहती हूं कि सन 1857 में जब भारत की आजादी की शपथ ली गयी थी तो आप सब जो पढ़े-लिखे लोग यहां मौजूद हैं आपको याद आ जाएगा कि उस समय रोटी और कमल दो प्रतीक चिह्न बनाये गये थे और बहादुर शाह जफर का नेतृत्व तांत्या टोपे, नाना साहब और महारानी लक्ष्मीबाई ने स्वीकार किया था। उस समय किसी के ध्यान में नहीं आया था कि बहादुर साहब जफर मुसलमान हैं और उनका नेतृत्व स्वीकार किया था। रोटी और कमल को लड़ाई का प्रतीक माना गया था और जब आजादी की लड़ाई की शपथ लेते थे तो रोटी के टुकड़े किये जाते थे और कमल सामने रखा जाता था और कसम ली जाती थी कि आजादी को पाने के लिए अपने प्राण तक दे देंगे। लेकिन उसी समय ब्रिटिश लोगों ने फूट डालो और राज करो की नीति शुरु की। यद्यपि पहले भी कई दंगे हुए लेकिन मैं 1890 में पश्चिमी उत्तर प्रदेश में ब्रिटिश लोगों द्वारा भड़काए गये दंगे का उल्लेख करुंगी। लेकिन उसके बाद भी आजादी की लड़ाई के लिए हिंदू-मुसलमान एकजुट रहे और आजादी की लड़ाई के लिए उनकी प्रतिबद्धता बनी रही। सन् 1920 में जब तुर्की के लोगों ने खलीफा के खिलाफ मूवमेंट चलाया, वही समय था जब इस देश में एक टर्निंग प्वाइंट आया। जब कांग्रेस के नेता यह सोचने लगे कि अगर हमें कुछ लोगों को साथ लेकर चलना है तो हमारा निर्णय क्या होना चाहिए। मैं मानती हूं कि उसी समय वह टर्निंग प्वाइंट आया जब कट्टरपंथियों का साथ दिया गया। तुर्की के लोग खलीफा के खिलाफ मूवमेंट में थे और भारत के लोगों ने, कांग्रेस के लोगों ने उल्टी चाल एडोप्ट की। सर, वहां से यह शुरुआत हुई। वह स्थिति बन गयी जब इस देश के मुस्लिम समुदाय के नेता मौलाना अब्दुल क्लाम आजाद नहीं ...(व्यवधान)

श्री प्रियरंजन दासमुंशी : आप हमें इतिहास सिखाना चाहती हैं।... (व्यवधान) खिलाफत मूवमेंट महात्मा गांधी जी ने शुरु किया। ...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : आपकी पार्टी के लिए एक घंटा चालीस मिनट का समय है और आपकी पार्टी के सात स्पीकर्स हैं।

कुमारी उमा भारती : सर, आप जो टाइम-लिमिट बता रहे हैं वह मुझे पता है। सन् 1937 के आते-आते वह स्थिति बनी कि इस देश के अल्पसंख्यकों के नेता मौलाना अब्दुल क्लाम आजाद जोकि उनके स्वभाविक उदारवादी नेता होने चाहिए थे, उनकी जगह पर मौहम्मद अली जिन्ना, इस देश के कट्टरपंथी अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों को अपने नेता लगने लगे। तब विभाजन की स्थिति आई। विभाजन की स्थिति आते-आते बंदे-मातरम पर समझौता होने की स्थिति आ गयी तथा और भी कई बातों पर समझौता होने की स्थिति आती गयी। लेकिन जब देश आजाद हुआ और जो मुसलमान इस देश में रह गये, उन्होंने यह साबित कर दिया है कि हम भारत-माता को अपनी माता मानते हैं और हमें पाकिस्तान की बजाए अपनी भारत-माता की गोदी ज्यादा प्यारी है। इसलिए 1947 के बाद जो मुस्लिम समुदाय यहां पर रह गया, अपनी माता की गोदी का भरोसा करके यहां पर रह गया, उसकी देशभक्ति पर किसी को शंका करने का अधिकार नहीं है।

जितना भारत माता की गोदी का अधिकार मेरा है, उतना ही अधिकार उस मुसलिम का है जो 1947 के बाद मुसलमानों का भरोसा करने की बजाय अपने हिन्दू पड़ोसी पर भरोसा करके भारतमाता की गोदी मे रह गया। उसकी देशभक्ति पर शंका करने का अधिकार नहीं है। लेकिन उसके बाद जो घटनाचक्र बना और ब्रिटिश लोगों ने ' फूट डालो और राज करो ' की नीति अपनाई, वह कांग्रेस की तुटीकरण की राजनीति में बदल गई। जिस तरह मुस्लिम समुदाय को डरा-धमकाकर वोट बैंक की पालिसी कांग्रेस ने बनाई ... (व्यवधान) कांग्रेस का चरित्र समय समय पर इस तुटीकरण की नीति को रिफ्लैक्ट करता रहा है।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपको स्मरण दिलाना चाहूंगी कि 1987-88 में जब शाह बानो के मामले में सुप्रीम कोर्ट का फैसला हुआ, उस समय मुस्लिम महिला विधेयक लाने का काम किस ने किया। उस समय एक कांग्रेस के नेता, जिनका मैं नाम नहीं लूंगी, उन्होंने इस बिल का विरोध किया। परिणामस्वरूप उन्हें कांग्रेस पार्टी से बाहर निकाल दिया गया। उसके बाद एक और नेता जो बाद में प्रधानमंत्री हुये, ने इलाहाबाद से चुनाव लड़ा। उस समय उदारवादी मुसलमान नेताओं ने इसका विरोध किया। उसे खुले आम कहा गया कि तुम होटल के अंदर रहो, बाहर न निकलो, नहीं तो अल्पसंख्यकों के वोट नहीं मिलेंगे। इसके बाद अन्य नेताओं को बुलाकर कहा गया कि मान जाओ। इस प्रकार यह क्रम लगातार चलता रहा। अभी मुलायम सिंह जी कह रहे थे कि हमारे अलाइज़ हमारी कृपा पर निर्भर हैं। मैं उन्हें याद दिलाना चाहूंगी कि 1989 में वे हमारी कृपा पर थे और जो चुनाव हुये, उसमें हमारे समर्थन से जीते। हमारे सामने जो लाल कलर वाले लोग बैठे हुये हैं, उन्हें भी याद होगा कि तब लाल कलर और भगवा कलर एक साथ चुनाव लड़े थे,सब ने मिलकर 1989 के चुनाव में पार्टिसिपेट किया था।

श्री मुलायम सिंह यादव : हमने उस समय विधान सभा में कहा था कि यह समझौता नहीं हुआ है। ऐसी गलत बात न करें।

कुमारी उमा भारती : उपाध्यक्ष महोदय, जो लोग यहां बड़े-बड़े भााण कर रहे हैं, ये वही लोग थे जो 1989 में हमारे साथ चुनाव लड़े थे और हमारी कृपा श्री मुलायम सिंह पर थी। आप इस प्रकार की भाा का प्रयोग करके हमारे एलाइज़ का अपमान मत करें। मैं निवेदन करूंगी कि हम इस सब की तह में जायें, जड़ में जायें। इस वोट बैंक की राजनीति से मुक्ति पाने का संकल्प सभी राजनैतिक दलों को करना पड़ेगा। जिन जिन लोगों ने यह पाप किया है, यह उसी का परिणाम निकला है। इसलिये दंगों को इस प्रकार से इंटरनैशनल लैवल पर हाईलाइट करना कि संघ इसके लिये दोाी है, बी.जे.पी. दोाी है या नरेन्द्र मोदी दोाी है, ठीक नहीं। यहां निन्दा तो इस बात की होनी चाहिये कि वोट बैंक की राजनीति नहीं होनी चाहिये। इस बात की निन्दा होनी चाहिये कि जो वोट की राजनीति करते आये है, वे इस स्थिति को यहां तक ले आये हैं। जबकि सारा संसार जानता है कि भारत में सर्व धर्म समभाव की नीति चलती आयी है। भारत ही ऐसा ही देश है जो इस सिद्धानं में आस्था रखता है। सवेरे और शाम तक हम सुख-शान्ति की कामना करते हैं। आज वोट बैंक की राजनीति निर्मित की गई है। मैं निवेदन करती हूं कि जब हम हत्याओं को गिनते हैं, तो इस बात को तय कर लें कि इसकी जड़ में कौन पार्टी है और तत्काल समस्या का निराकरण हो। क्या आरोप-प्रत्यारोप से कुछ नहीं होने वाला है।

उपाध्यक्ष महोदय, ग्राहम स्टेन की हत्या हुई और दारा सिह को उसका दोाी पाया गया। उसे आर.एस.एस., बजरंग दल और बी.जे.पी. का आदमी कहा गया लेकिन वह उसमें से किसी एक पार्टी का नहीं निकला। झाबुआ में ईसाइयों पर दुराचार किया गया, उनकी हत्या की गई। उसमें आधे लोग क्रिश्चियन और आधे लोग कांग्रेसी निकले जो दोाी थे। जब गुजरात के डांग जिले में घटना हुई तो सारे देश में हंगामा किया गया। केरल और कर्नाटक के एक इस्लामी संगठन के लोग इस घटना के लिये पकड़े गये। उनके पम्फलैट पकड़े गये और यह साबित हो गया कि यह सब आई.एस.आई. के इशारे पर हो रहा था।

उपाध्यक्ष जी, जब इस प्रकार की कोई घटना घटती है बजाय इसका राजनैतिक लाभ उठाने के हम उस बात की तह में जाना चाहिये और आज गुजरात में हुई घटना पर चर्चा करते हुये यह संकल्प लेना चाहिये।

उसका निराकरण किया जाए और उसके लिए जो भी दोाी हों, सब मिलकर उसकी निन्दा करें। मैं एक निवेदन और करके अपनी बात खत्म करूंगी।

महोदय, आपने जो प्रस्ताव स्वीकृत किया है, उस प्रस्ताव में देश के अन्य राज्यों और जगहों की स्थिति का भी मूल्यांकन किया जाए। मेरा निवेदन है कि हम लोग थोड़ा पीछे जाकर देखें। 1984 में जिस प्रकार से बेकसूर हजारों सिखों की कांग्रेस के अनसोशल एलीमैन्ट्स ने घरों से निकलकर हत्याएं की थीं, उनकी भी निन्दा यहां होनी चाहिए। उस जैनोसाइड को भी स्वीकार करना चाहिए। नेता प्रतिपक्ष उस समय प्रधान मंत्री जी के घर में बैठी हुई थीं, अगर वह चाहती तो इसे रोक

सकती थीं। उस मामले में अगर देश से बाहर किसी कोर्ट में मुकदमा चलाने की बात हो तो उसके लिए कौन लोग दोाी थे, यह पूरी तरह से सामने आना चाहिए। उस समय कितने घंटे के अंदर मिलिट्री बुलाई गई थी, उस समय पुलिस फायरिंग में कितने लोग मरे थे, इसकी भी चर्चा होनी चाहिए।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपको मुखातिब करके एक शेर कहूंगी।

इनकी तारीफ क्या पूछते हो, उम्र सारी गुनाहों में गुजरी,

अब पारसा बन रहे हैं ऐसे, जैसे गंगा नहाये हुए हों।

आज यहां वोट बैंक की राजनीति की निन्दा होनी चाहिए। नरेन्द्र मोदी को हटाना इसका समाधान नहीं है, गुजरात की सरकार की निन्दा करना इसका समाधान नहीं है, इस देश को अंतर्राट्रीय स्तर पर बदनाम करना इसका समाधान नहीं है, बल्कि वोट बैंक की राजनीति, सत्तालोलुपता से कैसे बचा जाए, कुर्सी के लालच मे, जो डिवीजन हिन्दू और मुसलमान के बीच में किया जाता है, हमारे प्रतिपक्ष में बैठे हुए कांग्रेस के नेता जिसकी अगुवाई करते हैं, उससे कैसे बचा जाए। उसके लिए हर राजनीतिक दल यह संकल्प ले कि जो उदारवादी मुस्लिम नेता हैं, जो उदारवादी मुस्लिम हैं, उनके हाथ में मुस्लिम समुदाय का नेतृत्व दिया जाए। उनकी अगुवाई उन लोगों के हाथ में दी जाए, न कि कट्टरपंथियों को दी जाए। जो भूल सौ साल से होती रही है, जो भूल 1920 से होती रही है, मैं आज इस सदन में भाजपा की एक कार्यकर्ता की हैसियत से नहीं बल्कि एक संत की हैसियत प्रस्ताव करती हूं कि जो भूल 1920 से लेकर आज तक हुई है, उस भूल का निराकरण यही है कि वोट बैंक की राजनीति की निन्दा करते हुए उदारवादी नेतृत्व को अल्पसंख्यक समुदाय की अगुवाई करने के लिए हर प्रकार का प्रोत्साहन और हर प्रकार का संरक्षण दिया जाए।

उपाध्यक्ष महोदय, इसके साथ-साथ धर्मान्तरण के लिए जिस प्रकार के छल-कपट के आयोजन किये जाते हैं, यहां उनकी घोर निन्दा की जाए, क्योंकि वे भी साम्प्रदायिक सद्भाव को बिगाड़ने का एक कारण बनते हैं। मैं यहां एक बात कहूंगी कि पश्चिम बंगाल के लोग गांधी जी को मानते हैं, स्वामी विवेकानन्द जी को मानते हैं, लेकिन अगर मैं स्वामी विवेकानन्द जी की एक उक्ति कहूंगी तो ये लोग एकदम हल्ला कर देंगे। स्वामी विवेकानन्द ने अपने हाथ से रामकृण मिशन का संविधान लिखा है। चूंकि वह संविधान यहां मौजूद नहीं है, लेकिन मैं आपको वचन देती हूं कि तीन दिन के अंदर मैं वह संविधान सदन के पटल पर रखूंगी और अगर वह गलत निकला तो जो सजा आप मुझे देंगे वह मैं स्वीकार करूंगी। स्वामी विवेकानन्द ने रामकृण मिशन के संविधान को अपने हाथ से लिखा है। उसमें उन्होंने लिखा है कि हिन्दुस्तान में जब एक व्यक्ति अपना धर्म बदलता है तो वह धर्म नहीं बदलता है, बल्कि देश का एक दुश्मन तैयार हो जाता है। इसलिए छल-कपट के द्वारा किये जाने वाले धर्मान्तरण के ऊपर रोक लगे। वोट बैंक की राजनीति की यहां

निन्दा हो। उदारवादी मुस्लिम नेतृत्व को राजनीतिक दल हर तरह से प्रोत्साहन दें। इसी तरह से यदि कोई स्वेच्छा से धर्म बदले तो बदल ले, लेकिन छल-कपट के द्वारा रोटी और नौकरी के लालच में जो धर्मान्तरण होते हैं, उनकी यहां निन्दा हो और उनकी रोकथाम हो। आप लोगों ने मुस्लिम नेतृत्व को ऐसा बनाकर रखा है, जैसे सर्कस में जो शेर रखते हैं, उसे इतना खिलाते हैं कि वह मर न जाए। लेकिन इतना नहीं खिलाते कि वह झपट पड़े। उसे चाबुक के इशारे पर उठाते-बैठाते रहते हैं। आपने इनकी यही हालत कर दी। यहां बैठा है 32 साल की उम्र का हमारा कैबिनेट मिनिस्टर, यह है भारतीय जनता पार्टी का असली चरित्र।

उपाध्यक्ष महोदय, अंत में मैं इस प्रस्ताव का विरोध करती हूं और कहना चाहती हूं कि असली समस्या की जड़ में जाया जाए और उसका निदान करने का संकल्प हम सभी लें। गुजरात की सरकार अर्थक्वेक को फेस कर रही थी, अब वह दंगे को फेस कर रही है। गुजरात सरकार ने बहुत एक्सीलैन्ट काम किया है। जिस प्रकार से तमाम जगहों पर उन्होंने कार्रवाई की उसकी यहां प्रशंसा करनी चाहिए और इस अवसर का लाभ उठाकर समस्या की जड़ का निदान करना चाहिए।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं संस्कृत की दो पंक्तियों की प्रार्थना बोलते हुए अपनी बात खत्म करती हूँ।

" सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत्।"

सभी को सुख मिले, सभी आनन्दमय रहें, सभी को शांति मिले, सभी को संरक्षण मिले, सभी को न्याय मिले।

14.00 hrs

SHRIMATI SONIA GANDHI (AMETHI): Mr. Deputy-Speaker, Sir, I thank you for allowing this substantive Motion under Rule 184.

Gujarat's tragedy is a national calamity. It is a challenge to our collective conscience. It has called into question the commitment of the ruling political establishment in Delhi and Gandhi Nagar to the letter and spirit of the Constitution. It has had profound implications for the international image of our country. We wanted this discussion because this is a moral issue of paramount importance for us. … (*Interruptions*) Secularism,

which is the very foundation of Indian nationhood, is at stake. India's composite heritage is under attack. This is a defining moment for all of us in public life.

Sir, Gujarat burns and bleeds. It continues to burn and bleed. Contrary to claims being made, violence continues unabated. Governance has collapsed in the State and the State Government stands severely indicted by statutory bodies like the National Human Rights Commission, National Minorities Commission as well as by a number of citizens' groups, citizens' organisations and fact-finding teams. Both the Commissions have concluded that the State Government was guilty not only of incompetence, but of deliberate connivance.

The Human Rights Commission recommended inquiries by the C.B.I. The Minorities Commission recommended an inquiry by a sitting Supreme Court Judge. Both these recommendations have been contemptuously dismissed by the State Government and the Central Government. Instead, the Chief Minister is using an inquiry by a handpicked retired judge to block all investigations into the vicious violations of human rights in the State. This brazen defiance of all constitutional norms was what prompted us to recommend, to demand the removal of the Chief Minister, a demand that has been supported not just by us here in the Opposition, but also by some coalition partners of the N.D.A. itself as well as by large segments of those who have been supporting it. Perhaps, some of them have been misled so far by the mask worn by the B.J.P. leadership. It seems, however, that some of them have suddenly seen the light yesterday.

Sir, ordinary citizens belonging to all communities continue to live in fear, terror and insecurity. Business and trade have come to a standstill. The unorganised sector, which provides the bulk of the employment, has been badly affected. Confidence in the civil and police administration has been completely destroyed.

A delegation of women living from in camps Ahmedabad, Gandhi Nagar and Mehsana had just met me on Saturday. I believe they met many of our colleagues in the Opposition as well as the President.

They related to me the horrors they experienced as well as the most miserable condition in the camps, the continuing neglect and the all-pervasive fear that engulfs them.

The six-member women's fact-finding team that went to Gujarat has met many of us. I listened in horror to what they had to say about large-scale rape and molestation. Many of the victims have been killed, have been burnt after being raped. Nothing can be more heart-rending than the words of Medina Mustafa, mother of one of the victims who witnessed her daughter being raped and dismembered. I quote from *The Hindustan Times* of 18th April where that mother recounts her experience:

> "On Sunday afternoon, March 3, the hut we were hiding in was attacked. We ran in different directions and hid in the field. But the mob found some of us…"
>
> Here the mother speaks:
>
> "I could hear my family shouting for mercy as they were attacked. I recognised two people from my village – Gano Baria and Sunil – pulling away my daughter Shabana. She screamed, telling the men to get off her… The screams and cries of Ruqaiya, Suhana, Shabana, begging for their *izzat* could clearly be heard. My mind was seething with fear and fury. I could do nothing to help my daughter from being assaulted sexually and tortured to death…
>
> My daughter was like a flower, still to experience life. Why did they have to do this to her? What kind of men are these? The monsters tore my beloved daughter to pieces. After a while, the mob was saying, "Cut them to pieces, leave no evidence." I saw fires being lit…"

… (*Interruptions*)

श्री दिलीप संघाणी (अमरेली) : उपाध्यक्ष महोदय, मेरा पाइंट ऑफ आर्डर है कि माननीय नेता प्र ातिपक्ष सदन में अखबार नहीं पढ़ सकती हैं।… (व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: She is quoting from a newspaper.

… (*Interruptions*)

SHRIMATI SONIA GANDHI : Yet, to this very day, I am told, there is only one FIR lodged in all of Gujarat on a complaint of rape. … (*Interruptions*)

Here we have another report carried in a very prominent daily, *The Times of India* of 19^{th} April. In this news, we have the story of a brave and courageous woman, a woman whose actions epitomised all the noble values we cherish. At least we all here cherish. It is the story of Geetaben who was killed mercilessly by *Sangh Parivar* mobs in Ahmedabad on 25^{th} March for saving her Muslim friend. Her murder was meant to convey a message – a message of segregation, a message of separatism.

How long must the agony of Gujarat continue? The people of Gujarat want a return to peace. They want to return to amity and understanding. Gujarat, as we all know, is a society that has seen the intermingling of different religions. Gujarat has produced great social reformers and political leaders. How can we ever forget that Gujarat is the land of Mahatma? Gujarat has produced India's most high-minded civic groups. For long, Gujarat has shown the way to the rest of India. We want to see that glorious Gujarat again. We want to see Gujarat moving forward again with dignity, pride and in harmony. But the tragic events of the past two months have cast a long shadow.

The Government in Delhi has looked on as a passive spectator while a blatantly partisan Chief Minister besmirched the fair name of Gujarat. Even the sacred *dharti* of Sabarmati Ashram was not spared. A peaceful meeting was disrupted by *Sangh Parivar* activists and by some members of the police. Media persons too were brutally attacked.

Mr. Deputy-Speaker, Sir, I am grateful to you for your observation on behalf of the entire House expressing shock and anguish at this incident in Sabarmati Ashtram. The clinching evidence of the State Government's partisan policies came in the form of large scale transfer of police and civil

administration officers who have tried to fulfil their constitutional duties in a professional and impartial way.

All the time when the efforts of the Government should have been focused exclusively on law and order and on relief and rehabilitation, we heard the Central and State Governments threaten to dissolve the *Vidhan Sabha* and hold elections. This threat was an insult to our democracy and to our Constitution. It was a cynical move at a time when people were being killed. Let not the BJP think for a single moment that we are afraid of election. We are not. We will face the election whenever it is held with a clear conscience, confident that the people of Gujarat will send a resounding message to those who are trying to destroy our secular legacy.

Sir, the Prime Minister's shifting statements have shocked us all. One day he offers sympathy. The next day he condemns the whole community. One day he pleads for tolerance. The next day he plays on divisive prejudices. When the Prime Minister himself engages in such doublespeak, what can the nation expect of this Government? In Gujarat, the Prime Minister, at the Shah-e-alam camp said: "My only message to the Chief Minister is to follow r*ajdharma*. This word has a great meaning. A ruler should not discriminate among his subjects on the basis of religion or community." Wonderful words. The victims of the violence might have perhaps felt reassured by such words coming from the Prime Minister.

But just a few days later, in Goa, the Prime Minister has said:

> " जहां-जहां मुसलमान हैं, वे मिलकर नहीं रहना चाहते, उनके साथ घुलना-मिलना नहीं चाहते और शांतिपूर्ण ढंग से अपना प्रचार करने की बजाय आतंक से, भय से और डरा-धमका कर अपने मत का प्रचार करना चाहते हैं। "

Need anything more be added to these words?

Sir, we must consider ourselves fortunate that in recent weeks, the disturbances were confined to Gujarat only. That is because an overwhelming number of people are secular and that is because an overwhelming number of people reject the politics of hate and communal divide.

Sir, I think, it is now time to look ahead. It is now time to rebuild Gujarat, to rediscover and regenerate its well-springs of tolerance and accommodation.

There are a large number of people in Gujarat who have stood out in recent weeks. When actually the Government has collapsed, it is they who have mobilised relief and provided help to the victims. That gave us a great deal of hope. Civil society in Gujarat must be encouraged and pro-actively supported in its effort to restore normalcy.

NGOs, Citizen and Social Action Groups, Womens' Organizations and Gandhian Associations must all be mobilized systematically to bring Gujarat back on the path of harmony. This, of course, also needs the support of the State.

Last year when a different tragedy struck Gujarat, the whole nation responded generously. Indeed assistance came, not just from the whole nation, it came from all over the world. This time too, I believe, it is still not too late for all of us to mount a national effort to collect relief for the victims.

Sir, the nation cannot forget what has been perpetrated in Gujarat, what has been engineered in Gujarat. We must now, at least, ensure that the catastrophe that overtook us will not take place again either in Gujarat or elsewhere in our country. Let us not look at Gujarat from the point of view of this community or that community, from the point of view of this faith or that faith. We have to look at the carnage in Godhra, the carnage in Ahmedabad, Vadodara, Sabarkantha, Mehsana, Rajkot and other parts of the State as an assault on human freedom, as an attack on fundamental human values, as a subversion of the very essence of our culture and as a rejection of the very character of our civilization.

Mr. Deputy-Speaker, Sir, let us, once and for all, put an end to this propaganda that the barbarous Godhra incident was not condemned forcefully on time. Shri Mulayam Singh Yadav also referred to the same issue. I was the first one to condemn the terrible Godhra tragedy in the strongest possible terms on the very day it happened on the evening of the

27^{th}. This technique, which is a deliberate technique, of repeating a falsehood so that it eventually passes off as a truth is a favourite tactic of the RSS, of the *Sangh Parivar* reminiscent of obnoxious times in Germany.

Even the Prime Minister, I have to say, has recently remarked:

> "The incidents in Gujarat could have been pre-empted had Parliament condemned the Godhra carnage. "

Now I wonder what prevented the Prime Minister as the Leader of the country, the Leader of this House from taking the lead in this matter. It is regrettable that the Prime Minister should project this failure of his as Parliament's dereliction.

India's image has been tarnished the world over. We have never had to face such an embarrassment before. But our democracy is strong and resilient. Our institutions are committed to the Constitution. Our media is vigilant. I am confident that the basic human rights of all individuals and communities will continue to be zealously safeguarded from the assaults of the type we have witnessed in Gujarat. We must now move from polarisation to reconciliation. We must move from discord to dialogue. We must move from a bigoted interpretation of our past to realising our shared future.

Sir, the State Government has betrayed the people of Gujarat. The Central Government has failed the people of India. The State Government, aided and abetted by its patrons in Delhi, has destroyed the very fabric of Gujarat society. It has grievously, but grievously wounded the very soul of Gujarat.

Today, we condemn them. In doing so, we uphold the ideals of our founding fathers. In doing so, we affirm our commitment to preserve and protect our secular heritage. In doing so, we express our resolve to confront and combat those who mock at the Constitution and trample on all values that we hold dear.

Mr. Deputy Speaker, Sir, today, I appeal to the nobler instincts of the Prime Minister. I appeal to him to rise above his party affiliation and respond to his responsibilities and obligations to the people of India, irrespective of religion and faith. It is still not too late. The situation could still be redeemed. Put the Gujarat Government on notice under article 355 of the Constitution for having failed to control internal disturbance and for having failed to ensure that the Government is carried on in accordance with the provisions of the Constitution. Bring the guilty to book immediately and quickly. Restore law and order firmly. Ensure that full relief and rehabilitation measures are extended to all the affected families without delay, Remove the Chief Minister, who, by deliberate design, is failing to fulfil his constitutional duties. Appoint a sitting Supreme Court Judge to ascertain the whole truth within the next three months and implement all the recommendations of the National Human Rights Commission immediately. Until these steps are taken, we will continue to present to people through Parliament and directly, with all the emphasis at our command, the insidious agenda of the BJP and its Governments and the grave threat such an agenda poses to our nation.

Today, from this House, we send a message to the people of Gujarat. The nation has looked to you, the people of Gujarat, for leadership in the past. Show us the way once again so that we are all able to once again hold our heads high and re-assert our natural claim to being a beacon of respecting and celebrating diversity.

SHRI SOMNATH CHATTERJEE (BOLPUR): Mr. Deputy-Speaker, Sir, when I was listening to the speech of the hon. Member who first spoke on behalf of the BJP, I was wondering whether I was sitting in the Parliament of India because of the way poison was spread here.

Naturally, one would ask the question whether this NDA combination has finally given up even the pretence of a commitment to secularism. I must protest against the misuse of this great hall where the Parliament of India sits and the ugly manifestation of the real intentions of the Hindutva brigade that we found has clearly shown what the real agenda of this Government is. I appeal to everybody and all sections of this House. Is this the way the country should proceed? Maybe, there is a temporary majority

in favour of the ruling alliance. I hope, some of the allies would think it over now. Whether you like it or not, you have to answer to history.

I wanted to begin my submissions by complimenting Shri Ram Vilas Paswan on his severance of ties with this weird combination of opportunistic elements.

He has shown his commitment to the basic values of Indian democracy and secularism. I wish him a long career in the service of the country in the true spirit of our Constitution.

Sir, yesterday we heard and saw on the TV also that our hon. Prime Minister had presided over a meeting of the NDA allies to devise the strategy to defeat today's motion. Of course, he was present in full force with all his cohorts and drum beaters, who want to remain in power because that is the only cementing force. There is no question of ideology as our respected Minister of Home Affairs has openly jettisoned. There is no question of any proper programme or accountability also. But as the hon. Leader of the Opposition mentioned, our Prime Minister never found any time to devise a strategy as to how to save the people of Gujarat. He did not devote a single minute to come to this House or call all the parties to consider how that carnage can be stopped; how to provide relief and rehabilitation to these helpless victims, who have been subjected to most heinous crimes. Where was the Prime Minister? He was enjoying for the six days when this House did not function as to whether the discussion should be under Rule 184 or 193. Where was the Leader of the House? Has he ever tried to build up a consensus on this issue? The hon. Cabinet Minister, who has been selected– how she has been selected we understand —from the speech she has delivered, we know what is the real reason for this choice of the speaker. Now, the battle lines are drawn. There is no question of any pretence on the part of the NDA or the BJP. Almost, they have described the Muslims as second class citizens. They are trying to dictate who should be their leaders. It is amazing effrontery. Just because you have built up a sort of a motley combination, you are in power, and whenever the people of this country have got any opportunity, throughout the length and breadth of the country, from Municipalities to Assemblies

and Parliament, you are being beaten hollow. People have rejected your theories, your policies and programmes.

Sir, we know in economic matters this country has been pauperised and with this Government, section of the people of this country have been dehumanised. When we find that such an important issue is being trivialised by the Prime Minister of India, we must stand up in protest and issue a warning that the people of India will not tolerate this. You are subjecting them to the horrors of a genocide, but ultimately truth will prevail and secularism will prevail, the sense of democracy and the commitment to democracy of this country will prevail.

Sir, as you understand, I have risen to support this motion. What we are discussing today will have a direct bearing on the future of India's unity and integrity, and of the commitment of the people, at least, of the political parties and the Members, as to what is their approach to one of the basic features of the Indian Constitution and secularism. All these days, we find lots of discussions as to how many MPs will support the NDA. Numbers have been given.

Somebody has come, somebody has gone. Of course, we are quite used to seeing that. Almost like a railway platform, people are coming and going. Kumari Uma Bharati referred to 1999 election that was caused because of one vote that Kumari Mayawati gave against Shri Atal Bihari Vajpayee, and you have now selected her to be your companion, to be your Chief Minister in Uttar Pradesh. This is your politics and this is her politics. It should not be treated as a mere game of numbers; much more important things are involved in it.

14.31 hrs (Shri Basu Deb Acharia *in the Chair)*

The question is whether innocent people in this country can be butchered and massacred because they profess a particular religion, and whether a person of any religion can be killed by reason of communal riots. Hon. Uma Bharati has been speaking that well, the great history of Gujarat is the history of riots. From 1410, there have been riots. She was recounting the number of riots as if this is something which has to be cherished, which

has to be nurtured and everything would be explained away. Whatever failure there may be, whatever connivance there may be, whatever conspiracy there may be, can be explained away by previous riots in Gujarat. This is the attitude of the ruling clique. The question is not of numbers. This Motion may be defeated, but the question of State-sponsored genocide will have to be determined. Whether the perpetrators of the crime can go scot free, that is the question that is to be decided today, whether the minorities can live with dignity, with safety, or they have to depend upon the good wishes of the majority in this country, as has been adumbrated here. The way lectures are being given as to the duties of the minorities is amazing. Who has given them the right and who has given her the right to speak on behalf of all the Hindus? Who has voted her? Where does the VHP get the authority to speak on behalf of the Hindus? You do not have that. And all these lectures are being given. Therefore, the debate is also about the commitment of the political parties and the Members of Parliament to secular Indian nationalism and on the role of the Union Government regarding use of power under article 355 of the Constitution of India when occasions had arisen or have arisen . Can we allow our democratic structure and our secularism to be overtaken by marauders? I appeal to every political party and every hon. Member, with all humility, that please consider India's future, please consider all those hapless people, please consider those mothers whose children have been killed in their presence, in front of them, please think of the young children who have lost their parents for no fault of theirs. People were burnt alive and not one word of condemnation came from the speaker of the ruling party. I appeal to all sections of the House that at this critical juncture of our country, let us redeem ourselves, let us ask our conscience, when we finally decide to give our views and opinion, whether this is for the sake of humanity or against humanity, whether this is for the sake of keeping the country united or not and whether this is for the sake of protecting the minorities, for which the Constitution India has provided, or not, and after that, to give their verdict.

The State of Gujarat is on fire for more than two months.

When I used the word 'genocide' some objection has been taken to it. Shri Nanaji Deshmukh has said 'it is orchestrated genocide in Gujarat'. You go and ask him as to why he has said that. I shall come to what Shri Shanta Kumar has said about it, what Shri Madan Lal Khurana has said about it and what Shri Mukhtar Naqvi has said about it. I shall come to that.

Therefore, when we find a State is burning, it is on fire, people are being killed, innocent people are being massacred and butchered - irrespective of their culpability, with full conviction of their innocence, I feel that the House is on trial.

14.36 hrs (Mr. Deputy-Speaker *in the Chair*)

An all-Party delegation went there. I had the opportunity to go in that delegation to Gujarat. When we were hearing about these incidents and what I saw in the hospitals and in the camps, my first reaction when the Press persons asked me was that what struck me was – are we a civilised nation, are we behaving as a civilised nation and what has happened'. We boast of ancient civilisation. She was doing that. We talk about heritage. We talk about *Vasudheiva Kutumbakam* and *Sarva Dharma Samabhava*. Our Constitution has enshrined secularism as one of the basic features. There is a right of equality amongst all people irrespective of their religion, caste and creed. These are the fundamental rights enshrined in our Constitution.

But what we find today under the present dispensation which extols Nazism and fascism as coveted concepts? A large number of people today are haplessly waiting to be or at the dispensation of murderers and butchers of democracy. The type of mayhem, the type of brutality that has been committed in the name of religion, invoking the name of Lord Ram has degraded us as a nation.

An objection has been taken when some of the foreign countries, who are all friendly countries, have given their views. They have protested against the inhuman acts. The Government says – 'Well, they have no right to discuss about our internal matter'. Of course, as a question of international

comity of nations, no State has a right to comment about other's internal matters. This is the international comity.

But since when killings of innocent human beings, rape of women, burning of people alive, slitting open the stomach of expectant mother and the killing of an unborn child are treated as internal matters of a country? Can it be treated them like that? Did we or did we not criticise Talibans and what they were doing in Afghanistan? Have we not criticised apartheid? Have we not criticised what Hitler and Mussolini did? Did we not comment on the massacre of innocents of Eastern Europe recently? Are we not criticising what is being done in Palestine?

When the world opinion has been commenting on this, our reaction through the spokesman of the MEA is that this is unjustified interference in the internal affairs of this country. This is our image in the world today. The European Union has reiterated it after the protest of the Government of India. They have reiterated their views and objections. A demarche has been issued. But even then neither they have conscience nor they have even the image of the country in mind.

Sir, the most inhuman and horrendous crimes have been committed. Can any instance be shown either by the Prime Minister or anybody else that in the Opposition Parties, we have tried to minimise the seriousness of Godhra incident? We have been repeatedly saying that a deliberate terminological inexactitude – I am not using the word lie – is repeated with a view to tarnish the image of the Opposition Parties.

Sir, by 12 noon on that very day, the 27th, the politburo of the Communist Party of India (Marxist) issued a condemnatory statement. The Leader of the Opposition said it on the floor of the House. She issued a statement condemning this. Every political party did condemn it. Whenever we have got the first opportunity, we have done it even on the floor of this House. Twenty-eighth was the day of Budget presentation and a request was made not to interrupt the Budget presentation. Now, everyday it is being repeated *ad nauseam*. It is being repeated deliberately that because there was no condemnation of Godhra, this has all happened.

Sir, what is the objective? The objective is that go on repeating something and ultimately, the people may accept. This is what was mastered and this is being done. … (*Interruptions*)

श्री मुलायम सिंह यादव : सर, अभी सुना है कि नेशनल कांफ्रेंस के नेता माननीय उमर अब्दुल्ला ने इस्तीफा दे दिया है।

कुमारी उमा भारती : आपकी नजर तो इन्हीं बातों पर रहती है। इसी के लिए आप यह चर्चा यहां पर लाए हैं ना।

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : Probably, by the time, it is voted, none will be there. … (*Interruptions*)

Mr. Deputy-Speaker, Sir, we mention this because it is factually incorrect that we have not condemned it. What type of condemnation they thought of? What will we do? We shall kill other people to show our condemnation as they have tried to do in the rest of Gujarat! The objective is to try to find a so-called justification for a genocide that has been deliberately committed under the State sponsorship, masterminded by the Chief Minister who takes the greatest pride being a *pracharak* of RSS. This is the mentality of the RSS that go on repeating like this because that was the method of one of their very favourite leaders.

Sir, we say that Godhra incident is condemnable. We have repeatedly asked why they do not take proper steps and why CBI does not investigate into the matter. Let every person guilty in Godhra incident be punished and that condign punishment should be given to them. Who has not said that? Who has said that Godhra incident should not be investigated? Tell us one name who has said that Godhra is something which need not be taken note of. Questions have arisen because there are different versions. Shri Mulayam Singh Yadav has referred to certain versions, but nobody has exonerated. In order to find out whether that is correct or not, why do they not find it out by a proper investigation which should be done not by hand-picked persons. What have they done from 27th of February. Kumari Uma Bharati is there in the Cabinet? What has she done? She did not mention this at all.

Sir, therefore, on the plea of what has happened in Godhra, they have indulged in the annihilation of a community because they profess a particular religion. We have seen on television and here, I must take this opportunity to compliment the media, both the print media and the electronic media.

In spite of the greatest provocation and danger faced by them, they have told the people of this country what was the real situation. Otherwise, we would not have known. We have seen how the frenzied mobs with those *patties* on their head were jumping with *trishuls*, with arms. We have seen the great glee, great satisfaction and great happiness that they have been displaying on the television screens. They were on the rampage. When the nation as a whole condemned Godhra, how can that be a justification?

Sir, the Chief Minister has earned a great, dubious distinction of being the mastermind to exterminate the Muslims as part of a Government policy. He does not feel ashamed that in his State, even today over one lakh people -- until a few days back, 1,40,000 people were in relief camps -- leading a miserable existence. … (*Interruptions*)

SHRI DILEEP SANGHANI : How many people are living like that in Jammu and Kashmir?

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : You will soon become a Minister here, if you are not a Minister already. I do not know whether he is a Minister already. … (*Interruptions*)

Sir, I am asking, does not the Chief Minister of that State feel ashamed that 1,40,000 people of his State are in camps leading a miserable existence? There are no facilities for food, no treatment, not even minimum sanitary facilities. They say that 600 persons have to attend one toilet in Shah Alam Camp.

Sir, this is a riot which has gone on for more than two months. This is also very important. The Calcutta killings of 1946 under Suhrawardy Regime, which was stated to be the worst riot in Indian history, went on maximum for a week or ten days. Now, this is going on for more than two months.

Probably, it is next to the great partition riots, if I may so describe it. Probably, after these, this is the worst riot that has happened in this country. Nobody has qualms of conscience, and nobody is feeling troubled.

The Prime Minister waits for five weeks to go there, goes to one or two camps, make some noises against the Chief Minister, says that the Chief Minister must do *Rajdharma* and, at the same time, gives him a certificate then and there saying that he is doing that *Rajdharma*. This is only thing he did. He said, "Yes, I am looking after relief and rehabilitation." What has happened for two-and-a-half months? How many times have they visited these camps? The other day, Shri Mulayam Singh and other leaders of People's Front had gone there; many other party leaders have gone there. What is the state of affairs in this country?

What has been done? Examinations are forced on the students. I got some letters from different camps saying that, "How can we sit in examination? Please do something, please talk to the Prime Minister or the Home Minister." I wrote to them, requested them saying, 'that they have no books, they have not been able to study, please give them some time. They are citizens of India. They have got dreams; they have got hopes for the future. How can they appear in an examination like this?" That was rejected. There was no response from the Prime Minister or the Home Minister of India. Ultimately, the examinations were deliberately held, and they had to be boycotted. The minority students could not attend them. Is it their fault? One or two boys, who took the courage and went to a Hindu-dominated or other community-dominated place, were beaten up.

Sir, that is why, we are thankful that the Supreme Court has intervened now. If it was so properly held, why could you not impress upon the Supreme Court that there were proper examinations, that this is deliberately being done? What has happened? The Prime Minister today has really shown himself. He is no longer the leader of the nation. He is the leader of the Hindu brigade, and he is presiding over that combination which is holding this country to ransom.

I am reading some of the incidents. I am not reading many because they are so heart-rending that it is difficult to read. There is a story about

splitting open the stomach of an expectant mother. I have got the name and the address of the person who did it. I must congratulate the Citizens Initiative Group. Many of the well-known women journalists and social workers had gone there. They have compiled this evidence. They have given particularly the dates; they have given the time and they have given the addresses of these people. It says:

> "What can you say about a woman, eight months pregnant, who begged to be spared. Her assailants instead slit open her stomach, pulled out her foetus and slaughtered it before her eyes. What can you say, about a family of nineteen being killed by flooding their house with water and then electrocuting them with high-tension electricity. …a family escaping from Naroda-patia, one of the worst-hit settlements in Ahmedabad, spoke of losing a young woman and her three month old son, because a police constable directed her to 'safety' and she found herself instead surrounded by a mob, which doused her with kerosene and set her and her baby on fire… What Gujarat witnessed was not a riot, but a terrorist attack followed by a systematic, planned massacre, a pogrom."

Sir, everybody read with horror the story of Geetaben. I read:

> "On a hot and dusty patch of asphalt lies the naked body of a woman, Geetaben. Her clothes were stripped off and thrown carelessly near her. One piece of underclothing lies a foot away from her body. The other is clutched desperately in her left hand. Her left arm is bloodied, her torso appears to have deep gashes, and her left thigh is covered in blood. She is wearing a small anklet. Her plastic *chappals* sit sadly alongside her lifeless body. In the middle of the photo frame is a gnarled, red, hate-filled remnant of a brick -- perhaps, the one her assailants used to deliver their final blow. Geetaben was killed in Ahmedabad on 25 th March in broad daylight near bus stop close to her home. She was a Hindu, who in the eyes of Hindu separatists currently ruling

Gujarat had committed the cardinal sin of falling in love with a Muslim man."

Nobody is denying these things. Sir, how poison was spread? There is a VHP circular which was issued. It says:

"Wake up! Arise! Think! Enforce!

Save the country! Save the religion!

Economic boycott is the only solution! The anti-national elements use the money earned from the Hindus to destroy us!

They buy arms! They molest our sisters and daughters! The way to break the backbone of these elements is: An economic non-cooperation movement.

Let us resolve:

1. From now on, I will not buy anything from a Muslim shopkeeper!

2. I will not sell anything from my shop to such elements!

1. Neither shall I use the hotels of these anti-nationals, nor their garages!
2. I shall give my vehicles only to Hindu garages! From a needle to gold, I shall not buy anything made by Muslims, neither shall we sell them things made by us!"

"Boycott wholeheartedly, films in which Muslim heroes and heroins act. Throw out films produced by these anti-nationals. Never work in offices of Muslims. Do not hire them. Do not let them offices in our business premises, nor sell or rent our houses to them in our housing societies, colonies or communities. I shall certainly vote but only for him who will protect the Hindu nation. I shall be allowed to ensure that our sisters and daughters do not fall into the love trap of Muslim boys at schools, colleges and

> work places. I shall not receive any education or training from a Muslim teacher. "

These are the resolutions on which Hindus are asked to take vows.

> "Such strict economic boycott will throttle these elements. It will break their backbones. Then it will be difficult for them to live in any corner of this country. Friends! Begin this economic boycott from today. Then, no Muslim will raise his head before us. Did you read of Hanumanji? Did you read of this leaflet? Then make ten photocopies of it and distribute it to our brothers. The curse of Hanumanji be on him who does not implement this and distribute it to others! The curse of Ramchandraji also will be on him. Jai Shri Ram!"

This is the type of publicity being done. These are the leaflets that are being distributed. Is this the way you want to run a country where civilisation prevails?

SHRI TARIT BARAN TOPDAR (BARRACKPORE): They want regimentation, not civilisation.

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : This is inhuman. This is the worst type of instigation that can be attempted.

There are many cases. I would like to avoid such heart-rending details. As I said, I must congratulate members of several organisations which, at great risk to themselves, have personally visited the State and the camps and have collected evidence. It is not only the political leaders or activists who have visited. They will say, "Oh! They are politically motivated." What has Shri Deepak Parekh, the Chairman of HDFC, said? He said: "What is a Government elected for? If they cannot protect innocent lives, then they should go." He, at least, is not a Communist, Shri Ram Naik! Nobody will blame him.

The question necessarily arises: "Who is primarily responsible?" Whatever way you look at it, for the prolonged incidents that are going on the real mastermind is the RSS *Pracharak* who is in the *gaddi* today. He has

succeeded in the biggest polarisation since the Babri Masjid demolition of 1992. That is why they are praising him. But there are some exceptions. Shri Pritish Nandy, Member of Parliament from Shiv Sena party said: "Narendra Modi is a despicable criminal". Shri Shanta Kumar said: "To restore peace, and to win trust and confidence of the people of Gujarat should be our priority. To that end people should rise above personal ties." And he asked for the resignation of Shri Narendra Modi. He said: "If I were the Chief Minister, I would have resigned." Shri Mukhtar Abbas Naqvi, the former Minister, says: "When a significant section of people of Gujarat have lost faith in this Government, all possible steps to restore that confidence are essential." The suggestion is, removal of Shri Narendra Modi. Shri Madan Lal Khurana had quit his post as Vice-President in charge of the State after Modi was sworn in as the Chief Minister and has not visited Gujarat since. Even the Bihar brigade Union Minister Shri Shah Nawaz Hussain, and Rajya Sabha Member of Parliament Shri Shatrughan Sinha, who are known Modi-baiters and were also on the watchlist of Modi-supporters, are saying this.

<u>15.00 hrs.</u>

Nanaji Deshmukh, I mentioned earlier, said: "This is an orchestrated genocide." Even Shri Swapan Dasgupta, whose sympathies are known, has written in the latest issue of *India Today:* "Yet Modi persists defiantly in his position endorsed with gusto by Prime Minister Atal Bihari Vajpayee. In BJP and even the ruling NDA, he has emerged as an unquestioned leader of Gujarat BJP." He has acquired a new label. He calls himself, or his followers call him, as *Chhote Sardar*. Look at the fate of Sardar Vallabh Bhai Patel. Prominent Hindu leaders have conducted *pujas* for his wellbeing. His supporters are praising him for effecting a Hindu consolidation.

Of course, Sir, some of us feel sick about the way things have happened. It is being said that the situation has become normal. Just now Kumari Uma Bharati has said that. However, even a few days back when the so-called peace march was going, a *tamasha* was going on … (*Interruptions*)

SHRI VAIKO (SIVAKASI): Was that a *tamasha* ?

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : It was a *tamasha* there with those people and with no participation from the people generally. Everybody has seen it. Newspapers have reported that there were more policemen than citizens there in that procession.… (*Interruptions*) To say that the situation has become normal is nothing but giving misinformation to people.

Nearly three thousand people have been killed, correct us if we are wrong, including the 58 killed in the reprehensible, condemnable incident in Godhra. One lakh and thirty thousand people are still living in makeshift camps. The Gujarat Chamber of Commerce has assessed that more than Rs.10,000 crore have been lost. Fifteen hundred people have sustained injuries; 5,326 houses have been destroyed; 1448 vehicles were burnt. … (*Interruptions*)

Reference has been made to how Shrimati Medha Patkar was treated, assaulted, and how a threat was given to Shrimati Mallika Sarabhai. She felt so insecure that she gave a ring here. Shrimati Nirmala Deshpande told me. I requested the hon. Home Minister. At late hours in the night he responded forthwith, I must thank him for that, as he did in the case of Bhavnagar. Because of his intervention at our request, Bhavnagar was saved. I had to trouble him by saying that Shrimati Nirmala Deshpande was requesting us to do something to save Shrimati Mallika Sarabhai because she was feeling insecure and her car had been damaged.

It is said that we are politically motivated. We are reminded of the vote bank. What about NHRC? What is the vote bank of the National Human Rights Commission? Other academicians also have gone there, non-party people have gone there. People belonging to different trades and professions, who have nothing to do with politics, have gone there. What have they come and reported? We should feel ashamed, at least once, for heavens sake! The teams of women reporters issue is there, I do not want to repeat it.

What is most disturbing now, since Shri Advani is here, is that I got a report yesterday that for five camps at Dahod, the Government has decided not to supply any provisions. It is a serious matter. In five camps at Dahod, the Government has decided to stop supplying provisions. How would they

survive without it, even if it is a pittance of Rs.12? They cannot go back. Shri Mulayam Singh Yadav said that they have no use for the money given to them. They have no houses to go back to. They have no place to live in. What is this amount of Rs.800 to Rs.1000? What compensation is being given to them? Initially, you know, there was discrepancy and discrimination in compensation. That too was remedied not at the instance of the Government but at the instance of the camp people they said.

Sir, why is this happening. We know the versions of the Prime Minister. His speech in Goa has made everybody hang his head in shame. The Prime Minister had spoken in such a language. He had talked of Muslim fundamentalists. Every statement of the Prime Minister, nowadays, is followed by clarification. There are clarifications three or four times. Then, every statement is misunderstood by the whole country except him.… (*Interruptions*)

श्री प्रियरंजन दासमुंशी : हर क्लेरीफिकेशन के लिए एक अलग से मिनिस्ट्री बना दीजिए तब ठीक होगा।

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : What did he say? He said: "No, no. I was only criticising the Muslim fundamentalists, *Jehadis* '

But why does he not criticise the Hindu fundamentalists? Though about the incident of 6th December, the Home Minister is an accused.… (*Interruptions*)… He is also an accused.

What was going to happen in Ayodhya? We all know, how the Supreme Court had to intervene. But not a single word has been spoken against the Hindu fundamentalists, those who are ripping this country apart on the basis of religion.

Mr. Deputy-Speaker, Sir, I do not wish to take any more time except to make one point. It is not a recent aberration of Shri Atal Bihari Vajpayee. We are thankful to Shri Rajdeep Sardesai for finding out the speech of Shri Atal Bihari Vajpayee delivered in Parliament in 1970. He said:

> "Whatever the reason, our Muslim brethren are getting more and more communal, and as a reaction Hindus are getting more and more aggressive. Nobody made the Hindus aggressive. If you want to give the credit for this to us, ('us' means, Hindus) we are willing to take it. But Hindus will no more take a beating in this country. Hindus will not start, Hindus will not initiate. If you promote Muslim communalism, the other feeling will run high. Communalism is like a double-edged sword, it acts both ways. "

This was delivered by him in 1970 in this House. He further said:

> "I agree, the feeling of the revenge is not good. We cannot allow any individual to take the law in his hands. But will this rule apply only to Hindus? Will it not apply to Muslims?"

…(*Interruptions*)

SHRI KHARABELA SWAIN (BALASORE): Sir, does he know that the same Shri Rajdeep Sardesai wrote that Dawood is a great patriot? … (*Interruptions*)…This item was published in 1993.… (*Interruptions*)…Do you want that I should read it out… (*Interruptions*)…Sir, on 2 nd April, 1993, Shri. Rajdeep Sardesai wrote Dawood as a great patriot… (*Interruptions*)…Here is that news-item. I can lay it on the Table of the House… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEKAER: Shri Kharabela Swan, when you get a chance, you can refer it. Let him speak.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Vaiko, when he gets a chance, he can refer this matter in his speech.

… (*Interruptions*)

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : Sir, I am not quoting Shri Rajdeep Sardesai… (*Interruptions*)

SHRI KHARABELA SWAIN : I am quoting the same person whom you are quoting… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Kharabela Swain, when you get a chance, you can say whatever you want to say. Please do not interrupt. Let him speak.

… (*Interruptions*)

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : Mr. Deputy-Speaker, Sir, I only mentioned that Shri Rajdeep Sardesai has reminded us about the speech of Shri Atal Bhari Vajpayee delivered by him in 1970.

श्री खारबेल स्वाइं : उपाध्यक्ष महोदय, मुझे मारा गया, पीटा गया। कम्युनिस्ट लोगों ने मेरे बाल खींचकर मुझे पीटा। अभी यह बोल रहे हैं कि कुछ नहीं किया। …(व्यवधान) छः महीने तक उन लोगों को निकाल दिया। … (व्यवधान)

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : I do not quote Shri Rajdeep Sardesai. Although I would like to quote even many matters yet I am not quoting them today… (*Interruptions*)

श्री खारबेल स्वाइं : अब बोल रहे हैं कि उन्होंने किया।… (व्यवधान)

श्री चन्द्रनाथ सिंह (मछलीशहर) : उपाध्यक्ष महोदय, देखिए, ये क्या कर रहे हैं ? … (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Swain, please take your seat.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Swain, will you please resume your seat?

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Topdar, please take your seat. You are provoking him.

… (*Interruptions*)

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : Sir, I was reading from the speech of Shri Atal Bihari Vajpayee which was delivered in this House. … (*Interruptions*)

He said this:

> "The question is, why are riots started? I call upon this House to think about this. I have not reached any conclusion. Some Muslims start the riot – knowing they may lose life and property. One reason could be that our Muslim brethren have concluded that now there is no place for them to live in India, no guardian for them, so it is better to die fighting than to live. Another reason may be that some Muslims are connected with Pakistan and indulge in rioting at Pakistan's behest. Pakistan wants to tarnish our image. Hindus are being driven out of Pakistan. …
>
> Some Muslim leaders do not want Muslims to merge with the national mainstream."

Sir, this is what is guiding them. Even in the year 2002, the Prime Minister of India is quoting what he said in 1970, as the leader of his party. That is the agony and that is the matter of concern. Today, we have a Prime Minister, who has chosen his Constituency. His agenda is no longer a hidden agenda. He has now openly come out, saying that the Muslims cannot be trusted – in effect, he has said that; and that they cannot live in harmony with their neighbours. This is coming from the Prime Minister and within two days, he issues a clarification, which makes it worse.

Why is it happening like this? This is the RSS brand of so-called nationalism. … (*Interruptions*) The Government of Gujarat had laboratory of *Hindutva* of Vajpayee-Advani variety and RSS variety! They are utilising their prescribed textbook, which says:

> "Hitler lent dignity and prestige to the German Government within a short time by establishing a strong administrative set up. Then, it credits the Fuehrer with a string of achievement.

Hitler adopted a policy of opposition towards the Jews and advocated the supremacy of the German race. Hitler adopted a new economic policy and brought prosperity to Germany. He began efforts for eradication of unemployment. He instilled a spirit of adventure into the common people. But in doing so, led to extreme nationalism and caused the Second World War."

This is what is being taught to the students. That is why the questions were put. … (*Interruptions*)

भारी उद्योग और लोक उद्यम मंत्रालय में राज्य मंत्री (डॉ. वल्लभभाई कठीरिया) : यह कहां लिखा है? यह कौन सी किताब में है?

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : Hitler and Mussolini are their idols and not Mahatma Gandhi nor Dr. Ambedkar nor the Constitution of India.

कुमारी उमा भारती : सोमनाथ बाबू, उस किताब का नाम तो बता दें।… (व्यवधान)

SHRI SOMNATH CHATTERJEE (BOLPUR): Today they are worshipping Hitler and Mussolini. This is what is happening in this country.

So, I appeal to every section of this House that at least, this Parliament should not be polluted. People of this country are looking towards us. The Government is not able to provide jobs to the people, and people are starving. *Kisans* are committing suicide in this country. Many such incidents are happening. This country is going downhill. More and more people are becoming unemployed in this country. But then, at least, let us have the satisfaction that we are a united country. All of us together will fight for the development of this country and nobody is superior to others. This is the message of Indian Constitution, and therefore, I appeal to everybody now. The Government will continue, whether it loses the vote on this discussion under Rule 184.

At least the conscience of India may not be defiled. Let us not ignore the conscience of the people of this country and its Constitution. I support the Motion and most strongly commend it along with the amendments.

कुमारी उमा भारती : सोमनाथ जी ने मेरा नाम लिया इसलिए मैं इनको कहना चाहती हूं कि एक तो मैं तीन लाख से अधिक वोटों से जीतकर आई हूं। दूसरे यह कि मैंने अपने भााण के प्रारम्भ में ही गुजरात में हुई हिंसा की निंदा की है और तीसरी बात यह कि आपने जो अभी कोट किया है, वह कौन सी किताब से किया है, उसका नाम तो बता दें।

MR. DEPUTY-SPEAKER: What is the source of information?

… (*Interruptions*)

SHRI PRAVIN RASHTRAPAL (PATAN): You had also quoted some report. आपने भी नाम नहीं बताया था।

SHRI K. YERRANNAIDU (SRIKAKULAM): Deputy-Speaker, Sir, I am grateful to you for facilitating this discussion.… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Raghuvansh Prasad Singh, I have called Shri Yerrannaidu. We do not have time.

… (*Interruptions*)

SHRI K. YERRANNAIDU : Mr. Deputy-Speaker, Sir, I am very grateful to you for facilitating this discussion on the grave tragedy in Gujarat. I rise today with a heavy heart to speak on an issue which besides being a human tragedy is a blot on our collective conscience.

Gujarat is the land of Mahatma Gandhi. He is the Father of the Nation. He preached non-violence and *dharma.* But what has happened in Gujarat? Gujarat is ravaged by violence, bitterness and hatred. My heart goes out to the innocent men, women and children who have become helpless victims of an unimaginable crime in the name of religion. If there was ever a time for us to collectively introspect the nation, it is only now.

<u>15.17 hrs</u> (Shri Devendra Prasad Yadav *in the Chair*)

I speak today on behalf of the Telugu Desam Party that has always stood for principles. My Party is committed to the best interest of the State and

the nation. The Telugu Desam Party is one political party that has always played a positive role in the national politics. The Party under our visionary leadership of Shri Chandrababu Naidu is committed to the highest ideals of democracy, secularism and good governance. TDP has consistently opposed communalism. The Telugu Desam Party has a consistent track record of being a modern, forward-looking and secular Party. Mr. Chairman, Sir, in contrast to what has happened in Gujarat, the Telugu Desam Party Government in Andhra Pradesh has given the highest priority to maintenance of law and order and has effectively countered communalism in all its form. The Telugu Desam Party Government has been quick and firm in dealing with any communal violence. For the last seven years, under the control of our Chief Minister, there has been no incident of violence in Andhra Pradesh. In contrast, during the past 35 years of the Congress rule, almost every year we witnessed incidents of communal violence. If the Government has a will, it can control communal violence in the country. In keeping with the fundamental duties enshrined in our Constitution, our Party has been working tirelessly to promote the spirit of brotherhood among all the citizens.

I would like to reiterate some facts about the NF and the UF Governments. The then Chief Minister of Andhra Pradesh who belonged to the Telugu Desam Party, Shri N.T. Rama Rao, was the Chairman of the National Front. He founded the National Front against the Congress misrule, nepotism, favouritism, even corruption and scams. Shri N.T. Rama Rao united all the political Parties against the Congress Party and founded the National Front Government. From the beginning, the Telugu Desam Party is a plank on the secular fabric. Shri Chandrababu Naidu was the Convenor of the United Front Government. The United Front was also formed on the secular credentials of this country.

Even now the Telugu Desam Party is supporting the NDA Government on the basis of Common Minimum Agenda. Our Party is supporting the Government from outside. The TDP has no lust for power. Without participating in the Government, we are checking the secular fabric of this country. We are not doing it for the first time. We are arguing on Gujarat violence. Even in the past, we have checked the secular fabric of this

country. Even when the Gujarat Government issued a Circular saying that the Government employees could participate in the RSS activities, we told the Government that if any Motion under Rule 184 is moved by any Opposition Party on this issue, we will support the Motion. Then, the NDA Government asked the then BJP Government in the State to withdraw the Circular. At that time, Shri Keshubhai Patel was the Chief Minister.

Sir, on the issue of saffronisation of education in our country, our former Minister, Shrimati Pratibha Bharathi came out of the meeting in protest. When the Babri Masjid was demolished, our TDP leader and the then Chief Minister, Shri N.T. Ramarao condemned the demolition and said that it is a black day for our country. Every time, if there is any infringement upon the secular fabric of our country, the Telugu Desam Party has tried to protect it. As regards construction of Ram Temple, as you are all aware, from the very beginning, we have asked the Government to go by the Supreme Court verdict if it is not possible to solve this problem through mutual agreement. The Government agreed to it and we appreciated the Government about it and we also supported the Government.

Now, you take for example Gujarat violence. I have never witnessed such a violence in the past. I am in politics for the last 20 years. It is worse than the massacre of *harisans* and violence in Bihar. At that time, article 356 was imposed in Bihar. Everybody is talking about violence in Bihar but this violence is much more than the Bihar violence. That is the stand of the TDP. Hundreds of people have been killed in Gujarat. The Chief Minister of Gujarat has failed to control the law and order problem in Gujarat. Even now, the violence is going on. The Government of India has sent Army also to assist the State Administration. In spite of that, the State Government has not been able to control the situation and still violence is going on. That is why, Gujarat violence is a national issue and it has so many national implications. The Constitution has given the Fundamental Rights to the citizens of this country. The Government of the State of Gujarat and even the Government of India should protect the life and property of every person. This is a mandatory duty of the elected Government whether it is the Central Government or the State Government. Hundreds of people have been killed in Gujarat. Even now

1,40,000 people are in the camps. Hundreds of people are in the hospitals. It has never happened in the past and not even at the time of partition. That is why, this is not a State issue. It has national ramifications. If something happens in some State, the TDP will never interfere. But this is a communal problem and it can spread to other parts of the country also. The Godhra incident took place on 27th and on the same day our Chief Minister, Shri Nara Chandrababu Naidu condemned that incident. Even the subsequent violence in Gujarat was also condemned by the TDP. From the beginning, we are saying that whatever assistance is required by the Gujarat Government, the Government of India should provide it. It should cooperate in all respects and send the forces there. But even then, the Government of Gujarat is unable to stop the violence. Even one week back, the curfew was imposed. Even today I do not know if something may have happened in Gujarat. I do not have the information.

That is why they have no faith in the elected Government. The need of the hour is to change the leadership in Gujarat and that is the stand taken by the TDP. Why we have taken up the Gujarat incident as a national issue is because it extends to the whole country as some incidents took place in Hyderabad, some parts of Orissa, Rajasthan and other places also. If it was a State issue, a general issue and not a national issue, why did it extend to other parts of the country?

Our country is a secular country. We have to protect the secular fabric in our country. We have to live peacefully and harmoniously with one another. We have to maintain brotherhood among the followers of all religions. It is enshrined in our Constitution also that followers of every religion should live harmoniously with each other.

Now the Government of India should think as to why we are asking them to take certain measures. The Telugu Desam Party is extending outside support to the NDA Government. This is not the BJP Government; but a coalition Government functioning on the basis of a Common Minimum Programme. BJP is the main ally in the NDA. It is the duty and responsibility of the Central Government under article 355 of the

Constitution to issue proper directives if the life and property of every citizen is not adequately protected by a State Government.

The Telugu Desam Party does not want to interfere in the affairs of other States. Who should be the Chief Minister of a particular State is decided by the MLAs of the State Assembly. But, as I said, TDP is extending support to the NDA Government at the Centre in which BJP is the main ally. Since TDP treats the Gujarat situation as a national issue, we have demanded at the Party level that the leadership in the State be changed.

About holding of elections ahead of schedule, even the BJP Executive which met in Goa recently took a stand to go for elections. But we felt that this is not the time to hold elections in the State because thousands of people are still in the relief camps and hundreds of people who have received injuries in the riots are in hospitals. Many people are homeless and are still staying in the camps. Is it the proper time to hold elections? Is that the meaning of democracy? Is that the meaning of elections as given in the Representation of People Act? That is why the TDP requested the Government of India not to go for elections in Gujarat. When normalcy is restored they can go for elections in the State according to the schedule. We never asked the Government to stop elections. We only said that the situation is not congenial to go for elections.

Now I come to the question of relief and rehabilitation. We have been demanding that at this crucial juncture liberal relief should be given. In the first phase of the Budget Session when I participated in a debate on the same issue, I requested the Prime Minister and the Home Minister to provide relief to the affected people liberally. It should reach the victims immediately without any further delay.

Law and order is an important thing. We have to maintain the law and order in the State at any cost. The Godhra incident took place on 27^{th} February. Thereafter 62 days have elapsed. But even now violence is going on. It is but natural that the international community is also criticising this violence. They are also feeling for what happened in India and why it has happened.

The Prime Minister himself visited Gujarat. Suppose it was only a State issue, then why would the Prime Minister say that it was a national shame? This is the statement of the Prime Minister. He also asked the Chief Minister to follow the *Rajyadharma*. That means we have to give equal priority to everyone and there should be no discrimination. Those words were appreciated by the TDP and my Chief Minister, Shri N. Chandrababu Naidu, hailed the Prime Minister's statement on the very same day. But, after sometime the statement itself was changed! Once the Prime Minister requested the Chief Minister to follow the *Rajyadharma,* then he had to follow the *Rajyadharma*. The Prime Minister also lamented by asking with what face he would go to other countries.

So, this shows the failure of the administration in Gujarat. The Prime Minister's statement clearly shows it. He told to follow R*aj Dharma*, then it is a national shame and asked: "How will I go to other foreign countries and show my face?" What is the meaning of the Prime Minister's statement? These are the issues on the situation which is prevailing in Gujarat. Since it is the National Democratic Alliance, the TDP is asking to change the leadership in Gujarat.

Coming to federalism, much has been said about the federal nature of the Indian Constitution and the autonomy of the States. The Telugu Desam Party has always maintained that greater autonomy should be given to the States. The present Chief Minister of Andhra Pradesh and even the then Chief Minister, Shri N.T. Rama Rao believed that strong States can only make a strong Centre. If States are strong, then Centre will be strong. This is the philosophy of the TDP. However, the events in Gujarat cannot be viewed as a State issue. What has happened in Gujarat threatens the very future of the country. I would quote again that the violence in Gujarat is even more than the one in Bihar. The NDA and the BJP have said it. We are part of the NDA Government extending outside support and that is why, we are suggesting the BJP to change the leadership in Gujarat.

The Congress Party is projecting itself as a great champion of secularism today. History stands testimony to the duplicity of Congress on the issue of secularism. Why has this happened in this country? It is because of the role of the Congress. The Congress was responsible for it. The riots of 1984 are

a permanent blot in our democratic polity. The compromises made by the Congress with communalism are borne by the *shilanyas* which was encouraged by none other than Shri Rajiv Gandhi himself. Shri Rajiv Gandhi himself started the campaign from Ayodhya. It was again the Congress Government, with Shri P.V. Narasimha Rao as the Prime Minister, which was the silent spectator to the demolition of Babri Masjid. I would quote from the Resolution:

> "The Congress is a party that wants to gain power by hook or by crook. In its blatant pursuit of power, it wants to be everything to everybody. In January, 1999, it was the Congress Working Committee that passed a resolution that said, "Hinduism is the most effective guarantor of secularism." It is obvious that the Congress has scant regard for the minorities except for offering them lip sympathy. The Congress Party has lost its idealism and is willing to make any compromise at the cost of ethical considerations and moral principles."

… (*Interruptions*)

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI : Do not try to play double standards. … (*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN : Please take your seat.

SHRI K. YERRANNAIDU : My Party is interested in larger issues. This is the truth. I have quoted only from the resolution made by the Congress Party. The demolition of Babri Masjid was silently watched by the then Congress Prime Minister. This is the truth. That is why, my Party, in the larger interest of the country, is asking for a change in the leadership of Gujarat. Take the case of China. They are using their energy for their own development…… (*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: Please take your seat.

SHRI K. YERRANNAIDU : My Party in interested in larger issues of the country. Just now, Shri Somnath Chatterjee said that we are all united for the development of the country. In the case of China, the entire energy and

services of the people are put in for the development of their own country. Its Foreign Direct Investment has reached 40 billion dollars. But in India, FDI is only four billion dollars with great difficulty. That is why, we have to concentrate on our development. We are facing problems of illiteracy, malnutrition, drinking water and all that. In this scenario, we have to give more thrust on the development of our country.

That is why, the Chief Minister of Andhra Pradesh has made the following demands. The first one is, only a change in the leadership of Gujarat will bring faith in the minds of the people of Gujarat. All religions will have faith on the Government. We are not interfering as to who should be the next Chief Minister of Gujarat at this moment.

Change in leadership is the need of the hour. Second demand is that liberal relief and rehabilitation assistance should reach the affected people and victims who have suffered. Third one is, at any cost we have to maintain the law and order, we have to maintain normalcy, and we have to maintain peace and harmony in Gujarat. This is not the time to go for elections. Till such time normalcy is restored, we should not go for elections. These are the four demands that we are making to the Prime Minister. We are waiting for the Prime Minister’s reply.

Thank you very much for having given me this opportunity to speak.

श्री चन्द्रशेखर : सभापति जी, सदन में जब बहस शुरु हुई तो मुलायम सिंह जी ने कुछ सवाल उठाए। उसके बाद सरकारी पक्ष की ओर से जो पहली वक्ता थीं वह उमा भारती जी थीं। कुमारी उमा भारती जी के भााण को सुनकर मुझे ऐसा लगा कि हम लोग संसदीय जनतंत्र के अंतिम छोर पर पहुंच गये हैं। मुझे बहुत जानकारी तो नहीं है लेकिन थोड़ी बहुत राजनीति की जानकारी मुझे भी है। मैंने राजनीति-शास्त्र का अध्ययन किया है और 50 वाोंं से देश की राजनीति में हूं। एक जमाने में नाज़ी लोगों ने इसी तरह से संसद का उपयोग किया था। वही भाा, वही भावना, वही अभिव्यक्ति आज हमें देखने को मिली। जिस प्रकार का भााण उन्होंने दिया, शुरु तो उन्होंने इससे किया कि हम किसी पर आक्षेप करना नहीं चाहते, देश में सहमति की राजनीति चाहते हैं और सब मिलकर समस्या की जड़ में जाएं और उसके बाद उन्होंने यह कहा कि कांग्रेस पार्टी ने गड़बड़ी की। कांग्रेस पार्टी ने 1984 में गड़बड़ी की - यह उन्होंने नहीं कहा। उन्होंने कहा कि सन 1920

में गड़बड़ी की जब खिलाफत आंदोलन का उन्होंने विरोध किया और कम्युनलिज्म वहां से शुरु हुआ। खिलाफत आंदोलन के नेता महात्मा गांधी जी थे, शायद उमा जी को मालूम है या नहीं है।

कुमारी उमा भारती : मुझे मालूम है।

श्री चन्द्रशेखर : ठीक है, आपको मालूम है तो हमको भी यह मालूम है कि गांधी जी को मारने वाले कौन थे लेकिन हम उन बातों में पड़ना नहीं चाहते। मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि चाहे गांधी जी को यह देश भुला दे लेकिन उन्हें आज सारी दुनिया याद कर रही है। जहां जनतंत्र है वहां के लोग आज उन्हें याद कर रहे हैं और जहां जनतंत्र नहीं है वहां जनतंत्र के लिए लड़ने वाले लोग याद कर रहे हैं। लूई-फिशर ने महात्मा गांधी जी पर जो किताब लिखी है, उमा जी, मेरा निवेदन है कि कभी उनके बारे में आप पढ़ लीजिएगा। उसमें लिखा है कि जब महात्मा गांधी जी मरे थे तो किस तरह से दुनिया के विभिन्न देशों में प्रतिक्रिया हुई थी, किस तरह से गरीब आदमी रोया था, किस तरह से राजनेता रोये थे। माननीय सोमनाथ जी मुझे माफ करेंगे सिवाय सोवियत यूनियन को छोड़कर दुनिया का कोई ऐसा देश नहीं था जहां का झंडा झुका नहीं था।

श्री प्रकाश परांजपे : पाकिस्तान ने क्या किया था?...(व्यवधान)

श्री चन्द्रशेखर : पाकिस्तान का आपको ज्यादा मालूम होगा लेकिन मौहम्मद अली जिन्ना जो पाकिस्तान के निर्माता थे उन्होंने भी महात्मा गांधी जी की मृत्यु पर शोक-संवेदना प्रकट की थी और उन्हें दुनिया का महान व्यक्तित्व बताया था। आप उससे ज्यादा जानते हो तो वह इतिहास मुझे मालूम नहीं है। सभापति जी, मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि मैं किसी पर आक्षेप नहीं कर रहा हूं। मैं बता रहा हूं कि कहां हम लोग पहुंच गये हैं।

कुमारी उमा भारती : माननीय चन्द्रशेखर जी, क्या आप जिन्ना के शब्दों को उद्धृत कर सकते हैं जो उन्होंने महात्मा गांधी जी के बारे में कहे थे।

श्री चन्द्रशेखर : उपाध्यक्ष महोदय, मैं जिन्ना के शब्दों को याद नहीं करता हूँ, जिन्ना और नाथू राम गौडसे के शब्दों को आप ही याद करिये ..(व्यवधान) .. सभापति जी, अगर इस तरह होगा तो मैं बैठ जाता हूं।

सभापति महोदय : इस तरह के आपत्तिजनक शब्द प्रोसीडिंग्स का पार्ट नहीं बनेंगे।

श्री चन्द्रशेखर : उपाध्यक्ष जी, हमें उमा जी से यह उम्मीद नही थी। मैं समझता था कि जिस प्र
ाकार का भााण उन्होंने शुरु किया, वैसा ही उनका अंत करेंगी लेकिन मुझे दुख के साथ कहना पड़ता है कि उन्होंने उन सिद्धांतों का प्रतिपादन किया जो फासीवाद की जड़ में हैं। वे सिद्धान्त, जिन्होंने जर्मनी को वहां तक पहुंचाया था। हम लोग इतिहास को भूल जाते हैं। हिटलर संसद के

जरिये पावर में आया था। उन्होंने इसी प्रकार से संसद का प्रयोग किया था। आज उमा जी अपना भााण नहीं दे रही थीं बल्कि उनके दिमाग में जो हिन्दुत्व बैठा हुआ था, उसका भााण कर रही थीं। मुझे क्षमा कीजिये, मैं बड़े आदर के साथ माननीय प्रधानमंत्री जी के बारे में कहना चाहूंगा कि मैं उन्हें 40 सालों से जानता हूं और पहली बार जब मैं 1962 में संसद में आया था, तब से उनके नजदीक रहा हूं। श्री अटल में और जो कमी हो लेकिन कभी उन्हें अपनी भाषा को बदलते हुये नहीं देखा। उमा जी ने 1970 का जिक्र किया लेकिन 1977 में भी मैं अटल जी के नजदीक रहा हूं। मुझे यह बहुत अजीब लगता है कि अटल जी जैसे व्यक्ति ने गोआ में किस प्रकार का भााण दिया। उनके और उमा जी के भााण को सुनकर मुझे ऐसा लगता है कि जनतंत्र के जरिये इस देश के चलाने में अब हमारा कोई स्थान नहीं है। आर..एस.एस. के प्रवक्ता श्री वैद्य हैं। कल रात टी.वी. पर उनका भााण सुना। उन्होंने कहा कि एन.डी.ए. का अपना अजेंडा है, डी.एम.के. का अपना अजेंडा है, टी.डी.पी. का अपना अजेंडा है। सब लोग अपना अपना अजेंडा चलाकर कुछ पाना चाहते हैं। सब लोग अपनी बातों को दोहराना चाहते हैं। इसी प्रकार हमारा भी अजेंडा है । उस अजेंडा को चलाने के लिये हम मजबूर हैं। जब यह बात बार-बार सदन के अंदर और बाहर कही जाती है कि सरकार भाजपा की नहीं, एन.डी.ए. की है तो मैं नहीं जानता कि यह सरकार अटल बिहारी वाजपेयी की है या श्री वैद्य की है? इस बात का खुलासा हो जाना चाहिये, मैं आपके जरिये निवेदन करना चाहता हूं। अब बहुत खून बह चुका है। हमारे एक मित्र हमारे साथ काफी समय रहे हैं और आज रक्षा मंत्री हैं। मैंने कल उनका एक वक्तव्य पढ़ा जिसमें उन्होंने कहा कि जननायक जयप्रकाश ने कहा था कि वे नरेन्द्र मोदी में एक रोशनी देखते हैं। मुझे नहीं पता कि जयप्रकाश जी ने ऐसा कहा या नहीं लेकिन जॉर्ज साहब को रोशनी दिखाई पड़ रही है। ...(व्यवधान).. * वैसे लोगों के बारे में मैं कुछ नहीं कहना चाहता... (व्यवधान)

डॉ.विजय कुमार मल्होत्रा : सभापति जी, यह असंसदीय भााा है।

श्री चन्द्रशेखर : सभापति जी, अगर यह असंसदीय भााा है तो मैं इसे वापस ले लेता हूं।... (व्यवधान)

श्री अनंत गंगाराम गीते (रत्नागिरि) : सभापति जी, श्री चन्द्रशेखर जी के सहयोगी ने देश चलाया है, ये ऐसा कह रहे हैं... (व्यवधान)

सभापति महोदय : आप क्यों उठकर खड़े हैं? आप लोग अपना स्थान ग्रहण कीजिये। टोका-टाकी आसन की अनुमति के बिना प्रोसीडिंग्स में नहीं जायेगी।

डॉ.विजय कुमार मल्होत्रा : . . . यह आपत्तिजनक बात है। ... (व्यवधान)

सभापति महोदय : कोई भी आपत्तिजनक बात कार्यवाही वृत्तांत में नहीं आयेगी, उसे देखा जायेगा। ...(व्यवधान)

श्री चन्द्रशेखर : सभापति जी, मैं आपसे निवेदन कर रहा था कि जो कुछ आज इस सदन में हो रहा है, वह इस बात का संकेत है कि हम किस दिशा में जा रहे हैं और मैं ऐसा समझता हूं कि मेरे जैसे लोगों का इस सदन में कोई स्थान नहीं है। यह बात मैं पहले से ही मानता हूं। …(व्यवधान)

सभापति महोदय : आप आसन की अनुमति के बिना ही खड़े हो जाते हैं।

श्री प्रियरंजन दासमुंशी : सर, यह कोई तरीका है ? यह एक सीनियर मैम्बर को बीच में डिस्टर्ब कर रहे हैं।… (व्यवधान)

श्री सी.के.जाफ़र शरीफ़ (बंगलौर उत्तर) : सर, एक सीनियर मैम्बर बोल रहे हैं और यह बीच में टोका-टोकी कर रहे हैं, यह क्या तरीका है।… (व्यवधान) Is this the way to behave ?

सभापति महोदय : माननीय सदस्य कृपया शांति बनाये रखें।… (व्यवधान)

श्री चन्द्रशेखर : मैं थोड़े से शब्दों में अपनी बात कहना चाहता हूं। अगर इतना गुस्सा आता है तो उस गुस्से को समझते हुए मैं चुप भी हो सकता हूं।

*Not Recorded.

कुमारी उमा भारती : सभापति महोदय, मैं चंद्रशेखर जी को गुरुतुल्य मानती हूं। जितना मैं अटल जी को मानती हूं उतना ही मैं इन्हें मानती हूं। न तो इन्होंने महात्मा गांधी जी के बारे में एक शब्द बोला। लेकिन आपने जॉर्ज साहब के लिए जिन शब्दों का प्रयोग किया है, माननीय चंद्रशेखर जी अगर आप उन्हें वापस ले लें, यह बहुत अच्छा नहीं हुआ। चंद्रशेखर जी आपके मुंह से ऐसे शब्द हम सोच भी नहीं सकते थे।

सभापति महोदय : आसन से कह दिया गया है, उमा जी आप क्यों चिंतित हैं।

कुमारी उमा भारती : महात्मा गांधी को हम भगवान जैसा मानते हैं।

श्री चन्द्रशेखर : मैंने कहा कि उमा जी ने खिलाफत मूवमैन्ट का विरोध किया… (व्यवधान) अब आप सुन लीजिए, आप मुझे जवाब नहीं देने दे रहे हैं। खिलाफत मूवमैन्ट से मुस्लिम साम्प्रदायिकता का उदय हुआ। इसका मतलब यह था कि गांधी जी ने साम्प्रदायिकता को बढ़ावा दिया।

अगर ऐसी बात है तो देश के इतिहास को फिर से बदलना पड़ेगा।... (व्यवधान) अब आप चुप रहें, उमा जी से क्यों कम्पीटीशन कर रही हैं।

मैं आपसे निवेदन करूंगा कि जब किसी देश से जनतंत्र मिटाना हो, उसकी सभ्यता और संस्कृति को खत्म करना हो तो उसके प्रतीकों को सबसे पहले खत्म कर देना चाहिए। गांधी जी इस देश के प्रतीक हैं। गांधी जी इस देश की सभ्यता, संस्कृति और परम्परा के आदर्शों के उदाहरण हैं। उन्हें समाप्त करना देश की परम्परा को समाप्त करना है। उन्होंने कहा कि सेक्युलरिज्म तभी रहेगा, जब हिन्दू धर्म रहेगा। हिन्दू धर्म क्या है, उसकी व्याख्या अलग-अलग हो सकती है। हिन्दू धर्म की व्याख्या चार सौ, छः सौ या आठ सौ वाँ की नहीं हैं। हिन्दू धर्म की व्याख्या पांच हजार वाँ की है। यह वेदों और उपनिादों से निकली है। मैं आपके जरिये इस सदन को कहना चाहता हूं कि वेदों और उपनिादों को जमाने में कोई मंदिर नहीं थे। उस समय कोई राम और शिव की पूजा नहीं होती थी। यज्ञों के जरिये मंत्रों के जरिये और एक परम्परा के जरिये यह धर्म सारी दुनिया में अपना प्रभाव रखता था। वहां जो उन्होंने श्लोक दोहराया कि भगवान एक है, उस तक पहुंचने के रास्ते अलग-अलग हैं। कौन राही किस रास्ते से उस मंजिल पर पहुंचेगा, इसके लिए झगड़ा क्यों होना चाहिए। अगर यहीं हिन्दू धर्म है तो उसमें हिन्दू, मुस्लिम, सिख और ईसाई में कोई अंतर नहीं है। आज जो कहा जाए, जो पढ़ रहे हैं, अभी सोमनाथ दादा ने पढ़ा, क्या वही हिन्दू धर्म है। क्या यही हिन्दू धर्म है जो आज गुजरात में हो रहा है।

आपने एक दूसरी बात कही कि आजादी के बाद किसी जगह इस तरह से दंगा नहीं रुका, जिस तरह से तीन-चार दिन के अंदर गुजरात में रुक गया। आज दो महीने हो गये हैं, दंगा आज भी चल रहा है

गुजरात की सरकार ने सौ लोगों को गोली से मार दिया तो कोई बड़ी भारी उपलब्धि नहीं है। एक तरफ गरीबों को बढ़ावा दो कि दंगा करो और दूसरी तरफ कामयाबी दिखाने के लिए गरीबों को मार दो, यह बात देश चलाने की नहीं है। सरकार दंगे को रोकने की जिम्मेदार है। आपने कहा कि कोई किसी की रक्षा नहीं करता। व्यक्ति रक्षा नहीं कर सकता, लेकिन सरकार की जिम्मेदारी है कि वह नागरिकों की रक्षा करे। जो सरकार नागरिकों की रक्षा नहीं कर पाती, उसको रहने का कोई अधिकार नहीं है, और जो सरकार इस काम में निकम्मी साबित हो गई है, उसको बर्दाश्त करना सबसे अधिक राजधर्म के विपरीत है। प्रधान मंत्री दूसरे को राजधर्म की शिक्षा देना चाहते हैं तो पहले अपने राजधर्म का पालन करना सीखें और राजधर्म यह है कि केन्द्र सरकार अगर कहीं निर्दो लोगों की हत्या हो रही है, कहीं धर्म के नाम पर लोगों की हत्या की जा रही है तो उसको रोकने के काम करे।

मैं आपसे निवेदन करूंगा कि यह देश एक ऐसे अंधेरे में जा रहा है जहां से निकल पाना इसके लिए कठिन होगा। मैं जानता हूँ भााणों का असर नहीं होने वाला है। चुनावों में जीतना आसान है, सरकार चलाना आसान है लेकिन देश ऐसे नहीं चलेगा। और आज हम ही नहीं, केवल विरोधी पक्ष

के लोग नहीं, गुजरात की जनता नहीं, पूरी दुनिया के लोग भारत के बारे में क्या दृटि रखते हैं यह हम सबको मिलकर सोचना चाहिए। अभी दो-तीन महीने पहले ही देश के प्रधान मंत्री, देश के विदेश मंत्री, देश के गृह मंत्री कहते थे कि भारत की प्रतिठा दुनिया में बढ़ती जा रही है, ऊंची होती जा रही है। जिस अमेरिका, कनाडा और यूरोपियन देशों पर हम अपनी वैदेशिक नीति की प्र ाखरता का बखान कर रहे थे, आज उनसे क्या ध्वनियां आ रही हैं, क्या टिप्पणियां आ रही हैं? हमें इस सदन में आप चुप करा सकते हैं, लेकिन अभी इतना शक्तिमान देश नहीं हुआ कि बाहर से आने वाली बातों को रोक सकें। यहां किसी को चुप करा देना आपके बस में है लेकिन चुप कराने वाले किसी इंसानियत को चुप नहीं करा सकते हैं। देश में नहीं, दुनिया के इतिहास ने बताया है कि जब कोई आदमी तलवार के बल पर केवल सत्ता को बचाना चाहता है, तिकड़म के बल पर, झूठे व्यवहार पर, एक दूसरे को धोखा देकर, जनता के साथ छल कपट करके अगर कोई सरकार चलाए तो वह कुछ दिन सरकार चला सकता है लेकिन देश नहीं चला सकता। आज वैसी स्थिति में देश पहुंच गया है और वैसी स्थिति में पहुंचने का आधार यह है कि पहली बार मुझे भी यह अनुभव हो रहा है कि अब मेरे जैसे लोगों को संभलकर बोलना चाहिए कि जो गोधरा में हुआ, जो गुजरात में हुआ, वह कहीं यहां भी न होने लगे, इसका भी डर लगने लगा है। गोधरा में जिस दिन हत्याकांड हुआ, उस दिन मैं हमारे अध्यक्ष जी के पास गया जो अब हमारे बीच नहीं हैं। मैंने उनको कहा कि कम से कम आज तो गोधरा पर सर्वसम्मत प्रस्ताव पास किया जाए। कुंवर अखिलेश और रामजी लाल सुमन ने कामरोको प्रस्ताव रखा था। हमने कहा कि उसी को आधार बनाकर कुछ कहा जाए, लेकिन उस दिन इधर से कम शोर हुआ था, ज्यादा शोर सरकार की तरफ से हुआ था। उस दिन हिन्दुत्व की रक्षा करने के लिए आप लोग ज्यादा प्रखर थे। अगर गोधरा पर उस दिन यह सदन एकमत से राय देता ... (व्यवधान) अगर गोधरा पर उस दिन प्र ास्ताव जाता तो शायद कम से कम यह कहने का अवसर नहीं मिलता कि गोधरा के कारण यह सारा हत्याकांड हो रहा है। लेकिन वह नहीं हुआ।

डॉ.विजय कुमार मल्होत्रा : हमने कहा था कि इस प्रस्ताव को रखिये। उनकी तरफ से मना किया गया और यह कहा गया कि ... (व्यवधान)

श्री प्रियरंजन दासमुंशी : यह बिल्कुल गलत है। ये ठीक नहीं बोल रहे हैं।

सभापति महोदय : अभी चन्द्रशेखर जी बोल रहे हैं। आप लोग प्लीज बैठिये।

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI : No; this is not correct. He is not telling the truth … (*Interruptions*) Let us check the record as to what the Parliamentary Affairs Minister had said. Let us find out from the record. Nothing was proposed. This House cannot be misled by quoting

everything … (*Interruptions*) This House cannot be misled by half-truths and untruths. … (*Interruptions*)

सभापति महोदय : आप स्थान ग्रहण कीजिए। इस प्रकार से सदन कैसे चलेगा।

…(व्यवधान)

श्री कीर्ति झा आज़ाद (दरभंगा) : ... *(Not recorded)**

… (व्यवधान)

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI : What is this? … (*Interruptions*)

श्री विलास मुत्तेमवार (नागपुर) : बात करने का क्या यही तरीका? …(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: No, no; this is not fair.

श्री शंकर प्रसाद जायसवाल (वाराणसी) : गुजरात में दंगा कराने वाले ये ही लोग हैं।… (व्यवधान)

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI : He must withdraw unparliamentary words.

*Not Recorded.

MR. CHAIRMAN: Please take your seat.

… (*Interruptions*)

श्री मधुसूदन मिस्त्री (साबरकांठा) : गुजरात में जो भी काम कराया है वह आप लोगों ने कराया है।…(व्यवधान)

सभापति महोदय : कृपया आप बैठिए। सदन में शांति बनाए रखिए। जो भी असंसदीय शब्द हैं वे रिकॉर्ड पर नहीं जाएंगे।

श्री चन्द्रशेखर : सभापति जी, मैं निवेदन कर रहा था कि भूल हुई। उस भूल को सुधारने का यदि काम नहीं हुआ और हमने एक-दूसरे पर आक्षेप लगाए, तो ठीक नहीं है। जैसा उमा जी ने शुरू में कहा, अच्छा होता, अगर वे इन दंगों के कारण बतातीं कि क्यों ये दंगे हुए। ...(व्यवधान)

मैं बताता हूं- दंगे इसलिए हुए कि लोगों के दिलों में अविश्वास है, दिल टूटे हुए हैं। लोग समझते हैं कि उनका जनजीनव सुरक्षित नहीं है। इसका कारण चाहे गोधरा हो या अहमदाबाद। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि जगह चाहे कोई भी हो, इस देश में जहां हत्या होती है, जहां हिंसा होती है, उसमें यदि एक मर्द या औरत भी मरती है, तो भारत मां का एक बेटा या बेटी मरती है। कुछ लोग समझते हैं कि वे ही भारत माता के लाड़ले और अकेले बेटे हैं। अगर वे यह समझें कि भारत मां के दूसरे भी बेटे और बेटियां हैं, तो शायद उनके सोचने का तरीका अलग हो सकता है।

महोदय, 1984 के कदम से गुजरात सही हो जाएगा, ऐसा नहीं है। 1984 में कितने लोग गए थे, हमें नहीं मालूम, लेकिन जिस दिन दंगा हो रहा था, मैं 15-20 व्यक्तियों के साथ दिल्ली की सड़कों पर अकेला घूम रहा था। ...(व्यवधान)

उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री अशोक प्रधान) : हम भी उन्हीं में से हैं। ...(व्यवधान)

सभापति महोदय : कृपया शांति बनाए रखिए।

श्री चन्द्रशेखर : आप भी होंगे। ...(व्यवधान)

मैं तो देख रहा हूं। कुछ बोल नहीं रहा हूं। अगर देखना भी मना है, तो मैं आपकी तरफ नहीं देखूंगा। ...(व्यवधान)

मेरा भााण अच्छा कभी नहीं होता। इसलिए अच्छा नहीं होता क्योंकि मैं आपकी भाा का इस्तेमाल नहीं कर रहा हूं और मैं समझता हूं कि वह भाा इस्तेमाल करूंगा, तो देश के लिए घातक होगा और जो देश के लिए घातक है वह मेरे लिए वर्जित है। जिस तरह की भाा का यहां इस्तेमाल किया गया है और जिस प्रकार के भााण दिए गए हैं, उनसे गुजरात के दंगे और भड़केंगे।

यह मत समझिए कि आपके डराने से लोग डर जाएंगे। हमारे प्रधान मंत्री भले ही कह दें कि मुसलमान जहां रहता है, शांति से नहीं रहता, लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि जब इस देश में 10,000 मुसलमान आए थे, उनको हम उस समय अरब सागर में नहीं डुबो सके, तो अब 14 करोड़ मुसलमानों को आरब सागर में डुबोने वाले हम नहीं हैं।

16.00 hrs.

इतिहास को अपने परिवेश में देखना चाहिए। दुनिया को चुनौती मत दीजिए। दुनिया के लोग आज हमारी ओर कुपित दृटि से देख रहे हैं। वे पहले से ही कोशिश कर रहे हैं। हमारे मित्र श्री येरननायडू जी चले गये हैं। आर्थिक क्षेत्र में हमको दबाने की कोशिश की जा रही है, पीछे धकेलने की कोशिश की जा रही है। आज सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में अगर उनको दखलअंदाजी करने का मौका दिया गया तो यह देश टूटने से नहीं बचेगा। इसको आप याद रखिये कि जो काम अंग्रेजों ने देश को बांटने का किया था, वही काम आज देश की बड़ी ताकतें इस देश में कर रही हैं। इस देश में ही नहीं बल्कि सारे भूखंड में, भारत का, पाकिस्तान का, बंगला देश का, नेपाल का जो भूखंड है, सब जगह अराजकता धीरे-धीरे पनप रही है। वही ताकतें उनको बढ़ावा दे रही हैं। अनजाने में आप उनके हाथों में खेल रहे हैं। यह खेलना बंद कर दीजिए ताकि यह देश बर्बादी की ओर न जाये।

उमा जी, मैं आपकी बड़ी इज्जत करता हूं क्योंकि आप संयासिनी हैं। हमें समझाया गया है कि गेरूआ वस्त्र धारण करने वालों की इज्जत करनी चाहिए इसलिए मैं आपकी इज्जत करता हूं। आप जानती हैं कि मै यह कहने के लिए नहीं कह रहा हूं लेकिन जो भााण आपने दिया, एक हिन्दू संयासिनी का भााण नहीं है। उसे सुनकर लगा कि किसी नाजी रिजीम के एक वालंटियर का भााण है। उस भााण से देश को बचाइये। मैं यह भी कहूंगा कि आप भी जरा यह सोचें और इस तरफ के लोग भी सोचें। इनको और उकसाते रहेंगे और अपने एक नहीं होंगे तो देश को बर्बादी की ओर ले जाने में हमारा भी हाथ होगा।

श्री अनंत गंगाराम गीते : सभापति जी, नियम 184 के तहत श्री मुलायम सिंह जी ने सदन में गुजरात इश्यू पर जो चर्चा आरंभ की है, मैं उसके विरोध में खड़ा हुआ हूं। गुजरात की बीती घटनाओं पर जो चर्चा हो रही है, उसकी जड़ गोधरा है। 27 फरवरी से लेकर आज तक इन सारी घटनाओं की जड़ गोधरा है। हमें इस गोधरा की जड़ तक जाने की आवश्यकता है।...(व्यवधान) मुलायम सिंह जी, वही मैं बताने जा रहा हूं।

श्री मुलायम सिंह यादव : हमने भी कुछ बताया है। ...(व्यवधान)

श्री अनंत गंगाराम गीते : आपने भी कुछ बताया है, उसे हमने सुना है लेकिन गोधरा की जड़ तक जाने की आवश्यकता है।...(व्यवधान)

सभापति महोदय : गीते जी, आप चेयर की ओर मुखातिब होकर अपना भााण जारी रखिये।

श्री अनंत गंगाराम गीते : पिछले कई वाौं से इस देश में आतंकवादी गतिविधियां बढ़ गई हैं। जब तक ये आतंकवादी गतिविधियां जम्मू और कश्मीर तक सीमित थीं, उसके परिणाम सारे देश को नहीं भुगतने पड़ रहे थे लेकिन अब ये आतंकवादी गतिविधियां जम्मू-कश्मीर तक सीमित नहीं रहीं। खासतौर पर वे आतंकवादी गतिविधियां जो पाकिस्तान की ओर से चलाई जा रही हैं, मैं कुछ

आतंकवादी कार्यवाहियों का स्मरण यहां इस सदन में करूंगा। पहले अमरनाथ यात्रा पर हमला हुआ। अमरनाथ यात्रा के बाद आतंकवादियों के जरिये लाल किले पर हमला हुआ। लालकिले के बाद आतंकवादियों ने जम्मू कश्मीर की श्रीनगर विधान सभा पर हमला किया। जम्मू कश्मीर की ि वधान सभा के बाद आतंकवादियों ने संसद पर हमला किया। संसद पर हमला होने के बाद आतंक वादियों ने, गोधरा में रेल के डिब्बे में जिन 57 लोगों को जिंदा जलाया गया जिनमें से 14 महिलाएं और 12 बालक थे, वह घटना भी आतंकवादियों के जरिये की गई थी।

सभापति जी, आज देश में यह घटना केवल आतंकवाद तक सीमित नहीं रही। आतंकवादियों के जरिए एक तरह से पाकिस्तान की ओर से चलाया हुआ यह अघोाित युद्ध है और यही देश के सामने सबसे बड़ा खतरा है। गोधरा की घटना की साजिश चंद आतंकवादियों ने की, लेकिन दुर्भाग्य है कि चंद आतंकवादियों की साजिश को डेढ़ से दो हजार के समुदाय का समर्थन मिला। इस बात को सोचने की आवश्यकता है कि साजिश चार-पांच आतंकवादियों ने की होगी लेकिन समर्थन डेढ़ से दो हजार के जन-समुदाय का मिला। जो राम सेवक अयोध्या से वापिस अपने घर लौट रहे थे, उनको लक्ष्य बनाया गया। गोधरा में वैल-प्लान्ड तरीके से रेल को रोक कर मिट्टी का तेल और पैट्रोल छिड़क कर आग लगा दी गई। जैसे यहां उमा भारती जी ने बताया, कुछ समय के लिए वहां फायर ब्रिगेड को भी रोका गया। डेढ़-दो हजार का जन-समुदाय सुबह के सात बजे पैट्रोल और मिट्टी का तेल लेकर यकायक उपस्थित नहीं हो सकता। देश के सामने सबसे बड़ा खतरा यही है। इसलिए हमारे शिवसेना प्रमुख बालासाहेब ठाकरे जी ने कई बार देश को आम सभा में चेतावनी दी है कि देश के सामने खतरा है, सिविल वार होने की संभावना है। गुजरात की घटना सिविल वार का ही एक नमूना है। ...(व्यवधान)

आज सदन में जिस प्रकार नियम 184 के तहत चर्चा का आरंभ किया गया है, मुलायम सिंह जी, कल तक तो हम सिर्फ कांग्रेस को दोाी ठहराते थे, सब मिल कर उनके ऊपर तुटीकरण की राजनीति का आरोप लगाते थे लेकिन दुर्भाग्य यह है कि अब तुटीकरण की राजनीति की भी होड़ लगी है। अब कई पार्टियां तुटीकरण की राजनीति करने लगी हैं। जब गोधरा की घटना हुई, उसके बाद उसकी प्रतिक्रिया हुई। 27 फरवरी को यह घटना हुई और 28 फरवरी को सदन में जनरल बजट प्रस्तुत किया गया। हमारे वित्त मंत्री जी यहां बजट प्रस्तुत करने के लिए खड़े हो गए। हमने दस मिनट तक इस सदन के अंदर सरकार और सदन का ध्यान खींचने का प्रयास किया। हम यह मांग करते रहे कि बजट जरूर महत्वपूर्ण है, हम बजट का महत्व जानते हैं लेकिन गोधरा की घटना का भी उतना ही महत्व है। यदि समय पर उसमें रोक नहीं लगाई जाएगी तो गोधरा में लगी हुई आग एक दिन सारे देश को फूंक देगी।

इसलिए हम मांग कर रहे थे, हमें आसन से समझाया जा रहा था कि बजट महत्वपूर्ण है। लेकिन जब हम मांग कर रहे थे तो उस तरफ से सारे शांत और खामोश बैठे थे। किसी ने कुछ नहीं कहा ।...(व्यवधान)

श्री पवन कुमार बंसल (चंडीगढ़) : क्या हम लोग भी आपकी तरह वैल में आ जाते ?

सभापति महोदय : गीते जी, आप भााण करें, किसी को प्रवोक मत करें।

श्री अनंत गंगाराम गीते : मैं 27 तारीख को भी बार-बार यही दोहरा रहा था कि उस तरह के सारे लोग खामोश क्यों हैं …(व्यवधान)

श्री सलीम आई. शेरवानी (बदायूं) : यह सही नहीं कह रहे हैं।

सभापति महोदय : इन्होंने ईल्ड नहीं किया है इसलिए आप बीच में न बोलें।

श्री अनंत गंगाराम गीते : सभापति जी, मैंने शांति से सबको सुना है, मैंने किसी को टोका नहीं है।

श्री सलीम आई. शेरवानी : गीते जी मैं एक मिनट लेना चाहूंगा।

श्री अनंत गंगाराम गीते : बिल्कुल नहीं। सभापति जी, उस दिन इसी जगह से मैं बार-बार यही कह रहा था, ये सारे खामोश थे। गोधरा की दुर्घटना के बाद शाम को उसकी प्रतिक्रिया हुई। 28 तारीख को शाम को विपक्ष की नेता प्रधान मंत्री जी से मिलीं। क्या मांग करने के लिए गई थीं, प्र धान मंत्री जी से मिलकर उन्होंने कहा कि गुजरात में जो अल्पसंख्यक हैं, उनका जीवन खतरे में है, आप उनको सुरक्षा दें।

SHRI MADHUSUDAN MISTRY : Sir, this is not true. I was in that meeting. That is not true at all. … (*Interruptions*)

SHRI ANANT GANGARAM GEETE : That is true. … (*Interruptions*)

SHRI MADHUSUDAN MISTRY : If you do not have the information, do not refer to it. … (*Interruptions*) I was in that meeting. … (*Interruptions*) We had asked for the violence to be stopped. We had asked for the Army to be deployed instead of being kept on stand-by. … (*Interruptions*)

सभापति महोदय : आपको जब बोलने का अवसर मिलेगा, तब अपनी बात कहें।

… (व्यवधान)

सभापति महोदय : आपके नेता बोल रहे हैं और आप खड़े हो रहे हैं।

श्री अनंत गंगाराम गीते : सभापति जी, विपक्ष की नेता के आज के 20 मिनट के भााण को हमने सुना है। उन्होंने अपने भााण में गोधरा का जिक्र एक ही बार एक ही संदर्भ में किया है। यह बताया गया कि उस दिन हमने गोधरा दुर्घटना की निंदा की थी। आज के उनके 20 मिनट के भााण में गोधरा का और कोई जिक्र नहीं हुआ। गोधरा के संदर्भ में एक भी वाक्य आज नहीं था। ...(व्यवधान) मुलायम सिंह जी ने तो शुरू में ही अपने भााण में इसका जिक्र किया था, इसमें कोई दो राय नहीं हैं। लेकिन उनके 20 मिनट के भााण में एक भी वाक्य गोधरा पर नहीं था।

श्री जे.एस.बराड़ (फरीदकोट) : गीते जी की हम बहुत इज्जत करते हैं, लेकिन ये सही नहीं कह रहे हैं। विपक्ष की नेता ने गोधरा की निंदा की है।

सभापति महोदय : आपको जब मौका मिलेगा, तब आप अपनी बात कहें।

श्री अनंत गंगाराम गीते : सभापति जी, छः दिन तक सदन को नहीं चलने दिया गया। इस 13वीं लोक सभा के नौवें सत्र में लगभग नौ बार अलग-अलग नियमों के तहत अल्पसंख्यकों की सुरक्षा को लेकर इस सदन में चर्चा हुई है। कभी शिक्षा का भगवाकरण को लेकर हुई। इतना ही नहीं, जब गुजरात में भूकम्प आया तो उसमें भी राजनीति की गई। यहां पर आरोप लगाया गया कि वहां के अल्पसंख्यकों को राहत नहीं दी जा रही है और उनको जानबूझकर परेशान किया जाता है।

बार-बार मांग की जा रही है कि गुजरात के मुख्य मंत्री को इस्तीफा देना चाहिए। इसका फैसला गुजरात की जनता करेगी। यह चुनी हुई सरकार है, इसका फैसला गुजरात की जनता करेगी कि चीफ मिनिस्टर कौन रहेगा, सरकार किसकी रहेगी ? आज गुजरात में दंगे हो रहे हैं। कानून और व्यवस्था को लेकर मुख्य मंत्री के इस्तीफे की मांग की जा रही है। दंगे सिर्फ गुजरात में नहीं हुए हैं। आज़ादी से लेकर अब तक देश के हर राज्य मे दंगे हुए हैं। ऐसा कोई भी राज्य नहीं है जहां दंगे नहीं हुए हैं बल्कि इससे भी ज्यादा दिनों तक चलते रहे हैं जिसका जिक्र उमा भारती जी ने किया जब हितेन्द्र देसाई गुजरात के मुख्य मंत्री थे। उस समय लगातार 6 महीने तक दंगे रहे और आज यहां पर कानून और व्यवस्था की बात की जा रही है। जब बिहार में दलितों की हत्याएं हो गई और आज भी बिहार में रोज हत्याएं हो रही हैं। जब इसी सदन के अंदर हमने 356 के तहत बिहार की सरकार भंग करने का प्रस्ताव पारित किया तब राज्य सभा में कांग्रेस ने इस प्रस्ताव को पास नहीं होने दिया। यदि आप कानून-व्यवस्था की बात करते हैं, जब कोई अल्पसंख्यक वर्ग की बात की जाती है तो अल्पसंख्यक से मतलब सिर्फ मुस्लिम नहीं है। इस देश में कई अल्पसंख्यक समाज हैं लेकिन सिर्फ मुस्लिमों के संदर्भ में ही अल्पसंख्यक को लिया जाता है और जब घटना होती है तो सारा सदन खड़ा हो जाता है। जब दलित मारे गये, इस सदन ने प्रस्ताव पास किया तो आपने उस प्रस्ताव को राज्य सभा में पास नहीं होने दिया। बिहार की सरकार की आपने रक्षा की। दलितों की हत्याओं का समर्थन आपने किया।... (व्यवधान)

श्री शरद पवार (बारामती) : बिहार में राबड़ी देवी की सरकार है।... (व्यवधान)

श्री अनंत गंगाराम गीते : लेकिन कांग्रेस के समर्थन में है। सरकार भले ही राबड़ी देवी की है लेकिन कांग्रेस के समर्थन में है। कल राम विलास पासवान जी ने इस्तीफा दिया, सदन में काफी चर्चा हो गई। अब उमर अबदुल्ला जी के इस्तीफे के ऊपर मुझे कुछ नहीं कहना है लेकिन मैं इतना ही कहूंगा कि जब बिहार में दलितों की हत्या हो गई थी तो उसी समय राम विलास पास वान जी इस्तीफा देते तो शायद इस देश के दलितों को लगता कि कोई हमारा भी है।

महाराट्र में जब से कांग्रेस की सरकार है, मुख्य मंत्री कांग्रेस के हैं, पिछले ढ़ाई साल में लगभग 50 से ज्यादा साम्प्रदायिक दंगे हो गये हैं। आखिरी दंगा कल्याण में पिछले हफ्ते में हो गया। जब तक शिव सैना और भाजपा की सरकार थी, साढ़े चार साल में एक भी दंगा नहीं हुआ था लेकिन पिछले ढ़ाई साल में पचास से ज्यादा दंगे हो गये हैं, दलितों की बस्ती जलाई गई। लेकिन किसी ने विलासराव देशमुख का इस्तीफा नहीं मांगा और न गृह मंत्री का इस्तीफा मांगा। चंद्रशेखर जी यहां पर बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि 1984 का कितनी बार जिक्र करोगे?

यदि एक राज्य में कानून व्यवस्था नहीं है, सरकार कानून-व्यवस्था नहीं बना पा रही है, इसको लेकर यदि एक सरकार के इस्तीफे की मांग हो सकती है, तो क्या 1984 में तीन हजार से ज्यादा सिक्खों की हत्या हो गई, कानून-व्यवस्था पूरी खत्म हो गई, तो क्या उसकी हम याद नहीं दिला सकते हैं ... (व्यवधान)

SHRI MADHUSUDAN MISTRY : Sir, is he justifying the violencve in Gujarat from the floor of this House? … (*Interruptions*)

श्री अनंत गंगाराम गीते : क्या हम सदन को उसकी याद नहीं दिला सकते हैं कि उस समय क्यों इस्तीफा नहीं मांगा गया ... (व्यवधान) सभापति जी, मोरारजी देसाई जी का यहां जिक्र किया गया। मैं कांग्रेस के साथियों को याद दिलाना चाहता हूं, महाराट्र और गुजरात मिलकर मुम्बई राज्य था। संयुक्त महाराट्र का आन्दोलन चल रहा था। मुम्बई के लिए संर्घा हो रहा था। उस आन्दोलन को खत्म करने के लिए पुलिस के जरिए 105 लोगों की हत्या हो गई और 65 लोग गुजरात में मारे गए। उसके बाद तत्कालीन मुख्य मंत्री, श्री मोरारजी देसाई ने सारे आफिसरों की बैठक बुलाई और पुलिस आफिसरों को भी बुलाया गया। अखबारों में भी छपा था। उन्होंने पूछा - पुलिस के लोगों ने कितनी गोलिया चलाईं ? जब गोलिया इतनी चली हैं, तो सिर्फ 105 लोग क्यों मारे गए। क्या आपने इस्तीफा मांग था? क्या कांग्रेस ने इस्तीफा मांग था?

सभापति जी, गोधरा की घटना और बाबरी मस्जिद का यहां पर बार-बार जिक्र होता है। बाबरी मस्जिद मिट्टी और पत्थर का ढांचा था। ... (व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : वहां मंदिर था?

श्री अनंत गंगाराम गीते : मंदिर तो बना दिया था, राजीव गांधी जी ने शिलान्यास करके और पूजा भी शुरु हो गई थी।

एक माननीय सदस्य : मंदिर को क्यों गिराया गया?

श्री अनंत गंगाराम गीते : मंदिर को नहीं गिराया गया, ढांचे को गिराया गया। ... (व्यवधान)

सभापति जी, बाबरी मस्जिद मिट्‌टी और पत्थर का ढांचा था। मिट्‌टी और पत्थर का ढांचा गिरने पर रियैक्शन हो गया और मुम्बई में 12 बम विस्फोट हो गए। ... (व्यवधान) फिर इस ओर से कहा गया कि ढांचा क्यों गिराया गया, यदि ढांचा न गिराते, तो दंगे नहीं होते। जब गोधरा में जिन्दा 57 लोगों को जलाया गया, तो यहां किसी ने नहीं कहा कि जिन्दा क्यों जलाया गया। यदि नहीं जलाए जाते, तो दंगे नहीं होते। ...(व्यवधान)

सभापति महोदय : अब आप अपनी बात समाप्त करिए।

श्री अनंत गंगाराम गीते : मुझे बोलने के लिए समय देना चाहिए, सब को समय मिला है। महत्त वपूर्ण विाय है। आप समय दीजिए, यही मेरी आपसे प्रार्थना है।

सभापति जी, तुटीकरण की राजनीति की जा रही है। मिट्‌टी और पत्थर के ढांचे के गिरने पर रियैक्शन को इम्पोर्टेंस और जिन्दा जलाए जाने पर इम्पोर्टैंस नहीं दी जाती है।

महोदय, बार-बार कहा जा रहा है कि पश्चिमी देशों ने, ब्रिटेन ने, जर्मनी ने निन्दा की। जिन अंग्रेजों ने डेढ़ सौ साल तक इस देश पर अत्याचार किए, इंसान का जीवन जानवर से बदतर किया, जलियांवाला बाग जैसा नरसंहार किया, उस ब्रिटेन को हमारे देश पर निन्दा करने का कोई अधिकार नहीं है। चन्द्रशेखर जी ने यहां पर नाज़ी का जिक्र किया। आज वहां पर भले ही हिटलर की निन्दा होती हो, लेकिन जब लाखों की संख्या में ज्यूस मार दिए गए तब सारी जर्मनी हिटलर के साथ थी। आज उस जर्मनी को हमें शिक्षा देने की या हमें सिखाने की आवश्यकता नहीं है। ... (व्यवधान)

महोदय, पाकिस्तान की तरफ से जो सीमा पार से आतंकवाद एवं युद्ध चलाया जा रहा है, उसके खिलाफ दुर्भाग्य से हम एक नहीं हैं। हम एक होकर लड़ नहीं पा रहे हैं। इसमें भी डिवीजन एवं बंटवारा है। हम एक कानून नहीं बना सके - आतंकवाद से लड़ने के लिए, उससे निपटने के लिए हम एक कानून नहीं बना पाए। हमने इस सदन में पोटा पारित किया, लेकिन राज्य सभा से पारित नहीं हो पाया। हमें ज्वाइंट सत्र बुलाना पड़ा, इससे बढ़ कर देश का दुर्भाग्य और क्या हो सकता

है। यह किस के लिए है, आप किन लोगों की चिन्ता कर रहे हैं। हम मुसलमानों के खिलाफ नहीं हैं। शिवसेना कभी भी मुसलमानों के खिलाफ नहीं है।... (व्यवधान)

महोदय, जिन आतंकवादियों ने संसद पर हमला किया, उन्हीं आतंकवादियों को संसद तक पहुंचने में जिन लोगों ने सहायता दी, क्या आप उनका समर्थन करेंगे। हम उन्हीं के खिलाफ हैं।... (व्यवधान)

SHRI MADHUSUDAN MISTRY : Sir, the hon. Member has to justify that. … (*Interruptions*) What he is saying is not correct. … (*Interruptions*) Is he justifying it? … (*Interruptions*)

श्री अनंत गंगाराम गीते : यह एक तरह से समर्थन ही है।... (व्यवधान)

MR. CHAIRMAN : The hon. Member is not yielding. Please take your seat.

… (*Interruptions*)

श्री पवन कुमार बंसल : महोदय, यह गैर जिम्मेदाराना बात कह रहे हैं।... (व्यवधान)

श्री अनंत गंगाराम गीते : मैंने सब की बात शांति से सुनी है, आप मेरी बात भी सुनिए। ...(व्यवधान) मैंने कोई गैर जिम्मेदाराना बात नहीं कही है, हम जो भी कह रहे हैं, राट्र के हित में कह रहे हैं।...(व्यवधान)

SHRI PAWAN KUMAR BANSAL : Sir, this is frivolous and mendacious allegation against the Opposition. … (*Interruptions*)

श्री मुलायम सिंह यादव : सभापति जी, हम जानकारी चाहते हैं, आपने कहा कि हम सब लोग आतंकवादियों को संरक्षण दे रहे हैं तो आप यह भी बता दें कि हुर्रियत के, बिना हम लोगों को विश्वास में लिए और बिना किसी शर्त के आतंकवादियों को रिहा किस ने किया। उन आतंकवादियों को बस में बैठा कर कंधार कौन ले गया, ये आप बताएं। ...(व्यवधान) हवाई-जहाज में मेहमान बना कर कौन ले गया? आतंकवादियों का समर्थन, उनसे गुप्त बात, क्या गृह मंत्री जी के लोगों ने नहीं की, क्या विदेशों में आतंकवादियों से बात नहीं हो रही, नार्थ-ईस्ट के आतंकवादियों से विदेशों में बात नहीं कर रहे? उनसे बात कौन कर रहा है, आप लोग कर रहे हैं। ...(व्यवधान) आप उनसे मिले हुए हैं, उनके समर्थक हैं।... (व्यवधान)

सभापति महोदय : अनंत गीते जी के सिवा कोई बात कार्यवाही में नहीं जाएगी।

...(व्यवधान)... (कार्यवाही वृत्तान्त में सम्मिलित नहीं किया गया।)

सभापति महोदय : लालमुनि चौबे जी, आप अपना स्थान ग्रहण कीजिए।

श्री अनंत गंगाराम गीते : जिस हवाई-जहाज का अपहरण आतंकवादियों ने किया था उस जहाज में यात्रा करने वाले हमारे नागरिक थे, जनता थी और जो यात्रा करने वाले यात्री थे...(व्यवधान) उन यात्रियों के जीवन की रक्षा करना सरकार की जिम्मेदारी थी। उस समय न केवल सरकार ने बल्कि इस देश की हर पार्टी के नेता ने यह मांग की थी कि किसी भी कीमत पर उनकी जान की रक्षा होनी चाहिए। क्या आपने यह मांग नहीं की थी? क्या आपने यह कहा कि यात्रियों को मरने दो ...(व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : सभापति जी, गृह मंत्री जी ने हमसे पूछा, यहां पर मैं वे सब बातें बताऊंगा नहीं। आपसी बातें थीं, उनको यहां पर जाहिर नहीं करुंगा ...(व्यवधान)

सभापति महोदय : अनंत गीते जी, आप अपनी बात कहिये। आप स्वयं दूसरों को मौका दे रहे हैं, आप अपनी बात कह कर अपना भााण समाप्त कीजिए।

श्री अनंत गंगाराम गीते : सभापति जी, आज सारा देश एक खतरे के मोड़ पर है। हमारी सीमाएं सुरक्षित नहीं हैं। आतंकवाद देश के हर कोने में पहुंच गया है और उसका स्वरूप धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा है।

श्री रामजीलाल सुमन : क्या करना है वह बताइये?

श्री अनंत गंगाराम गीते : वही बता रहा हूं। सभापति जी, गुजरात की घटनाओं की निंदा यहां हो रही है और किसी ने भी उसका समर्थन नहीं किया है और न कोई उनका समर्थन करेगा ही। लेकिन इन सारी घटनाओं की जड़ में हमें जाना होगा। यह जो आतंकवाद चलाया जा रहा है इससे अगर निपटना है तो आतंकवाद का जो समर्थन करने वाले हैं उनको धर्म के साथ नहीं जोड़ना चाहिए। यही गलती इस सदन के माध्यम से आप आज कर रहे हैं और यह गलती इस देश के लिए महंगी साबित होगी। अंत में मैं इतना ही कहूंगा कि राजनीति की चर्चा यहां पर हो रही है और विपक्षी नेता ने भी अपनी बात यहां पर रखी है। एक हिंदी फिल्म का डायलॉग है, उस फिल्म के हीरो का नाम मैं नहीं लूंगा। वह विलैन से कह रहा है कि जिस स्कूल में आप पढ़ते हो, मैं उस स्कूल का हैड-मास्टर हूं। मैं अटल जी से यह प्रार्थना करुंगा कि आप भी यहां बता दें कि सोनिया जी जिस स्कूल में पढ़ रही हैं उस स्कूल के हैड-मास्टर आप हैं।

SHRI P.H. PANDIAN : Mr. Chairman, Sir, on behalf of All India Anna DMK Party, I would like to express my views on this Motion. Right from February 27th, this country has been witnessing carnage in Gujarat for the last two months. We all know that Gujarat is a major riot-prone State. The riots have shocked the whole nation. The killings have shocked the whole nation. It has shocked everybody, every right-thinking member of the society.

Sir, the amount of pain that the journalists took to reach Gujarat to assess the situation, and the way they made the whole nation to debate on it, is something that has to be appreciated. Along with our Indian media, the BBC, the Finland media and the European Union have made an international issue. Now, this issue is not confined to Gujarat alone; it is not confined to India alone; it has been magnified or it has assumed greater proportions throughout the world because it is a crime against humanity, it is a crime against civilisation. Murders and killings have shocked the right-thinking people in the world. Moreover, there was a loss to the tune of Rs. 5,000 crore. The estimated loss to the industry, to the businessmen and to the humanity in general is around Rs. 5,000 crore.

Sir, it is the constitutional duty of the Central Government to take steps to put an end to all these things and to bring normalcy in the State. They should initiate confidence-building measures among the people living in the State of Gujarat. … (*Interruptions*)

SHRIMATI SHYAMA SINGH (AURANGABAD, BIHAR): What about the time allocation? What about the time allotted to everybody? We want to know because people are going on speaking.

MR. CHAIRMAN : Please take your seat.

SHRI P.H. PANDIAN : Sir, I would say that there are some BJP-ruled States and some non-BJP-ruled States in India. Here, it is a law and order problem. Here, the carnage acquired greater proportions. Even though the Chief Political Executive of that State tendered his resignation, the Central Government has not accepted his resignation. Had it been accepted, there would not have been this Resolution at all. I would say that the Central

Government should, at least, wake up now and arrest all those people who are responsible for the carnage in the State of Gujarat. It is the constitutional duty of a Government to exercise its powers to protect the life and property of its citizens. Sometimes, the Central Government acts and moves faster. I would cite one example.

When the former Chief Minister of Tamil Nadu was arrested on a criminal complaint, the Central Government sent a team of officials on that day itself to assess the situation. There was no law and order problem, there was no arson, there was no looting and there were no killings. Why can you not apply the same yardstick or principle to this State? … (*Interruptions*)

SHRI VAIKO : It was because of an undemocratic act done by your Government. … (*Interruptions*)

SHRI P.H. PANDIAN : There was no arson, there was no murder, and there was no law and order problem. It was an individual affair. … (*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: Shri Vaiko, please take your seat. Why are you interfering?

… (*Interruptions*)

SHRI P.H. PANDIAN : I am not yielding.

MR. CHAIRMAN: He is not yielding. Please take your seat.

SHRI P.H. PANDIAN : It is an individual affair. … (*Interruptions*)

SHRI VAIKO : It was nothing but repression by the Government.

SHRI P.H. PANDIAN : Shri Vaiko, you will also get your chance to speak. Was there any law and order problem or were there any killings? … (*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: Shri Vaiko, please take your seat. You cannot speak without the permission of the Chair.

SHRI P.H. PANDIAN : Nobody committed any murder.

SHRI VAIKO : It is irrelevant.… (*Interruptions*)

SHRI P.H. PANDIAN : The Central Government should have sent a team of officials to Gujarat. … (*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: Shri Vaiko, please take your seat.

SHRI P.H. PANDIAN : The Central Government should have sent a team of officials to Gujarat.

In this case, no team of officials was sent there to assess the situation … (*Interruptions*) In case of Tamil Nadu, a team of officials was sent because a member of his family was a part of this Ministry at the Centre. Why not the same yardstick is being applied in case of Gujarat? Why the same constitutional power is not being used in case of Gujarat? Had the same principle been applied, then the lives and properties of the citizens could have been saved. When the Government wants to save one citizen, why do they not want to save a State? The Central Government had not sent a team of officials to Gujarat to assess the situation and the extent of damage in the State within 24 hours after the riots broke out. But in case of Tamil Nadu, after having sent a team of officials to assess the situation there, the Cabinet Committee met and asked for a desired report from the Governor. They did not receive the desired report from the Governor and so they asked the Governor to resign for the arrest of an individual in the State. The decision to ask the Governor to resign was taken at a Cabinet meeting. So, why not the same constitutional power is being exercised – I am not saying that it is unconstitutional to save the life of people – in case of Gujarat to save the lives of the people there? The Government should have sent a team of officials to assess the situation there.

Sir, there are about 104 relief camps now in Gujarat and about 1.5 lakh people are languishing in those relief camps. What is our answer to this? How are we going to solve this problem? It is a calamity that has assumed the greatest proportion. The hon. Home Minister is here and he would

definitely appreciate this point. This is the 13 th riot in the State of Gujarat in the last two decades.

SHRI ELUMALAI alias DALIT EZHILMALAI : This is a war against the Muslims… (*Interruptions*)

SHRI P.H. PANDIAN : Sir, I do not want to divide any community. That is why I said that whosoever has committed something against the law, they would be dealt with by the law only. Immediately after the carnage on February 27th, my leader and the Chief Minister of Tamil Nadu, Dr. Puratchi Thalaivi had issued a statement condemning the incident. I would like to reiterate here that if that statement of her had been heeded to, then recurrence of such incidence of violence would not have taken place. This law and order problem should have been dealt with firmly … (*Interruptions*) So, I would now like to appeal to the Government … (*Interruptions*)

SHRI V. VETRISELVAN (KRISHNAGIRI): Are you supporting or opposing this Motion?… (*Interruptions*)

SHRI P.H. PANDIAN : We have extended our support to POTO. We have been extending support to the Government on issues. On any issue we would support the Government. We gave our whole-hearted support to POTO because my leader, the Chief Minister of Tamil Nadu herself had implemented TADA. This morning I came across a news item that there was a demonstration in Colombo by the supporters of LTTE against my leader… (*Interruptions*) Sir, is it the way?

In the present case it was an attack on humanity. It was an attack on civilization.

You cannot go on killing. The political executive of the party should take decisions. We cannot say: "you take this decision or that decision." As far as I know, there is no Constitutional provision to impeach the political executive of a State here. I know that. Even then, because there was a deliberation, I, on behalf of my party, am speaking on this. My leader said that removal of a Chief Minister cannot be demanded. "If he resigns, well

and good", she said. Had it been accepted, there would have been no problem. That is why I said that it was not accepted. Now at least it is up to the Government of India to take steps effectively to govern the State. … (*Interruptions*) That is why I have said we have extended issue-based support. Here, on this issue, we are going to abstain. Had the action been taken … (*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN : Shri Pandian, please address the Chair!

SHRI P.H. PANDIAN : The All India Anna DMK Party and my leader believe that the Government will take action. We believe the Government. We have to believe it. We have to believe the Supreme Court. We have to believe the Government. There is no other Government, there is only Government. This Government is the Government of India. This is not the Government of BJP; this is not the Government of NDA; this is the Government of India.

SHRI PRAKASH YASWANT AMBEDKAR : You should believe Dr. Karunanidhi also then.

SHRI P.H. PANDIAN : When he was the Chief Minister, he was a Constitutional head and we had to believe him.

We have to believe. It is the Constitutional principle. We believe this Parliament.

SHRI VAIKO : You have to believe Shri Narendra Modi also then.

SHRI P.H. PANDIAN : That is why, the debate is being allowed here. That is why, we are participating in the discussion. That is why I said there is no such provision in the Constitution to impeach a State Executive here. This is the rarest of rare cases.

I, once again, appeal to the Government to take effective steps, at least, to curb the violence in the State, to protect the people. On behalf of my leader I would reiterate the hope that the Government will do it. The Government should apply the same yardstick to all Governments. "Can tolerate your own Government but cannot tolerate other Governments", should not be

the principle. You must treat all Governments Constitutionally alike. … (*Interruptions*)

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI : I appreciate your difficulty. Please explain where you stand.

SHRI VAIKO : Are you opposing or supporting?

SHRI P.H. PANDIAN : Mr. Chairman, Sir, it is not a political question. It is a national question that is to be answered. I appeal to the Government to answer to the nation, to protect the people of Gujarat. It is up to them to take action against their colleague. My leader has said that it is not customary to ask another Chief Minister to resign.

SHRIMATI MARGARET ALVA (CANARA): She was also the Chief Minister but they removed her.

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI : They removed your Governor also. For swearing Kumari Jayalalitha in as Chief Minister, the Governor was sacked.

SHRI P.H. PANDIAN : They had the power. It is a Constitutional exercise of power. You have to believe the Constitution, the keeper of the Constitution, the reader of the Constitution. … (*Interruptions*)

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI : You may send your speech to Ms. Fatima Biwi as a compliment!… (*Interruptions*)

SHRI P.H. PANDIAN : Sir, they are detracting me… (*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN : Please conclude now.

SHRI P.H. PANDIAN : Sir, our leader is an able Chief Minister. She is a powerful Chief Minister. If she is asked to rule Gujarat, she will do it better… (*Interruptions*)…She has guts. She has got that amount of courage that she can face terrorists… (*Interruptions*)…Will you face the terrorists?… (*Interruptions*)…Yes, she is ready to sacrifice her life for the sake of the country, for the sake of the people.

She had issued a statement. No Chief Minister dare issue such a statement. But she has issued such a statement because she is not selfish.

Sir, you must appreciate the stand taken by the Anna DMK of abstaining during the voting on this Discussion. With these words, I conclude.

SHRI VAIKO : Mr. Chairman, Sir, thank you very much for this opportunity to participate in this debate… (*Interruptions*)

SHRI SHIVRAJ V. PATIL (LATUR): Mr. Chairman, Sir, this is 5 o' clock now. Hardly one hour is available to us for discussion. Unless we extend the time and give the time in proportion to the number of Members in the House, it will be very difficult to accommodate all the speakers who are there. So, my request would be to extend the time and to allot the time in such a fashion that everybody would be in a position to speak. Let the Government side also be consulted. Then, let the decision be taken.

सभापति महोदय : छः बजे तक समय है। इसके बाद हाउस की कंसेंसस ले ली जाएगी और उसके अनुसार हाउस का समय बढ़ा दिया जाएगा।

SHRI PAWAN KUMAR BANSAL : Sir, you may take the sense of the House.… (*Interruptions*)

SHRI SHIVRAJ V. PATIL : It is because the time consumed by the Members has been much more than that was allotted to them. If we do not make this adjustment, it will be very difficult.

सभापति महोदय : माननीय सदस्य, समय का ख्याल रखें, तो ठीक रहेगा।

SHRI SHIVRAJ V. PATIL : I am not talking about the time… (*Interruptions*)

सभापति महोदय : आधा घंटे के बाद हाउस की सहमति ले ली जाएगी।

श्री प्रकाश यशवंत अम्बेडकर : सभापति जी, यह नहीं होना चाहिए कि आखिर के जितने भी स्पीकर हैं आप उनको गिलोटिन करें क्योंकि आज मैं देख रहा हूं आप किसी पर रोक नहीं लगा रहे हैं।

MR. CHAIRMAN: Let him continue now.

SHRI VAIKO : Mr. Chairman, Sir, the anguished cries of the weeping mothers and the wailing widows have terribly troubled the mind of everybody in this country.

The ghastly killings, burning men, women and children alive at Godhra, Ahmedabad and other parts of Gujarat have been a blot on the face of the country.

16.54 hrs (Shri P.H. Pandian *in the Chair*)

Sir, blood for flood, eye for an eye, tooth for a tooth, was the approach of the barbarians . Whoever is responsible for the carnage at Godhra and other places of Gujarat. They do not deserve any place to live in a civilised society.

Sir, our hon. Prime Minister when visited Ahemdabad, expressed his grief in tears with uncontrollable agony and anguish.

He said that madness could not be countered with madness; fire cannot be doused with fire. Fire has to be extinguished by water. Now, the need of the hour is the prevalence of the spirit of brotherhood.

I also visited Godhra along with the Leader of the Opposition and other leaders of our House and the other House. Sir, you also were there. When we entered the totally burnt bogie of the Sabarmati Express, the site where women, children and men were burnt alive and killed, we saw the half-burnt footwear of children. I shudder to imagine what amount of agony would have been caused to the mothers who were facing flames of death. I condemn it with all the force at my command; whosoever has perpetrated that crime – whether it was in Godhra or in Ahmadabad or anywhere in Gujarat – those criminals and goons should be put down by the iron hand of the Government.

I participate in the debate to oppose the Motion of Shri Ramji Lal Suman, moved by proxy, by Shri Mulayam Singh Yadav. I reject it lock, stock and barrel because I believe that the administration of Shri Atal Bihari Vajpayee has ensured the security of minority community in various parts of the country.

Four years have passed; they were riot-free years, and scandal-free years. … (*Interruptions*) All these four years were like that. … (*Interruptions*) Yes, they are riot-free years. … (*Interruptions*) They were riot-free years – 1998, 1999, 2000 and again in 2001. They were riot-free years. There were some vested interests. They were trying to have some riots in some parts of the country. But that did not take place. Excellent harmony had been maintained in the country all these four years.

Therefore, on behalf of my party, MDMK, a constituent member of the NDA, I say that we have unshakeable faith in the leadership of Shri Atal Bihari Vajpayee and that this Government is committed to honour secularism. This is our appeal. We appeal to our brothers and sisters of the minority community that we extend wholeheartedly our hands of friendship in this fraternal world. Let us walk together to build a resurgent and a modern India; let us throw away our old prejudices; let us put an end to divisiveness; let us have a moratorium on contentious issues and let us bind ourselves with the bonds of trust and friendship. We reach out to the minorities and even at the cost of repetition, proclaim that we will safeguard the rights as enshrined in our Constitution. NDA is the political arm of none other than the Indian people as a whole. No one will be kept aside; fairness and justice will be rendered to one and all. And we assure you that there will not be any discrimination. We are committed to secularism. We are committed to establishing a civilised, humane and just civil order that does not discriminate on grounds of caste, religion, colour, race or sex.

<u>17.00 hrs.</u>

> "… We will truly and genuinely uphold and practise the concept of secularism consistent to the Indian traditions of *Sarvadharma Samabhava* of all. We are committed to the economic, social and

educational development of the minorities and will take effective steps in this regard. "

This is the Agenda of the NDA and to this Agenda the Government of Shri Atal Bihari Vajpayee is committed.

What has happened in Gujarat? I condemn the carnage that took place in Godhra and equally condemn the crime where the former Member of Parliament, Shri Ehsan Jaffrey along with his family members were brutally killed in cold blood. Sir, what is the motive behind bringing this Motion as also, as an afterthought, the amendments moved here by the strange combination of my Marxist comrades and the main Opposition Party in the House?

On 27th February, massacre took place in Godhra. Within hours, Rapid Action Force was deployed in Godhra and Ahmedabad. A red alert was issued immediately. On 28th February, curfew was imposed by 8.00 a.m. at Baroda and by 1200 noon at Ahmedabad. On 28th February, by 2.30 p.m. the State Government requested the Central Government to send the Army. By midnight or early morning hours of 1st March, 40 plane-loads of Army personnel were deployed in Ahmedabad, 12 plane-loads in Rajkot and six plane-loads in Baroda. First three days were the worst days.

Police arrested nearly 37,045 people. Nearly 9,436 rounds were fired and 176 people were killed in police firing. I did not want to segregate which community was affected but, Sir, the argument put forth here by the main Opposition and by my learned friends from this side is that there was partiality in the attitude and approach of the State Government of Gujarat. Out of 37,000 people arrested, 29,000 belong to the majority community and 8000 belong to the minority community. Five major cases have been booked and 3,600 FIRs have been lodged. Out of the five major cases, Godhra is one. In Godhra, people belonging to the minority community have been arrested and in all the other four major cases, people belonging to majority community have been arrested. About 14,144 people have been arrested with criminal charges out of which 12,054 belong to the majority community and 4,090 belong to the minority community. I would like to

know where is the partiality, bias or prejudice in the approach of the State Government.

Is it not a fact that *Muharram* was observed without any untoward incident? Is it not a fact that *Holi* was celebrated without any unpleasant incident? Is it not a fact that thousands processions took place for *Muharram* in the State of Gujarat without any isolated incident? Is it not a fact that more than 7000 *Haj* pilgrims were facilitated in most of the villages of Gujarat? Is it not a fact that 1,20,00,000 students appeared for the examination, percentage-wise it comes to 96 to 97, despite the call given by the Congress Party instigating the students belonging to minority community not to go and appear for the examination, which was totally rejected?

Sir, when it was totally rejected by the minority community, Shri Kamal Nath had to withdraw it and issue a statement. Sir, is it not a fact that in the year 1969, 600 people were killed in the communal riots in the State of Gujarat? Who was ruling? The Congress. Is it not a fact that in the year 1970, again 400 people got killed in the communal riots? Who was ruling? The Congress. Is it not a fact that in the year 1985, 280 people got killed? Who was ruling? The Congress. Is it not a fact that in the year 1990 again 400 people got killed in the communal riots? Who was ruling? The Congress. Is it not a fact that in the year 1992, 441 people got killed in the communal riots? Who was ruling? The Congress.

1706 hours (Shrimati Margaret Alva *in the Chair*)

Did they step down? Did they come forward to submit the resignation? Here they speak about relief and rehabilitation. We are not happy about what is happening there. Nobody is happy. The Prime Minister is not happy. The Home Minister is not happy. Nobody is happy. When 1,40,000 people have to take shelter in the relief camps and when they have become refugees in their own country, nobody will be happy. Madam, sanitation, educational facilities for the children, water, food, medicine, everything is being provided. If there is any lacuna, that can be pointed out and that can be corrected. So, relief measures are going on… (*Interruptions*). Yes, nobody is happy when people are killed and are burnt alive. Only after

death, the bodies are put on funeral pyre. It is unthinkable and unimaginable when a person is burnt alive. That is why, the Prime Minister expressed his grief. He said that it is unimaginable. He also said that with what

face he could go out to other country and what could he state there. It is a shame on our country. He told it. This is the spirit and this is the agony expressed. Madam Chairperson, our hon. Leader of the Opposition in her vehement attack on the Government and in a very angry mood, stated that it was nothing but a cynical move to suggest elections in the State of Gujarat. The Bharatiya Janata Party, in its National Executive Meeting suggested this move. When it was discussed in the NDA, we deferred that suggestion because we agree to disagree on issues. This is the best coalition which the country has ever seen in its history. Some people are building castles in the air and are thinking that something similar to what happened in 1999 may happen and they could see the toppling of the Government. My sympathies for those people for their dreams. This Government will be there for the full term. We will again come back.

Madam, the Leader of the Opposition stated that it is a cynical move to seek elections. It may not be pleasant for our friends there if I say something. The Godhra incident took place on 27 th February. But there was another 18th February in the year 1983, when there was a terrible massacre at Nellie in Assam. At that time, 1383 men, women, and children were killed in Assam.

This is the cover story of *India Today* where the dead bodies lying have been shown. The hon. Leader of the Opposition has said that the Gujarat incidents have brought embarrassment to the country before the eyes of the international community. When the Assam incident happened on the 18th February 1983, in the very next issue of *India Today* which hit the stands on 1st March these pictures have been brought out. But what happened was that all the copies of that particular issue of *India Today* were confiscated by the Central Government run by Madam Indira Gandhi.

SHRI ADHIR CHOWDHARY : There is a fundamental difference in the two riots. You are confusing the House. … (*Interruptions*)

SHRI VAIKO : But in Assam when massacre was going on, elections were conducted. Was it not a cynical move by the Congress Government at that time? They conducted the elections at the gun point of the Army. Only ten per cent of people exercised their franchise. These people are now speaking on the norms of democracy and the norms of civil liberties. Was it not a cynical move by the Government when they exploited the sympathy by going to the polls? What a beautiful theory they have advocated here!

When men, women and children were being killed in the daylight in the streets of the capital city of Delhi under the very nose of the Central Government, when people belonging to the minority Sikh community who had nothing to do with the brutal assassination of Madam Indira Gandhi were being targeted – we condemn with all the force at our command this incident; but at the same time we would say that the only sin those innocent people of the minority Sikh community committed was to have born as Sikhs – when continuously for three days their blood was flowing in the streets of Delhi, did the then Home Minister submit his resignation? On the contrary, their leader, the then Prime Minister justified it with a remark that ‘when a big tree falls, the earth is bound to shake’. These are the people who now preach sermons that one should not exploit the sympathy of the people and are suggesting against going to the polls.

Some hon. Members were very much agitated when my beloved sister Kumari Uma Bharati made a reference to the report given by the former Chief Justice of the Calcutta High Court, Justice D.S. Tivatia. I quote *The Indian Express* dated 27^{th} April, 2002. It said:

> "The study conducted by a five-member team led by Justice Tivatia, former Chief Justice of the Calcutta High Court, for the Council for International Affairs and Human Rights released here today described Godhra incident as an act of international terrorism, planned and executed in connivance with the Jehadi forces to set off a conflagration of Hindu-Muslim riot in the

> country. The Sabarmati train incident was pre-planned and we have ample evidence to prove that it was not spontaneous. The vacuum pipe was also cut in the train which could be used by the driver to pull it through in case he sensed any danger. Besides, inflammable solvents, fire bombs and acid bulbs were used to burn the train. The incident was carried out at the behest of Pakistan to incite communal riots all over the country, so that the Army troops deployed in the border areas could be diverted to the riot-affected areas. Pakistan's aim was to weaken Indian posts on the border and make the area more porous so as to allow the Jehadi infiltrators and drugs and arms influx into this country."

SHRI SHIVRAJ V. PATIL : I am on a point of order.

SHRI VAIKO : Under what rule?… (*Interruptions*)

SHRI SHIVRAJ V. PATIL : If any document is referred to, it becomes a part of the record and if allegations are levelled against an individual…… (*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN : It is a point of order and you have to listen to a point of order for a minute.

… (*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: I would not know it till I hear him. I cannot say what it is. Before hearing him, how can I say what it is?

… (*Interruptions*)

SHRI SHIVRAJ V. PATIL : There are many documents referred to in the speeches by the hon. Members. We did not object to the references made to those documents. But they are not the documents issued by the Government. They are documents issued by private parties.

SHRI VAIKO : Under what authority newspapers have been referred to by the Opposition Leader? ..… (*Interruptions*)

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI : I would like to clarify. He has just now quoted a newspaper. Is it with the permission of the Chair in advance?..… (*Interruptions*)

SHRI SHIVRAJ V. PATIL : If somebody says that this document indicts the Congress Party or a Congress Member, it becomes part of the record and if you do not object to it, they will stand up tomorrow and say that we have not even objected to it. That is why, the rule is, if any reference is made to any document, they shall have to authenticate it and they shall have to say that what is mentioned in the document is reliable. They have to take that responsibility. If they are not taking that responsibility and referring to the documents and if we do not object to it, then…… (*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: Shri Patil, can you please tell me under which rule does authentication come?

SHRI SHIVRAJ V. PATIL : It is under Rule 368. I can quote the rulings and the rules. Madam, you have been in the House for a long time. If any document is referred to and if it is an innocuous document, we have no objection. But if they say that a Congress man is involved in killing somebody and the Congress Party is involved in the incident of Godhra, then they will have to take the responsibility….… (*Interruptions*) This is not the reply.

SHRI VAIKO : Madam, I did not say so…… (*Interruptions*)

SHRI KHARABELA SWAIN : Madam, what he is saying does not come under this rule…… (*Interruptions*)

SHRI SHIVRAJ V. PATIL : This is not the way to reply to an argument. If he wants to reply to the argument, I have no objection to his replying to it…… (*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: It is under Rule 369.

SHRI SHIVRAJ V. PATIL : You please let me complete and let me argue also.

MR. CHAIRMAN: I would quote the rule to you. Rule 369 says:

> "A paper or document to be laid on the Table shall be duly authenticated by the Member presenting it."

SHRI SHIVRAJ V. PATIL : May I say that whenever a document is referred to, it has to be done according to constitutional provisions, rules and conventions? If a document is referred to, it becomes a part of the record and this record becomes a public document. If any allegation is made against any individual who is a sitting Member and if any allegation is made against any Party and the Members are sitting here, and if we do not take any objection to it, then they would say that we had an opportunity to raise an objection.

MR. CHAIRMAN: What do you want now? What should we do now?

SHRI SHIVRAJ V. PATIL : That is why, I am saying that let them authenticate it…… (*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: Shri Swain, will you please sit down?

SHRI SHIVRAJ V. PATIL : You can give him the time to argue. Let him use his intelligence to prove his point. I have no objection. I am asking you, supposing somebody alleges something against me, should I object to it or not? … (*Interruptions*) Should I not ask the man to authenticate what he is saying? This is the objection that I am raising. … (*Interruptions*) And if he wants to use his intelligence to prove his point, let him do it. … (*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN : Please listen. What the Member has pointed out is that under Rule 369, which is at page 141, a paper or document to be laid on the Table ….

कुमारी उमा भारती : मैडम, इन्होंने रूल 368 को मेंशन किया है, 369 को नहीं।

MR. CHAIRMAN: That is why I corrected him. I said you are quoting the wrong Rule.

… (*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: The Rule is 369 and not 368.

… (व्यवधान)

SHRI SHIVRAJ V. PATIL : I am asking for a ruling from you. I am not asking you whether I am quoting a right or a wrong Rule. I am asking a ruling from you. I would not thrust my views on you. If the hon. Minister or any other Member wants to argue, please give him the time to argue. … (*Interruptions*)

THE MINISTER OF DISINVESTMENT AND MINISTER OF DEVELOPMENT OF NORTH EASTERN REGION (SHRI ARUN SHOURIE): I greatly appreciate Shri Patil's concern for authentication of document. I just wish that that kind of concern was applied uniformly. When a document was read out in this very House completely, I think, it was a letter from the Cabinet Secretary, which was a forged document, no objection was raised and no authentication was asked for. … (*Interruptions*)

SHRI SHIVRAJ V. PATIL : You file a breach of privilege. If we want we will also file a breach of privilege. … (*Interruptions*)

SHRI ARUN SHOURIE: You filed it against me. … (*Interruptions*)

SHRI SHIVRAJ V. PATIL : If you want you file a breach of privilege. … (*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: Why all of you are jumping up?

… (*Interruptions*)

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI : Madam, when LoP quoted from the newspaper, she sent an intimation to Deputy-Speaker whether she will get his permission to quote from the newspapers. … (*Interruptions*) Deputy-Speaker gave the permission that she can quote. … (*Interruptions*) This is for the information of Shri Vaiko. … (*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: In the case of LoP quoting from the newspapers in the morning, she had given advance notice to the Deputy-Speaker saying that she wishes to quote and permission on that letter was granted in advance by the Deputy-Speaker. So, it was done.

If you are quoting a document, you can sign it and lay it on the Table. That is all.

… (*Interruptions*)

SHRI VAIKO : Shri Somnath Chatterjee quoted copiously from so many newspapers. … (*Interruptions*) Is that the practice of the House. … (*Interruptions*) LoP might have got the permission from the Deputy-Speaker. … (*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: What am I doing? Do not cast aspersions on the Chair. Please sit down. I am not going to take your discussion. Please sit down. You will speak only with my permission.

… (*Interruptions*)

SHRI VAIKO (SIVAKASI): Madam, I abide by you.… (*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN : I am just saying that if you have a document which you are quoting, what objection do you have to lay it on the Table of the House? Then, there is no problem.

… (*Interruptions*)

SHRI VAIKO : I do not understand why they are objecting to my quoting it.… (*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: I take just one minute. I am talking to him.

… (*Interruptions*)

SHRI VAIKO : Please allow me to put forth my point.

MR. CHAIRMAN: I take just one minute. Shri Vaiko, if you are reading from a newspaper only and if it is only a newspaper report that you are quoting, then you ask for the permission of the Chair. I will give it to you.

SHRI VAIKO : I ask for your permission. I seek your permission.

MR. CHAIRMAN: All right.

SHRI VAIKO : So, I thank you very much for this.

MR. CHAIRMAN: Everybody is quoting newspaper reports. Shri Vaiko, please do not waste your time.

SHRI VAIKO : Madam, I thank you. With your kind permission, I say this. I do not understand for what reasons Shri Shivraj Patil has objected to it.

MR. CHAIRMAN: Shri Vaiko, you have already exceeded your time.

SHRI VAIKO : They did not allow me to speak.

MR. CHAIRMAN: You have already exhausted the time. Please hurry up.

SHRI VAIKO : I do not understand for what reasons he has objected to it. … (*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: You have to authenticate any paper that you are quoting from.

SHRI VAIKO : He is objecting to my referring to the Pakistan's hand in the Godhra carnage. I did not say that the Congress hand is suspected in the Godhra carnage.… (*Interruptions*) I did not say it. But I am going to

say it.… (*Interruptions*) Yes, I am going to say. Previously, I did not say that the Congress hand is suspected in the Godhra carnage. But now I would like to say that.… (*Interruptions*) My beloved sister Kumari Uma Bharati made a point.… (*Interruptions*)

श्री कांतिलाल भूरिया : सभापति जी, ये गलत तरीके से आपनी बातों को पेश कर रहे हैं।

SHRI PAWAN KUMAR BANSAL (CHANDIGARH): I am on a point of order. I would like to say that in addition to the rule cited by Shri Shivraj Patil, kindly see rule 353 also.… (*Interruptions*)

श्री कांतिलाल भूरिया : सारी बातें बीजेपी द्वारा की गयी हैं और ये कांग्रेस को दोाी ठहरा रहे हैं।

SHRI VAIKO : The issue of CD cassette was raised. I would challenge. Are your prepared to come to the Central Hall? Let us play the CD cassette. Let us see who are those people who indulged in it, who were suspected of the Godhra carnage, whether they belong to the Congress Party or not, whether they were facilitating it or not…… (*Interruptions*) Please come to the Central Hall. Let us play the CD cassette. Let us see who are the people responsible for the entire carnage in Godhra… (*Interruptions*) Those people who are responsible for the holocaust, for the carnage, for all the catastrophe, for triggering the carnage in Godhra,* ... according to the CD cassette.… (*Interruptions*)

*Expunged as ordered by the chair.

MR. CHAIRMAN: Shri Vaiko, please wind up your speech because you have exceeded your time.

… (*Interruptions*)

श्री कांतिलाल भूरिया : सभापति जी, ये जबरदस्ती कांग्रेस पर आरोप लगा रहे हैं।… (व्यवधान)

ये हत्यारों की वकालत कर रहे हैं।

SHRI VAIKO : I will conclude. Coming to my point, I would say that those who are responsible for the carnage are the *

<u>17.28 hrs</u> (Mr. Deputy-Speaker *in the Chair*)

When people were killed in the capital city of Delhi in the year 1984, who were responsible for those killings?

SHRI VAIKO (SIVAKASI): There was no firing at that time. They were killed in cold blood by the goons belonging to the *

…. (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Hon Members, will you please resume your seat? I am on my legs. Dr. Tomar, what is it that you are saying? You are challenging the Chair.

Coming to the point, as I understand it, the Presiding Officer said that when he was quoting something, that should be authenticated. Shri Vaiko, have you authenticated it?

SHRI VAIKO : Yes.

SHRI SHIVRAJ V. PATIL : Let him authenticate it and put it on the Table of the House. We have no objection to it.

MR. DEPUTY-SPEAKER: It is over. Shri Vaiko, please proceed.

… (*Interruptions*)

*Expunged as ordered by the chair.

SHRI VAIKO : Mr. Deputy-Speaker, Sir, a terrible blood-shed took place in the year 1984. Innocent people belonging to the minority community

were killed. Who were responsible for that? It was not by police firing that that incident took place. Who were responsible for those killings? It was found out that the people who were responsible were the*

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Vaiko, you are alleging something. You cannot allege like that.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Vaiko, you are a senior member.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Vaiko, when you are alleging, you should have some proof. Do you have some proof?

… (*Interruptions*)

SHRI VAIKO : When there was a reference about the Commission of Inquiry, Shri Somnath Chatterjee and the Leader of the Opposition said that the State Government has handpicked a retired Judge to head the Inquiry Commission. … (*Interruptions*) They have criticised it. … (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: I would go through the records. If there is any objectionable thing or things which are to be expunged, I would expunge it.

… (*Interruptions*)

THE MINISTER OF RURAL DEVELOPMENT (SHRI M. VENKAIAH NAIDU): Shri Mani Shankar Aiyar has gone on record… … (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: There would be no end if you do like this. That is why I requested the House to leave this to me. I would go into the records and if there is any objectionable thing from either side, I would expunge it.

… (*Interruptions*)

*Expunged as ordered by the chair.

THE MINISTER OF ENVIRONMENT AND FORESTS (SHRI T.R. BAALU): Shri Mani Shankar Aiyar has made a serious allegation. He should withdraw it. … (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: He has made a mention to me and I would see the records.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Nothing will go on record. You shout at each other.

*(Interruptions)**

MR. DEPUTY-SPEAKER: I am telling either side that if there is anything unparliamentary or not to be recorded, I would look into it and expunge the same.

… (*Interruptions*)

SHRI T.R. BAALU: He has to withdraw it. … (*Interruptions*)

खेल एवं युवा कार्य मंत्री (कुमारी उमा भारती) : उपाध्यक्ष महोदय, मणिशंकर जी ने इन्हे हत्यारा कहा है। He has to apologise. … (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Will you allow the hon. Home Minister to say?

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI L.K. ADVANI): Mr. Deputy-Speaker, Sir, the word that was used just now by the hon. Member from that side is something we cannot imagine anyone addressing an hon. Member of this House.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Will you please allow me to hear what he wants to say?

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Kantilal Bhuria, please hear him.

… (*Interruptions*)

*Not Recorded.

श्री लाल कृण आडवाणी : उपाध्यक्ष महोदय, असंसदीय भाïाा हमने सुनी है और उस पर जब भी अध्यक्ष जी कहते हैं कि मैं कार्यवाही में से निकाल दूंगा, तो मान लिया जाता है। लेकिन यह तो असंसदीय भाïाा नहीं है, यह तो ऐसी भाïाा है कि जिसका प्रयोग अगर कोई इस सदन में करता है तो उसे खुद खड़े होकर अपोलोजाइज करना चाहिए। …(व्यवधान)

SHRI T.R. BAALU: Mr. Deputy-Speaker, Sir, let us have a discussion on the issue. Are they ready? Does he know who had killed Rajiv Gandhi? Where was the TNCC President at the time of assassination of Rajiv Gandhi? Where was their Member of Parliament when Rajiv Gandhi was assassinated? … (*Interruptions*) Let them not mislead the House. … (*Interruptions*)

SHRI SONTOSH MOHAN DEV : Mr. Deputy-Speaker, Sir, the objection raised was that it has been said that he is a LTTE man. When Shri Rajiv Gandhi was the Prime Minister, I was the Minister of State for Defence. I rescued Shri Vaiko from the mid-sea. Let him deny it. Can he deny it? … (*Interruptions*) We rescued from the clutches of LTTE from the mid-sea and I was the Minister of State for Defence at that time. … (*Interruptions*) He went and stayed with the LTTE for 15 days. Let him deny that. … (*Interruptions*)

SHRI VAIKO : It is total falsehood. We were attacked by the Army. LTTE only rescued me.

SHRI T.R. BAALU: Shri Rajiv Gandhi knew everything. Everything is on the record of Rajya Sabha. … (*Interruptions*) Do they know where was their TNCC President at the time of assassination of Rajiv Gandhi? … (*Interruptions*) Do they know who killed Rajiv Gandhi? … (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Palanimanickam, please take your seat.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Ponnuswamy, please take your seat.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: As the hon. Home Minister also said, if there is anything which is not to be there on the record, I will look into it and I will expunge it. Let us continue with the debate now.

कुमारी उमा भारती : उपाध्यक्ष महोदय, उन्हें अपने शब्दों को विदड्रा करना चाहिए … (व्यवधान) आप उनसे अपोलोजाइज करवाइये।… (व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: I have not heard it. Whatever might have been said, I have not heard. Whatever is the word used, whether anti-national or vulgar, I will go through the record and I will expunge it. Why do you not trust me?

… (*Interruptions*)

SHRI T.R. BAALU: Sir, he has to withdraw that; otherwise, he has to substantiate it. … (*Interruptions*)

The whole nation is watching. It is not fair for a Member to say that.… (*Interruptions*)

SHRI MANI SHANKAR AIYAR : Why does Shri Advani not get up? … (*Interruptions*) He is the Home Minister. … (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: I did not hear. That is why I would look into the records.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Whatever objectionable things are there, these would be expunged.

… (*Interruptions*)

SHRI MANI SHANKAR AIYAR : I charge the Home Minister. … (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: All these troubles are because we are not confining to the subject.

… (*Interruptions*)

SHRI VAIKO : No; I confined to the subject. … (*Interruptions*)

I confined very much to the subject. … (*Interruptions*) There had been a reference that it was a sinister move to suggest elections. … (*Interruptions*) Therefore, when there was a reference that the Government had a sinister move to suggest elections in Gujarat, I said that killings are taking place in the streets. … (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: You resume your seat.

… (*Interruptions*)

SHRI VAIKO (SIVAKASI): There was a reference to an observation made by the Leader of the Opposition.… (*Interruptions*)

SHRI MANI SHANKAR AIYAR : Mr. Deputy-Speaker, Sir, I seek a clarification. … (*Interruptions*)

SHRI VAIKO : Sir, I am not yielding. … (*Interruptions*)

SHRI MANI SHANKAR AIYAR : I seek a clarification. … (*Interruptions*)

SHRI VAIKO (SIVAKASI): I am not yielding.

SHRI MANI SHANKAR AIYAR : Sir, I seek your permission.

SHRI VAIKO : I have every right to express my views on the floor of this House. This is my democratic right.

SHRI MANI SHANKAR AIYAR : I seek a clarification about your ruling.

MR. DEPUTY-SPEAKER: He is seeking a clarification on my ruling just now.

SHRI T.M. SELVAGANPATHI : Sir, I raise a point of order.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Under what Rule?

SHRI T.M. SELVAGANPATHI : Under Rule 376. Shri Vaiko, hon. Member, is a part and parcel of the NDA Government. … (*Interruptions*) LTTE is a banned organisation in this country. The hon. Member, Shri Vaiko, claims to be a strong supporter of LTTE. … (*Interruptions*)

SHRI VAIKO : Yes. I am a supporter of LTTE. I do not hide it. I am a supporter yesterday, today and tomorrow.

MR. DEPUTY-SPEAKER: No, no.

SHRI T.M. SELVAGANPATHI : He is a part of the Government. … (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: There is no point of order.

SHRI T.M. SELVAGANPATHI : Do they subscribe to this view. … (*Interruptions*)

SHRI MANI SHANKAR AIYAR : I am on a point of order. I want to have a clarification on your ruling.

MR. DEPUTY-SPEAKER: You sought clarification on my ruling.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: He is raising a point of order.

SHRI MANI SHANKAR AIYAR : Very good.

MR. DEPUTY-SPEAKER: I would give the floor to you after he finishes.

SHRI L.K. ADVANI: Mr. Deputy-Speaker, Sir, I draw your attention to rule 352, which says:

> "A member while speaking shall not make personal reference by way of making an allegation imputing a motive to or questioning the *bona fides* of any other member of the House unless it be imperatively necessary for the purpose of the debate being itself a matter in issue or relevant thereto. "

If today we were discussing the LTTE issue or a ban on any organisation … (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Let the point of order be formulated.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Let him formulate his point of order.

… (*Interruptions*)

SHRI MANI SHANKAR AIYAR : Sir, I seek a clarification on your ruling. … (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: I have told you that I will give you the floor.

SHRI L.K. ADVANI: Sir, the debate was going on about the happenings in Gujarat, in the context of which, my hon. friend was referring to Godhra, and in that context … (*Interruptions*) Shri Vaiko was accused. … (*Interruptions*) Sir, I am on a point of order. … (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Please sit down. Let him formulate his point of order.

SHRI L.K. ADVANI: Sir, it is a point of order on which you have to give your ruling. That point of order is this. Is it right for a Member to accuse

another of being a murderer, of being an anti-national, of being a conspirator? … (*Interruptions*) If we allow abuses of this kind, wild abuses of this kind to be traded in this House, it would be a bad precedent. Therefore, I invoke rule 352(ii). Apart from that, in that very rule, there is another thing, which says that he shall not utter treasonable, seditious or defamatory words. This is defamatory *per se*. Therefore, it should not only be expunged but the Member should be asked to apologise in this House.

MR. DEPUTY-SPEAKER: I will give my ruling.

Now, Shri Mani Shankar Aiyar.

SHRI MANI SHANKAR AIYAR : Mr. Deputy-Speaker, Sir, I seek a clarification under exactly the same rule that Shri Advani quoted. The issue here is Gujarat and the point that Shri Vaiko raised was about Delhi in 1984. In that context, he did not defame a single individual. He defamed every one of us sitting here on the Congress benches by saying that we, as Congressmen, were involved in the killing of Sikhs that took place at the beginning of November 1984. If, therefore, you wish to expunge … (*Interruptions*) Sir, he is a Minister. Please control the Minister. … (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Harin Pathak, please take your seat.

… (*Interruptions*)

SHRI MANI SHANKAR AIYAR : Mr. Deputy-Speaker, Sir, incidentally what Shri Advani attributed to me is not what I said. I wish to repeat what I said. ...(*Expunged as ordered by the Chair*)

SHRI VAIKO : Sir, he called me a murderer. … (*Interruptions*)

SHRI MANI SHANKAR AIYAR : I did not call him a murderer. I did not say he is an anti-national, I did not say that he has indulged in treason. … (*Interruptions*) If you think that my words deserve to be expunged, I am willing to have them expunged on condition that everything he said about Congress in 1984 is also expunged. Mr. Deputy-Speaker, Sir, if I were to apologise for what I said about him, I shall do so if he apologises for the

remarks that he made. … (*Interruptions*) The Home Minister is as partisan as this gentleman. His partisanship is not surprising because he is indicted on criminal charges in a court of law. I do not accept the moral authority of this Home Minister to give us any lecture on propriety.

Sir, I seek a clarification from you on your ruling in this respect. Thank you very much.… (*Interruptions*)

SHRI SIMRANJIT SINGH MANN (SANGRUR): Mr. Deputy-Speaker, Sir, as a victim, may I say a word?… (*Interruptions*)

SHRI KHARABELA SWAIN : I have a point of order.… (*Interruptions*)

SHRI SIMRANJIT SINGH MANN : As a victim, may I say something?

MR. DEPUTY-SPEAKER: Let me give the ruling.

SHRI SIMRANJIT SINGH MANN : Mr. Deputy-Speaker, Sir, as a victim, may I say something? Sir, I am going to vote this evening against the practice of genocide. But Shri Vaiko is right that in 1984, the Congress did commit the genocide of the Sikhs.… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Now let me please give my ruling. Will you please sit down?

When I came here, Shri Vaiko was on his legs. Then there were some documents about which the hon. Deputy Leader of the Congress Parliamentary Party raised a point of order. Then, I heard that you are to authenticate it. When I came here, I asked Shrimati Margaret Alva, she said yes he has authenticated it. Again I asked you whether you are authenticating. You said I am authenticating. What was the matter? The matter was with regard to some report that appeared in the Indian Express. According to all of you, Shri Mani Shankar Aiyar said something. Actually I did not hear whatever Shri Mani Shankar Aiyar said. That was the reason I said let me go through the record.

कुमारी उमा भारती : उपाध्यक्ष महोदय, इस हाउस में सौ लोगों … (व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Let me complete. Please hear me. Why do you not hear me? That is why, I said let me go through the record. If I find any unparliamentary word and also defamatory remark, I will see that they are expunged.

Meanwhile, the hon. Home Minister raised the point of order. I hold the same view that I will go through the record. Now the hon. Member says that he did not say this and all that. I will go through the record. If any unparliamentary and defamatory matters are there from either side or from any corner, I will expunge them.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Let us continue. May I ask Shri Vaiko to continue?

कुमारी उमा भारती : उपाध्यक्ष महोदय, इस हाउस में अगर कोई मां-बहन की गाली देगा और आप यह कहेंगे कि हम उसको एक्सपंज किये देते हैं तो क्या इतने से काम चलेगा ? … (व्यवधान) क्या आप उस मैम्बर से माफी मंगवायेंगे? …(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : मैंने आपसे कहा कि मैंने खुद नहीं सुना है इसलिए मैं रिकार्ड सुनूंगा। ऐसी कोई बात नहीं है। ऐसा सुनकर मैं कभी ऐसे नहीं बैठूंगा।

…(व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: On the spot I will ask him to withdraw. Honestly speaking, I did not hear him. You have to believe me.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: We believe it.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Vaiko to continue.

SHRI VAIKO : Mr. Deputy-Speaker, Sir, the Leader of the Opposition and also hon. Member, Shri Somnath Chatterjee made a charge.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Vaiko, may I interrupt you now?

We have 27 Members to speak. Now, is it the pleasure of the House to continue till the disposal of the Motion?

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: What to do?

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Let us try to conclude it by 9.30 p.m.

… (*Interruptions*)

SHRI VAIKO : I am in the concluding part of my speech and that is a very important part. … (*Interruptions*)

श्री मुलायम सिंह यादव : क्या पूरी रात हाउस चलेगा? ऐसा नहीं हो सकता।

उपाध्यक्ष महोदय : किसने कहा होल नाइट चलेगा?

SHRI H.D. DEVE GOWDA (KANAKAPURA): Sir, you have yourself expressed in this very same House that 57 Members have given notices seeking admission of this Motion under Rule 184. I am also one of them. … (*Interruptions*)

I have been watching the proceedings without opening my lips. Let me at least try to conduct myself in a dignified manner. That is all I can say. We have wasted one hour. I do not want to comment on the proceedings of the House but please let us have our say, whether it is till tomorrow morning or whatever time it takes.

We have come here not for any fun. We have come here as representatives of people, as representatives of 25 lakh voters. We have given notices for this Motion. This is a sensitive issue and the question of time is for the Chair to regulate. … (*Interruptions*)

SHRI RUPCHAND PAL : Sir, I have a point to make. When this discussion was initiated, at the beginning, you have stated the time that

each party could take. … (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: So, the interruptions come under my party!

SHRI RUPCHAND PAL : It is not like that. The discussion is for a particular period of time. It was supposed to be ended by tonight. This cannot continue. … (*Interruptions*) From the Chair, you want to know how long this discussion could take and when the voting could take place. … (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: There are 27 Members. I cannot shut out any one among them.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri, Vaiko, you may proceed now. Please state briefly whatever you want to say and conclude.

… (*Interruptions*)

SHRI VAIKO : Mr. Deputy-Speaker, Sir, I express my thanks for the sermons given here. We have to learn certain things from others.

The Leader of the Opposition and the hon. Member Shri Somnath Chatterjee levelled an accusation against the State Government of Gujarat that they had handpicked a former retired justice for a Commission of Inquiry. So, I would like to express my view. Under what consideration was a Judge picked by the then Government to go into the carnage that took place in the year 1984? … (*Interruptions*) As Shri Simranjit Singh Mann has stated, the genocide against the Sikh community took place in the streets of Delhi in the year 1984. Was a Membership in the Upper House given as a reward for that Judge later on? … (*Interruptions*)

SHRI SHIVRAJ V. PATIL : Sir, this is not fair. … (*Interruptions*)

SHRI VAIKO (SIVAKASI): They have stated that the Gujarat Government has handpicked a retired judge. … (*Interruptions*)

SHRI SHIVRAJ V. PATIL : He is levelling an allegation against a judge. … (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Why are you again bringing in this controversy?

THE MINISTER OF COMMUNICATIONS AND INFORMATION TECHNOLOGY AND MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI PRAMOD MAHAJAN): You read the speech of the Leader of the Opposition. How could it be that she can refer to it but he could not? … (*Interruptions*)

SHRI VAIKO : What is the motivated meaning when they accused that the Government of Gujarat had handpicked a retired judge? Therefore, I have to refer to what happened in the year 1984. The People's Union of Civil Liberties has submitted a report under the caption *Who are the guilty in the carnage in 1984?* Shall I read out the names? They cannot tolerate it. If I read out the names of those who have been indicted, they cannot tolerate it. Therefore, I do not want to further damage their feelings. Already, they are a sad lot.

<u>18.00 hrs.</u>

I come from Dravadian School of thought of late lamented Arighnar ANNA. … (*Interruptions*) We are second to none in upholding secularism and democracy. … (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Let us discuss it till tomorrow morning.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Vaiko, as far as possible, please try to be non-controversial.

… (*Interruptions*)

SHRI PRAMOD MAHAJAN: Ayodhya was discussed in this House. … (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: There are charges and counter charges on Godhra

… (*Interruptions*)

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI : Shall we discuss the ……. (*Interruptions*)

SHRI PRAMOD MAHAJAN: You have already discussed it. … (*Interruptions*)

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI : Shall we discuss the conduct of all of them? … (*Interruptions*)

SHRI VAIKO (SIVAKASI): Sir, I will conclude within two minutes.

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI : Sir, it is an insult to the House. The two Ministers who are charge-sheeted and accused of communal violence in Ayodhya are sitting here in this House. … (*Interruptions*)

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Sir, he is speaking freely without any permission, making all the allegations. This motion was discussed in the House. It was rejected, then they became dejected and in the election they have been ejected. … (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Nothing will go on record.

*(Interruptions)**

SHRI VAIKO : Sir, the dark dungeon prison cells of this country will speak volumes and volumes how democracy was killed by the Congress Party in this country. The Leader of the Opposition stated that they are prepared to face the election. The motion moved here and the amendments introduced by them will be rejected by this House lock, stock and barrel. Likewise, in the election, they will be rejected by the people.

Sir, with these words, I conclude.

KUMARI MAMATA BANERJEE (CALCUTTA SOUTH): Shri Vaiko has spoken just now. He is having five-Member Party. You have called the name of Shri Sharad Pawar. He is also an eight-Member Party. I respect him very much. … (*Interruptions*) Please give me a chance. … (*Interruptions*) What is the rule? … (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: They have given the list.

… (*Interruptions*)

*Not Recorded.

श्री शरद पवार : उपाध्यक्ष महोदय, मुलायम सिंह यादव जी ने जो मो शन यहां रखा है, मैं उसका समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूं। सदन में पिछले दो घंटे से बड़ी गर्मी का माहौल पैदा हुआ है। कुछ अपशब्दों के बारे में गृह मंत्री जी ने यहां सवाल उठाया। इस बारे में आपने जो निर्णय दिया, मैं इसका स्वागत करता हूं।

मगर साथ-साथ इतना ही याद दिलाना चाहता हूं कि जिस बारे में यहां कौन से शब्दों का इस्तेमाल हुआ, इस पर आप देखने वाले हैं। उसी तरह से इस सदन के नौजवान सदस्य कीर्ति आज़ाद जी ने प्रिय रंजन दासमुंशी जी के बारे में इस सदन में कुछ शब्दों का इस्तेमाल किया। इसमें भी देखने की आवश्यकता है और जो आपको ठीक लगेगा, इस बारे में निर्णय दीजिए।

आज की यह चर्चा खास तौर पर गुजरात के बारे में है। कुछ चंद सवाल अन्य राज्यों के बारे में यहां सत्ताधारी पार्टी के सदस्यों ने उठाए। महाराट्र के बारे में भी उठाये और यहां सदन के सामने ऐसा निवेदन किया कि जब भारतीय जनता पार्टी और शिव सैना की हुकूमत थी तब उस राज्य में एक भी साम्प्रदायिक दंगा नहीं हुआ और कांग्रेस और एनसीपी की हुकूमत आने के बाद वहां कुछ साम्प्रदायिक दंगे, 50 दंगे हो गए। लेकिन जहां तक मेरी सूचना है और मैंने राज्य सरकार की तरफ से अभी स्टेटमेंट मंगाया था, मेरी सूचना के मुताबिक भारतीय जनता पार्टी और शिव सैना की जब हुकूमत थी तब 27 साम्प्रदायिक दंगे हुए थे। ऐसा स्टेटमेंट मुझे राज्य सरकार ने दिया था।

श्री अनंत गंगाराम गीते : उपाध्यक्ष जी, यह बिल्कुल गलत बयानी कर रहे हैं। …(व्यवधान)

यह सदन को गुमराह कर रहे हैं। शरद पवार जी से यह अपेक्षा नहीं है कि वह सदन को गुमराह करें। यदि उनके काल में पचास दंगे हो गये हैं तो पिछले साढ़े चार साल में एक भी दंगा नहीं हुआ। … (व्यवधान) पवार जी से यह अपेक्षा नहीं है। जो वास्तविकता है, वह बयान करिए।… (व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Please do not interrupt now.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Nothing will go on record except what Shri Sharad Pawar says.

*(Interruptions)**

*Not Recorded.

श्री शरद पवार : महाराट्र सरकार की तरफ से जो स्टेटमेंट मुझे दिया गया है, वह मैं ऑथेंटीकेट करके सदन के सामने रखने के लिए तैयार हूं और उसी स्टेटमेंट में कौन से दिन कहां दंगा हुआ, कौन से नं. पर किसके खिलाफ केसेज रजिस्टर्ड हैं, यह सब ऑथेंटीकेट करके सदन के सामने रखने के लिए तैयार हूं और मैं रखूंगा। अभी पिछले दो महीने से हम गुजरात की स्थिति देख रहे हैं। देश के सभी लोगों में सरकार के प्रति एक तरह की अविश्वसनीयता की स्थिति पैदा हुई है और देश के बाहर भी इस परिस्थिति के बारे में चर्चा हो रही है। आज देश के हितों की चर्चा नहीं हो रही है। गुजरात जिसका उल्लेख यहां किया गया कि यह महात्मा गांधी की भूमि है, गुजरात हिन्दुस्तान की आज़ादी के संग्राम में बहुत बड़ा योगदान देने वाला राज्य है। स्वतंत्रता हासिल होने के बाद गुजरात मेहनत करके तरक्की के रास्ते पर जाने वाला एक राज्य है। गुजरात एक जमाने में 30 अप्रैल 1960 तक महाराट्र और गुजरात विशाल मुम्बई के नाम पर एक राज्य था और इसलिए जिस राज्य से मैं आता हूं, उस राज्य की जनता का एक अलग खास रिश्ता गुजरात के साथ है।

इसलिए गुजरात में जो कुछ हो रहा है, उसको देखने के बाद बड़ा दुःख होता है। यह बात सही है कि 27 फरवरी को नरसंहार या गोधरा के कांड के बाद पूरे देश की नींद खराब हुई है। हिन्दुस्तान

को एक जबरदस्त धक्का लगा है। इस कांड की जितनी भी कड़ी निन्दा आप कर सकते हैं, उसको करने की आवश्यकता है। मेरी पार्टी की तरफ से उसी दिन जो कुछ गोधरा में हुआ, उसकी निन्दा करने का ब्यान निकाला था, जिसमें 58 लोगों को जलाया गया। इस घटना का पूरे देश को दुःख है।

महोदय, मैं सुबह से देख रहा हूं, एक नई थ्योरी यहां पर रखने की कोशिश हो रही है। यह थ्योरी जो रियेक्शन हुआ है, उसके बारे में है। 27 तारीख की घटना घटने के बाद विश्व हिन्दू परिाद् ने गुजरात राज्य में बन्द की सलाह दी और एक तरह से वह बन्द सरकार की मदद से आयोजित किया गया। उस दिन से गुजरात राज्य में जो कुछ हुआ, कल तक उस प्रदेश में कोई सुधार दिखाई नहीं देता है। कल भी वहां दो-तीन लोगों की मृत्यु हो गई। ऐसे कई इंसीडेंस हैं और उनके बारे में यहां बहुत कुछ बताया गया है। जो चमनपुरा का इंसीडेंस हैं, एनडीए को समर्थन देने वाले सदस्य, श्री गीते जी ने जो कुछ कहा, गोधरा का इंसीडेंस आतंकवादियों ने किया था। इस बारे में मुझे ज्यादा मालूमात नहीं है। वे सरकार के पक्ष में है और उनकी पार्टी सरकार में है, इसलिए उनके पास मुझ से ज्यादा जानकारी हो सकती है और मैं उसको मानने के लिए तैयार हूं। वहां के आतंकवादी या आतंकवादी कोई दूसरे हों, उन्होंने यह काम किया होगा, लेकिन उन आतंकवादियों पर नियन्त्रण रखने की जिम्मेदारी किसके पर थी। जिस आतंकवादियों के नाम पर पोटो की आ वश्यकता थी, यहां हम लोगों को बताया गया और देश के हित में हम लोगों ने समर्थन दे दिया। उन आतंकवादियों को रोकने के लिए पोटा का इस्तेमाल क्यों नहीं किया गया, इसका जवाब भी गृह मंत्री जी को देना होगा, क्योंकि उनके सहयोगी दल ने ही इस बात को सदन के सामने रखा है। आतंकवादियों ने हमला किया और 58 लोगों की मृत्यु हो गई, लेकिन दूसरे दिन से आज तक जो वहां नरसंहार हो रहा है, इस जिम्मेदारी से वहां की सरकार को मुक्त नहीं कर सकते हैं। यह भी बताया गया कि उस घटना में विदेशी हाथ था। फिर भी गुजरात के बेगुनाह लोगों की हत्या का जवाब यहां देना होगा।

उपाध्यक्ष महोदय, चमरपुरा में जो कुछ हुआ, जिसमें एहसान जाफरी और उनके परिवार के लोगों की हत्या हो गई।

उन्होंने कई लोगों को टेलीफोन किए थे। सात-आठ घंटे से उनकी कोशिश शुरू थी। उन्होंने पुलिस के आफिसर को टेलीफोन किया, वहां के सरकार के प्रतिनिधियों को किया और जो उनके अपने साथी हैं, उन सब को किया और मदद मांगी मगर उन्हें मदद नहीं मिली। सदन के एक ज़माने में सदस्य रहने वाले व्यक्ति के परिवार को जला कर वहां खत्म किया गया। मुझे नहीं लगता कि ऐसी परिस्थिति इससे पहले इस देश में पहले कभी पैदा हुई थी। चीफ मिनिस्टर ने कहा था कि यह एक्शन है या रिएक्शन।... (व्यवधान) 28 फरवरी से छ: दिन पहले 600 लोगों की हत्या हो गई। आज इज़राइल और पेलेस्टीन का वहां संघा शुरू है, आम संघा शुरू है। उस आम कंफ्लिक्ट में भी इतने लोग मरे नहीं, जितने छ : दिन में गुजरात में मरे। बेगुनाह लोगों की

हत्या की गई। हम किस तरह से इस बारे में कह सकते थे। लूट हुई, दुकानें जला दी गईं। मैंने इन्फोरमेशन इकट्ठी की है कि 290 दरगाहों पर हमले हुए और 202 मस्ज़िदों पर हुए। वहां मस्ज़िद गिराई गई। फरियाज़ खान, हिन्दुस्तान के संगीत में योगदान देने वाले सबसे बड़े व्यक्ति थे। उनका वहां मकबरा था, वह भी नट किया गया। वली गुजराती, उर्दू के साहित्य में जिनका नाम था। जहां-जहां उर्दू के बारे में लोगों को जानकारी है, वहां-वहां सब जगह इनका नाम लिया जाता है। उनका भी मकबरा वहां खत्म किया। ये जो हमले थे, मकबरे पर नहीं थे, भारतीय संस्कृति पर थे। संस्कृति की बात कहने वाले जो लोग हैं, उस विचारधारा को सहयोग देने वाले लोगों ने भारतीय संस्कृति पर इस तरह से हमला किया, इससे दुनिया में भारत की बेइज्जती हुई है। समाज के कुछ लोगों को चुन कर, उन्हें अलग करने की कोशिश वहां शुरू हुई है।

महोदय, यहां एक बात बताई गई कि विश्व हिन्दू परिाद की तरफ से एक स्टेटमेंट निकाला गया था। उस स्टेटमेंट में लिखा है - सत्यम्, शिवम्, सुंदरम् एंड जय श्रीराम। उस स्टेटमेंट में अपील की गई, मैं यहां से मुसलमान दुकानदारों से कुछ भी खरीदने का काम कभी नहीं करूंगा।... (व्यवधान)

डॉ.विजय कुमार मल्होत्रा : महोदय, विश्व हिन्दू परिाद ने कभी नहीं कहा। ... (व्यवधान)

इसे ऑथेंटीकेट करें और तब रखें।... (व्यवधान)

श्री शरद पवार : मैं इसे ऑथेंटीकेट करने के लिए तैयार हूं।... (व्यवधान)

डॉ.विजय कुमार मल्होत्रा : आप इसे कहां से पढ़ रहे हैं, यह भी आप बता दें। ... (व्यवधान) विश्व हिन्दू परिाद ने मना किया है और कहा है कि उन्होंने यह कभी नहीं किया।

SHRI SHARAD PAWAR : I quote :

"Let us resolve :-

1. From now, I will not buy anything from the Muslim shop-keepers!

2. I will not sell anything from my shop to such elements!

3. Neither shall I use the hotel of these anti-nationals nor their garages....... "

Like that, information on a number of points has been given.

डॉ.विजय कुमार मल्होत्रा : यह किस किताब में है और किन का पेपर है ?... (व्यवधान)

SHRI SHARAD PAWAR : This is a publication of *Indian Social Action Forum*. ... (व्यवधान)

डॉ.विजय कुमार मल्होत्रा : आज कल सभी पेपर निकाल रहे हैं।... (व्यवधान) कम्युनिस्ट वाले भी निकाल रहे हैं।... (व्यवधान) VHP has denied it. ... (*Interruptions*)

श्री शरद पवार : मैं इसे रखने के लिए तैयार हूं, इसकी कॉपी मेरे पास है।... (व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: He is authenticating.

... (*Interruptions*)

डॉ.विजय कुमार मल्होत्रा : ये सहमत वगैरह के पेपर्स हैं, यह हमेशा ऐसी चीजें निकालता है। ... (व्यवधान) This is totally wrong. He should not read this. ... (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Sharad Pawar, are you authenticating it?

श्री शरद पवार :मैं इसे अथांटिकेट करने के लिए तैयार हूं।

SHRI KHARABELA SWAIN : Is he authenticating it? How can he authenticate it? He can authenticate that it is a leaflet, but he cannot authenticate that it has been published by VHP.

श्री शरद पवार : आज सबसे ज्यादा आवश्यकता गुजरात के लोगों का पुनर्वास करने की है। माननीय प्रधान मंत्री जी वहां गये थे, उन्होंने राजधर्म की सलाह दे दी। डैथ-कम्पनसेशन के बारे में किस तरह से वहां की सरकार ने निर्णय लिया - यह देखने की बात है। गोधरा में जिन लोगों की हत्याएं हुईं उनके लोगों को दो लाख रुपया देने का निर्णय गुजरात सरकार ने किया। गोधरा में

हत्याएं 27 तारीख को हुई थीं और 28 तारीख के बाद जितने लोग मारे गये हैं उन सभी को एक लाख रुपये का कम्पनसेशन दिया जा रहा है। ...(व्यवधान)

श्री अनंत गंगाराम गीते : जिन्होंने पुलिस के लोगों की हत्याएं की हैं उनको पांच-पांच लाख रुपये इनकी सरकार ने दिये हैं। जो राट्रद्रोही और गैंगस्टर्स हैं उनको पांच-पांच लाख रुपये दिये हैं।... (व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Geete, the hon. Home Minister will say whether it is correct or not.

श्री शरद पवार : प्रधान मंत्री कोा से एक लाख रुपया और गुजरात सरकार से 50 हजार रुपया दिया गया है। लेकिन गोधरा में जिनकी हत्या हो गयी उनको दो लाख रुपया दिया गया है।

श्री सुरेश रामराव जाधव : पिछले हफ्ते महाराट्र के कल्याण में क्या हुआ? महाराट्र में इनकी सरकार है। इनकी सरकार ने उन दलितों को क्या दिया?

श्री अनंत गंगाराम गीते : उपाध्यक्ष जी, पिछले हफ्ते महाराट्र में दलितों के घर जलाए गये, दुकानें जलाई गयीं। इनकी सरकार ने उन दलितों को क्या दिया? ...(व्यवधान) गुजरात में सबको एक समान रुपया दिया गया है। ये जो कह रहे हैं वह सही बात नहीं है।

श्री शरद पवार : गुजरात में जो कुछ हुआ, अगर इनकी सरकार की नीयत साफ होती तो वह रुक सकता था। अभी माननीय गीते जी ने बताया कि मुम्बई शहर में बम ब्लास्ट हुए थे। यह बात सच है कि बम ब्लास्ट हुए थे। उस समय मैं मुख्यमंत्री था। ... (व्यवधान)

श्री विनय कटियार (फैज़ाबाद) : आपके यहां ललित जैन की हत्या क्यों हो गयी। आपकी सरकार वहां नेताओं की हत्या करा रही है। उसके विाय में भी कुछ बता दीजिए।... (व्यवधान) वहां आपकी सरकार ने हत्यारों के ऊपर कोई कार्रवाई नहीं की है। ... (व्यवधान) एक हफ्ते से ऊपर हो गया है लेकिन कोई कार्रवाई नहीं की है।

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Geete, unless he yields to you, you cannot go on record. Please do not record, unless he yields.

*(Interruptions)**

श्री शरद पवार : जिनकी हत्या हुई हैं उनके हत्यारों को गिरफ्तार किया गया है। उसकी इंक्वायरी की बात भारत सरकार की तरफ से की गयी है।

श्री विनय कटियार : उपाध्यक्ष जी, ललित जैन को जिसने मारा, वह कौन नेता था। इनकी सरकार ने कोई गिरफ्तारी नहीं की है। … (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Nothing will go on record, except the speech of Shri Sharad Pawar.

*(Interruptions)**

MR. DEPUTY-SPEAKER: Nothing will go on record, except the speech of Shri Sharad Pawar. How everyone can be allowed to speak in the House?

(Interruptions) *

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Katiyar, nothing will go on record, except the speech of Shri Sharad Pawar.

SHRI C.K. JAFFER SHARIEF (BANGALORE NORTH): Mr. Deputy-Speaker, Sir, the hon. Member has yielded to me. Please just give me a minute. The Prime Minister, who is the Leader of the House, and the Home Minister are sitting on the Treasury Benches. The Members on the other side did not allow Shri Chandra Shekhar to speak. They are not allowing Shri Sharad Pawar to speak. What kind of behaviour is this? Is there any decorum in the House?

*Not Recorded.

श्री शरद पवार : उपाध्यक्ष महोदय, जो कुछ वहां हुआ, उसकी जांच हो जायेगी लेकिन उस जांच के टर्म्स आफ रैफ्रेंस क्या होंगे, मुझे मालूम नहीं। भारत सरकार यहां से उन्हें सुझाव भेज सकती है और इस नरसंहार में राजनैतिक शक्ति का कितना हाथ है, यह देखने की आवश्यकता है।

उपाध्यक्ष महोदय, पिछले चुनाव में जबरदस्त समर्थन मिलने के बाद, मैं गुजरात में देख रहा हूं कि परिस्थितियां बदल रही हैं। पंचायत चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को चाहे इतना अच्छा समर्थन न

मिला हो, लेकिन उसके बाद साबरमती विधानसभा उप-चुनाव में बी.जे.पी. हार गई। साबरमती विधानसभा क्षेत्र हमारे गृह मंत्री जी का संसदीय क्षेत्र है। उसके पश्चात् साबरकांठा लोक सभा उप-चुनाव में बी.जे.पी. की हार हुई। सूरत लोकसभा क्षेत्र में महुआ विधानसभा उप-चुनाव और सियाजीगंज, वडोदरा लोक सभा क्षेत्र में भी बी.जे.पी चुनाव हार गई। हां, राजकोट-2 विधान सभा उप-चुनाव में मुख्य मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी चुनाव जीत गये लेकिन उसके पहले श्री वजुभाई वाला को जितने वोट पड़े थे, उससे बहुत कम वोट मिले यह सब रिकार्ड पर है। इससे क्या लगता है? आज की परिस्थिति में कोई दूसरा विकल्प नहीं है। इसलिये हिन्दू वोट कार्ड लेकर एक अलग माहौल, एक साम्प्रदायिक ज्वर पैदा करने की साजिश की जा रही है। लोगों के दिल में यह बात आ रही है और इसमें कहां तक सच्चाई है, यह देखने की बात है। राजनैतिक लाभ उठाने के लिये इस रास्ते पर जाने की तैयारी जिस किसी ने भी की. वह देश हित में नहीं होगा।

उपाध्यक्ष महोदय, इससे पहले गुजरात में दंगे हुये जिसका जिक्र यहां माननीय सदस्य द्वारा किया गया। मुझे मालूम है कि जब श्री चिमनभाई पटेल गुजरात के मुख्यमंत्री थे और नव-निर्माण का आन्दोलन वहां हुआ था,उस आन्दोलन में काम करने वाले कई और नेता भी थे लेकिन परिस्थिति खराब हो गई । श्री चिमनभाई पटेल एक शक्तिशाली नेता थे लेकिन स्व. इन्दिरा जी के एक निर्णय द्वारा वहां के लोगों की जान बचाने के लिये, विधानसभा को भंग कर दिया गया तथा राट्रपति शासन लागू कर दिया। 1985 में श्री माधवसिंह सोलंकी मुख्यमंत्री थे। उनके पास 140 सीटें थीं मगर वहां की परिस्थिति खराब हो गई। उस समय तत्कालीन राज्यपाल श्री बी.के. नेहरू ने भारत सरकार को सख्त रिपोर्ट भेजी।

तब भारत के प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी ने निर्णय लिया और वहां के मुख्य मंत्री श्री माधव सिंह सोलंकी को मुख्य मंत्री पद से हटाकर वहां की परिस्थिति को दुरुस्त करने के लिए कुछ अच्छे कदम उठाये। मुझे याद है मेरे राज में रिबैरो नाम का एक पुलिस चीफ था। महाराट्र सरकार को यहां से रिक्वैस्ट की गई कि अगर गुजरात की परिस्थिति ठीक करनी हो तो हमें एक अच्छे पुलिस अफसर की आवश्यकता है। रिबैरो को वहां ट्रांसफर किया गया और रिबैरो के हाथ में वह जिम्मेदारी देकर एक महीने के पहले वहां की परिस्थिति ठीक की। अगर सरकार की तैयारी हो और भारत सरकार की नीयत साफ हो तो गुजरात में परिस्थिति दुरुस्त हो सकती है। ऐसा इससे पहले दो बार हम लोगों ने देखा है। लेकिन आज वह परिस्थिति क्यों नहीं हो रही है. कब तक यह नरसंहार चलता रहेगा और कब तक आप चुप बैठेंगे।

उपाध्यक्ष महोदय, देश के प्रधान मंत्री ने सिंगापुर जाते समय जो कुछ कहा था, मैं उससे बिल्कुल सहमत हूं। यह परिस्थिति इस देश के हर आदमी को अपना चेहरा दिखाने के लायक नहीं थी और इसीलिए जो दुख और भावना उन्होंने पूरे देश के सामने प्रकट की, उसका हम लोगों ने स्वागत किया था। मगर खाली बोलने से वहां परिस्थिति नहीं सुधरेगी। वहां कुछ न कुछ सख्त कदम उठाने की आवश्यकता है और यदि वह सख्त कदम उठाना हो तो धारा 356 का इस्तेमाल करके वहां ￼

ेसीडेन्ट रूल लाकर गुजरात की परिस्थिति को ठीक करने के लिए कोशिश करने की आवश्यकता है। यह काम आप जितना जल्दी करेंगे, उतना फायदा वहां की परिस्थिति के लिए होगा, इतना ही मैं कहना चाहता हूं।

मैंने जो राजनीतिक बात कही, मालूम नहीं वहां जिन लोगों की हुकूमत है, उस भारतीय जनता पार्टी ने 17 मार्च, 2002 को एक सर्कुलर भेजा था, जो कॉम्बैट मैगजीन के मार्च-अप्रैल, 2002 के इश्यु के पेज नम्बर 113 पर दिया है। जो जिला और ब्लॉक लैवल पर पार्टी के सदस्य काम करते हैं, यह सर्कुलर उन्हें भेजा गया था और उन्हें इस सर्कुलर में बताया गया था कि कुछ इश्यूज हम आपको भेज रहे हैं, आपके क्षेत्र की इस बारे में जो कुछ इन्फॉर्मेशन आपके पास है, वह इन्फॉर्मेशन लेकर आप उस मीटिंग में आइये। उनके पास क्या सवाल भेजे थे। उनके पास भेजा गया पहला सवाल था -

> "1. How was the *bandh* in the *Zila?* What role did the Congress play during the *bandh?*
>
> 2. After the Godhra incident, what is the popular opinion about the party and Government?
>
> 3. What is the feeling of workers of the party? Is the present Government liked by various castes, *dalits, adivasis* and others? If we call for elections now, will we benefit? In short, can we change the popular opinion in our favour? What is the exact effect of the arrests on the workers? What will be the effect in the elections?"

ये सब सवाल क्या बताते हैं।

PROF. VIJAY KUMAR MALHOTRA : Sir, I will again say that there is no such BJP circular. यह क्या चीज पढ़ रहे हैं। ऐसा कोई सर्कुलर बी.जे.पी. ने नहीं भेजा। यह कॉम्बैट मैगजीन छाप रही है। ...(व्यवधान)

श्री शरद पवार : जिस तरह से यहां इंडियन एक्सप्रैस की रिपोर्ट मैन्शन की गई थी, उसी तरह से कॉम्बैट मैगजीन के मार्च-अप्रैल, 2002 के इश्यू में आई हुई रिपोर्ट को मैंने आपके सामने रखा है। ... (व्यवधान)

डॉ.विजय कुमार मल्होत्रा : सर, ये ऐसी मैगजीन्स हैं जो इस तरह की गलत बातें रोज छापती रहती हैं। माननीय सदस्य वह सर्कुलर दिखायें। ...(व्यवधान)

श्री शरद पवार : यह चुनाव के लिए कितना लाभदायक हो सकता है, इस बात पर ध्यान देने की आवश्यकता है। ऐसा मानस अगर वहां के नेतृत्व का हो सकता है और अगर यह बात सच होगी तो मुझे लगता है कि यह बड़ी गम्भीर बात है, जिस पर हमें ध्यान देने की आवश्यकता है।

मैं ज्यादा कुछ नहीं कहना चाहता, सिर्फ एक बात मुझे कहनी है कि आज वहां शांति कैसे पैदा हो सकती है, जो समाज में नफरत है, उसको कैसे हम दूर कर सकते हैं, इस पर ध्यान देना होगा। इसके लिए वहां की सभी पोलिटिकल पार्टीज़ के लोगों को बुलाकर ज्यादा से ज्यादा इंटरऐक्शन उनके साथ करना होगा और उनका सहयोग किस तरह से ले सकते हैं इस पर ज्यादा ध्यान देना होगा। मुझे लगता है कि अभी तक वहां की परिस्थिति में कोई सुधार नहीं आया है। आज के ‘ संदेश’ में एक रिपोर्ट है कि कुछ साधुओं पर कुछ हमला हो गया। हैडलाइन थी कि साधुओं पर मुसलमानों ने इस गांव में हमला किया। जब-जब ऐसी परिस्थिति पैदा होती है, तब हमेशा सरकार की तरफ से न्यूज़पेपर्स और बाकी माध्यमों को हमेशा एक बात बताई जाती है कि समझो ऐसा कुछ हुआ भी, तो किसी समाज या धर्म के लोगों का नाम मत दीजिए क्योंकि इससे नफरत और पैदा हो सकती है। इसलिए इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। मगर मुझे लगता है कि सरकार इस पर ध्यान देने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं है और इसलिए यह परिस्थिति दिन प्रतिदिन खराब हो रही है। अगर हमें देश के हितों की रक्षा करनी है, खून-खराबा खत्म करना है, सांप्रदायिक ज्वर खत्म करना है तो हमें सख्ती से कदम उठाने की आवश्यकता है।

मैं प्रधान मंत्री जी से इतना ही कहना चाहता हूँ कि आपकी नीयत के बारे में हम लोगों ने कभी बातें नहीं कीं और करना भी नहीं चाहते, मगर इतना खून-खराबा पिछले दो महीने से होने के बा वजूद भी आप शांति और मौन व्रत रखकर यहां बैठेंगे तो धारा 356 का इस्तेमाल करने की बात हम करेंगे। भले ही हमारे पास शक्ति न हो, भले ही नंबर न हो, मगर फिर भी आपको जाने का नोटिस हमें देना पड़ेगा, इतना ही कहकर मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ।

SHRI S.S. PALANIMANICKAM (THANJAVUR): Mr. Deputy-Speaker, Sir, I thank you very much for giving me this opportunity to take part in the Discussion under Rule 184.

Sir, in Gujarat, two earthquakes have occurred in the last one year or so. One was the nature made in January 2001, and the other is the present earthquake which is worse then the previous one, that is, ghastly killings of innocent people there, which is purely man-made. The first incident was purely nature made. But this incident of Godhra and other parts of Gujarat

is man-made. Every right-thinking person in India or for that matter in the entire world, will condemn this ghastly event.… (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Hon. Members, please have order in the House.

SHRI S.S. PALANIMANICKAM : Sir, that is why when our beloved Prime Minister visited Gujarat he had stated that what had happened in Gujarat was a national shame. This is not only a national shame but a shame to the entire humanity.

Of course, Godhra incidents have to be condemned. But with that, nobody can evolve a political Newton's Theory meaning that 'every action will be followed by an equal reaction.' 'Eye for an eye' kind of revenge is a worst form of human conduct. That is why Mahatma Gandhi had said that if everybody takes the attitude of eye for an eye, the entire world will be full of blind people. Our society is a pluralistic, multi-cultural, multi-religion and multilingual society. We have got people belonging to all religions in the world – Hindus, Sikhs, Muslims, Christian, Jain, Jews etc.

The preamble of our Constitution mentions liberty of thought, expression, belief, faith and worshipping. Everyone should enjoy the liberty of practising his own faith.

Today, while condemning the crime against humanity, which is happening in Gujarat, we are caught up in a peculiar situation.

Usually when law and order deteriorates, Article 356 is invoked and President's Rule is imposed; and we all believe in the theory that the State legislature is the only competent body to make and unmake a Chief Minister. But the law and order is deteriorating in many States. At the same time, another difficulty is that if one Chief Minister is removed, rule of proxy comes into effect. Thus, we have a Hobson's choice.

Our worry is that what little federalism is left should not be taken away and it needs to be maintained until we evolve a full-fledged federalism. Since we believe in federalism, we are not in a position to support this

Motion. But at the same time, we cannot be a helpless witness to this continuous violence and holocaust happening in Gujarat.

In the famous S.R. Bommai case, two issues central to democratic governance came up for adjudication. One was federalism and the imposition of President's Rule and the other was the scope and ambit of secularism and its role in governance. The court pointed out that despite the absence of the expressions 'socialist' and 'secular' in the Preamble, the Constitution was secular and that what was implicit was made explicit. Thus, no Government can bring about a theocratic State into existence – either directly or indirectly. The judges pointed out that the founding fathers could not have countenanced the idea of treating minorities as second-class citizens. On the contrary, the dominant thinking appears to be that the majority community, the Hindus, must be secular and thereby, help the minorities to become secular. For, it is the majority community alone that can provide the sense of security for others.

The purpose of law in plural societies, the court went on to say like this:

> "Is it not the progressive assimilation of minorities in the majoritarian milieu? This would not solve the problem, but would vainly seek to dissolve it."

Secularism is, therefore, a part of the fundamental law and the basic structure of the Indian political system to secure to all its people socio-economic needs essential for man's excellence and his moral well being, fulfilment of material prosperity and political justice.

श्री मुलायम सिंह यादव : उपाध्यक्ष महोदय, हम जानना चाहते हैं कि इस पर वोट कब पड़ेंगे। पेट भी खाली है। मेरी प्रार्थना है कि वोटिंग का समय निश्चित कर दीजिए, ताकि हम उस वक्त हाजिर रहें।

उपाध्यक्ष महोदय : मुलायम सिंह जी, यह मैं अभी कैसे बताऊं। अभी बोलने वाले बहुत माननीय सदस्य हैं। यदि प्रत्येक माननीय सदस्य को पांच-पांच मिनट भी दिए जाएं क्योंकि इससे कम में कोई माननीय सदस्य अपना भााण समाप्त नहीं करता, तो भी मैं आपको कैसे बताऊं। मेरे लिए यह बोलना अभी संभव नहीं है।

वित्त मंत्री (श्री यशवन्त सिन्हा) : मुलायम सिंह जी, आपने तो शुरू किया है, इसलिए आप तो बैठिए। आप अपने सब एपाइंटमेंट्स कैंसिल कर दीजिए। आपको यही पनिशमेंट है।

श्री मुलायम सिंह यादव : नहीं मेरी कोई एपाइंटमेंट नहीं है। मै तो बैठा हूं, लेकिन यदि वोट का समय निश्चित हो जाए, तो ठीक रहेगा। चाहे आप रात को 12 बजे या दो बजे, कोई भी समय निश्चित कर दीजिए।

उपाध्यक्ष महोदय : मुलायम सिंह जी, मैं यह नहीं बता सकता कि एक स्पीच के बाद दूसरी स्पीच शुरू होने के बीच में इंटरप्शन का कितना टाइम होता है। इसलिए समय तय करना मेरे लिए संभ व नहीं है।

श्री मुलायम सिंह यादव : संसदीय कार्य मंत्री जी से आप मदद लेकर हमें बता दीजिए।

उपाध्यक्ष महोदय : उनकी मदद लेकर आप खुद ही एसेस कर लीजिए।

SHRI S.S. PALANIMANICKAM : The malice and the plague is within us. Fundamentalism is the name of the malice and the plague.

First of all, nobody can seek votes in the name of religion. Section 123 of the Representation of the People Act prevents religion as the basis of electoral planks. It is in this context, some of the elections and the members of various legislatures were challenged and their elections were set aside by the Courts of Law.

Secularism is part and parcel of our basic structure of the Constitution. This is a great doctrine given by the Supreme Court in the Kesawananda Bharti's case. Therefore, it is very clear, nobody who claims to be anti-secular can be elected.

The people affected by the continuous riots are today looking for adequate relief and rehabilitation. These are different matters. The main thing is, justice should prevail. Those who are guilty, must be brought to book. Most importantly, the mind-set, the thinking should change along with the noble principles enshrined in the Constitution. How will people remember our democracy? Only if we respect the Constitution. How will history remember us? Only when we behave like civilized human beings with a culture dating back to 5000 years.

NDA was created for following the principles of secularism and social justice and to uphold the Constitution in its true spirit and not for shutting down the democracy. Therefore, the NDA should re-dedicate itself to every word of our National Agenda in letter and spirit.

Before concluding, I would like to quote the words of Thiru K. Parasaran, the former Attorney-General. He said:

> "The name of the Father of the Nation is "Gandhi". His name and those of the State of Gujarat and city of Godhra have "G" as the first letter. The word God also starts with "G". If the ethos and philosophy of religion are perverted, the God itself will get perverted and instead become reversed as "dog" (G-O-D if reversed becomes D-O-G). A dog exemplifies the quality of faith even though it is an animal. We should at least try to emulate the virtue of that animal. "

18.48 hrs (Dr. Raghuvansh Prasad Singh *in the Chair*)

Our Hon. Prime Minister, when he visited Gujarat has stated that madness cannot be answered by madness. Fire cannot be doused by fire and that you need

water to stop the fire from spreading. Let us all rise to the occasion and be together and pour water to extinguish the fire – I mean, the fire of communalism, whether it is Godhra model or other model, whether it is an attack or retaliation.… (*Interruptions*) I oppose the Motion.

SHRI PRAVIN RASHTRAPAL : Sir, I am here to support the Motion moved by Shri Mulayam Singh, and amended by Shri Priya Ranjan Dasmunsi and other Members of the CPI(M) Party. I am participating in this debate with a lot of pain in my heart and agony too. I may bring to the notice of the House that Gujarat is represented by 26 Members of Parliament in this House. This debate started around 12.05 p.m.

I am extremely sorry to say that an MP from Gujarat is permitted to speak only after 5 to 6 hours and we are discussing Gujarat. I would request the House that let there be some procedure by which when the House is discussing a particular State, it must obtain the first hand information from a Member of Parliament belonging to that particular State. He may be either from this side or that side. I am also extremely sorry to say that even very senior Members who have participated in the debate, have referred to the issues which took place prior to Independence, the issues which took place during 1984-85 or in 1969 in Gujarat. They have not gone into the real details of the genocide, human killing, and the State-sponsored terrorism in Gujarat which took place during the last two months.

I am participating with a agony because my own relative was killed on 15th March in the mob violence which erupted because of the call of *aarti* on road given by Vishwa Hindu Parishad. I was born in a Hindu family but I do follow Buddhist ideology. My wife and my daughter follow Hinduism. They worship Lord Rama, Shiva and others. Sir, I have never heard about *aarti* being performed on road and that too in the afternoon. I have heard about *aarti* performed in the morning in the temple. I have heard about *sandhya aarti* as we see in Haridwar in the evening. But whenever the call is given by Vishwa Hindu Parishad in Gujarat, the *aarti* is performed at 1 o'clock or at 1.30 p.m. It is normally on Fridays. They very well know that Muslims will be going to the Masjid in great number to perform their *namaaz* and they will be coming back around 1.30 p.m. They also know that there will be a mob on the one side as well as on the other side. My relative, namely, Shri Nitish Parmar, aged 19 years and studying in 12th standard with science, died on 15th March. On the one side, there was a Hindu mob and on the other side there was a Muslim mob. I am neither a Hindu nor a Muslim because I am a *dalit*. I want to ask one open question from those who claim *Hindutva*. Where were they during 1981 anti-reservation riots in Gujarat? If Scheduled Caste belong to Hindu community, why do they oppose reservation which is meant for Scheduled Castes and Scheduled Tribes? Who were the leaders of that agitation in Gujarat? I will not refer to any other State. The statue of great Dr. B.R. Ambedkar, the father of the Constitution, was tried to be demolished in

Surangpur area by whom? Let the Government of Gujarat inquire into it right now and give the names of those who were responsible for trying to demolish the statue of great Dr. B.R. Ambedkar during 1981 anti-reservation riots. The people belonging to Scheduled Castes living in Ahmedabad and in all North-Gujarat villages were targeted. I will tell you an incident of one village, Billia which is in my Constituency, Patan. The entire Scheduled Caste *basti* was put on fire and people had to run from the village, Billia. They went to Siddhpur and took shelter in an Ashram which was managed by a Scheduled Caste saint called Poonamnath. They stayed there for 20 years. The colony to rehabilitate the villagers of Billia, who came to Siddhapur Taluk of Gujarat, was built after 20 years by the previous Government and the present Government only when I took up the matter in the Consultative Committee of Parliament when Shrimati Maneka Gandhi was the Chairman, and now Dr. Jatiya is there. After that, the order was sent saying that those villagers belonging to Scheduled Caste families, who migrated from Billia because of anti-reservation riots, should be rehabilitated.

Money was sent, colony was constructed and a programme was arranged. The Minister for Social Welfare of Gujarat Government came there and I was also invited there as a Member of Parliament of that constituency. It has happened after 20 years.

SHRI P.S. GADHAVI (KUTCH): This happened in Congress regime.

SHRI PRAVIN RASHTRAPAL : I am not quoting the regime. I am talking of those who are against reservation. I have not named anybody. But I do know…… (*Interruptions*)

SHRI HARIN PATHAK (AHMEDABAD): Most of them are in Congress. I will give you the names. * and * are in Congress…… (*Interruptions*)

SHRI PRAVIN RASHTRAPAL : You talk when your turn comes.* is also a Congress man….… (*Interruptions*)

सभापति महोदय : हरिन पाठक जी, आप अपना स्थान ग्रहण करें।

… (*Interruptions*)

श्री हरिन पाठक : शिवराज पाटिल जी से पूछ लीजिए, वे ... * नाम कैसे लेते हैं ?

सभापति महोदय : आप आसन ग्रहण करें। नाम प्रोसिडिंग में नहीं जाएंगे।

SHRI PRAVIN RASHTRAPAL : I am talking of mentality.

The former Prime Minister of the country, Shri Chandra Shekhar, has very rightly pointed out as to which way we are going particularly not in what is happening in Gujarat but what is happening in Parliament. Truth is bitter. I am telling that Hindu mentality was against reservation for Scheduled Castes and Scheduled Tribes and as a result, riots took place. The people in Bilia did not belong to any party. Tell me as to what is your membership and what is the membership of Congress. You cannot say that all are Congress men in Gujarat and all are BJP men in Gujarat. I am talking about community. We are discussing communal riots. We are not discussing about riots of Congress or of BJP or whether they are instigated by these men or those men…… (*Interruptions*)

*Not Recorded.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: You made a sweeping remark that Hindu mentality was against reservation.

SHRI PRAVIN RASHTRAPAL : It was in Gujarat. I say it.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Does the Congress Party say it?

SHRI PRAVIN RASHTRAPAL : I say it. The Hindu mentality was against reservation in Gujarat. I say it.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Are you not a Congress man?..… (*Interruptions*)

SHRI HARIN PATHAK : Is it your Party's view? Please specify.

SHRI PRAVIN RASHTRAPAL : I say it.

This morning, we received this booklet about all the lectures given by the hon. Prime Minister during the last few days because nowadays, whatever may be the reason, there are many controversies about his speeches. As a result, the Prime Minister's Office has very rightly, at Government cost, published this booklet and sent it to all the Members of Parliament to influence their minds that at least the Prime Minister is not in favour of communal riots.

In today's newspaper also, we read an appeal issued by the highest authority of this country, that is, His Excellency the President of India. ... (*Expunged as ordered by the Chair*) It means the President of India is worried about the situation in Gujarat. As violence is continuing, he wants that peace should be maintained.* That was his statement.

There was also another interesting article in an editorial page published in *The Hindustan Times*, one of the leading newspapers.

*Expunged as ordered by the chair.

19.00 hrs.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: I am not raising any point of order because I am from the other House.

SHRI PRAVIN RASHTRAPAL : I am not yielding.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Sir, he cannot mention the name of the President of India.

सभापति महोदय : यह सही है कि भाण को प्रभावशाली बनाने के लिए प्रेसीडेंट ऑफ इंडिया का नाम लेने की इजाजत नहीं है।

… (व्यवधान)

SHRI PRAVIN RASHTRAPAL : In connection with this booklet, Shri A.G. Noorani has written an editorial in *the Hindustan Times*. He is not a small man or an ordinary person. He is a well-known columnist. He has written an article called `The Real Vajpayee'. I am not using these words. I will always say 'hon. Prime Minister'. The title of the article is, `Prime Minister speaks in conflicting voices. So, how can he be believed?" He has quoted instances, not during the last two months, but right from 1962 onwards, when the hon. Vajpayeeji made one statement on one day and changed it the other day, including that statement made in America where he said that he is the RSS *Pracharak,* and the next day it was changed that he is the *pracharak* of this *Rashtra,* and not *Sangh.*

Since I am from Gujarat, I want to remove certain mis-information given by the hon. Members from various other States without any intention. The present Chief Minister of Gujarat was elected on 22nd February. The result of his election was declared on 22 nd February. He went to Gujarat from Delhi. He was not in Gujarat. I want to know from hon. Advani, and this House may also be informed, as to why Shri Narendra Modi who belonged to Gujarat BJP was brought to Delhi before four years? Let this House know that. What made the BJP to remove a man like Shri Keshubhai Patel and install a one time *pracharak* of RSS as Chief Minister? It is very clear that it was the agenda of the *Sangh Parivar*. It is because when Shri

Vajpayeeji became Prime Minister in March, 1998 – he completed four years in Office last March -- Congress ruled only in six States. But slowly elections took place in several States and Congress is now ruling in fourteen States.

According to my information, if I am not incorrect, BJP is ruling only in Gujarat and Jharkhand. … (*Interruptions*) Only in Gujarat the BJP Government is there all over the country. All other States are either ruled by Congress or Communist Party of India or various other parties. But BJP is not there definitely. At the Centre, BJP is ruling in the name of NDA, of whom the Convenor is my great old friend of 1974 railway strike, Comrade George Fernandes. This Alliance is neither democratic nor national. … (*Interruptions*) In those days he was my Comrade. I do agree that I was mobilising people for strike in Gujarat and he was the leader at all-India level. Even now he is trying his best. I want to know from him, when he first visited Gujarat as Defence Minister of the country, was he not advised by the Chief Minister not to go to working class areas? I want to know from him, and let this House also know, was he not stoned? Who were those people who stoned the Defence Minister of this country? Let it be known to this House. I would like to remove certain mis-information and misconceptions also. Let me give the total details right from 22 nd February to 26th April, which are according to the police records. I have got the details up to 26th and you can go on adding to it. According to Government of Gujarat, total number of people killed was 661. I have got figures of Hindus and Muslims, but I do not want to give it. … (*Interruptions*) Do you want to know? It is 552 Muslims and 109 Hindus. The number of people killed in police firing was 170.

The number of people injured in stabbing is 310. Sir, 9106 rounds of police firings took place. Teargas shells fired were 12513. The number of houses affected in arson is 10298; shops looted in arson number 12473; lorry/*galla* destroyed were 2659. The number of destroyed State Transport buses of the Government of Gujarat is 27. Other vehicles destroyed number 2978. The total number of deaths up to this date is 831. The total number of arrests made so far is 35,552. My dear Sir, dear Home Minister, I want to inform you that out of the 35,552 arrests, all the arrests were

bailable offence. After these many killings, arsons, vehicles looted and burnt, hardly 79 people were arrested under non-bailable offence. In spite of the statistics, you do not want to change the head of the State. Is this not sufficient reason to impose President's rule in Gujarat? Is it not sufficient to do that? I want to know about this from the hon. Home Minister.

The other things are about the school examination, the alleged issue of the Congress man involved in the railway carnage in Godhra etc.

श्री रामसिंह राठवा (छोटा उदयपुर) : उसके बाद भी कांग्रेस के लोग दंगों में शामिल थे। आपको नाम चाहिए, जगह चाहिए, तो मैं पूरी डिटेल दे सकता हूं कि कौन-कौन कांग्रेस के लोग थे। … (व्यवधान)

SHRI PRAVIN RASHTRAPAL : I must give one important figure to this House. Sir, 523 religious places were destroyed. Out of the 523 religious places, 298 were *dargahs* including the Mamu Saheb *dargah* near the great saint Mira Dattar's place in *Unava* . I visited this place because this is in my constitutency. The dargah of Mamu Saheb was constructed by Muslims. But the silver pillars and all the silver articles in the dargah were presented by the great Maharaja of Baroda Sriman Sayajirao Gaekwad. Not only the dargah was demolished but also they looted the silver. They took away the water pumps. It happened in Mira Dattar which is near Unjha. Sir, 298 dargahs were demolished; 205 Masjids were demolished. Some Temples were also there. The figure is 17. So, 17 Temples were also demolished. Churches were also there. Three Churches were also demolished during the riots. So, *in toto,* 523 religious places were demolished. If this is the reaction in respect of the Godhra train carnage, I am sorry to say how can we talk about Mahatma Gandhi, Lord Mahavira and Lord Buddha who are the great sons of this country? You are talking of a particular culture. We are talking of a composite culture. We are for the Hindus, Muslims, Christians, *dalits* and we are for all the sections of the society. I am putting the argument of the great Shankaracharya. The Shankaracharya of Puri has put a question to these very people who have made a mess of Gujarat. The question put by the Shankaracharya is this. This has been reported in the newwpapers.

"The Shankaracharya also questioned the right of the Rashtriya Swayam Sevak Sangh, the Vishwa Hindu Parishad, the Bajrang Dal to speak on behalf of the Hindus and said that the Hindus of this country had not given any mandate to these organisations to speak on behalf of them. "

We are also Hindus.… (*Interruptions*)

SHRI KHARABELA SWAIN : Will you tell the name of the Shankaracharya? What is the name of that Shankaracharya? He is not the Shankaracharya of Puri.… (*Interruptions*)

SHRI PRAVIN RASHTRAPAL : He said this while addressing the communal harmony convention organised by the *Jamaiat-Ul-Ulema-e-Hind* The entire community has faith in him. The Shankaracharya held the Prime Minister directly responsible for the killings of hundreds of people in Gujarat.

That was the crime without any parallel in Indian history. I want to know as to what is the correct thing about the examination. Muslim parents in Ahmedabad formed a Committee and named it as `Open House Committee'. This truth and fact should be known not only to the entire House but also to the media. It was not a Committee of Congress Party. Incidentally, three members of that Committee belong to the Congress Party. This Committee took a decision about conducting the examination during the most tense period of communal riots in Gujarat. Students resided in Gomti Nagar, Jamalpur, etc. Ten thousand people were housed in Aman Chowk Bapu Nagar camp. … (*Interruptions*)

सभापति महोदय : कृपया आप आसन ग्रहण करिए। राट्रपाल जी के सिवा किसी की बात कार्य वाही में नहीं जाएगी।

...(व्यवधान). *

SHRI PRAVIN RASHTRAPAL : Seven thousand people were housed in Darya Ganj camp which was visited by various leaders. Seven thousand people were housed in Shahe Alam camp. These people requested this

Open House Committee and the Committee directed the Muslim students residing in these camps to boycott. The call of boycott was given by this Committee and not by the Congress Party. Let this be very clear. … (*Interruptions*) It is said that Godhra incident.. … (*Interruptions*)

सभापति महोदय : मिस्त्री जी, कृपया आप बैठ जाइए।

SHRI PRAVIN RASHTRAPAL : Mr. Chairman, Sir, about Godhra incident, it was claimed that Congressmen were involved. I have a Press cutting of *The Hindu* dated 2nd March, 2002, in which the hon. Home Minister has gone on record - `Outside elements' may be involved in Godhra in Gujarat. Shri Advani, I am reading a paragraph from it.

> "Shri Advani said the swift way the train operation was carried out, gave indications of it being a "premeditated" attack and not being the handiwork of only the local people."

This is what the hon. Home Minister said in Ahmedabad. I further quote:

> "He did not name what "outside elements" he thought was involved but said the reality would be known in the judicial inquiry into the incident ordered by the Gujarat Government."

This is the statement given by the hon. Minister when he visited the patients in the Civil Hospital. There is a photograph and his name is also mentioned there.

*Not Recorded.

The Home Minister is not able to say as to who participated. At one stage, it was said that ISI-Pakistani agents were involved. Here he said that outside elements were involved.

If this is the statement of the hon. Home Minister of the country, who is a Member of Parliament from Gandhi Nagar of Gujarat which is his

constituency and is also the worst-affected area in which Meghaninagar falls where the former Member of Parliament Shri Ehsan Jaffrey and others were killed, then what further proof is required? … (*Interruptions*)

सभापति महोदय : बीच में बाधा पैदा मत कीजिए। आप आसन ग्रहण कीजिए। श्री खारबेल स्वाइं आप आसन ग्रहण कीजिए।

SHRI PRAVIN RASHTRAPAL : Sir, I also have got a Press clipping from *The Economic Times* dated the 6th March, 2002 wherein some information is given by the Press on the basis of FIRs filed by the Gujarat Police and the heading of that news report says: "VHP and BJP leaders led mobs, say FIRs filed in Ahmedabad." I would like to quote some paragraphs of that news report. It says:

> "Police reports obtained by the Associated Press today named several important figures in two attacks in Ahmedabad, part of riots that killed 512 people last week in Gujarat.
>
> Police officers filed FIRs on Sunday in Naroda, where 65 Muslims were burned to death as they slept by Hindus who set the slum on fire on Friday morning; and in affluent Meghaninagar, where a mob of thousands of Hindus burned to death 42 Muslims in their homes on Thursday night.
>
> None of the men accused in the reports could be contacted for comment, and have been avoiding police attempts to question them, said Deputy Police Commissioner, P.B. Gondya."

The FIR says:

> "They first burned to death 18 residents and later burned 24 more persons in the same place," said, Erda's report."

It says further:

> "The carnage at Naroda Patia was the handiwork of a mob of 6,000 people and the mob at Meghaninagar was consisting of 20,000 people."

This is what is reported in the FIR filed by the police. I would like to know from the hon. Home Minister as to what the Gujarat police was doing when a mob of 20,000 was allowed to assemble. A mob of 6,000 and 20,000 cannot assemble within 5 or 10 minutes.

Sir, I will just show only one photograph. Please see this photograph.

यह कांग्रेस वाले का पेपर नहीं है।

Sir, they have been referring to various things. I would like to quote from a very secret document published by the *Hindu Dharma Sansad*. They say, it is a secret document. I am not going to read it fully. There are 25 paragraphs. I am going to read only the last three paragraphs of this document and they are implementing the same *Hindu Rashtra*.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT (PROF. RITA VERMA): Mr. Chairman, Sir, I am on a point of order. Is he going to authenticate it?

मेरा प्वाइंट ऑफ आर्डर है। बिना ऑथेन्टिफिकेशन के यह पर्चा कैसे दिखा रहे हैं। …(व्यवधान)

सभापति महोदय : कोई एक माननीय सदस्य बोले तो सुना जा सकता है लेकिन विभिन्न माननीय सदस्यों को कैसे सुना जा सकता है?

SHRI PRAVIN RASHTRAPAL : Sir, I quote the last three paragraphs of this document. It says:

> " हमारा अंतिम प्रयास यह होगा कि अब देश में अनुसूचित जाति, जनजाति, पिछड़े वर्ग के कल्याण एवं विकास योजनाओं को समाप्त करके बेजुबान हिंदू आस्थागत जानवरों के उत्तम रहन-सहन, रख-रखाव तता उनकी सुरक्षा के लिए अधिक प्रयास किए जाने चाहिए। इस कार्य को पूरा करने का बीड़ा मेनका गांधी ने उठाया है। मेनका गांधी ने हमें यह भी विश्वास दिलाया है कि देश में मुसलमानों का मुख्य व्यापार मांस की बिक्री को पूर्णतः प्रतिबंधित किया जाए और भारत को शाकाहारी देश बनाया जाए क्योंकि

> मांसाहारी लोग अधर्मी होते हैं और हिंदू धर्म का विरोध भी करते हैं। सभी हिंदू धर्म कट्टरपंथियों से अनुरोध है कि देश में जगह-जगह गौ-शालाओं के निर्माण हेतु अपने प्रस्ताव भेजें जिन्हें प्राथमिकता के आधार पर सरकारी सहायता प्रदान की जाएगी और देश में एक गौ-रक्षक आयोग की स्थापना की जाए। कुछ अधर्मी नेतागण धर्म परिवर्तन के नाम पर हिंदू धर्म को तोड़ने का कार्य कर रहे हैं।... "

हमने इस समस्या को भाजपा मंत्रिमंडल मे उठाया और उन्होंने हमे आश्वासन दिया है कि कि संसद में धर्म परिवर्तन के बारे में एक विधेयक लाया जायेगा और धर्म परिवर्तन पर हमेशा के लिये प्रतिबंध लगा दिया जायेगा और इस विधेयक में यह भी शामिल किया जायेगा कि नयी मस्जिदें, गिरजाघर, बौद्ध विहार और गुरुद्वारों के निर्माण के लिये गृह मंत्रालय की पूर्व अनुमति लेनी आवश्यक होगी।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री (प्रो.रीता वर्मा) : सभापति महोदय, मेरा पांइट ऑफ ऑर्डर है।

सभापति महोदय : क्या है?

PROF. RITA VERMA: The relevant Rule says:

> "No allegation of a defamatory or incriminatory nature shall be made by a member against any person unless the member has given adequate advance notice to the Speaker and also to the Minister concerned… "

MR. CHAIRMAN : You are quoting Rule 353. It relates to the 'procedure regarding allegation against any person'.

कृपा करके आसन ग्रहण कीजिये। कोई पाइंट ऑफ ऑर्डर नहीं है।

SHRI PRAVIN RASHTRAPAL : Sir, to change the mood of the House, I would quote a couplet by Sahir Ludhianvi. Please listen to what he says:

साहिर लुधियानवी ने कहा है :

खून अपना हो या पराया हो, नस्ले आदम का खून है आखिर,

जंग मशरिक में हो या मगरिब में, अमने आलम का खून है आखिर ।

PROF. RITA VERMA: I would like to quote Rule 369:

"(1) A paper or document to be laid on the Table shall be duly authenticated by the member presenting it."

He is quoting and also showing the paper. He should authenticate it. … (*Interruptions*) If that is wrong and defamatory, he should be charged. … (*Interruptions*)

The said Rule further says:

"(2) All papers and documents laid on the Table shall be considered public."

Is he going to authenticate it and place it on the Table of the House?

SHRI PRAVIN RASHTRAPAL : I will lay whatever I have got. I am quoting from the Press clippings. … (*Interruptions*)

प्रो. रीता वर्मा : आप कह रहे हैं कि वी.एच.पी. और आर.एस.एस. ने पब्लिश किया है, क्या उसे अथंटीकेट कर रहे हैं, हां तो टेबिल पर रखिये Otherwise you cannot quote it.

चेयरमैन साहब, आप अपनी रूलिंग दीजिये।

सभापति महोदय : आप बैठियेगा तभी रूलिग दी जायेगी।

प्रो.रीता वर्मा : आप रूलिंग दीजिये तो मैं शान्त हो जाऊंगी।

SHRI PRAVIN RASHTRAPAL : I do not mind it. I am prepared to place this paper because it is a Press clipping. … (*Interruptions*)

सभापति महोदय : क्या आप अथंटिरकेट करके दे रहे हैं?

SHRI PRAVIN RASHTRAPAL : Let me complete. I will also authenticate the Constitution of India and place it on the Table of the House! … (*Interruptions*) I will authenticate. … (*Interruptions*) I am going to quote

its various articles. It has been supplied by the Parliament. I will cite from it. … (*Interruptions*)

प्रो. रीता वर्मा : उनको अथंटिकेट करके देना होगा और सोर्स भी बताना होगा।

श्री अशोक प्रधान : सभापति महोदय. या तो पेपर्स सभा पटल पर रखना होगा या इसे वापस लेना होगा …(व्यवधान)

सभापति महोदय : आप में से कोई एक माननीय सदस्य खड़े होकर बोल सकते हैं और उन्हें सुनकर मामले का निपादन किया जायेगा। यदि अनेक लोग बोलेंगे, उस पर क्या निर्णय दिया जायेगा?

…(व्यवधान)

प्रो.रीता वर्मा : सर, मैं बोल रही हूं कि यह बार-बार गलत तथ्य रख रहे हैं। अभी इन्होंने माननीय शंकराचार्य जी का नाम लिया… (व्यवधान) लेकिन उन्होंने यह बात नहीं कही है, जो यह शंकराचार्य जी को कोस रहे थे। यह जिसकी बात कर रहे हैं, वह शंकराचार्य जी नहीं है, वह खुद ही एक फ्रॉड है और उसके नाम पर यह सदन में कह रहे हैं। यह सदन में गलत बात कह रहे हैं। क्या यह सदन को बतायेंगे कि इस डॉकूमैन्ट की ऑथेन्टिसिटी क्या है।

SHRI PRAVIN RASHTRAPAL : Mr. Chairman, Sir, now I am quoting the various articles of the Constitution of India, which I did not authenticate. … (*Interruptions*) Now, I wish to draw the attention of the hon. Home Minister to article 21. … (*Interruptions*)

प्रो.रीता वर्मा : आप रूलिंग दीजिए कि इस डॉकूमैन्ट की ऑथेन्टिसिटी क्या है।… (व्यवधान)

श्री प्रवीण राट्रपाल : मैं संविधान को भी ऑथेन्टीकेट करता हूं।… (व्यवधान)

सभापति महोदय : संविधान को ऑथेन्टीकेट करने की जरूरत नहीं है।

प्रो. रीता वर्मा : इन्हें इस सीक्रेट डॉकूमैन्ट को ऑथेन्टीकेट करने के लिए बोलिये। …(व्यवधान)

श्री विजय गोयल : सर, आपने मैम्बर को डॉकूमैन्ट को ऑथेन्टीकेट करने के लिए पूछा था। आप उनसे सिर्फ यह पूछ लीजिए कि क्या वह ऑथेन्टीकेट करना चाहते हैं या नहीं।

श्री प्रवीण राट्रपाल : करेंगे।

श्री विजय गोयल : करिये।

श्री प्रमोद महाजन : यदि ऑथेन्टीकेट कर रहे हैं तो इसे सदन के पटल पर रखिये।... (व्यवधान)

श्री अनंत गंगाराम गीते : अभी साइन करके रखिये।

श्री प्रवीण राट्रपाल : जो पेज मेरे पास है, मैं उस पर साइन करके दे दूंगा।... (व्यवधान)

श्री विजय गोयल : सभापति जी, रीता वर्मा जी ने जो सीक्रेट डॉकूमैन्ट पढ़ा, उसके बारे में रीता जी प्वाइंट ऑफ ऑर्डर दिया। आपने राट्रपाल जी से यह कहा कि आप इसे ऑथेन्टीकेट करेंगे, यह सीक्रेट डॉकूमैन्ट है। उन्होने कहा है कि हम इसे ऑथेन्टीकेट करेंगे, आप इस डॉकूमैन्ट को ऑथेन्टीकेट करवा दीजिए।

श्री किरीट सोमैया : लेकिन वह ऑथेन्टीकेट नहीं कर रहे हैं।... (व्यवधान)

श्री विजय गोयल : आपने रूलिंग दी है। ...(व्यवधान)

प्रो.रीता वर्मा : इनसे इसे अभी ऑथेन्टीकेट कराइये। अभी सदन के सामने ऑथेन्टीकेट कराइये। आप इस पर रूलिंग दीजिए।

MR. CHAIRMAN : The rule says:

> "A paper or document to be laid on the Table shall be duly authenticated by the member presenting it. "

अभी वह पढ़ रहे हैं, उसके बाद वह दस्तखत करके जमा कर देंगे।

श्री श्रीप्रकाश जायसवाल (कानपुर) : यह ऑथेन्टीकेट करने के लिए तैयार हैं, लेकिन कौन शंकराचार्य जी फ्रॉड हैं, रीता वर्मा जी से पूछ लीजिए, वह जरा सदन में नाम तो बतायें। ...(व्यवधान)

सभापति महोदय : आप आसन ग्रहण कीजिए। अभी केवल एक सदस्य खड़े हों। बाकी बैठ जाएं।

श्री विजय गोयल : सदन की मर्यादा के लिए जैसा उन्होंने ऑथेन्टीकेट करने के लिए कहा, वह डॉकूमैन्ट पढ़ चुके हैं, जिसे उन्होंने सीक्रेट डॉकूमैन्ट कहा, जिसे आपने कहा कि पढ़ने के बाद वह ऑथेन्टीकेट कर देंगे। अब उन्होंने पढ़ लिया है। अब उसे ऑथेन्टीकेट करवा दीजिए।

सभापति महोदय : ऑथेन्टीकेट का मतलब यह नहीं है, हम भााण को बीच में रोककर सदन में नहीं रखवा सकते। क्या ऐसा कभी हुआ है। आप नई परिपाटी शुरू करना चाहते हैं। अगर कोई सदस्य सदन में रेफरेन्स देता है, वह आदमी अभी खड़ा है।

श्री प्रमोद महाजन : आप बाद में ऑथेन्टीकेट करा दीजिए।

SHRI PRAVIN RASHTRAPAL : Mr. Chairman, Sir, the Union Home Minister is elected from Gujarat. The Union Minister of Law and Justice is a Member of Rajya Sabha from Gujarat.

I want to invite their attention to article 21, article 25, article 26, article 29, article 40, article 355 and the Preamble to the Indian Constitution. I am prepared to authenticate it. According to me, the BJP Government in Gujarat and the BJP Government in the country have violated all the articles quoted by me. As a result, I demand that action should be taken against all those who have killed innocent people, those who have raped innocent women, those who have looted the properties of Muslims, those who have raped pregnant women and those who have killed mothers in the presence of their daughters… (*Interruptions*)

श्री अनंत गंगाराम गीते : सभापति जी, जो डॉक्यूमेंट इन्होंने पढ़ा, उसको ऑथेन्टिकेट करने के लिए कहें।

सभापति महोदय : संविधान को ऑथेन्टिकेट करने की ज़रूरत नहीं है। संविधान तो इतिहास से ही ऑथेन्टिकेटेड है।

राट्रपाल जी, अब आप समाप्त कीजिए।

SHRI PRAVIN RASHTRAPAL : Sir, right now 1,50,000 people are residing in various camps. Let me talk about my constituency. In my own constituency, the villagers from village Chanesna have gone to another village. The villagers from village Unjha have gone to another place. The villagers from village Maktupur have gone to another place. Two months are over.

The Chief Minister of Andhra Pradesh has offered 300 acres of land. Yes, it came in the newspapers. He has offered this land for rehabilitation.

सभापति महोदय : श्री राट्रपाल, अब आप कनक्लूड करें।

SHRI PRAVIN RASHTRAPAL : It has come in the newspapers.

SHRI K. YERRANNAIDU : Sir, I want to clarify. The newspapers reported like that, but we never offered and we have not discussed anything like that. It came in the newspapers. That is correct.

SHRI PRAVIN RASHTRAPAL : I allow it to withdraw. It is all right. But day before yesterday, the hon. Prime Minister had sent a cheque of Rs.2 crore to the Indian Red Cross Society and not to the Government of Gujarat. It means the Prime Minister has no faith in the Government of Gujarat. What is paid in the camp is only Rs.12 and 47 paise. All the people who stay in the relief camps are treated as people below the poverty line and relief is not being given. I want to know from the hon. Home Minister when these 1,50,000 people will be rehabilitated.

सभापति महोदय : अब आप समाप्त कीजिए।

SHRI PRAVIN RASHTRAPAL : Let there be a time-table. I want that they should be rehabilitated before monsoon starts. The rehabilitation should be completed before monsoon.

About election, a survey was conducted by the present Chief Minister with *Sangh Parivar,* as to whether it will be advisable to go in for election or not. A survey was conducted. After collecting it from Gujarat, I will produce that form which was circulated by the Party. A survey was conducted. They want to utilise this opportunity.

It proves that it is not the NDA's agenda in Gujarat, but it is the *Sangh Parivar's* agenda under which Gujarat is suffering. I am a Member of Parliament from Gujarat. I demand that the State Government should be

removed under article 356 and President Rule should be imposed in Gujarat.

रक्षा मंत्री (श्री जार्ज फर्नान्डीज़) : सभापति जी, इस प्रस्ताव कुछ बोलने से पहले, हमारे माननीय सदस्य और मित्र, भूतपूर्व प्रधान मंत्री चंद्रशेखर जी ने यहां पर रोशनी को लेकर जो बातें कहीं, उनके बारे में कुछ सफाई देना ज़रूरी है।

सभापति जी, 28 तारीख को शांति यात्रा जहां समाप्त हुई, वहां हम कुछ लोग एक मंच से बोल रहे थे। तब वहां मैंने यह बात जो लोग जमे हुए बैठे थे और काफी लोग थे, उनको संबोधित करते हुए कही कि यह वह गुजरात है जहां कुछ दशक पहले नौजवानों ने एक आन्दोलन चलाया। उस आन्दोलन के बारे में बाबू जयप्रकाश नारायण देश भर में बार-बार कहते रहे कि मैं अंधेरे में था, गुजरात के नौजवानों ने मुझे रोशनी दिखाई। जो नौजवान उस जमाने में नौजवान थे, वे अब मध्यम वय के हो गए हैं, लेकिन जो नौजवान आज यहां बैठे हैं या खड़े हैं, उन सबसे मेरी यह प्र ार्थना है कि जो स्थिति आज गुजरात में है, उसमें सुधार लाने के लिए आप लोग अपना योगदान दीजिए और जो वयस्क या मध्यम आयु के भी हो गए हैं, उनसे भी मेरी यही प्रार्थना है कि वे भी अपना योगदान दें। इस प्रकार जो रोशनी की बात थी, वह यहां समाप्त हो गई। इससे आगे वह नहीं गई थी, लेकिन आपने जो कहा, अखबारों में जो आया, शायद उसके आधार पर कहा। इसलिए हमारे शब्द कहां तक पहुंचा दिए गए, इसे आप, सदन और सारा देश समझता है।

सभापति महोदय, मैं दूसरी सफाई देना चाहता हूं उनके बारे में जो हमारे बहुत ही घनिठ मित्र हैं, इस सदन के वरिठ माननीय सदस्य हैं, वे हैं शरद पवार जी। उनके द्वारा कही हुई एक बात है उसकी सफाई करना चाहता हूं। आपने कहा चिमनभाई पटेल बहुत मजबूत मुख्य मंत्री थे। बात सही है। वे इतने मजबूत थे कि जब आगे इमर्जेंसी आई और हम गुजरात में भूमिगत होकर रहे थे, ते वे हमें अपनी गाड़ी पर घुमाते थे। वे इतने मजबूत थे। शायद साधारण आदमी भी इतनी हिम्मत नहीं करता कांग्रेस के रहते हुए। आपने यह कहा कि उस समय गुजरात में भारी दंगा-फसाद हुआ था और इंदिरा गांधी ने चिमनभाई पटेल को हटा दिया। मैं बताना चाहता हूं कि हकीकत कुछ और है। मैंने जो पहली बात कही, चन्द्रशेखर जी द्वारा कही गई बात को लेकर कि वह आन्दोलन चल रहा था। वहां सरकार गोलियां चला रही थी और वह आन्दोलन भ्रटाचार के खिलाफ था, युवजनों की जो समस्याएं थीं, स्कूल और कॉलेज में पढ़ने वाले की जो समस्याएं थीं, उनके बारे में उनका आंदोलन चल रहा था और 100 से ज्यादा और 200 से कम युवाओं की जाने उस आन्दोलन में गईं। मुझे आंकड़ा भी इस समय ठीक से याद नहीं है। …(व्यवधान) हां, आपने ठीक बताया 120 नौजवान सड़कों, स्कूल, कॉलेजों के आंगन में, रेलवे की पटरी पर, कांग्रेस सरकार की पुलिस की गोली खाकर मर चुके थे। तब मोरारजी देसाई ने दिल्ली में आमरण अनशन शुरू कर दिया और

एक ऐसा समय आया जब हम लोगों को लगा कि अब मोरारजीभाई देसाई जा रहे हैं और यह बात जब श्रीमती इंदिरा गांधी को स्पट हो गई, तब चिमनभाई पटेल को हटाने का काम इंदिरा गांधी ने किया था। वह दंगा नहीं था जिसके बारे में आपने इशारा किया।

सभापति महोदय, मैं तीसरी बात कहना चाहता हूं अपने पुराने कॉमरेड़ राट्रपाल जी से। मैं इतना ही कहना चाहता हूं। ... (व्यवधान)

श्री कांतिलाल भूरिया : सभापति महोदय, माननीय मंत्री जी, पुरानी बातों का जवाब दे रहे हैं। गुजरात अभी भी जल रहा है। ... (व्यवधान)

सभापति महोदय : आप आसन ग्रहण करें। यह ठीक नहीं है।

...(व्यवधान)

सरदार बूटा सिंह : सभापति जी, जॉर्ज साहब ने जो कहा, वह सही नहीं है। मैं यह कहना चाहता हूं कि मोरारजी भाई का अनशन गुजरात सरकार को गिराकर इलैक्शन कराने का था। ... (व्यवधान)

सरदार बूटा सिंह : उपाध्यक्ष महोदय, यह सारी बातें गलत बोल रहे हैं। हाउस को मिसलीड कर रहे हैं। मोरारजी भाई ने इलेक्शन करवाने के लिए ऐसा किया था। ...(व्यवधान) मोरारजी भाई को जनता पार्टी में किसने लिया था ? ... (व्यवधान)

सभापति महोदय : आप अपने भााण में बोलिये।

...(व्यवधान)

श्री जार्ज फर्नान्डीज : अभी कामरेड राट्रपाल ने हमसे एक सवाल पूछा कि गुजरात में जब आप रक्षा मंत्री की हैसियत से गये तब आपको किसी ने पत्थर मारा था। उन्होंने हमें रेल हड्ताल के बारे में भी याद दिलाया। मेरा पूरा विश्वास है कि रेल हड़ताल के दिनों में उन्होंने भी पत्थर खाये होंगे क्योंकि बहुत लोगों को पत्थर खाने पड़े थे बल्कि बहुत कुछ खाना पड़ा था। हमने अपने जीवन में बहुत ही पत्थर खाये हैं। केवल पत्थर ही नहीं खाये बल्कि लाठियां भी खाई हैं। इन हाथों में हथकड़ियां भी रही हैं और जंजीर से बांधकर हमको ले जाने का काम भी किया गया है। हम तो अनेक अनुभवों से गुजरे हुए आदमी हैं। इसलिए हमें यह जो अनुभव गुजरात या अहमदाबाद में हुआ है, उसे हम हमेशा की तरह जीवन के अनुभव के आधार पर मानते हैं। इससे हमको किसी तरह की कोई परेशानी नहीं है। कामरेड राट्रपाल ने अपने भााण के दौरान एक बात और कही कि

मंडल कमीशन की रिपोर्ट नहीं बल्कि प्रमोशन आदि को लेकर जो पिछड़े वर्ग के लोग हैं ... (व्यवधान)

SHRI MADHUSUDAN MISTRY : Under what rule is he clarifying?

SHRI GEORGE FERNANDES: I am clarifying because statements have been made here. … (*Interruptions*)

श्री जार्ज फर्नान्डीज : आप इतनी गुलामी मत कीजिए। आप बैठ जाइये।

सभापति महोदय : आप उनको भााण करने दीजिए।

...(व्यवधान)

श्री जार्ज फर्नान्डीज : सब लोग हमारा जवाब लेकर रहोगे। अगर यहां पर कोई बोलकर जाता है तो उसके बाद बोलते हुए हम उस संबंध में जरूर सफाई देंगे। उन्हें चिंता थी कि गुजरात में जो हरिजन हैं, बैकवड्र्स हैं, उनके लिए जो न्याय मिलना चाहिए, वह नहीं मिलता था।

श्री मधुसूदन मिस्त्री : आज भी नहीं मिलता है। ... (व्यवधान) मेरी कांस्टीट्एंसी में आज भी ऐसा है। ... (व्यवधान)

श्री जार्ज फर्नाडीज : ठीक है। हमने मान लिया। हम उसे नकारते नहीं हैं। ...(व्यवधान)

आप क्यों चिल्ला रहे हो ? हम इसे नकारते नहीं हैं। ... (व्यवधान) हम उनको इतना ही बताना चाहते हैं कि काका कालेलकर कमीशन की रिपोर्ट 25 साल तक धूल खाती रही। उसको बाहर नहीं लाया गया। आप इस बात को याद रखिये। ...(व्यवधान) पंडित नेहरू द्वारा काका कालेलकर कमीशन बनाया गया जो पिछड़ों को न्याय देने के लिए बना था, उसकी रिपोर्ट कांग्रेस की सरकार के जमाने में धूल खाती रही। ... (व्यवधान) बहुत महत्वपूर्ण है, इसको आप नहीं समझ पायेंगी। आपकी समझ में नहीं आयेगा इसलिए आप क्यों परेशान होती हैं। ...(व्यवधान)

श्री प्रवीण राट्रपाल : बी.जे.पी. सरकार ने साबित कर दिया है। ... (व्यवधान)

सभापति महोदय : आप आसन ग्रहण कीजिए।

...(व्यवधान)

श्री कांतिलाल भूरिया : उपाध्यक्ष महोदय, आज तक वहां दंगे भड़क रहे हैं। वहां मार-काट जारी है। ...(व्यवधान) आप गुजरात के बारे में तो कुछ बोलिये। ... (व्यवधान)

श्री जार्ज फर्नान्डीज : आप ख्वाहमख्वाह बोलते हो। हमको चिल्लाकर आप डरा नहीं सकते। आप सब लोग यहां पर गुजरात पर बोल चुके हैं। बहुत सारे भााण गुजरात के इश्यू पर हो चुके हैं। ... (व्यवधान)

सभापति महोदय : आप आसन ग्रहण कीजिए।

...(व्यवधान)

सभापति महोदय : आप टोका-टाकी मत करिये।

...(व्यवधान)

श्री जार्ज फर्नान्डीज : हम तो पूरी दुनिया को देखना जानते हैं। आप क्या बात करते हैं ? ... (व्यवधान) सभापति जी, हमको यहां पर अपनी बात कहने के लिए संरक्षण मिलना चाहिए। ... (व्यवधान)

श्री कांतिलाल भूरिया : उपाध्यक्ष महोदय, यह क्या तमाशा है ? ... (व्यवधान)

हम यहां गुजरात पर चर्चा के लिए बैठे हैं या पुराने इतिहास को दोहराने के लिए बैठे हैं ?...(व्यवधान)

गुजरात के हालात पर चर्चा होनी चाहिए। ... (व्यवधान)

श्री नरेश पुगलिया (चन्द्रपुर) : आप लोग 25 साल पहले की बात कर रहे हैं। गुजरात पर बोलिए। ...(व्यवधान)

श्री कांतिलाल भूरिया : जिस विाय पर चर्चा हो रही है, उस विाय को नकारा जा रहा है। ...(व्यवधान) जब-जब श्री फर्नान्डीज गुजरात गए, वहां दंगा हुआ है।... (व्यवधान)

सभापति महोदय : आप आसन ग्रहण कीजिए। ...(व्यवधान)

श्री श्रीप्रकाश जायसवाल : तीन-चार केन्द्रीय मंत्री गए।... (व्यवधान) वहां 300 आदमियों की मीटिंग थी।... (व्यवधान)

सभापति महोदय : बीच में बाधा डालना उचित नहीं है।

... (व्यवधान)

श्री कांतिलाल भूरिया : वहां लोगों के मकान फूंके गए और उनको पत्थरों से मारा गया। ...(व्यवधान)

श्री जार्ज फर्नान्डीज़ : सभापति महोदय, आप मुझे संरक्षण दीजिए या मुझे कहिए तो मैं बैठ जाऊं।...(व्यवधान)

श्री कांतिलाल भूरिया : वहां लोगों के हाथ बांध कर काटे गए।... (व्यवधान)

सभापति महोदय : आप बार-बार बाधा खड़ी कर रहे हैं।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : भूरिया जी, आसन ग्रहण कीजिए।

... (व्यवधान)

श्री श्रीप्रकाश जायसवाल : सभापति महोदय, आप प्रधान मंत्री जी से कहिए कि तहलका के दोि-ायों से कोई क्लैरीफिकेशन न दिलवाएं, किसी और मंत्री से दिलवाएं।... (व्यवधान)

सभापति महोदय : श्री जार्ज फर्नान्डीज़ के अलावा किसी और सदस्य की बात रिकार्ड में नहीं जाएगी।

...(व्यवधान)... *

सभापति महोदय : आप भााण कर चुके हैं। राट्रपाल जी, आप आसन ग्रहण कीजिए।

... (व्यवधान)

श्री जार्ज फर्नान्डीज़ : सभापति जी, मेरी आपसे प्रार्थना है कि जो सदन के नियम हैं, उनके मुताबिक सदन को चलाने की कृपा करें। ...(व्यवधान)

सभापति महोदय : बैठिए। टोका-टाकी मत कीजिए।

... (व्यवधान)

श्री जार्ज फर्नान्डीज़ : मैं सारा भ्रटाचार खोलना जानता हूं, हरेक का भ्रटाचार खोलना जानता हूं। …(व्यवधान) सभापति जी, मुझे बोलने का मौका मिलेगा या नहीं मिलेगा। सदन में नियम रहेंगे या नहीं रहेंगे।… (व्यवधान) मैं इस प्रस्ताव का विरोध करने के लिए यहां खड़ा हुआ हूं। …(व्यवधान) जब वोट होगा तो आपको मालूम हो जाएगा। मैं इसलिए इसका विरोध कर रहा हूं क्योंकि जिस समस्या पर आज यहां बहस हो रही है, उससे इस प्रस्ताव का कोई मतलब नहीं है। मेरी मान्यता है कि अगर केन्द्र और राज्य सरकारों ने, चूंकि प्रस्ताव में केवल गुजरात सरकार की बात नहीं है बल्कि देशभर के प्रदेशों की सरकारों की भी चर्चा है, अगर केन्द्र और राज्य सरकारों में मिल कर यह क्षमता होती कि जहां कहीं दंगा होता है, चाहे वह साम्प्रदायिक हो या अन्य किसी किस्म का हो, उसे रोकने की, उसे न होने देने की अगर उनमें क्षमता होती तो पिछले पचास सालों में भारत में जो लगभग 15,000 इस प्रकार के फसाद और दंगे हुए हैं, वे नहीं होते।

*Not Recorded.

(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN (DR. RAGHUVANSH PRASAD SINGH): The hon. Minister is not yielding.

… (*Interruptions*)

सभापति महोदय : कृपया आसन ग्रहण करें।

… (व्यवधान)

SHRI MADHUSUDAN MISTRY : You are trying to shield him. …(*Interruptions*) Sir, he has no right to speak like that. … (*Interruptions*)

श्री श्रीप्रकाश जायसवाल : सभापति जी, प्रधान जी से कहें कि किसी दूसरे मंत्री से स्पटीकरण दिलाएं। …(व्यवधान)

सभापति महोदय : मंत्री जी की बात के अलावा और कुछ रिकार्ड में नहीं जाएगा।

…(व्यवधान).. *

श्री जार्ज फर्नांडीज : आज का काम पूरा हो गया। आज की तनख्वाह पूरी हो गई, अब बैठ जाओ। सभापति जी, कितनी गम्भीरता है इस विाय पर, यह स्पट हो रहा है।… (व्यवधान)

सभापति महोदय : भााण के बीच में टोका-टाकी नहीं होनी चाहिए।

श्री जार्ज फर्नांडीज : इसलिए मैंने कहा को जो बहस हम यहां कर रहे हैं, जिस तरह से यह बहस चल रही है, इससे किसी प्रकार का कोई नतीजा निकल सकता है, जो समस्या को लेकर हम यहां बैठे हैं, मुझे उस पर विश्वास नहीं है। यह जो सारा रोना रोया जा रहा है एक-एक कहानी बताकर, जैसे यह कहानी पहली बार देश में हो रही है कि कहां मां को मारकर पेट से बच्चे को निकाला, कहां मां के सामने उसकी बेटी के साथ बलात्कार हुआ, किसको आग में जलाया गया। क्या यह सब पहली बार हो रहा है ? क्या 1984 में दिल्ली की सड़कों पर ऐसा नहीं हुआ था ? … (व्यवधान)

सभापति महोदय : कृपया शांति बनाए रखें।

… (व्यवधान)

*Not Recorded.

सभापति महोदय : कोई बात प्रोसिडिंग में नहीं जाएगी।

. ..(व्यवधान) *

कुमारी उमा भारती : आप में से भी फिर एक भी नहीं बोल पाएगा।… (व्यवधान)

सभापति महोदय : कृपया अपना-अपना स्थान ग्रहण करें। अभी 25 से ज्यादा सदस्य बोलने के लिए बाकी हैं और सदन की कार्यवाही में बैठे-बैठे अथवा खड़े होकर अन्य माननीय सदस्य बाधा डाल रहे हैं और बिना नियम के खड़े हो जाते हैं। कृपया बैठ जाइए। अपना आसन ग्रहण कीजिए।

… (व्यवधान)

श्री सुन्दर लाल तिवारी (रीवा) : मेरा एक निवेदन है। सभापति जी, सरकार की तरफ से जितने वक्तव्य आये हैं, सबमें अतीत की बातें की जा रही हैं। …(व्यवधान) जो कुछ गुजरात में हो रहा है, उसके बारे में नहीं बोल रहे हैं।… (व्यवधान)

सभापति महोदय : कोई बात प्रोसीडिंग में नही जाएगी।

…(व्यवधान)… *

सरदार बूटा सिंह : यह बलात्कारों और कत्लों की वकालत कर रहे हैं। जिन लोगों ने कत्ल किया, उनकी कहानियां कह रहे हैं। ये असत्य बोल रहे हैं। ...(व्यवधान) ऐसी असत्य बातें यहां पर नहीं होंगी। इनको रिकार्ड से कृपया बाहर निकाला जाये। ...(व्यवधान) गुजरात में जाते हैं तो वहां की शांति भंग करते हैं।... (व्यवधान)

सभापति महोदय : कोई बात प्रोसीडिंग में नहीं जाएगी।

. ..(व्यवधान). *

20.00 hrs.

... (व्यवधान)

सभापति महोदय (डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह): आसन ग्रहण कीजिए।

... (व्यवधान)

*Not Recorded.

श्री जार्ज फर्नान्डीज़ : सभापति जी, लगभग सभी वक्ताओं ने एक प्रश्न उठाया कि गुजरात में क्या हो रहा है। ...(व्यवधान)

सभापति महोदय : आप आसन ग्रहण कीजिए।

... (व्यवधान)

श्री जार्ज फर्नान्डीज़ : सभापति जी, जितने भी वक्ता बोले हैं, यह प्रश्न बार-बार उठाया गया कि गुजरात में क्या हो रहा है। ... (व्यवधान)

सभापति महोदय : किसी की कोई बात प्रोसीडिंग्स में नहीं जा रही है।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : आप अपनी-अपनी जगहों पर जाइए। कोई भी बात प्रोसीडिंग्स में नहीं जा रही है।

… (व्यवधान)

सभापति महोदय : प्रोसीडिग्स में कोई बात नहीं जा रही है। यह उचित नहीं है। श्री सुन्दर लाल तिवारी आसन ग्रहण करें। श्री भूरिया आसन ग्रहण करें। सदन की कार्यवाही को नियमानुसार चलने दें।

… (व्यवधान)

SHRI VAIKO : Sir, you tell Shri Dasmunsi also to resume his seat… (*Interruptions*)

सभापति महोदय : आप कृपया आसन ग्रहण कीजिए। सभी माननीय सदस्यगण कृपा कर आसन ग्रहण कीजिए। सदन की कार्यवाही में बाधा उचित नहीं है, सदन की कार्यवाही नियमानुसार चलने दें।

…(व्यवधान)

श्री प्रभुनाथ सिंह : सभापति महोदय, आप पहले इन्हें बैठाइए।

सभापति महोदय : कृपया आप सब अपना-अपना आसन ग्रहण कीजिए, अपनी-अपनी सीटों पर जाइए।

…(व्यवधान)

सभापति महोदय : कृपा कर सभी माननीय सदस्यगण अपना-अपना आसन ग्रहण करें।

… (व्यवधान)

सभापति महोदय : कृपा कर ऐसे सब माननीय सदस्य खड़े मत होइए, अपना-अपना स्थान ग्रहण कीजिए।

…(व्यवधान)

श्री जार्ज फर्नान्डीज़ : सभापति महोदय, मैं बहुत अफसोस के साथ एक बात कहना चाहता हूं, नेता विरोधी दल यहां बैठ कर यह जो सारा खेल करवा रही हैं, …(व्यवधान)

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI : sir, we strongly object this… (*Interruptions*) I strongly object to this remark… (*Interruptions*) The Minister should withdraw his remark… (*Interruptions*) I strongly object to this remark… (*Interruptions*) I strongly object to this remark of the Minister… (*Interruptions*)

सभापति महोदय : कृपा कर आप सब शांत हो जाइए और अपना-अपना आसन ग्रहण करिए।

20.08 hrs. (उपाध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Please resume your seats.

…(*Interruptions*)

श्री अनंत गंगाराम गीते : महोदय, इन्होंने सदन को मजाक बना कर रखा है।… (व्यवधान)

श्री प्रभुनाथ सिंह : महोदय, हमें एक आवश्यक सूचना देनी है।… (व्यवधान)

श्री अनंत गंगाराम गीते : महोदय, गुजरात पर चर्चा हो रही है और इन्हें गुजरात की चिन्ता नहीं है।

MR. DEPUTY-SPEAKER: I will hear you. Please resume your seat.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Now, let him continue. Please resume your seats.

… (*Interruptions*)

श्री कांतिलाल भूरिया : ये विपक्ष के नेता पर आरोप लगा रहे हैं।… (व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: One by one, please. Let me hear him.

… (*Interruptions*)

श्री प्रभुनाथ सिंह : उपाध्यक्ष जी, हमको एक सूचना देनी है। अभी-अभी न्यायालय ने सुब्रमण्यम स्वामी के मुकदमें पर एक भ्रटाचार का नोटिस विपक्ष की नेता माननीय सोनिया गांधी पर दिया है। … (व्यवधान) *

हम आपसे यह जानना चाहते हैं कि …(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : मिस्टर प्रभुनाथ जी, हमारे पास कुछ कागज नहीं है, मैं कैसे नोटिस लूं। …(व्यवधान)

श्री प्रभुनाथ सिंह : * ...

*Expunged as ordered by the Chair.

हम ये मांग करते हैं। …(व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Let me hear what his submission is.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: I heard him. Let me also hear the other side.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: I heard Shri Prabhunath Singh. Let me also hear the other side.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Prof. Vijay Kumar Malhotra, I heard him. Let me hear others also.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: If you do not cooperate, I will adjourn the House. There is a limit!

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: He raised a matter concerning Shrimati Sonia Gandhi. The other Member wants to say something. Can I not hear him?

… (*Interruptions*)

श्री रघुनाथ झा : हम पहले जार्ज फर्नान्डीज जी को सुनेंगे, बाद में किसी को सुनेंगे। …(व्यवधान) सोनिया जी, सिखा-सिखा कर अपने लोगों को बुलवा रही हैं।… (व्यवधान)

श्री कीर्ति झा आज़ाद : यह तो संसद का मजाक हो रहा है। … (व्यवधान) हम पहले जार्ज फर्नान्डीज जी को सुनेंगे। पहले वे बोलेंगे, बाद में हम किसी को सुनेंगे।… (व्यवधान)

श्री जार्ज फर्नान्डीज़ : उपाध्यक्ष जी, सदन की एक गरिमा होती है और सदन में बीड़ी-सिगरेट-पान आदि नहीं खाये जाते हैं। यहां तो च्यूइंगम खाई जा रही है। यह तो सदन की गरिमा को गिराना है।

…(व्यवधान) उपाध्यक्ष महोदय, ये लोग सदन की गिरावट को दुनिया को दिखाना चाहते हैं …(व्यवधान) उपाध्यक्ष महोदय, आप और हम एक साथ इस सदन में आये थे, क्या ऐसा सदन चलता था या क्या इस तरह इस सदन को चलाया जाता था … (व्यवधान)

SHRI SHIVRAJ V. PATIL (LATUR): Sir, we want discussion on the motion.… (*Interruptions*)

We want voting. We do not want anything else to be discussed.… (*Interruptions*)

20.18 hrs. (डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह पीठासीन हुए)

श्री जॉर्ज फर्नान्डीज : सभापति महोदय, जब आप चेयर में थे, मै बोल रहा था… (व्यवधान)

मुझे आपका संरक्षण चाहिये। …(व्यवधान)

सभापति महोदय : आप लोग सदन की कार्यवाही चलने दीजिये। आप सब लोग अपना अपना आसन ग्रहण कीजिये। सदन की कार्यवाही में बाधा उत्पन्न न की जाये।

श्री कांतिलाल भूरिया : सभापति महोदय, इन्होंने अभी आपत्तिजनक बातें कहीं हैं … (व्यवधान)

सभापति महोदय : यह आसन को अधिकार है कि आपत्तिजनक बातों को देख लिया जायेगा और उसे निकाल देंगे।

... (व्यवधान)

श्री जॉर्ज फर्नांडीज : सभापति जी, आप मुझे संरक्षण दीजिए।... (व्यवधान)

सभापति महोदय : आप लोग क्यों खड़ें हैं, आप लोग शांति रखिये।... (व्यवधान)

श्री कांतिलाल भूरिया : सर, यह इतने सीनियर मैम्बर हैं और इस तरह की बात करते हैं। ...(व्यवधान)

सभापति महोदय : कृपा करके आप आसन ग्रहण कीजिए। सदन की कार्रवाई में बाधा उचित नहीं है। ...(व्यवधान)

श्री सईदुज्जमा (मुजफ्फ़रनगर) : यह बात गैर-मुनासिब है... (व्यवधान)

श्री जॉर्ज फर्नांडीज : सर, मैं कह रहा था...(व्यवधान) सुबह से यहां जो चर्चा चल रही है, बार-बार यह प्रश्न पूछा जा रहा है कि गुजरात में क्या हुआ। गुजरात में वही हुआ जो पिछले लगभग 54 र्वा से चलता रहा है। पिछले 46 साल तक जब कांग्रेस पार्टी देश में राज कर रही थी और देश के अनेक प्रदेशों में राज कर रही थी, उस समय सारे देश में जो चलता रहा, वही आज गुजरात में चल रहा है, उससे भिन्न वहां कुछ नहीं चल रहा है। चूंकि एक नहीं अनेकों... (व्यवधान)

सभापति महोदय : कृपा करके आसन ग्रहण कीजिए।

श्री सुन्दर लाल तिवारी : सभापति जी, ऐसे नहीं चलेगा, मैं एक बात कहना चाहता हूं ...(व्यवधान)

श्री नरेश पुगलिया : ट्रेजरी बैंचिज से ऐसी अपेक्षा नहीं है...(व्यवधान)

श्री जॉर्ज फर्नांडीज : सभापति जी, अगर आपका संरक्षण मिले तो हम आगे बोलें।... (व्यवधान)

सभापति महोदय : आप लोग कृपा करके आसन ग्रहण कीजिए।

श्री नरेश पुगलिया : आपने जो कहा है पहले आप उसे वापस लीजिए... (व्यवधान)

श्री जॉर्ज फर्नांडीज : सभापति महोदय, मैं आपका संरक्षण चाहता हूं।

सभापति महोदय : कृपा करके आसन ग्रहण कीजिए। सदन की कार्रवाई में बाधा उचित नहीं है। …(व्यवधान)

श्री कांतिलाल भूरिया : इन्होंने सदन में प्रतिपक्ष की नेता पर आरोप लगाया है… (व्यवधान)

सभापति महोदय : आपत्तिजनक बात को रिकार्ड से निकाल दिया जायेगा। आसन पर टिप्पणी नहीं की जा सकती, आसन का ध्यान आकृट किया जा सकता है। इस पर निर्णय हुआ है कि आपत्तिजनक बात को ट्रेस करके रिकार्ड से हटा दिया जायेगा, आसन को इसका अधिकार है। आप लोग आसन ग्रहण करिये और सदन की कार्रवाई को चलने दीजिए।

सभापति महोदय : आप लोग शांत हो जाएं। अपना आसन ग्रहण करें।

…(व्यवधान)

सभापति महोदय : आप आसन को कहिये, उधर नहीं कहिये। कोई एक माननीय सदस्य बोल सकते हैं, सभी सदस्य एक साथ न बोलें। कोई एक माननीय सदस्य अपनी बात कह सकते हैं। आप आसन का ध्यान आकृट कर सकते हैं। बाकी माननीय सदस्य अपना स्थान ग्रहण करें।

…(व्यवधान)

श्री प्रभुनाथ सिंह : आप मूर्ति को वापस मंगवाइए। वह देश की संपत्ति है। … (व्यवधान)

KUMARI UMA BHARATI: Sir, I am on a point of order under Rule 349.

Sir, Rule 349 (ix) says:

> " A Member shall not obstruct proceedings, hiss or interrupt and shall avoid making running commentaries when (another Member is speaking;) "

यह व्यवस्था का सवाल मैं उठा रही हूँ। इसलिए आप इनको बैठाइए और मुझे बोलने की अनुमति दीजिए। सभापति जी, क्या आप मेरे व्यवस्था के सवाल को एडमिट करते हैं? … (व्यवधान) आप बैठ जाइए, बहुत बुद्धिमान मत बनिए। …(व्यवधान) आप इसको पढ़िये। रूल 349 के तहत मैं व्य वस्था का प्रश्न उठा रही हूँ और उसको फिर पढ़ रही हूं।

> " A Member shall not obstruct proceedings, hiss or interrupt and shall avoid making running commentaries when (another Member is speaking;) "

सभापति महोदय : रूल यह है कि सभी सदस्य नियमों का पालन करेंगे।

कुमारी उमा भारती : सभापति जी, यह भारत का सर्वोच्च सदन है और नेता प्रतिपक्ष का जो बर्ताव है, वह सदन की गरिमा के प्रतिकूल है। *...

... (व्यवधान)

...(व्यवधान)

सभापति महोदय : कोई बात कार्यवाही में नहीं जा रही है इसलिए ऐसे खड़े होकर बोलना उचित नहीं है। नियम का पालन होना चाहिए। सभी माननीय सदस्यगण अपना आसन ग्रहण करें। शांतिपूर्वक ढंग से बहस चलाई जानी चाहिए। सदन की कार्यवाही में बाधा उचित नहीं है इसलिए सभी माननीय सदस्यगण सदन की कार्यवाही में बाधा न खड़ी करें। नियम और परिपाटी यह नहीं है। सब अपना-अपना आसन ग्रहण कीजिए। किसी की भी कोई बात प्रोसीडिंग्स में नहीं जा रही है इसलिए अनावश्यक परेशान होने की कोई आवश्यकता नहीं है। सब अपना-अपना आसन ग्रहण करें।

...(व्यवधान). **

*Expunged as ordered by the Chair.

**Not Recorded.

...(व्यवधान)

सभापति महोदय : ठीक है। कृपा करके आसन पर जाइए।

...(व्यवधान)

सभापति महोदय : श्रीमती रेणुका चौधरी जी, कृपा करके अपनी सीट पर जाएं।

...(व्यवधान)

सभापति महोदय : आप लोग अपनी सीट पर जाइए।

…(व्यवधान)

20.38 hrs. (Mr. Deputy speaker in the Chair)

उपाध्यक्ष महोदय : शान्त रहिए।

…(व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Order, please.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: I had a bit of discussion with our leaders here. We have to conclude this debate by 10.30 p.m. latest today and not tomorrow. Tomorrow is 1st May, which is Labours Day.

We have also discussed that whatever has gone on record which is irrelevant, which is not conducive to remain on record, will be reviewed and expunged.

Now, Shri George Fernandes to continue.

… (*Interruptions*)

… (व्यवधान)

श्री प्रभुनाथ सिंह : उपाध्यक्ष महोदय, अभी आपने इनको बोलने के लिए बुलाया, तो ये फिर व्य वधान कर रहे हैं।

उपाध्यक्ष महोदय : प्रभुनाथ जी, आप बैठें।

SHRI SHIVRAJ V. PATIL : Mr. Deputy-Speaker Sir, we will abide by your ruling. Anything which is not relevant to the debate, anything which has been alleged against us should not go on record, if you think that it cannot go on record.

The second point that I would humbly like to submit is that this debate relates to Gujarat. This debate does not relate to many other things. If

references are made to other things – of course, references will be made to some other things also – this debate will become infructuous and pointless. Therefore, may I request that the debate should relate to only Gujarat and not to the past history?… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: We have to finish the debate by 10.30 p.m.

श्री जार्ज फर्नांडीज : उपाध्यक्ष जी, मैं अपनी बातों को शुरू करने से पहले दो बातें कहना चाहता हूं। पहली बात यह है कि मैं इस सदन में आपके साथ आया था। हम दोनों 1967 में यहां आए थे। तब से लेकर आज तक अनेकों वाद-विवाद इस सदन में हुए हैं। लम्बे वाद-विवाद भी हुए हैं, सदन स्थगित भी हुआ है, लोग निकलकर चले गए हैं, लेकिन आज जिस प्रकार का माहौल बना है, मैंने अपने जीवन में ऐसा नहीं देखा है। मुझे विश्वास है कि आपने भी नहीं देखा होगा।... (व्यवधान) अगर हम बोल नहीं पाएंगे, अपने मन की पीड़ा व्यक्त नहीं कर पाएंगे तो सदन की गरिमा को कौन बनाए रखेगा...(व्यवधान) सदन की गरिमा को बनाए रखना सभी सदस्यों का काम है। अगर कुछ लोग ऐसा व्यवहार करेंगे तो हम कहां जाएंगे, कौन हमें इन्साफ देगा, यह सदन कैसे चलेगा ? दूसरी बात मुझे यह कहनी है कि आपने अभी जैसा आदेश दिया कि केवल इस बहस से सम्बन्धित चीजें ही कार्यवाही में रहेंगी और कोई चीज नहीं रहेगी, वे निकाल दी जाएंगी। मैं उसका अर्थ नहीं समझा, यानी कौन सी चीजें इस बहस से सम्बन्धित हैं और कौन सी नहीं। आज हमारे देश में इस प्रकार की स्थित है, जो बहस हो रही है... (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : आप रनिंग कमेंट्स बंद करें।

श्री जे.एस. बराड़ : ये हम सबको पढ़ा रहे हैं।

उपाध्यक्ष महोदय : मैंने सिर्फ आपके लिए नहीं, पूरे सदन के लिए कहा है।

श्री जार्ज फर्नांडीज : मैं यह बात कह रहा था कि सदन के अनेक माननीय सदस्यों ने अपनी बात को कहा। आमतौर पर अनेकों ने यह भी पूछा कि गुजरात में क्या हो रहा है। मैं यह कह रहा था कि गुजरात में वही हो रहा है, जो पिछले 54 साल से इस देश में होता रहा है, कोई नई चीज नहीं हो रही है। इन 54 सालों में से 46 साल कांग्रेस पार्टी का राज इस देश में रहा है। तब न ही किसी प्रधान मंत्री को हटाने के बारे में कहा गया, न ही किसी मुख्य मंत्री को हटाने के लिए कहा गया।

मगर इस देश ने पिछले 54 सालों में यह अनुभव किया और अगर यह बात किसी को परेशान करती हो तो मेरे पास उसके लिए दवाई नहीं है। ...(व्यवधान) सैयद शहाबुद्दीन जी हमारे मित्र हैं और आपके भी मित्र हैं और वह इस सदन के भी सांसद रहे हैं। उन्होंने एक किताब लिखी है :

'Communal Riots in Post-Independence India' edited by Shri Azghar Ali Engineer. इसका पहला एडीशन 1984 का है और दूसरा 1991 का है। एक अध्याय इस किताब में लिखा है और 1984 में लिखा हुआ है। वह यह कहते हैं :

> "The Muslim community today suffers from a complex arising out of the cumulative impact of real, exaggerated and imaginary grievances. Frustration arises out of this inability to obtain a due share of the fruits of development, equitable access to Government employment, higher education, bank credit, foreign trade, licences, industrial licences, etc. It describes this to persistent communal prejudice and a pattern of discrimination."

... (व्यवधान) मैंने कहा कि जो हम देख रहे हैं, यह वही है जो 54 सालों से चलता आया है। अगर सैयद शहाबुद्दीन जो बात बता रहे हैं और इस किताब में अनेक लोगों ने इन चीजों का जिक्र किया तथा और भी कई चीजें हैं तो किसने उनको रोजगार देने से रोक दिया? ... (व्यवधान) आज़ादी 1947 को मिली और उसके बाद के 46 साल बीच में कुछ समय छोड़कर इनका राज चला तो जो मुसलमानों को रोजगार मिलना चाहिए था, जो उनको मान-सम्मान देना चाहिए, किसने उनको मिलने से रोक दिया? ... (व्यवधान) सरकार इनकी थी, प्रधान मंत्री इनके थे और केवल इनके नहीं, परिवार के ही होते रहे हैं। ...(व्यवधान) इसलिए समस्याओं के निदान की बात जो सदन के जरिए करना चाहते हैं, ...(व्यवधान) यह प्रश्न हम लोगों को सदन के सामने रखना होगा।... (व्यवधान) जो सदन के सामने नहीं रखना चाहता, इसका अभिप्राय यह है कि आज जो स्थिति है, उस स्थिति में वह सुधार नहीं चाहता। ...(व्यवधान) मुसलमान की समस्या रोजगार की समस्या है, उसकी समस्या मान-सम्मान की समस्या है। किसने उसको रोजगार मिलने से रोका ? ...(व्यवधान) सैकुलर फैबरिक की बात हो गई।... (व्यवधान) सैकुलरिज्म को बनाये रखेंगे, उसकी बात हो गई। ...(व्यवधान) मैंने कांग्रेस के सैकुलरिज्म को खूब देखा है।... (व्यवधान) क्या हमने नहीं देखा कि मिजोरम में ईसाई सरकार बनाने के लिए जो किया गया, वह सैकुलरिज्म ही था कि हमारे हाथ में सरकार दे दो, ईसाई राज बनाएंगे और तुम्हें कहां-कहां पहुंचा देंगे। क्या यह कांग्रेस का घोाणा-पत्र नहीं था ?...(व्यवधान)

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI : Let Shri George Fernandes say as to when did we say that we will implement *Isai Raj*.... (*Interruptions*) Let him quote from the manifesto. I challenge him to quote our manifesto..... (*Interruptions*) He cannot speak out like a demagogue and bully the whole thing.

श्री जार्ज फर्नान्डीज़ : उपाध्यक्ष महोदय, इनका सैक्युलरिज्म 1984 में कहां गया था।....(व्यवधान) कहां हैं सैक्युलरिज्म और किस क्षेत्र में इन्होंने सैक्युलरिज्म दिखाया है। मैं आज से नहीं, बार-बार इस देश को कह चुका हूं, बंगलादेश के लिए जब लड़ाई हुई थी, तब से लोगों को कह रहा हूं कि कैसे गृह मंत्रालय ने सारे देश में, हर स्तर पर, पब्लिक सैक्टर अंडरटेकिंग्स में, प्राइवेट सैक्टर अंडरटेकिंग्स में पत्र गए कि मुसलमानों को मुख्य जगहों पर नहीं रखना है।

... (व्यवधान) क्या यह नहीं हुआ था? खूब सैक्युलरिज्म चलाया। हम लोगों ने उस समय कहा था कि यह हाथ बीज बोने वाला है। इस बीज बोने वाले हाथ को काट दो। ... (व्यवधान) उसको खत्म करने में कामयाब होंगे। अगर यह बीच नहीं बोया जाएगा, तो फसल नहीं आएगी। फसल नहीं आई है, तो फिर समस्या कहां है। यह इनका व्यवहार है। इन लोगों को सुनना नही है, क्योंकि इन लोगों को कोई मतलब नहीं रहा है।

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri George Fernandes, are you yielding to Shri Saleem I. Shervani?

श्री जार्ज फर्नान्डीज़ : सलीम भाई, आज मुझे माफ कर दो।

महोदय, कुमारी उमा भारती जी ने जो बातें कही थीं, उनकी एक बात पर टिप्पणी करना चाहता हूं। उन्होंने कहा कि जब देश का बंटवारा हुआ, तो उस समय अनेक मुसलमानों ने यहां पर रहना इसलिए पसन्द किया कि उनको हिन्दुओं पर ज्यादा विश्वास था और पाकिस्तान की तरफ नहीं था। यह बात उन्होंने यहां पर कही। लेकिन मैं इसमें एक संशोधन करना चाहता हूं और वह संशोधन यह है कि उस समय जिनकी राट्रभक्ति स्पट थी, जिन लोगों ने किसी भी प्रकार से राट्र को मजहब के आधार पर देखना नहीं चाहा, सारे देश का जो मुसलमान समाज था, वह न केवल देश के साथ रहा, बल्कि देश की आजादी के आन्दोलन में उनका योगदान किसी से कम नहीं था। यह बात हम लोगों को स्वीकार करनी चाहिए। मैं महापुरुों के नाम नहीं लेना चाहूंगा, क्योंकि समय काफी हो गया है और अब रात के नौ बज रहे हैं। मैं सदन का ज्यादा समय नहीं लेना चाहता हूं, लेकिन मैं यह जरूर बताना चाहता हूं कि खान अब्दुल गफ्फार खां और उनके बड़े भाई डा. खां हों तथा अबुल कलाम आजाद हों या किदवई हों और ऐसे अनेक लोग... (व्यवधान) हां, इतिहास को सुनना जरूरी है। इतिहास व्यक्ति का नहीं होता है,.देश का इतिहास होता है। यहां पर देश को कैपसूल में डूबो देने का प्रयास हुआ था,, लेकिन हमने उसको बाहर निकलवाया। इसलिए इस बात को हमेशा ख्याल में रखना होगा कि इस देश में जो भी पैदा हुआ है, इस देश के साथ अपनी राट्रभक्ति लेकर वह रहा है। इस बात में हम लोगों को कहीं पर भी सन्देह करने की गुंजाइश नहीं है। यह बात सही है, जैसा कि अनेक सदस्यों ने कहा है कि दुनिया में हमारी छवि गिरी है। लेकिन छवि हम लोगों को पहली बार नहीं गिरी है। दिल्ली में जो उस समय हुआ था, तब हमारी छवि बहुत ऊंची गई थी।

जब सिखों का कत्लेआम हो रहा था, क्या तब हमारी छवि बहुत ऊपर गई थी। 1996 में उसी गुजरात में, जिस गुजरात की हम लोग यहां चर्चा कर रहे हैं, वहां जब एक महीने सम्पूर्ण कर्फ्यू रहा, क्या तब हम लोगों की छवि दुनिया में बहुत ऊंची गई थी। ...(व्यवधान) इसलिए छवि के बारे में हम लोगों को यहां पर परेशान नहीं होना चाहिए। ...(व्यवधान) ये लोग जिस तरह देश की छवि बढ़ा रहे हैं, देश की खूब छवि बढ़ा रहे हैं। ... (व्यवधान) ये किस छवि की बात कर रहे हैं।... (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय, मुझे बहुत अफसोस है, अगर यह संकल्प कांग्रेस पार्टी का है कि हमें बोलने नहीं देना है तो हम इस सदन में सुबह होने तक खड़े रहने के लिए तैयार हैं, लेकिन उसके पहले प्रधानमंत्री जी को बोलना चाहिए। मगर हम इस बात को नहीं चलने देंगे, हम इसे बहुत स्पट कहना चाहते हैं। सदन के साथ जितना आपका रिश्ता रहा है, उतना ही मेरा रिश्ता है। ... (व्यवधान) लेकिन जिनका रिश्ता है वे इस तरह से यहां व्यवहार नहीं करें, जो यहां पर चल रहा है। ... (व्यवधान) जो भी यहां इस तरह से करें, उनके बारे में प्रश्न पूछना ही होगा। ...(व्यवधान) हमने क्या-क्या किया था, उसे दुनिया जानती है, आप क्यों परेशान होते हैं। ये सब लोग हमें बाहर बोलते हैं कि हम क्या करें, हमें अंदर हल्ला करना ही पड़ता है। यहां हल्ला करते रहते हैं और बाहर हमें बोलते हैं कि इसके बारे में परवाह मत करो, दरअसल यही होता है। इनके कहने से चिल्लाओ, लेकिन कुछ तो सीमाएं रखो। ... (व्यवधान) हम तैयार हैं, इस सदन में हम कितनी ही लड़ाइयां लड़े हैं, लेकिन उन लड़ाइयों में बातें होती थीं, बोलने से रोका नहीं जाता था। आप ठीक चिल्ला रहे हैं, आपको भी मालूम है। बूटा सिंह जी, संतोा जी, आप सब जानते हैं, हम लोग इस सदन में खूब लड़े हैं, लेकिन बातें करने पर रोक लगा कर नहीं, बात करके देखा जाए। अगर इतिहास से आप लोगों को मतलब ही नहीं है तो बात अलग है, वरना यहां पर लाइब्रेरी है। ...(व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : आप तर्क देकर ही बोलिए, आप इधर-उधर क्यों जाएं। ये तर्क नहीं दे रहे हैं तो क्या आप भी नहीं देंगे। आप तर्क दीजिए। ...(व्यवधान)

श्री जार्ज फर्नान्डीज़ : उपाध्यक्ष महोदय, मैं ज्यादा समय न लेते हुए दो-तीन बातें कह कर समाप्त करूंगा। जब गुजरात में यह परेशानी निर्मित हो गई, तब सेना को वहां पर बुलाया गया और वहां सेना को भेजने में बहुत देरी हो गई, सेना के इस्तेमाल में बहुत देरी हो गई। इसका देश भर में खूब प्रचार हुआ। ...(व्यवधान) मैं आपको बताना चाहता हूं, क्योंकि कई लोगों का एक मानस बना है, सेना के मनोबल को तोड़ने का. मैं जिम्मेदारी के साथ इस बात को कह रहा हूं, क्योंकि करगिल की लड़ाई के समय भी हमने इस बात को देखा था और जिस भी मकसद से इन लोगों ने कहा हो, हो सकता है कि मुख्य मंत्री को, सरकार को, रक्षा मंत्रालय या रक्षा मंत्री को बदनाम करने के लिए वहां हो, वहां पर सेना समय पर नहीं पहुंची, यह बात बार-बार कही गई।

21.00 hrs.

28 फरवरी की शाम को 6 बजे हमें सूचना मिली और हम देखते हैं कि हमारे पास न बड़ोदरा में, न अहमदाबाद में, न किसी और केन्द्र में हमारी सेना तैनात है। सेना हमारी तैनात है रन ऑफ कच्छ में जहां हम खतरा महसूस करते हैं।

श्री मधुसूदन मिस्त्री : किसलिए तैनात है?

श्री जार्ज फर्नान्डीज़ : अगर यह भी आपको मालूम नहीं है तो आप यहां बैठने के काबिल नहीं हैं। ...(व्यवधान)

श्री अनंत गंगाराम गीते : इनको देश की सुरक्षा की भी परवाह नहीं है।... (व्यवधान)

श्री जार्ज फर्नान्डीज : उपाध्यक्ष जी, हमें सेना सेंटर से निकालनी पड़ी। मैं सेंटर का नाम नहीं बताऊंगा, जहां वह दुश्मन की सेना का सामना करने के लिए तैयार खड़ी थी। जैसे ही एयर-फोर्स के जहाज से उसको निकालने का इंतजाम हो गया तो हम रात को 12 बजे निकले और एक बजे रात को सेना का स्वागत करने के लिए पहुंच गये। सुबह तीन बजे तक सेना आती रही। सुबह पूरा इंतजाम मुख्यमंत्री के साथ बैठकर किया कि मजिस्ट्रेटों को किस जगह पर ड्यूटी पर लगाया जाए, सड़क दिखाने वालों को कैसे जगाया जाए। यह सब विचार-विमर्श मुख्यमंत्री के साथ किया और सुबह 11 बजे सेना उतरी थी। कभी इस देश में पहले ऐसा नहीं हुआ था कि सुबह 6 बजे हमें सूचना मिली हो और हम सुबह 11 बजे सेना को तैनात कर दें।... (व्यवधान) इसी दिल्ली शहर में मैं आपको 1984 की याद दिलाऊं। इस शहर में लोग रोते रहे, चिल्लाते रहे कि सेना को बुलाओ लेकिन सेना नहीं बुलाई गयी, जबकि सेना दिल्ली में ही थी।

श्री पवन कुमार बंसल : उस बात की यहां क्यों याद दिलाते हो।

श्री जार्ज फर्नान्डीज़ : उसकी सूचना देना जरुरी है।

श्री श्रीप्रकाश जायसवाल (कानपुर) : आप यह क्यों भूल जाते हो कि सन 1984 में माननीया इंदिरा जी ने सीने में गोली खाई थी और वे इस देश के लिए शहीद हुई थीं।

श्री जार्ज फर्नान्डीज़ : हमारे सामने अभी-अभी एक समस्या आई थी... (व्यवधान) उपाध्यक्ष जी, आज दोपहर को माननीय प्रधान मंत्री जी के पास अहमदाबाद से एक फैक्स आया था Nazirbagh Dilshahi Bagh, Ahmedabad, the residence of Sajjada Nasheem Khandhan Aliya Chisti of the world renown sufi saint, Khwaja Moinuddin Chisti of Ajmer. His disciples are spread all across the world. People of

different religions have great faith in this saint. In Nazirbagh, there is a shrine of sufi saint, a big mosque of great architectural importance. Followers from all over the world are contacting us regarding the safety of this holy place.

> " We have learnt that news has appeared in *Gujarat Samachar* and *Gujarat Today*, both dated April 28, 2002 that an attempt was made yesterday to damage the Shahi Mosque, the shrine and to burn people alive. If any such attempt is made again, it is obvious that the feelings of millions of followers would be greatly hurt. We feel it is the Government of India’s direct responsibility to safeguard this holy place."

This fax had reached the Prime Minister and from the Prime Minister’s Office it came to my possession. At noon today we have made all the arrangements to protect this holy place. It was sought to be attacked not once, but it was sought to be attacked three times. The police, the paramilitary forces and then the Army in turn repulsed all the attempts on this mosque and now we have kept a permanent paramilitary watch there along with an Army unit which will keep patrolling that area. So, I want to reassure everybody, because this message would have gone to a whole lot of people, that the mosque and the entire facility is safe. It will remain safe and nobody will be allowed to harm this monument.

उपाध्यक्ष जी, मैं अपनी बात खत्म करने से पहले दो बातें आपके सामने और रखना चाहूंगा। पहली बात तो यह है कि हमारे मित्र और टीकाकार श्री सोमनाथ बाबू ने हमारी शान्ति यात्रा के बारे में सही बातें कहीं। यह शान्ति यात्रा हमारी पार्टी ने नहीं की थी।

SHRI VAIKO : He called it a *tamasha*.

श्री जार्ज फर्नान्डीज़ : इसकी तैयारी वहां के नागरिक लोग स्थिति में सुधार लाने के लिये करना चाहते थे। इसमें पहल चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष श्री कल्याण शाह ने की। उनसे मेरी पहली मुलाकात हुई। मैं उनसे पहले कभी नहीं मिला था परन्तु आप उन्हें जानते हैं। इस शान्ति यात्रा में शामिल होने वाले लोगों की संख्या 54 रही। इसमें हिन्दू सम्प्रदाय के नेता या सदस्य थे, दस मुसलमान थे। यह चार दिन में तैयारी का कार्यक्रम हुआ और अच्छा कार्यक्रम रहा। कुछ लोगों ने इसका मजाक किया, कई लोगों ने इसे तमाशा कहा और कई लोगों ने इसे जोक कहा। इस बारे

में कई किस्म की बातें कही गईं। मैं एक बात यह भी बता दूं कि इसके लिये तैयारी समिति के अध्यक्ष हमारे आग्रह पर महानगर के मेयर बने। उनकी अध्यक्षता में यह मीटिंग चलाई। वे कांग्रेस पार्टी के थे। सभी से अपील किया कि इस यात्रा में सब लोग शामिल हों। उसके लिये कोई लिखित रूप से नहीं दिया गया। केवल सार्वजनिक अपील की गई थी। बड़ी संख्या में लोग आये थे। कुछ लोगों का पार्टिसिपेशन था जिसके लिये आपको चिन्ता है। आपने कहा कि उसमें पुलिस, मिलिट्री वाले लोग थे। नहीं, ऐसा नहीं था। उसमें स्वामी नारायँण सैक्ट के अध्यक्ष, जैन समाज के तीन स्वामी रहे, 20 मौलवी शिया और सुन्नी सम्प्रदाय से रहे, ज़ोराट्रीयन के प्रीस्ट रहे, राधा स्वामी सैक्ट के सदस्य, गुरुद्वारा के मुखिया, वैणव धर्म के लीडर रहे और वैणव टैम्पल के मुखिया उसमें रहे।

कांग्रेस के मेयर उसमें रहे। कांग्रेस के एम.एल.ए. फारूख शेख, नरहरि अमीन, सिद्धार्थ पटेल - ये लोग उसमें हाजिर रहे। कांग्रेस की भूतपूर्व मंत्री सुश्री उर्मिला बेन पटेल उसमें हाजिर रहीं। जनलोक शक्ति, श्री रामविलास पासवान जिसके अध्यक्ष हैं, उसके कई सदस्य उसमें शामिल हुए। हमारे मित्र देवेगौड़ा जी यहां मौजूद हैं। उनके जनता दल (सेक्युलर) प्रदेश के अध्यक्ष और लोक शक्ति के प्रदेश अध्यक्ष भी उसमें अपने सदस्यों को लेकर शामिल हुए। बी.एस.पी. के नेता उसमें हाजिर रहे। समाजवादी पार्टी के एक्स. जनरल सैक्रेटरी श्री हंसमुख ठक्कर उसमें हाजिर रहे। गुजरात कांग्रेस के जनरल सैक्रेटरी छबील दास मेहता उसमें शामिल हुए। ...(व्यवधान) अगर मेरी गलती हुई हो तो मुझे क्षमा करियेगा। कुंदन लाल ढोलकिया जो गांधीयन हैं, एक्स. स्पीकर हैं, वह उसमें हाजिर रहे। मनोहर लाल शुक्ला, जिनकी उम्र 90 साल हैं और जो गांधीयन हैं, उन्होंने पूरे तीन किलोमीटर उसमें चलने का प्रयास किया। गुजरात विद्यापीठ के डीन उसमें शामिल हुए। एक्स.वाइस चांसलर, भावनगर यूनिवर्सिटी उसमें शामिल हुए। श्रेनिक लाल भाई उसमें शामिल हुए। मौलवी उस्मान गनी बापू भी उसमें मौजूद रहे। सुलेमान संगार, हैड ऑफ दि ऑल मस्जिद कमेटी ऑफ गुजरात उसमें हाजिर रहे। खोराकीवाला, चेयरमैन अकबर अली उसमें शामिल हुए। बोरा सैक्ट के सैदना ने वहां अपना एक प्रतिनिधि भेजा, जिसने वहां बहुत अच्छा भााण किया। अन्य पार्टियों के राजनीतिक दलों के लोग भी रहे। एन.सी.सी. के सौ कैडेट भी वहां रहे। उसी दिन एन.सी.सी. के कैडेट्स ने चार अन्य शहरों में अपना कार्यक्रम चलाया और लोगों को साथ लाने का प्रयास किया। यह कोई नौटंकी नहीं थी जैसा कई लोगों ने कहा, यह कोई नाटक नहीं था, यह कोई तमाशा नहीं था ... (व्यवधान)

श्री सोमनाथ चटर्जी : मुख्य मंत्री का नाम नहीं लिया।...(व्यवधान)

श्री कमलनाथ (छिन्दवाड़ा) : आप जो बात कह रहे हैं, वह पूरी तरह से सत्य नहीं है। जिन कांग्रेस सदस्यों का आप नाम ले रहे हैं, वे वहां पांच मिनट के लिए गये और जब उन्होंने देखा कि रात को दंगा करने वाले दिन में पीस मार्च कर रहे हैं तो वे वहां से हट गये। ... (व्यवधान)

श्री मधुसूदन मिस्त्री : आपने मुख्य मंत्री का नाम नहीं लिया... (व्यवधान)

श्री जॉर्ज फर्नांडीज : उपाध्यक्ष जी, अलग-अलग लोगों का अलग-अलग नजरिया है। सबकी सोच अलग-अलग होगी। अखबारों में छपा कि फ्यू हंड्रैड पार्टिसिपेटिड। टेलीविजन में दिखाया गया कि कितने हजार लोग थे, लेकिन एक अखबार की हैडलाइन थी - फ्यू हंड्रैड पार्टिसिपेटिड। एक अखबार ने कहा कि पीस रैली मार्चेज ओवर डैडबॉडीज। इस मार्च को लेकर ये हैडलाइंस थीं। ऑल आर्मी नो पीप्ल - यह एक और अखबार की हैडलाइन थीं। अगर आप टेलीविजन की रील लाकर देखें तो आप पायेंगे कि उसमें आर्मी नहीं कैडेट्स थे, जिनकी राट्रभक्ति इतनी श्रेठ है, जिसके बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता।... (व्यवधान) उन लोगों ने पहले दिन से उन इलाकों में जो काम किया, उन्हें जितनी शाबासी दें, वह कम है। एक ने कहा -

"Modi walked side-by-side Fernandes." Shri Modi did not walk side-by-side with me. I was not even aware that 'Modi' was in the procession. चूंकि वह जुलूस में सबसे पीछे चल रहे थे, यह हंसने लायक बात नहीं है। ...(व्यवधान) जब जुलूस का मंच पर आने का वक्त हो गया तब हम लोग उनसे मिले थे और वे मंच पर आये थे। उन्होंने वहां बहुत ही अच्छा भााण दिया था। ... (व्यवधान) यही हैं समस्याओं को निपटाने वाले, ये समस्याओं को निपटाने की बात कर रहे हैं।

इन लोगों के हाथों से क्या समस्याएं दूर होंगी? पिछले चार दशकों में इनसे कुछ नहीं हुआ। एक बात लिखी कि 'Peace march does not douse fire.' और अलग-अलग लोगों ने अपनी-अपनी बातें कहीं। हमें उनके बारे में कुछ नहीं कहना है। लेकिन इतना ही कहना है कि यह जो नेशनल ह्यूमन राइट्स कमीशन की रिपोर्ट है, उसमें उन्होंने कहा है कि :

> "The Commission is of the view that there is need for all concerned to reflect further on possible guidelines that the media should adopt, on a 'self-policing' basis, to govern its conduct in volatile situations, including those of inter-communal violence, with a view to ensuring that passions are not inflamed and further violence perpetrated. It has to be noted that the right under Article 19(1)(a) is subject to reasonable restrictions under Article 19(2) of the Constitution. "

It further says:

> "Provocative statements made by persons to the electronic or print media should be examined and acted upon, and the burden of proof shifted to such persons to explain or contradict their statements. "

तो मुझे खुशी है कि इस नेशनल कमीशन ऑन ह्यूमन राइट्स ने भी इसमें दखल दिया है और हम आशा करते हैं कि ऐसी कोई भी घटनाएं नहीं होंगी जिससे लोगों को उत्तेजित करके उनको लड़ाने का जो प्रयास चला है, फूट डालने का जो काम चला है, हिन्दू-मुस्लिम जो बच्चे थे, उनके बारे में अखबरों में गलत बातें जो छापी गईं, वह न हो। … (व्यवधान) एक अखबार एशियन एज में छपा कि :

> "Despite efforts by the Muslim Congress leaders to persuade the children not to go to the examination hall, they went to the examination hall."

यह बात उसमें छपी। … (*Interruptions*)

SHRI KAMAL NATH : There was an all-party meeting. … (*Interruptions*) I deny this. This is absolutely false. … (*Interruptions*)

श्री जार्ज फर्नान्डीज़ : इसलिए मेरी प्रार्थना है कि जहां लोगों को मिलाना है, वहां उनको मिलाने के काम में सभी लोग लगें और ऐसी परिस्थिति जो है, मेरी मान्यता है कि उससे हम तभी निपट सकते हैं अगर गलत प्रचार न हो, अगर सच्चाई लोगों के सामने आए। 95 प्रतिशत अहमदाबाद अपने काम में लगा है, 5 प्रतिशत गुंडागर्दी वाला है, उसको रोकना आवश्यक है। सारे गुजरात में 90 प्रतिशत गुजरात में किसी प्रकार की हरकतें नहीं है, कुछ ही जगहों पर हर हरकतें हैं और इन्हें काबू में लाना हमारा काम है और उस काम में सबका सहयोग मिले, इन्हीं शब्दों के साथ मैं इस प्रस्ताव का विरोध करता हूँ।

SHRI H.D. DEVE GOWDA : Mr. Deputy-Speaker, Sir, after I heard the speech of the hon. Defence Minister, I remember the days of Shri Morarji Desai. … (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Order please. Any Member who wants to go out may go out quietly.

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : Mr. Deputy-Speaker, Sir, please put the House to order.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Hon. Members who want to go out may quietly go out.

SHRI H.D. DEVE GOWDA : I am unable to compete with Shri George Fernandes, the Defence Minister and probably, the would be Prime Minister.

I was sitting in the Speaker's gallery. When he made a speech, Shri Morarji Desai had gone. I do not want to elaborate beyond that. Shri Chandra Shekhar, then President of the Party, was in this House. I do not want to hurt the feeling of anybody else.

We raised this issue under Rule 184 not to destabilise the Government. Let me be very plain and frank. There is no question of destabilising this Government. I signed this Motion not with that intention.

I have fought both the Congress and the BJP and I came here. There is no mercy of anybody. If at all I have got the mercy, it is the mercy of 25 lakh people, voters of my constituency. It is one of the biggest constituencies in the country. They sent me after a lapse of two-and-a-half years.

Mr. Deputy-Speaker, Sir, our Prime Minister is the senior-most parliamentarian. We have got high regards for him. Let me honestly speak on this issue.

Mr. Prime Minister, when you went to Gujarat, after seeing all the things, with agony and anguish, you expressed your anger about the State administration. You have visited only two relief camps—one is a Hindu relief camp and another is a Muslim relief camp. I do not want to quote all those things. But what happened? After you preached *rajdharma* , is there any improvement? Is there any normalcy in Gujarat? That is all what we want to know.

I do not want to quote all those speeches where the hon. Prime Minister tried to clarify some of the points. I believed that Shri Narendra Modi would follow *rajdharma* you have preached. You have described what is *rajdharma*. Has he followed it? Before you go to Gujarat, the Chief Minister had come to Delhi on your direction to see you. He met both you and the Home Minister. After hearing the whole events, you advised him to go back to Gujarat and win the confidence of the people. This is the advice you have given to the Chief Minister. Has he followed your advice? Has he followed your *rajdharma*? We want to know this. He has not visited even a single relief camp. I did not go with the official delegation led by Shri Pramod Mahajan, your Cabinet colleague. I purposely sent my Party colleague, Shri C.M. Ibrahim. I went there on 11th and 12 th. I was there for two days. I visited 13 camps. I do not want to narrate the sorry state of affairs.

Shri George Fernandes, the hon. Defence Minister, has quoted a portion of the Human Rights Commission's Report. I do not want to take up the Human Rights Commission's Report and quote the several other findings of the Human Rights Commission's Report. I do not want to waste the time of the House.

I do not want to take the name of Shri Narendra Modi. Has he made any sincere attempt? Your concern is whether to keep him or to remove him. As long as you enjoy the majority in this House, we cannot put our pressure on you. We can only ask that with the same establishment or with the same leader, what steps you are going to take to improve the situation. What further step your goodself is going to take? We would ask that question.

Why should this happen? Why should any doubt arise in the mind of anybody about your moderation, your tolerance and your liberal outlook, which have been ingrained through your *tapasya* for 50 years? You used the word '*tapasya*' when all these people demanded your resignation on the Tehelka.com issue. You said: "I am not committed to oblige the Opposition. I have made *tapasya* for 50 years and I have become the Prime

Minister now." I may be very plain and frank here. People had then thought that you were one of the tallest leaders in India but today everybody doubts you. Why the doubt arises is a big question. When you went to Gujarat, you said something; when you came back from Cambodia and Singapore, you said something else. That is the crux of the problem. That is why the doubt has arisen.

I do not want to take up here the several instances to substantiate my argument on how this has happened. One of the senior-most Gandhians, Shri Chinibhai Vaid, who is eighty years old, wanted to meet you. When you visited Ahmedabad, he sought an appointment and your office gave him the permission; but when you actually went there, the local administration tried to avoid him. They said to him: "There is no permission from the PM. Your name is not on the list of visitors. So, please go away." If this had been an untruth and he had said this to me, I am not going to gain any political mileage by using what he said when I visited Gujarat. This is based on a letter that he had written to you with all the facts and figures and with agony. He has worked with Mahatma Gandhi and with Acharya Vinobha Bhave, who was his disciple. He clearly mentions how the hon. Prime Minister has been misled by the local administration and by the Vishwa Hindu Parishad leaders. The whole problem is the problem of secrecy. It is not because of your behaviour. You have got your own stature till this date. So, why have people started doubting you?

Nobody expected that Shri Atal Bihari Vajpayee was going to allow such things to happen. There is a startling interview given by 96-year old Chairman of the Gujarat unit of the Vishwa Hindu Parishad, Prof. Kashiram Shastri where he has said that the list of shops owned by Muslims in Ahmedabad was prepared on the morning of the 28th of February itself. Shri George Fernandes had sent his Army at 11 o'clock. He had worked the whole night. I have not made any allegation against him. I have never made any allegation. When the press people asked me about my reaction after I visited Gujarat, I gave an honest reaction. I said that I was not going to doubt the *bona fides* of the Prime Minister. It has been reported in the newspapers. But this was what the Vishwa Hindu

Parishad had done on the 28th morning. They had prepared the list and according to the list, Muslim shops, Muslim houses, Muslim hotels and Muslim industrial units have been demolished and destroyed. I do not want to read out the whole interview that has been given by the 96-year old Prof. Kashiram Shastri. He also says in the interview: "The VHP has formed a panel of 50 lawyers to help release the arrested people accused of rioting and looting. None of the lawyers would charge any fees because they believe in the RSS ideology."

How can we now rely on the stand, which you have taken to protect the *Rajdharma* when that *Rajdharma* is going to be followed by your nominee? He is an elected Chief Minister. According to the Constitution, he has got his own right to rule the State. Can we trust him? Can we trust the Administration?

Sir, let me quote:

> "No sooner had party President Jana Krishnamurthy completed his "taken as read" presidential address than Modi got up and said in his sombre, chaste Hindi: "Adhyakshji, I want to speak on Gujarat…. From the party's point of view, this is a grave issue. There is a need for a free and frank discussion. To enable this, I wish to place my resignation before this body. It is time we decided what direction the party and the country should take from this point onwards."

This is quoted in the *India Today.* I have to quote it because I have no other source. He has got RAW, Intelligence Bureau, etc. Some question was raised whether I am going to authenticate it or not. As an Opposition Leader for six years in a State Legislature – it is not a big House like this— I too functioned as the Leader of the Opposition. I tried to conduct myself to maintain the decency and the decorum of the Parliament or the State Legislature.

Sir, not only that I would like to just draw the attention of the hon. Prime Minister with what sadness your mind is. I can understand your feelings when you came from Singapore and Cambodia. When you attended the

National Executive meeting, the whole atmosphere was changed. The atmosphere was charred by the BJP and the other RSS Leaders, a Mother organisation. That is how the whole atmosphere has changed.

Sir, I have to quote some of the events:

> "Communal violence was seen for the first time in areas inhabited by tribal people, and this has been explained away as spontaneous looting by poor tribal people. However, the Sangh Parivar's hand in instigating Adivasis is clear. It has been mobilising support in *Adivasi* areas for the past one decade. More recently, it held a *Trishul* campaign to convert *Adivasis* to Hinduism by awarding each one of them a *trishul* and a picture of Hanuman at public meetings. The *Sangh Parivar* is now using its new converts as food soldiers. "

Sir, the last time when I raised the issue I asked why this country has to allow another wing of the RSS, Bajrang Dal, which are trained with swords, T*rishuls*, pistols, etc.? To defend whom? How many training camps are organised by them? What for?

Mr. Prime Minister, nobody is permanent. Today, we are in the Opposition. We have two Members in this House. My voice is feeble. In 1984, you were also two in this very same House. You adopted the *Mandir* issue at the Palampur Plenary Session. What for?

Is it not to capture the vote bank? The vote bank issue was raised by some of the

senior leaders in this very House from the other side. The *Ram Mandir* issue was adopted by BJP in 1989. Till then you were not concerned with *Mandir*. Everybody wants to do vote bank politics. But we do not belong to that group. We are facing the booths. There is no question of any iota of doubt in my argument.

Shri B.P. Singhal's outburst at the BJP Parliamentary Party meeting would never have been possible without the backing of a large section of the Party. Shri Singhal said: "The BJP should be ashamed of abandoning the *Ram Mandir* issue at Ayodhya. This is the real agony for you, for the whole nation." If you feel hurt, if you feel disgusted today about this type of atmosphere built up by your own organisation, not by others, not by this group, we are not concerned. We want you to complete the full term of five years. Why should we want to destabilise you? Just about two months back, I came here. Do you mean to say that I want to destabilise you and run away? If this is going to help your new agenda that has been preached by RSS, that has been preached by Bajrang Dal, that has been preached by the Vishva Hindu Parishad, then you must look for a fresh mandate. Your mandate is based on the National Agenda for Governance. It is in my hands. Everybody knows this. What is that National Agenda you have given, promising all these friends? You have assured that you are going to keep away the issues like the Common Civil Code, *Ram Mandir* and article 370. These are the issues where a lot of controversy is there. That is why you do not want to touch these issues. This is the assurance your goodself has given. What has happened to that? It is because you continuously started losing the election. After all, mine is a regional party, a small group. I am not bothered that it is a small group. But I do not want to depend either on you or on the Congress. I want to fight on my own, with my principle, with my commitment. If Shri George Fernandes was here, I wanted to tell at his face. On 9th April, 1997, some of the NDA friends – I do not want to take their names and hurt their feelings – approached me. They tried to persuade me by saying: "Why are you losing the opportunity? The Prime Minister's office is a big office and it is the first time that a farmer has got this opportunity. Why do you want to quit?" I said: " I do not want to be at the mercy of you friends. Today I will go to the Parliament, I will face the Parliament and then go to Rashtrapati Bhavan and hand over my resignation." I have never bothered about continuing in office with this type of humiliation. Please try to help us and guide us how you are going to revive the confidence between the two communities. Whatever you want from us, you tell us. We are prepared to co-operate. You are suffering so badly because of your own friends, your own parental organisation, your own other allied organisations – Bajrang

Dal and the Vishva Hindu Parishad. I can quote statements of several of your *Sangh Parivar* leaders, but I do not want to narrate all those things.

What do they want? It is said here : "The idea of India as a *Hindu Rashtra*". Who has said this? It is the same Shri M.G. Vaidya about *Hindu Rashtra*. If you want to establish the *Hindu Rashtra* with the very same principles, you go before the people and ask them whether this country needs a *Hindu Rashtra* or not. You have this Gujarat incident. All the opinion-makers have said that the BJP is going to sweep the election. My friend Shri Yerrannaidu has said in the morning that this is not the time for going in for elections; the time is not ripe; the atmosphere is so bad with more than two lakh people in the relief camps etc. He said it.

But in the whole of India there is no such problem except in Gujarat and in the State of your another partner, Haryana, something happened there also. It is said the *Bajrang Dal* is very strong and so they have done this. I do not want to create any differences between the Alliance partners. You continue for the next two-and-a-half years and enjoy the office and enjoy all the privileges. Then, a day will come when you will also realise what Shri Prakash Singh Badal has realised and what Shri Karunanidhi has realised. A day will come. There is no doubt. You wait for that time.

It is said that the "outfits such as *Bajrang Dal,* the VHP and the *Rashtriya Swayamsewak Sangh* have also grown in strength and they have demolished the mosque in Haryana". This was told by Shri Om Prakash Chautala, the Chief Minister of Haryana.

How many organisations are there today? You have the *Durga Bahini*. … (*Interruptions*) They are going to be trained because Shri George Fernandes is not capable enough to defend this country and its borders. He cannot. That is why all these organisations are most essential and they should be trained with *Trishuls*, *Bandooks* and *Lathis* to save this great nation, the mother India, or the *Matrubhoomi*. The *Matrubhoomi* concept is only from your side. We have got at least some patriotism about how to save our nation.

I would like to ask the hon. Prime Minister one thing. He told the entire Opposition one thing earlier. He said :

> "I would, however, request my Muslim friends to ponder as to what exactly is the reason that in 99.9 per cent of the cases, the riots originate with members of the Muslim community. If the country is to be saved from the tragedy of communalism, all parties must pledge to cleanse their minds of all communal virus."

He said this as a leader earlier. How should we cooperate with you? He said the parties must pledge to cleanse their minds. We are ready to cooperate. What cooperation do you want from us? Please tell us. There is no hesitation for me so far as this issue is concerned to create an atmosphere of bringing the trust and mutual understanding among both the communities. It has hurt us very badly. There is no need of any evidence for that. It is now totally damaged.

I would just like to tell you one thing. The few who have tried to go back to their homes in recent days have been forced to return to the relief camps. It is not an admission made by any Tom, Dick or Harry; it is an admission made by Shri K. Srinivas, the Collector of Ahmedabad, who admits that at least 5,000 Muslims who tried to leave the camps returned back because the conditions outside were not conducive. How to bring a conducive atmosphere? Please tell this House. We will accept that.

I tried to interact with those people who are living there in the relief camps as refugees. We used that word in our own country. Our own people are refugees. We felt so bad when we went to Ahmedabad. How are they going to create confidence? Sir, they have no source of living. Everything has been destroyed. The pamphlets which Shri Sharad Pawar has quoted are being printed not only by the *Combat*. Some people have taken objection to this particular magazine, that is, *Combat* saying that it is a communal organisation. All other magazines also, like *India Today* and *Frontline* have published the same : "How to teach a lesson to the minorities and to boycott the minorities and destroy them economically, this should be our approach." This is what is being told by the VHP leaders. Are they going to unite this country? With all sincerity, I am asking the Prime Minister

whether this organisation should be banned or this organisation should be encouraged. From where will the money for them, for these training camps come?

Shri Arun Shourie, I used to read your articles. You were there in Bangalore when Shri Advani came. We had a joint-function in Vidhan Soudha. We will discuss how disinvestment is going on a separate occasion. I do not want to deviate from Gujarat because I want to hear from the Prime Minister how he is going to create an atmosphere of conduciveness. Please tell us. When you are going to the extent of boycotting, can you not tell the *Vishwa Hindu Parishad* leaders, *RSS* leaders, *Bajrang Dal* leaders, who have gone so strong with their *trishuls.* Now a lot of money power is also there. I can understand how money power can also come. We also run an organisation. We are not new to all these things. From where does the money come for the training?

When you have banned SIMI, why can you not ban the Bajrang Dal who are responsible? I use these words. You have said in your speech that madness cannot be patriotic madness or something like that. Madness cannot be countered with madness and fire cannot be doused with fire. Water is needed to extinguish fire. Are they going to bring water to extinguish the fire which has caught up in Gujarat? Are they going to bring back those 58 people who have died on that black day when Sabarmati Express was burnt?

Are they going to bring them back by retaliating and killing more than two thousand people? According to one version or as per the Government's official report, about eight hundred people have been missing. However, according to the officers, that number is around two thousand. Some people say that number might have gone up to three thousand. I have discussed it with the officers, and I do not want to say anything that is false. We have taken the pledge in the name of God, and I believe that. I am a believer, and I do not want to say anything here that is false. I believe that. In the very same seat, when Shri Narasimha Rao was sitting, he said that they were not going to destabilise the Government for five years. Shri Chandra Shekhar was sitting here. Your own Alliance partners may destabilise the Government. When I spoke on the No-Confidence Motion

from the same place, I said: "If I continue for five years, it is well and good. Otherwise, I do not care whether I will remain for five days or five months. I want to discharge my duty and serve the nation to the best of my ability." You can take out those proceedings and go through it. I said: "I do not care whether I will remain for five days or five months. I want to serve my country to the best of my ability." This was the stand which I took. However, what is going on today? For the sake of continuing in office, you had to compromise with your ideology, your personal ideology, whereas you have been classified as one of the tallest leaders with a moderate, liberal outlook, a man of abundant patience, tolerance etc. All these adjectives were used and it may be because of your *tapasya*. For fifty years, so many people have come and gone, but we are not bothered about them.

Lastly, I do not want to prolong it any further. Please tell us about the steps that you are going to take. You have announced certain relief measures on that day when you went to Gujarat. How many people have been paid one lakh rupees? Shri Vaiko was giving the list. After hearing Shri Vaiko's speech, it looked as if the House does not require the Home Minister's speech because I was so happy that he was giving all the facts and figures. If you had supplied such type of materials to me, I would not have argued at all. One lakh rupees is the amount which is to be paid to the kith and kin of the persons who have died. How many people have been paid? Fifty thousand rupees is the amount to be paid to the owners of the houses which have been fully demolished, and twenty-five thousand rupees is the amount which is to be paid for the owners of the houses which have been partially damaged. How many houses have been identified as fully demolished or partially demolished? What is the value of the damage or the loss to the minority community? Has the State Government taken any steps in that direction to assess the quantum of loss? According to media, it is around Rs. 3,000 crore to Rs. 5,000 crore. According to some other estimate, it is about Rs. 10,000 crore. I do not want to depend on that figure. What exactly is the quantum of loss suffered by the minorities or even by Hindus in this whole episode, after the Godhra incident? How much money are you going to provide for this?

Last time, your goodself said that you would provide sufficient funds from the Prime Minister's Relief Fund. How much amount has your goodself already released? What exactly is the present position? So many announcements were made, but unfortunately, people who are in the relief camps are not in a position to go back to their villages because the majority community people are involved in this carnage or in these attacks. People belonging to the minority community are damn afraid to go back to their villages. Now, how do you create an atmosphere of mutual trust and confidence?

You please tell us as to what kind of a co-operation you want from us.

Sir, the second thing that I wanted to mention is that I had interacted with some of the children, in the age group of seven to nine years, who had lost their parents, their brothers and their sisters in this carnage. Where would they go?… (*Interruptions*) I do not want any clapping. I would sit down on time. I maintain certain decency and decorum in my life. Would the Government open residential schools for those children who lost their kith and kin in these riots?

Sir, Shri George Fernandes, in his marathon speech, attacked the Congress party saying that the Congress party, in its 45 years of rule, did not do anything for the minorities. The Congress party has paid the penalty for that. They have realised their mistakes. Even the Congress party has unconditionally expressed their regrets for the riots of 1984. Would the BJP express their regrets for what has now happened in Gujarat?

Sir, I was the Chief Minister of my State for 18 months. My friend Shri Jaffar Sharief is here and the hon. Home Minister also knows about the Hubli Idgah *maidan* incident. It was an issue created by the BJP. Every year, more than five thousand policemen, drawn from all the districts of the State, used to be deployed there to maintain security of the place. When I became the Chief Minister on the 11th of December, on 26th January the next year I made a Muslim leader to hoist the national flag in that place. Since that day there has not been a single instance of communal violence in that place… (*Interruptions*)

Sir, what does their national agenda say?

MR. DEPUTY-SPEAKER: Kindly conclude now.

… (*Interruptions*)

SHRI H.D.DEVE GOWDA : If you have printed it in your national agenda, then please follow it. I want to maintain parlimentary decency and decorum otherwise I would have torn this into pieces and thrown it away. Anyway, I would just like to make another point.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Please conclude now.

SHRI H.D.DEVE GOWDA : Sir, if you do not want me to speak hereafter, then I would keep quiet. It is a very important issue. One of the Cabinet Ministers in this Government, Shri George Fernandes said that the Congress had not given jobs to the people belonging to the Muslim minority. What has this Government given? Are you giving jobs to those who are training themselves with *trishuls* and are joining the *Bajrang Dal*?

Sir, during my time I had given four per cent reservations exclusively for the Muslims. The Hindus or even the other minority communities in the country did not have any objection to that. It was not only job reservations to the Muslims but I also opened residential schools for students belonging to the Muslim community. My friend Shri Jaffar Sharief, who is sitting by my side, would know about this. But I had to pay the penalty in the last elections because of some of the mistakes that were committed by some of my friends who are now resigning from the Cabinet of this Government. I must compliment Shri Ram Vilas Paswan for having resigned from the Cabinet. Others would also realise it today or tomorrow. However, I am not bothered as to how long they would continue with them.

Sir, we did whatever we promised whenever we had got the opportunity. I had given four per cent reservation in jobs exclusively for the Muslims. This was not part of the Mandal Commission recommendation where only some small benefits were proposed to be given to communities like the butchers and all. That is not the issue. I had given four per cent reservation in jobs to Muslims and also opened residential schools for the Muslim

students. These are some of the steps that I took as Chief Minister irrespective of the fact whether it would have fetched me political benefits or not. It is not the issue of vote bank. It is an issue that needs to be solved. We should not give them a step-motherly treatment. The question today is as to how we can bring them into the mainstream of our life. That is one part. Those who wanted to go to Pakistan had gone.

22.00 hrs.

Those who have remained on this soil then, truly belong to this country. They feel that this country is theirs too. Their patriotism cannot be questioned by anybody. Do these *Hindutva* preaching leaders want to take the responsibility of the 90 per cent of the Hindus in this country? Can they represent all the Hindus in the country? What moral right have they got to say that? … (*Interruptions*) I do not need any certificate from anybody. So far as my *Hindutva* is concerned, I am a born Hindu and I will die as a Hindu. That is not the issue. We looked to the minorities with all care. We never betrayed them. What the Congress has done, or you are going to do by mere speeches is not going to solve this problem.

The BJP agenda says: "We are committed to establishing civilised *sarvadharma samabhava*." That means, equal respect for all faiths. Do they want to do it within the ambit of the Constitution, or as preached by their RSS, VHP, and and Bajrang Dal. What is their meaning of equal respect for all faiths? I do not want to quote any more from this. Please categorically tell us how you are going to bring these two communities together. What are your plans? How much money are you going to provide for this task?

With their nominee heading the Government there, even if they construct golden houses instead of ordinary brick and mortar houses, those people will not go back. They are scared. I agree that some misguided youths of the Muslim community misbehaved. At Godhra, eighteen small children were burnt alive in that bogey. We have seen those pictures on the electronic media, we have read about them in the print media. When I went to a camp, I saw an 85 year-old lady with sword cuts on her body. When I enquired from her what happened to the other members of her family, she

was unable to speak. She said somebody came to her house and cut them into pieces. Her son was burnt alive. She is alone. She questioned, "Why allah has left me alone in this world?" There were marks of sword cuts across her chest. Her hand was cut into several pieces. I do not want to narrate further. I do not want take the time of House with all the information we have collected at all the 13 relief camps that we have visited. You may understand the circumstances. So, even if you give some relief measures, with the same person at the helm of affairs and with the same establishment they will not feel secure. When the District Collector asks says that they cannot go back to their native places, how can you trust the same person? You do it because of the compulsion by the parental organisation, or BJP or VHP and friends.

Mr. Prime Minister, rise up to the expectations of the people of this country. I will extend my sincere thanks to you, if you rise up to the occasion, and if you prove that you are a moderate and liberal Prime Minister. That is what I want to say.

कुमारी ममता बनर्जी (कलकत्ता दक्षिण) : सर, मुझे बहुत लम्बे इंतजार के बाद दो-चार बातें कहने का मौका मिला है। मैं आपकी आभारी हूं कि आपने मुझे बोलने का मौका दिया। सुबह से हम लोगों ने चर्चा सुनी है। हमारे देश के जो महत्वपूर्ण नेता है और बहुत सारी पोलिटीकल पार्टीज के नेताओं ने अपनी ओपीनियन दी है।

Sir, I am shocked to say that the peace message that should have been reflected from this House has not been reflected so far. If one defended one community, the other defended the other community. If we, the Members of this House, cannot defend the unity in diversity of our country in this House, how will we be sending the message to the people and to the whole world that we believe in unity in diversity?

Sir, instead of blaming the people of India, we, the politicians are to be held responsible for these communal riots, communal tensions and communal violence occurring in our country. We discuss so many things politically just to strengthen our vote banks but we cannot discuss the real and root problem of the people of this country!

What had happened in Gujarat is a heinous crime. We all condemn it. We are shocked to see the atrocities committed specially on women and children belonging to all communities including the minority community starting from Godhra to Ahemedabd and in various other parts of the country.

Sir, the message that I want to give is that I am proud to say that I am an Indian. It is least important that whether I am a Hindu or Muslim or Christian or other. I am an Indian first. I am a human being first. We all should feel like that. Every citizen of this country should feel proud that he is an Indian first.

Sir, we have to appreciate that the whole problem of this communalism lies in this country just because of the vote bank politics. After our country achieved Independence, what was the real problem? Pakistan became the Muslim country; Bengaladesh became the Muslim country. But fortunately, India became and remained a secular country. There was a galaxy of leaders, forefathers of the country including Ambedkar, Kriplani, Pandit Nehru, and others, and the Members of the Constituent Assembly who prepared our Constitution. In that Constitution, it is clearly mentioned that we firmly believe in secularism. But sometimes, there is a confusion created by many. They are interpreting the definition of secularism and communalism in their own way. We do not believe in the so-called secularism or communalism. What we believe, in the real sense, is that secularism means humanism. If there is no humanism, secularism cannot work… (*Interruptions*)…Please do not interrupt me… (*Interruptions*)… मैंने तो किसी को इंटरप्ट नहीं किया, सुबह से मैं सबको सुन रही हूँ तो आप लोग क्यों नहीं सुनेंगे? अगर नहीं सुनना है तो भी हमें जो कहना है कहेंगे। एक बात सोची है कि हमारे देश का इतिहास क्या कहता है। हमने सुबह से इतिहास सुना है। इतिहास का इंटरप्रेटेशन हो रहा है, लेकिन देश का इतिहास यही है कि महात्मा गांधी जी ने जब देश की आज़ादी के लिए लड़ाई लड़ी थी तो सीमांत गांधी जी ने उनका साथ दिया था - एक हिन्दू और एक मुसलमान थे। हिन्दू और मुसलमान हमारे देश में दो फूल की तरह हैं। चाहे हिन्दू हो, चाहे मुसलमान हो, चाहे सिख हो या ईसाई हो, इनको आपस में टकराकर हम काम नहीं कर सकते हैं। इनकी एकता देश की परंपरा है, यह देश की शक्ति है, एकता है, यह हमारे देश के लिए गौरव की बात है। मैं आडवाणी जी को बधाई देना चाहती हूँ कि आडवाणी जी ने सदन में जो बात कही।

When we represent the Government, the Chair means for all; it is not for any particular individual or any particular community. जब कोई मिनिस्ट्री में शपथ लेता है तो कहता है कि मैं उस शपथ के हिसाब से काम करूंगा। इस सरकार में ऐसे बहुत सारे मिनिस्टर हैं जो अच्छा काम करते हैं। यदि मेरे खिलाफ कोई है तो मैं उससे डरती नहीं हूं क्योंकि जो डरता है, वह मरता है और जो लड़ता है, वह बचता है। जिंदगी एक संघर्ा है। हमने आज दो मिनिस्टर की बातों को सुना। मै दुख के साथ कहना चाहती हूं कि यह बात ठीक नहीं है। हम कुर्सी में बैठकर यह नहीं कह सकते कि 'all the Muslims are bad'. How do we say like that? We are highlighting the Constitution. But when we say so, there is no value of the Constitution. Secularism means that it combines all the castes, the entire creed, all the religions, etc. That is why, I said so.

गांधी जी ने जब काम किया तब श्री सीमांत गांधी ने उनका साथ दिया। जब पंडित नेहरू जी ने काम किया तब मौलाना अबुल कलाम जी ने उनका साथ दिया। नेताजी सुभाा चन्द्र बोस जो देश के लिए लड़े थे, उनके राइट हैंड श्री शाहनवाज खां थे। सर बहादुर शाह जफर ने देश के लिए अपने दो लड़कों को कुर्बान कर दिया। जब सर बहादुर शाह जफर को बर्मा में बंदी बनाकर भेजा गया तब उनको पूरी दुनिया में दो गज जमीन भी मयस्सर नहीं हुई। यह बात सच है। हम लोग इस बात को मानते हैं। इसलिए मेरे कुछ सुझाव हैं। गुजरात स्टेट हमको महात्मा गांधी का दिया हुआ है। हर आदमी साबरमती आश्रम में जाता है। गांधी जी की जो धरती है, वह हिन्दुस्तान की है क्योंकि उन्होंने विश्व को रास्ता दिखाया, रोश्नी दिखाई, दिशा दी। गांधी जी के गुजरात में हम जाना चाहते हैं। गुजरात में एक नेचुरल केलामिटी, एक नेचुरल अर्थक्वेक हुआ। उसके बाद एक पोलिटिकल अर्थक्वेक हुआ। अगर कोई स्टेट गवर्नमैंट स्टेट स्पोंसर्ड करे चाहे गुजरात हो, बंगाल हो, बिहार हो, राजस्थान हो या कोई भी स्टेट हो, उनमें कभी भी इंसान को इंसानियत नहीं मिलती है। यहां पर श्री आडवाणी जी बैठे है, श्री मुरली मनोहर जोशी जी बैठे हैं। प्राइम मिनिस्टर जी यहां नहीं हैं। वे काफी देर तक बैठे रहे। मैं उनकी आभारी हूं। मेरा कहना है कि अभी आपने अपने लीडरशिप चेंज किया। दिल्ली में जब इलेक्शन हुआ, अगर मैं गलत न हूं तो मैं आपको याद दिलाना चाहती हूं कि when Shrimati Sushma Swaraj became the Chief Minister of Delhi, you changed the leadership; when Shri Rajnath Singh became the Chief Minister of UP, you changed the leadership; even in Uttaranchal, you changed the leadership. If you can change your leadership in many States, why not you do so in Gujarat, when Gujarat became the national concern nowadays? You may appreciate or you may not appreciate. But it is a fact and that is history. Now, it has become a black history. That is why, I am telling this. I am not against all of you. Now, we are supporting the NDA and we will vote for the Government and against the Motion because we want to have the stability of the Government. But at the same time, I would

like to request all the senior BJP leaders who are here. We have the young generation here who are the future of the country. I am not your enemy. As a sister, I am telling you this. If you can change your leadership in so many States for political reasons, why do you not respect the sentiments of the people of this country? I am telling you this. Please respect the sentiments of the Human Rights Commission, the Minorities Commission, and the Scheduled Castes and Scheduled Tribes Commission. There are so many reports from the Fact-finding Committee. I appreciate your point that we should not interfere in your business.

But when it is a national concern then Govt. must respond and take appropriate steps.

We are proud of our country that our country fought for South African movement; our country fought for everything. So, India has a prestige in the world. That is why, my request to you. If you think that it is a request, it is a request; if you think that it is a demand, it is a demand because we stick to our stand. We, from the Trinamool Congress, sent our team first. I sent my leaders, the MPs, Dr. Ranjit Panja, Dr. Bikram Sarkar, Shri Akbor Ali Khandoker and Shri Dinesh Trivedi, to Shah Alam Refugee Camp in Ahmedabad and to visit the areas.

After that, they told me that the Government could not rise to the occasion and that the Administration has totally failed there. If one particular man has to be blamed for that, can you tell me why Shri Atal Bihari Vajpayee should take the blame for him? हमने सोचा था जब डिस्कशन हो रहा है तो वे वौलंटरिली रैज़िगनेशन दे देंगे लेकिन नहीं दिया। मोदी जी को वौलंटरिली रैज़िगनेशन दे देना चाहिए था। Why would the Prime Minister suffer for him? Why would the nation suffer due to him? Why should the country suffer for a particular man? Sometimes, for a better cause somebody has to sacrifice. For *Tehelka* issue, we sacrificed and for this issue, my younger brother, Shri Ram Vilas Paswan has sacrificed. I congratulate him. But at the same time, I would request him not to vote in favour of the Motion. Either they should abstain or they should vote for the Government because he was the Minister.… (*Interruptions*). Some of my speeches may be digestible to you and some may not. I am sorry. But I am not here to satisfy all the people. Whatever I

am saying, I am saying that from my heart. We are not from the golden spoon family. We are from the common man's family. I am talking on the basis of my feed-back.

Sir, I believe that the Congress Party including other parties does not want that Government should be toppled now. The Congress Party used to be my Party as I was also born and brought up politically with Congress Party. Ultimately, I was expelled from the Congress Party and I set up a new Party. But there is not much difference between our Party's manifesto and the Congress Party's manifesto.

Sir, when we are discussing the Gujarat issue, of course, my suggestions would be to the Government. No individual can restore the confidence among the people. That is why, Shri Modi should go. How will he go, it is for the Prime Minister and the Government to decide… (*Interruptions*) I thought Modi should send his resignation voluntarily.

Sir, my second suggestion would be to all the Members of Parliament. While we are discussing this issue, we are divided. I would appeal to all the Members of this House including leaders and the Leader of the Opposition to let us have a peace march in Gujarat. Let us appeal to the people to maintain peace. Let us tell them that we do not want communal riots and that we do not want any vote bank. We want to restore the prestige of the country. We want to restore peace because communal tension is like a cancer for the community. I would appeal to this House to let us go together. This message should go to Gujarat and other parts of the country also.

My third suggestion is that we should not divide ourselves on the question of majority and minority. It is because we are together. Sir, unity is strength and division is fall. वैसे ही हमारे बहुत सारे डिवीजन हो गए - कास्ट, सब-कास्ट, इंटर कास्ट, कितने हो गए। देश के टुकड़े करना चाहते हैं या देश को एक रखना चाहते हैं। अगर देश को एक रखना चाहते हैं तो

nobody should play the Hindu card or the Muslim card. We are all Indians and that should be the only card. जिन्दगी इतनी आसान नहीं है, जिन्दगी में संघर्ष करना

पड़ता है। भारत को आज भी इकोनौमिक फ्रीडम नहीं मिली लेकिन फिर भी हिन्दुस्तान की एक परम्परा है।

हम लोग एक साथ इतनी सारी भााएं बोलते हैं, हर धर्म के व्यक्ति एक साथ हिन्दुस्तान में रहते हैं, यह हमारे देश की सबसे बड़ी उपलब्धि है। इस उपलब्धि को बनाए रखने के लिए मैं सरकार से निवेदन करूंगी कि हमारे देश में पोलिटिकल रिफार्म होना जरूरी है।

Political Parties should take steps in such a way that we are able to unite the country and not divide it further. For this purpose political reforms are needed and electoral reforms are also needed. We should ban fundamentalist organisations in order to disable them from dividing the country.

मुझे मालूम है कि जब समय ज्यादा हो जाता है तो हमें बोलने के लिए कम समय मिलता है। गुजरात में 14,000 मकान डैमेज हुए हैं, thirty-six thousand people have been arrested. Hands of women and children are chopped. Pregnant ladies have been harassed. I have seen all this in my State also. We have submitted our Adjournment Motion on this issue. You may please allow this Adjournment Motion also as we are discussing Gujarat issue under Rule 184. I may tell you for your information that what we are seeing in Gujarat, the same kind of State sponsored terrorism is taking place in my State also. I have brought this evidence from West Bengal. So many women and children belonging to minority communities, Scheduled Castes and Scheduled Tribes have been murdered. They are homeless and shelterless. They are crying, but nobody is listening to them. I urge the Central Government to please take care of them.

SHRI RUPCHAND PAL : This is absolutely a baseless allegation.

KUMARI MAMATA BANERJEE : I condemn whatever happened in Gujarat. We do not support it. It is State sponsored terrorism if the administration behaves like a political cadre. People cannot get justice under such an administration. But whatever has happened in Gujarat, the

same thing is happening in my State also. I show you the list. … (*Interruptions*)

If you see the list, you will find that many people from the minority communities, Scheduled Castes and Scheduled Tribes have been murdered. As regards political violence, West Bengal and Tripura stand at number one position. I have the list indicating details about the police station, the name and address of the victims, the date on which they died, etc. I can give you the list right now.

I went to a place called Nanur where eleven Muslims have been murdered by the CPI(M) cadre. There is no justice. Against Chota Angania, CBI inquiry is going on and that is why I am not going to say anything more about him. Dead bodies of the victims also have not been found.

I went to another place called Gajol. गुजरात में जो हुआ, उसकी हमने निंदा की है। … (*Interruptions*)

SHRI RUPCHAND PAL : She is hurling baseless charges. She is misusing the floor of this House.

KUMARI MAMATA BANERJEE : मैंने देखा कि in Gajol (Haldia Distt.) एक गर्भवती महिला को जला दिया, तीन बच्चों को जला दिया और उस मां के पेट में जो बच्चा था, वह निकल आया, उसको भी जला दिया।… (व्यवधान) यह सब मैंने देखा है। हमारे दो ब्लाक अध्यक्षों मोहम्मद असलम और हसन लश्कर का मर्डर कर दिया। इसी तरह हमारे आठ बूथ एजेंट्स का दस दिन में मर्डर कर दिया। There is no justice. We want that the Central Government takes action so that women and children from the minority communities, Scheduled Castes and Scheduled Tribes are given adequate protection.

सर, डैमोक्रेसी नहीं है, फंडामेंटल राइट्स नहीं है। I am talking of human rights. They are also human beings. हम जब स्टैंड लेते हैं तो हमारी स्टैंड डबल स्टैंडर्ड नहीं होती। हम गुजरात के बारे में जो कहते हैं,… (व्यवधान) Why don't we speak about the other parts where state sponsored terrorism is going on. We are not hypocrats. They are hypocrats. …(व्यवधान) वहां कोई फंडामेंटल राइट्स नहीं हैं। लोगों का गला काट देते हैं। हॉस्पिटल में नहीं जाने देते हैं। पीने का पानी पीने नहीं देते हैं। मैडिकल कॉलेज नहीं

जा सकते। There are no fundamental rights, no democratic rights and no human rights and that is why, I would like to ask the Government to please take care and intervene. According to article 355, if minorities and Scheduled Castes and Scheduled Tribes are not protected, you should take action in Gujarat. We want the culprits to be punished and Shri Modi should go away. But at the same time, what is going on in Bengal? The Central Government must intervene there also the same situation so Govt. must intervene.…… (*Interruptions*)

SHRI LAKSHMAN SETH (TAMLUK): Sir, her speech should be restricted only to Gujarat...… (*Interruptions*)

कुमारी ममता बनर्जी : हम जनरल बात नहीं करते हैं। हम माइनॉरिटी और एससीएसटी के लिए बोलते हैं। हमारी लिस्ट एससीएसटी के लिए है कि उन्हें प्रोटैक्शन मिलना चाहिए जो उनको नहीं मिलता है। …(व्यवधान) गुजरात में जो रिलीफ कैम्पस हैं, जिनके हाउसेज डैमेज हो गये हैं, जो लोग रास्ते पर आ गये हैं, जिनका बिजनैस बर्बाद हो गया है, उनके लिए सरकार को काम्प्रीहेंसिव पैकेज की व्यवस्था करनी चाहिए। …(व्यवधान) साथ-साथ हमारी स्टेट में भी हजारों लोग रास्ते पर आ गये हैं। छोटे-छोटे बच्चों का रेप होता है।…(व्यवधान) एक भी आदमी पकड़ा नहीं जाता है। वहां एफआईआर भी दर्ज नहीं कर सकते हैं।… (व्यवधान) हमें बोलने के लिए मौका नहीं दिया जाता है। बंगाल में एक एफआईआर भी लॉज नहीं कर सकते हैं। …(व्यवधान) ऐसे एडमिनिस्ट्रेशन को लाल जामा पहना दिया। इसीलिए मैं कहना चाहती हूं कि हिन्दुस्तान में चाहे गुजरात हो, बंगाल हो, बिहार हो, राजस्थान हो या चाहे मध्य प्रदेश हो, जो भी स्टेट हो, अगर वहां दिक्कत है तो उसके लिए सरकार को ध्यान देना चाहिए और ध्यान देने के समय सीपीआईएम के साथ अगर कोई दोस्ती करेगा तो माफ कीजिए कि वह कम्युनिल पार्टी है और वह अपोर्चुनिस्ट है जिसने देश को बिट्रे किया है और करते जाएंगे, कांग्रेस को भी फंसाया है।

अंत में, मैं कहना चाहती हूं कि Prime Minister is the important person of this country. देश के लिए उनका पहले कर्तव्य बनता है। यह सही है कि सदन में इस विाय पर चर्चा चल रही है, लेकिन प्रधान मंत्री जी को गुजरात के बारे में फैसला जरूर लेना चाहिए। मोदी जी को हटायें और माइनोरिटीज़ को प्रोटैक्शन दें। मैं कहना चाहती हूं - शक्ति भी, शांति भी भक्तों को गीत में है। धरतीवासियों को प्रीत, मुक्ति में है। सारे जहां से अच्छा, हिन्दुस्तान हमारा । मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना। हिन्दी हैं हम वतन है, हिन्दुस्तान हमारा । हिन्दी से मतलब हिन्दुस्तान से है। हिन्दी बोलने से हिन्दू नहीं हो जाता है। हमने हिन्दू घर में जन्म लिया, लेकिन मस्जिद में ज्यादा जाते हैं। माइनोरिटीज की रक्षा करना हमारा फर्ज बनता है। त्याग का

नाम है हिन्दू, ईमान का नाम है मुसलमान, प्यार का नाम है ईसाई और बलिदान का नाम है सिक्ख। हिन्दुस्तान की इज्जत प्रधान मंत्री के हाथ में है और उनको इसे बचाना चाहिए।

(इति)

… (व्यवधान)

श्री अली मोहम्मद नायक (अनंतनाग) : सर, नेशनल कान्फ्रेंस को अभी तक चांस नहीं मिला है। …(व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Members belonging to National Conference will get the chance to speak.

श्री अली मोहम्मद नायक : जिस पार्टी का एक मैम्बर है, उसको चांस मिल जाता है, लेकिन जिनके पांच मैम्बर्स हैं, उनको चांस नहीं मिलता है।

उपाध्यक्ष महोदय : एक मैम्बर की पार्टी को भी चांस नहीं मिला है। आप क्या आरोप लगाते हैं।

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Hon. Members, please resume your seats.

… (*Interruptions*)

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी (खजुराहो) : उपाध्यक्ष महोदय, आज सदन में एक ऐसे विाय पर चर्चा कर रहे हैं, जो न सिर्फ हमारे आज से वास्ता रखता है, बल्कि इस देश के मुस्तकबिल से भी वास्ता रखता है।

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी (खजुराहो) : उपाध्यक्ष महोदय, अगर यही वातावरण चलना है तो इस बात को ध्यान में रखा जाए कि अभी उस तरफ से जवाब आना बाकी है और अगर हम इन्हें पूरे दिन गंभीरता से सुन सकते हैं तो इन्हें भी दूसरों को गंभीरता से सुनना चाहिए।

महोदय, मैं अपनी बात की शुरूआत इस देश के अज़ीम शायर के एक शेर से करना चाहता हूं। केफी आज़मी जी ने एक शेर लिखा है और शायद आज के हालत पर उससे मौजू कोई शेर कहा नहीं जा सकता - " जुस्तजू है जिसकी वह ज़हां नहीं मिलता, वह जमीं नहीं मिलती, वह आस्मां नहीं मिलता।"

इस देश में स्वतंत्रता का संग्राम शुरू हुआ और जिन लोगों ने इस देश को आजाद कराने के लिए कुर्बानियां दीं, उन्होंने अपनी आंखों में कुछ सपने संजोए थे, एक प्रगतिशील भारत के सपने, एक ऐसे भारत का सपना, जहां पर सारे लोग, सारे धर्म-सम्प्रदाय, सारे भााभाी लोग, सारी संस्कृतियों के लोग आपस में मिल-जुल कर प्यार से रहेंगे, एक ऐसा सपना संजोया था, हमारे देश के उन कुर्बानी देने वाले लोगों ने। आज हम उस कगार पर खड़े हैं कि पिछले दो महीने से रोजाना हम आगजनी, खूनरेज़ी, लूट-पाट और नरसंहार के दृश्य सुन रहे हैं, जो गुजरात में होते चले जा रहे हैं। कोई दिन बाकी नहीं जाता और लगातार दो महीने से यही सब चल रहा है।

महोदय, कशमकश के इस दौर में कई बार मेरे जहन में एक सवाल उठता है कि इतिहास क्या केवल स्कूल की किताबों या इम्तिहानों की वस्तु रह गई है। इतिहास आने वाली पीढ़ियों के लिए सबक होना चाहिए, यह सवाल एक बार नहीं, अनेक बार मेरे मन में उठता है। 1947 में इस देश को जिन्ना और सोहरावर्दियों की मुस्लिम लीगी जिद्द ने एक बार तकसीम किया, मुझे अफसोस है कि हम उससे कोई सबक नहीं सीख रहे। आज इस देश को सुदर्शनों, सिंघलों और मोदियों की संघी जिद्द फिर एक बार तकसीम करने के कगार पर लेकर खड़ी हो गई है। महोदय, मैं बड़ी गंभीरता से एक निवेदन करना चाहता हूं,... (व्यवधान)

श्री विनय कटियार (फैज़ाबाद) : आप क्या निवेदन करना चाहते हैं।... (व्यवधान) आप दिल्ली में दंगे करवाते रहे, लोगों को लड़ाते रहे। ...(व्यवधान)

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी : उपाध्यक्ष महोदय, अगर यही तरीका है तो आपकी तरफ से भी कोई नहीं बोल पाएगा। ये कोई तरीका नहीं है। ... (व्यवधान) महोदय, यह क्या तरीका है, क्या हमारा बोलने का अधिकार नहीं है। भाजपा की पूरी लीडरशिप बैठी हुई है, उनके होते हुए यह तमाशा चल रहा है।... (व्यवधान)

सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय के राज्य मंत्री (मेजर जनरल (सेवानिवृत्त) भुवन चन्द्र खण्डूरी) : आपने जार्ज फर्नान्डीज जी को बोलने नहीं दिया और हमारे लीडरों की तरफ इशारा करते हैं।

उपाध्यक्ष महोदय : अभी उनका काफी टाइम बाकी है।

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी : उपाध्यक्ष महोदय, इस सदन की और मेरी यह मान्यता है कि भारत जैसे लोकतंत्रीय देश का प्रधान मंत्री महज एक दलीय राजनेता नहीं हो सकता। उसका कद इससे ऊपर होना चाहिए और जननायक के स्थान पर पहुंचना चाहिए। इस देश के प्रधान मंत्री के सामने कभी दल और देश के बीच में चुनाव का प्रश्न आये तो मेरी और देश की यह मान्यता और अपेक्षा है कि प्रधान मंत्री जी का हाथ देश के पक्ष में फैसला करते समय कांपना नहीं चाहिए। …(व्य वधान)

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, पिछले दो महीनों में गुजरात के अंदर जो नृशंस अत्याचार हुआ है और एक विशो वर्ग के लोगों को निशाना बनाकर प्रताड़ित किया गया है उसके कुछ आंकड़ें मैं आपके सामने रखना चाहता हूं। लगभग दो हजार से ज्यादा लोग कत्ल कर दिये गये, 10 हजार से ज्यादा घायल लोग अस्पतालों में पड़े हुए हैं, बीस हजार से ऊपर मकानों और दुकानों को आग के हवाले कर दिया गया और दो लाख के लगभग शरणार्थी आज लगभग 103 शरणार्थी केन्द्रों के अंदर ईश वर के भरोसे पड़े हुए हैं।

गुजरात हिंदुस्तान का औद्योगिक और व्यापारिक रुप से एक समृद्ध समाज है और उसकी एक लम्बी परम्परा है। पिछले र्वा लगभग 49 हजार 500 करोड़ रुपये के विभिन्न उत्पादों का निर्यात करने वाले प्रदेश में आज दंगों के कारण लगभग 5 हजार करोड़ की राजस्व की हानि उत्पाद और बिक्री कर के रूप में हो चुकी है। राज्य सरकार को 250 करोड़ रुपये बिक्री कर का और केन्द्र सरकार को लगभग 800 करोड़ रुपये, प्रतिदिन के हिसाब से, उत्पाद शुल्क वसूली का नुकसान हो रहा है। सीमा-शुल्क का करीब 500 करोड़ रुपये का प्रतिदिन नुकसान हो रहा है। करीब 1150 ट्रक जलाकर राख कर दिये गये और उद्योगों को प्रतिदिन लगभग 250 करोड़ रुपयों का नुकसान हो रहा है। सात सौ करोड़ रुपये का टैक्सटाइल उद्योग तबाह हो चुका है और 400 कपास की इकाइयां पूरी तरह से जला दी गयीं, जिससे 4 करोड़ रुपये प्रतिदिन का नुकसान हो रहा है। रसायन उद्योग में 150 करोड़ रुपये के नुकसान का आंकलन किया गया है और गुजरात के अंदर निवेश करने का जो वातावरण था उसका दूरगामी प्रभाव यह होने वाला है कि वहां र्वाों तक नि वेश करने में लोगों को घबराहट होगी।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैंने अपने जीवन में, आज तक, किसी एक विाय पर, इस देश के मीडिया को इतना अधिक एक राय होते नहीं देखा। पिछले दो महीने के अंदर फ्रंट पेज पर, एडीटोरियल में, अग्र लेखों में उन्होंने गुजरात की कहानी का रत्ती-रत्ती बयान किया है। मानव अधिकार आयोग ने, राट्रीय अल्पसंख्यक आयोग ने अपनी रिपोर्ट दी है। अंतर्राट्रीय दूतावासों ने जो अपनी रिपोर्ट दी है उससे मैं सहमत नहीं हूं। यह बड़े शर्म की बात है कि विदेशी लोग हमारे घर की बातों को कहें। लेकिन सच्चाई से मुंह कैसे मोड़ा जा सकता है? एडीटर गिल्ड ने अपनी बात कही। यहां मैं भारतीय जनता पार्टी और उनके सहयोगी दलों के साथियों को सुन रहा था। लगता

है कि आज इस देश में अगर कोई सच्चाई बोलने वाला रह गया है तो वह भारतीय जनता पार्टी है और उनके अलावा अल्पसंख्यक आयोग और राट्रीय आयोग असत्य हैं।

इसके अलावा पूरा मीडिया झूठा है, हर आदमी और विरोध पक्ष का आदमी झूठा है और केवल सच बोलने वाले ये ही लोग हैं। हर चीज का बिलकुल आंख मूदंकर खंडन करते जा रहे हैं। भाजपा सरकार गुजरात और केन्द्र में बैठी हुई है। जब सारे देश में यह माहौल बना हुआ है तो स्वाभाविक तौर पर देश की निगाहें प्रधानमंत्री और उसके नेताओं की तरफ है, इस अपेक्षा के साथ कि देश का प्रधानमंत्री क्या कदम उठाता है, कौन सी नीति अपनाता है। इस बिगड़ती हुई हालत पर काबू पाने के लिये कौन कैसे नियंत्रित करता है? इतिहास साक्षी है कि जब संकट की घड़ी होती है, वह प्रधानमंत्री की परीक्षा की घड़ी होती है। सामान्य स्थिति में प्रधानमंत्रित्व और मुख्यमंत्रित्व सब कर लेते हैं लेकिन जब देश पर संकट आता है, उस संकट में से देश को कैसे निकालना है जिससे देश के हितों का संरक्षण हो सके, तभी प्रधानमंत्री के नेतृत्व की सही परीक्षा होती है।

उपाध्यक्ष महोदय, सबसे पहली बात यह है कि न जाने प्रधानमंत्री जी को क्या हुआ कि वह जो वक्तव्य देते हैं, दूसरे दिन ही प्रधानमंत्री कार्यालय से उसका खंडन और स्पटीकरण छप जाता है। अमरीका में उन्होंने स्वयं सेवक होने का वक्तव्य दे दिया था। बाद में प्रधानमंत्री कार्यालय से उसका स्पटीकरण निकलता है। जब अयोध्या में बाबरी मस्जिद टूटी, उन्होंने यह कहा कि यह राट्र पर कलंक है, दुर्भाग्यपूर्ण है। उसके बाद फिर 6 दिसम्बर, 2000 को वही प्रधानमंत्री जी कहते हैं कि यह तो राट्रीय भावना का प्रकटीकरण हुआ है। उसके औचित्य को वहे प्रतिपादित करते हैं। पिछली बार इसी सदन में गुजरात की घटनाओं पर उन्होंने इसे कलंक बताया था। उसके बाद नैनीताल पहुंचने पर उन्होंने पत्रकारों के सामने एक कविता पढ़ी :

"गीत नहीं गाता हूं, बेनकाब चेहरे हैं, दाग बडे गहरे हैं,

आज सब से भय खाता हूं, गीत नहीं गाता हूं।"

यह प्रधानमंत्री जी की मनोभावना है, उनके मनोद्गार प्रकट होते हैं। नैनीताल से गोआ पहुंचते पहुंचते, भगवान जाने कौन सा ह्वदय परिवर्तन होता है कि वहां पहुंचने के बाद उनकी कविता का रूप देखिये. कैसे बदल जाता है। गोवा में कही गई उनकी कविता की कुछ पंक्तियां बताना चाहूंगा :

"क्या हार में, क्या जीत में, किंचित नहीं भयभीत हूं,

संघर्ा पथ पर जो भी मिला, यह भी सही, वह भी सही।"

प्रधानमंत्री जी में यह कैसा ह्वदय परिवर्तन? प्रश्न बार बार यह उठता है कि आखिर प्रधानमंत्री के

साथ ऐसा क्यों हो रहा है?

रामदास आठवले (पंढरपुर) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं यह कहना चाहता हूं कि..

MR. DEPUTY-SPEAKER: Nothing will go on record.

*(Interruptions)**

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Ramdas Athawale, please resume your seat. जिस प्रकार से आपको चांस मिलने वाला है, वह नहीं मिलेगा।

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी : उपाध्यक्ष महोदय, गोवा जाने से पहले प्रधानमंत्री जी गुजरात पहुंचे। उन्होंने शाह आलम कैम्प की दशा देखी। उसका उल्लेख हो चुका है। उन्होंने वहां बहुत कुछ कहा होगा लेकिन मैं दो वाक्य कोट कर रहा हूं :

" मुख्यमंत्री को मेरा यह संदेश है कि वे राजधर्म का पालन करें

वे शब्द बहुत अर्थपूर्ण हैं क्योंकि एक शासक को जाति, धर्म और सम्प्रदाय के आधार पर प्रजा के साथ भेदभाव नहीं करना चाहिये।" इसका मतलब है कि प्रधानमंत्री जी ने गुजरात में पाया कि भेदभाव हो रहा है और जाति, धर्म और राजधर्म का निर्वाह वहां के मुख्यमंत्री नहीं कर रहे हैं। इसलिये उन्होंने यह सीख दी और जाते-जाते शर्म के मारे यह कह गये कि गुजरात के इन दंगों के बाद कौन सा चेहरा लेकर विदेश जाऊं?

यह प्रधान मंत्री जी गुजरात में बोलते हैं और विदेश भ्रमण के बाद जब वह गोवा पहुंचते हैं तो आप प्रधान

*Not Recorded.

मंत्री जी के वक्तव्य पर गौर करें, प्रधान मंत्री जी ने उसमें मोदी को पार कर दिया। विश्वास कीजिए प्रधान मंत्री जी के सामने नरेन्द्र मोदी नितान्त फीके पड़ गये, उनके वक्तव्य फीके पड़ गये। जो नरेन्द्र मोदी कभी कहने की हिम्मत नहीं कर पाये, प्रधान मंत्री जी ने सारी सीमाएं लांघ करके कहा कि "साबरमती एक्सप्रैस के निर्दोा लोगों को जिंदा जलाने का ाड्यंत्र नहीं किया होता तो गुजरात की त्रासदी टाली जा सकती थी." ....(व्यवधान) और अगले वाक्य में बोलते हैं, " पर आग लगाई किसने।" फिर उसके बाद कहा कि अभी खुद सरकार इस बात की जांच कर रही है, यानी जांच में अभी तक यह सिद्ध नहीं हो सका है कि यह आग किसने लगाई। इसके बाद उनका

वाक्य केवल अल्पसंख्यकों की ओर इशारा करता है और फिर वह वहां पहुंच जाते हैं, जहां कोई नहीं गया। "जहां-जहां मुस्लिम हैं, वे घुलना-मिलना नहीं चाहते। शांतिपूर्ण ढंग से रहने के बजाय डरा-धमकाकर अपने धर्म का प्रचार करते हैं।" इसके आगे वह कहते हैं कि " इस्लाम दो तरह का है - एक सहिणु, सच्चाई से चलने वाला संवेदनशील और दया दिखाने वाला, लेकिन आजकल जिस इस्लाम को लेकर चला जा रहा है," अब जो इस्लाम है, यह कभी किसी जमाने का इस्लाम रहा होगा, पता नहीं कब की चर्चा कर रहे हैं। "लेकिन आजकल जिस इस्लाम को लेकर चला जा रहा है वह सहिणु नहीं, जेहाद को लेकर चलता है" और जिसमें मदरसों में केवल तलवार के बल पर केवल अपने धर्म का प्रचार करना सिखाया जाता है। यह प्रधान मंत्री जी का वाक्य है।... (व्यवधान) मुझे आश्चर्य है इस देश का प्रधान मंत्री ऐसा कहे, जिसके एक-एक वाक्य का अर्थ बहुत गहरा हो सकता है, जिसके परिणाम बहुत गहरे हो सकते हैं, सामाजिक और राजनीतिक इम्पलीकेशंस बहुत गहरे हो सकते हैं। क्या कारण हैं और प्रधान मंत्री ऐसा वक्तव्य क्यों देते हैं जिसका रोज-रोज खंडन प्रकाशित करना पड़े, रोज-रोज स्पटीकरण देना पड़े। वह खुद अपने वक्तव्यों में आज और कल एक ही विाय पर भिन्न ध्रुवों के ऊपर बात करते दिखाई पड़े। इसकी तीन संभावनाएं हैं। प्रथम यह है कि पूरे हिन्दुस्तान का मीडिया पूरी तरह दुराग्रहवश, विद्वोवश प्रधान मंत्री जी की इमेज को तोड़ने, उन्हें बदनाम करने, उन्हें कलंकित करने का प्रयास कर रहा है। यह वही मीडिया है जो अभी कुछ महीनों पहले तक प्रधान मंत्री जी की तारीफ करते थकता नहीं था।

दूसरी संभावना यह है कि शारीरिक और मानसिक रूप से प्रधान मंत्री जी इतना थक चुके हैं कि अब ठंडे दिमाग से फैसला करना, सोचना-विचारना और कहने की क्षमता अब उनके हाथ से फिसल चुकी है। ...(व्यवधान) तीसरी संभावना यह है कि दरअसल अभी तक वह जो कुछ कहते थे वह एक राजनीतिक रणनीति का हिस्सा था, उनका उदारवाद एक पाखंड था, दिखावा था, एक छलावा था। सच्चाई यह है कि अब उनका असली चेहरा उजागर हो गया है। उनकी असली भावनाएं अभिव्यक्त होने लग गई हैं। यह तीसरी संभावना है। इन तीनों में से एक संभावना हो सकती है। हालात यह है और अब साफ जाहिर है कि संभावना कौन सी सही है, इस पर निर्णय करना मैं लोगों पर छोड़ता हूं।... (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय, संयुक्त अधिवेशन में हमारी नेता सोनिया जी ने प्रधान मंत्री जी से मात्र इतना कहा कि शायद आप प्रधान मंत्री के रूप में स्वतंत्र होकर निर्णय नहीं कर पा रहे हैं. आप दबाव में निर्णय ले रहे हैं। प्रधान मंत्री की हैसियत से आपको स्वतंत्र निर्णय लेना चाहिए, उन्होंने इतना भर कहा कि प्रधान मंत्री जी भड़क गये, तिलमिला गये, नाराज हो गये, आक्रोश और आवेश में आ गये और कहने लगे कि मैं 40 साल से राजनीति कर रहा हूं, आपने कितने दिन से राजनीति की है वगैरह, वगैरह।

हमारी कृपा से थोड़े ही कोई प्रधान मंत्री बनता है। अगर हमारी कृपा करने लायक होती तो हम खुद अपना प्रधान मंत्री बनाते, यह तो सभी जानते हैं। सवाल यह था कि जो सोनिया जी ने उस दिन कहा था, वह शत प्रतिशत अब सिद्ध हो चुका है क्योंकि आज का अखबार उठाकर देख लीजिए जिस तरह से पिछले तीन दिन से राट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रधान मंत्री के निवास पर कब्ज़ा जमाकर बैठा है और जिस तरह से अपनी टर्म्स को डिक्टेट कर रहा है, उससे साफ ज़ाहिर है कि प्रधान मंत्री स्वतंत्र रूप से कोई फैसला करने के अधिकारी नहीं रह गए हैं, क्षमता भी नहीं रह गई है, अधिकार भी नहीं रह गया है, ताकत भी नहीं रह गई है। सच बात यह है कि जब यह सरकार बनानी थी तो 24 दलों को इकट्ठा करना जरूरी था और उसमें ऐसे बहुत सारे दल हैं और थे जो सोचते थे कि हम धर्मनिरपेक्षता छोड़ नहीं सकते। उनके अपने कारण थे और इसलिए अगर यह सरकार बनानी थी तो भारतीय जनता पार्टी के लिए यह एक अनिवार्य शर्त थी कि वह उदारवादी दिखने का कम से कम प्रयास जरूर करे लेकिन उसका असली चेहरा अब उजागर हुआ है, जब गुजरात के दृश्य हम देख रहे हैं और प्रधान मंत्री जी और नरेन्द्र मोदी का रवैया देख रहे हैं। नरेन्द्र मोदी की बात तो मैं करना भी नहीं चाहता, वह इस योग्य नहीं। उनसे जो अपेक्षा हम सामान्य तौर पर रखते थे, जिस स्तर के वे व्यक्ति हैं, वही कर रहे हैं। मगर हमें अफसोस है और हम प्रधान मंत्री से जरूर अपेक्षा रखते थे। इस देश के प्रधान मंत्री का पिछले 40 सालों का इतिहास और उन सारी चीजों को लेकर, चाहे झूठी ही सही, पर एक आशा थी कि शायद कम से कम राजनेता के कद से ऊपर उठकर जननायक की भूमिका निभाने में इस ऐतिहासिक घड़ी में वह काम आएंगे, मगर अफसोस कि ऐसा नहीं हुआ। मैं असली बात पर भी आता हूँ कि यह सब कुछ क्यों हुआ गुजरात में। यह सब एक लंबी योजना का हिस्सा है।

उपाध्यक्ष महोदय, अगर 13 दिन की उस सरकार का हिस्सा छोड़ दें तो प्रधान मंत्री के रूप में भारतीय जनता पार्टी और अटल बिहारी वाजपेयी को लगभग साढ़े चार र्वा इस देश में सत्ता संभाले हो गए। इन साढ़े चार र्वाों में तीन बार विभिन्न प्रदेशों के अंदर विधान सभाओं के राजनैतिक चुनाव हुए हैं। अनेक जगहों पर स्थानीय निकायों के चुनाव हुए। जब ये सत्ता में आए थे तो इस देश में लगभग एक दर्जन राज्यों में या तो भारतीय जनता पार्टी या भारतीय जनता पार्टी के सहयोगी दलों की मिली जुली सरकारें थीं। लेकिन आज अगर भारतीय जनता पार्टी की अपने बूते कोई सरकार कही जा सकती है तो वह केवल गुजरात में रह गई है, हिमाचल प्रदेश और झारखंड में भी इनके सहयोगी दलों की सहायता से इनकी सरकार कायम है। मात्र तीन प्रांतों में सिमटकर ये रह गए हैं। उत्तर प्रदेश में जो कुछ हुआ है, उसका परिणाम सामने है। भारतीय जनता पार्टी के जितने सहयोगी दल थे, एक टीडीपी को छोड़कर, अपवादस्वरूप और दूसरा उड़ीसा को छोड़कर, सारे इनके सहयोगी दलों की भी सत्ता जहां जहां प्रांतों में थी, सब सत्ता से हटा दिये गये। जनता का यह फैसला हुआ। दिल्ली में कार्पोरेशन के चुनावों में सूपड़ा साफ हो गया। शिमला में कल चुनाव हुए और दो-तिहाई बहुमत से शिमला में कांग्रेस पार्टी आई जहां इन का मुख्य मंत्री बैठा हुआ है। कल मेघालय के भी परिणाम देखेंगे। लेकिन सच यह है कि भारतीय जनता पार्टी और उसके सहयोगी दलों की जमीन उसके पांव के नीचे से सरकती दिख रही थी

और भाजपा के लोग आर.एस.एस. के दबाव में आ गए कि हिन्दुत्व की ओर वापस नहीं लौटे तो तुम्हारा अस्तित्व ही समाप्त होने वाला है। यही उस भाजपा की संघीय योजना का हिस्सा था कि यहां से नरेन्द्र मोदी को वहां भेजा गया और उसके बाद जो कुछ वहां हुआ है, उसके इतने प्रमाण यहां दिन भर में दे दिये गये हैं कि मैं उनको बार-बार दोहराना नहीं चाहता, लेकिन पूरी साजिश के तहत, पूरी जानकारी में, पूरे इरादे के साथ गुजरात की सरकार के संरक्षण में यह सारा घटनाक्रम हुआ, नरसंहार हुआ, नृशंसता हुई, जघन्यता के साथ वहां अपराध किये गये हैं और आज वहां पर ये चुनाव कराना चाहते हैं।

23.00 hrs.

इससे ज्यादा बेशर्मी और बेहयाई की बात और क्या हो सकती है ? इनको लोगों के राहत की पर वाह नहीं, बच्चों के इम्तहान की परवाह नहीं, वहां सुरक्षा देने की कोई परवाह नहीं है। अगर इस पार्टी को परवाह है तो केवल एक चीज की है कि वहां इलेक्शन हो जाये। … (व्यवधान) इसलिए गोवा में इनके चुनाव कराने की बात घोाति करते ही यह बात उजागर हो गयी, आईने की तरह साफ हो गयी कि इनका असली मकसद क्या है और उस मकसद को पाने के लिए इन्होंने क्या-क्या करवाया है, यह सारा उसका परिणाम है। अगर आप एक मिनट के लिए फर्ज करें कि कल वहां चुनाव हो जायें। वैसे आप इस भ्रम में मत रहिये कि वहां चुनाव होने वाले नहीं हैं लेकिन एक मिनट के लिए आप फर्ज करिये कि अगर वहां चुनाव हो जायें और ध्रुवीकरण के आधार पर वहां भाजपा सत्ता में आ जाये तो मैं देश और सदन के सारे सदस्यों से पूछना चाहता हूं कि अगर ऐसा हुआ तो इसका परिणाम क्या होगा ? यह प्रयोगशाला जो कल केवल गुजरात में खुली थी, इसके बाद वह मध्य प्रदेश, महाराट्र, तमिलनाडु, बंगाल, बिहार और राजस्थान आदि सारे देश के अंदर यह आग फैलाई जायेगी तब सारे देश को फिर से इस आग से बचाना कैसे मुमकिन हो पायेगा। … (व्यवधान)

एक सवाल बहुत बार उठाया गया। प्रधान मंत्री जी ने और भाजपा नेताओं ने अपने सहयोगी दलों को फटकार लगा दी कि आप चुप रहो। यह हमारा अंदरूनी मामला है। भाजपा का अंदरूनी मामला है, गुजरात का अंदरूनी मामला है। कश्मीर में स्वायत्ता का प्रस्ताव आता है तो क्या कश्मीर का अंदरूनी मामला मानकर उसे छोड़ दिया जाये। कश्मीर में आतंकवाद फैलता है तो उसे केवल कश्मीर का मामला समझ कर छोड़ दें। असेम्बली में हमला होता है तो हम कोई चिन्ता व्यक्त न करें। गुजरात में भूकम्प आता है तो सारा देश सहायता करने के लिए जुट जाता है तब अंदरूनी मामला नहीं होता। तब वह सारे देश का मामला है। आज अयोध्या में मंदिर का विवाद हो जाये तो कहते हैं कि उत्तर प्रदेश में अंदरूनी मामला है और बाकी देश को उस बारे में चिंता करने की जरूरत नहीं है। पंजाब में आतंकवाद फैला तब सारे देश के लोगों ने इकट्ठे होकर और पंजाब के बहादुर लोगों ने इकट्ठे होकर उसका मुकाबला किया। लेकिन क्या वह पंजाब का अंदरूनी मामला समझकर छोड़ दिया जाये तो क्या उस समस्या का हल या समाधान

होता ? पश्चिम बंगाल में अगर कोई विवाद हो जाये तो केन्द्र सरकार यहां से मंत्रियों को वहां जांच के लिए भेजती है। क्या वह पश्चिम बंगाल का अंदरूनी मामला नहीं है ? वह अंदरूनी मामला नहीं है तो गुजरात का अंदरूनी मामला कैसे हो गया ? बिहार में कानून और व्यवस्था की स्थिति को लेकर बहुत शोर किया गया। दो बार यह कोशिश की गई वहां सरकार धारा 356 के तहत गिरा दी जाये तब अंदरूनी मामला बिहार में नहीं था। गुजरात में आपका अंदरूनी मामला हो गया। गुजरात का अंदरूनी मामला है तो क्या भारतीय जनता पार्टी या नरेन्द्र मोदी की वह पैतृक सम्पत्ति है ? क्या उनका अंदरूनी मामला है। ... (व्यवधान)

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF COMMUNICATIONS (SHRI TAPAN SIKDAR): Mr. Deputy-Speaker, Sir, he has just said पैतृक सम्पत्ति है। What is this? You please expunge this.

MR. DEPUTY-SPEAKER: I will see the record if there is anything objectionable.

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी : माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मुझे भाजपा से न अपेक्षा थी और न उनसे मुझे अपेक्षा रखने की जरूरत है। मुझे अफसोस है कि भारतीय जनता पार्टी के साथ ऐसे कुछ दल हैं जो स्वयं को धर्मनिरपेक्ष कहते हैं। मैं उनको धर्मनिरपेक्ष मानने के लिए तैयार हूं। मेरे मन में कोई संशय नहीं है। उनकी सदाशयता पर कोई प्रश्नचिह्न नहीं लगान चाहता। निश्चित रूप से उनकी धर्मनिरपेक्षता में विश्वास होगा। एक उदाहरण हमें कल देखने को आया। भाई पासवान जी ने अपने जमीर की आवाज को मर जाने से बेहतर यह समझा कि इस मंत्री पद को उठाकर फेंक दिया जाये और वह उन्होंने किया जो कि एक उदाहरण है। लेकिन कुर्सी से चिपककर बैठे हुए हैं, सिद्धांतों से समझौता कर रहे हैं लेकिन एक आदमी है जिसने इस देश को मार्ग दिखाया।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, सुना है कि श्री उमर अबदुल्ला ने अपनी तरफ से इस्तीफा देने की पेशकश की है। यह सच है या नहीं, यह तो गृह मंत्री जी ही जानते हैं।

मैं मुखातिब होना चाहता हूं उन सहयोगी दलों की तरफ जो भाजपा के साथ आज राट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन में हैं। आप धर्मनिर्पेक्ष हैं, आपको बधाई। गुजरात में पुलिस और सरकारी कर्मचारियों को संघ की शाखाओं में जाने की छूट का आदेश दिया, तब भी आप धर्मनिर्पेक्ष थे। जब एन.सी.ई.आर.टी. के माध्यम से शिक्षा का भगवाकरण करने की पूरी कोशिश की गई, आप फिर भी धर्मनिर्पेक्ष थे। इतिहास का हिन्दुत्वकरण करने की पूरी साजिश चली जिस पर अन्ततः सुप्र ीम कोर्ट ने रोक लगाई वर्ना वह काम हो चुका था, आप तब भी धर्मनिर्पेक्ष थे। विश्व हिन्दू परिाद द्वारा अयोध्या के मंदिर में जबरन प्रवेश करने का प्रयास किया गया, आप फिर भी धर्मनिर्पेक्ष थे। देशभर में मंदिर आन्दोलन को लेकर यात्राएं चलाई गईं, आप धर्मनिर्पेक्ष थे। पुलिस और विधान सभा पर विश्व हिन्दू परिाद, बजरंग दल ने हमला किया, आप फिर भी धर्मनिर्पेक्ष थे। न्यायालय के

आदेश की अवहेलना करके मंदिर में शिलान्यास का प्रयास किया, आप फिर भी धर्मनिर्पेक्ष रहे। गुजरात में लूट और नरसंहार हो रहा है, आप फिर भी धर्मनिर्पेक्ष थे। हे भगवान, मैं आपकी धर्मनिर्पेक्षता को प्रणाम करता हूं। अगर यही धर्मनिर्पेक्षता है तो वह आपको मुबारक हो, हम इस धर्मनिर्पेक्षता में विश्वास नहीं करते।... (व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Nothing will go on record except the speech of Shri

Satyavrat Chaturvedi.

*(Interruptions)**

*Not Recorded.

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी : अंत में मुझे केवल चार चीजें कहनी हैं। हम सब कुछ कह चुके। अभी भी वक्त है, इस देश के प्रधान मंत्री और सरकार दलीय चश्मे से देखना बंद करें और राट्रीय चश्मे से देखने की कोशिश करें। मेरी मांग है कि श्री नरेन्द्र मोदी को तत्काल बरखास्त किया जाना चाहिए। दूसरी मांग है, सर्वोच्च न्यायालय के कार्यरत न्यायाधीश को वहां की जांच का काम ...(व्यवधान) जाना चाहिए। तीसरी चीज, वहां विश्वास और सुरक्षा का वातावरण, अल्पसंख्यकों और सभी समुदाय के बीच बनाया जाना चाहिए। जहां पुनर्वास और सहायता के काम के लिए टैंट लगे हुए हैं, वे पूरी तरह, सुचारू रूप से और ठीक ढंग से चलाए जाने चाहिए। इन चार बातों की मैं मांग करता हूं। आपने मुझे बोलने का समय दिया, उसके लिए मैं आपका आभारी हूं। (23.08)

रक्षा मंत्रालय के रक्षा उत्पाद और पूर्ति विभाग में राज्य मंत्री (श्री हरिन पाठक) : धन्यवाद उपाध्यक्ष महोदय, मैं सदन का ज्यादा समय नहीं लेना चाहता। काफी चर्चा हुई है। इसी सदन में 11 मार्च को इसी विाय पर चर्चा हुई थी। ...(व्यवधान) 11 मार्च को 8 घंटे 15 मिनट तक इस सदन में चर्चा हुई और 25 माननीय सदस्यों ने इस पर अपने विचार व्यक्त किए। चंद्र शेखर जी, मैं देख रहा हूं कि आप भी इस पूरी चर्चा को सुबह से बैठे हुए देख रहे हैं, सुन रहे हैं। मैं अपनी बात अपने ही दो वाक्यों से शुरू करता हूं। मैंने 11 मार्च को चर्चा में हिस्सा लेते हुए कहा था कि गुजरात में जो घटनाएं घटीं, अगर कोई उन घटनाओं की जड़ में जाएगा, उन घटनाओं को दुबारा रोकने के बारे में अगर कोई सोचेगा, तब मुझे लगता है कि हम संसद में जो चिन्ता व्यक्त करते हैं, उसका कोई हल निकलेगा, उसके कोई मायने होंगे। मैं प्रतिपक्ष की नेता सोनिया जी का भा-

ाण सुन रहा था। मुझे खुशी हुई जब उन्होंने अपनी पूरी बात कही। मैं उस पूरी बात से सहमत हूं न हूं, वह अलग बात है, मेरे उनसे विचारों के मतभेद हो सकते हैं, मगर उनकी अंतिम बात से मेरे कोई मतभेद नहीं हैं।

मुझे ममता जी की बात से मतभेद नहीं है। सोनिया जी ने अपनी बात को समाप्त करते हुए कहा --

> "I appeal to the hon. Prime Minister to rise above the party affiliation and show us the way once again. "

मैं उनका अभिवादन करता हूं कि प्रधान मंत्री जी को उन्होंने अपील की कि आप पार्टी से ऊपर उठ जाएं। मैं सदन से पूछना चाहता हूं, उन सभी महानुभावों से पूछना चाहता हूं कि गुजरात में जो दंगे होते हैं और हो रहे हैं, उसका निराकरण क्या किसी पार्टी विशो से जुड़ा है, क्या सिर्फ प्र ाधान मंत्री को ही ऊंचा उठना है, बाकी लोगों की जिम्मेदारी नहीं है, क्या सदन में बैठे हुए लोगों की जिम्मेदारी नहीं है, बाकी पक्षों और प्रतिपक्ष की जिम्मेदारी नहीं है ? यह कोई राजकीय मसला नहीं है, यह सामाजिक समस्या है, बड़ी दर्दनाक समस्या है। इस समस्या ने पिछले चालीस सालों में हजारों परिवारों को तबाह किया है। इस समस्या ने इस देश में अपनी बनाई हुई बिन साम्प्र ादायिक परिभााा के कारण हजारों लोगों को मारा है। मैंने उस दिन अपने भााण में कहा था कि इसकी जड में जाना चाहिए। सुबह उमा जी ने भी वही कहा मगर फिर वही राजनीति की बातें, फिर हम पर आराप लगाते हैं और जब हम कुछ कहते हैं तो कहते हैं कि आप क्यों राजनीतिक बातें करते हैं। जब आप हम पर इतना बड़ा आरोप लगाओगे, जेनोसाइड. नरसंहार हुआ गुजरात में, तो हमें भी जवाब देना पड़ेगा। उस दिन मैंने कहा था कि गुजरात की स्थिति को समझना पड़ेगा। जार्ज फर्नांडीज जी ने अपने प्रवचन में कहा कि आजादी के बाद इस पूरे देश में एक ऐसी मानसिकता बन गई, आजादी की पहली रात को भी बनी थी, क्या हम यह सच्चाई नहीं जानते कि उस वक्त 14 अगस्त की रात को देश में कितना बड़ा कत्लेआम हुआ था। देश में ऐसा कौन सा प्रदेश है जहां 55 साल में कभी कोई दंगा न हुआ हो। दंगे होते रहते हैं, कारण है कि प्रजा के बीच ऐसी शक्तियां है जो उसको गुमराह करने की कोशिश करती हैं।

उपाध्यक्ष महोदय, मैंने उस दिन कहा था कि इसकी जड़ में जाना होगा। गुजरात के दंगे की चर्चा हुई, इतने लोग मारे गए, इतने दिन कर्फ्यू लगा, इतने दिन बाद भी स्थिति कंट्रोल में क्यों नहीं आ रही है, दो महीने हो गए हैं। जब यह सवाल आपने हमसे किया तो हमारे मन में भी यह आएगा कि 1985 में आपके शासन में साढ़े चार महीने तक दंगा चला था। आप कहते हैं कि नरेन्द्र मोदी के शासन में 800 मुसलमानों को मारा गया, तो मैं आपसे सवाल करता हूं कि 1969 में पांच हजार मुसलमान अहमदाबाद में क्यों मारे गए थे ?

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी : हमने सोलंकी को बदला था।

श्री हरिन पाठक : छः महीने के बाद बदला था। इसलिए मैंने अपने भााण में कहा था, मुझे आज भी स्कोर नहीं करना है। मैंने कहा था कि मैं नहीं बोलूंगा। मैं हरिन पाठक के नाते बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। लेकिन इस सदन में बोलने के लिए संसद सदस्य होना जरूरी है इसलिए मेरे नाम के बाद सांसद शब्द जुड़ा है। मुझे पार्टी ने मंत्रिमंडल में मंत्री पद दिया है इसलिए मैं मंत्री के नाते यहां बैठता हूं।

मैंने गुजरात को करीब से देखा है। मैंने उस शहर की गलियों को देखा है, हर गांव को देखा है। शायद ही किसी ने इतने करीब से देखा होगा। 1985 में दंगे के बाद राजस्थान के जस्टिस दवे की अध्यक्षता में एक कमीशन नियुक्त किया गया। कांग्रेस के शासन में यह नियुक्ति हुई थी। प्रतिपक्ष की नेता से मैं कहूंगा, हमने यह नहीं कहा, जो अंग्रेजी में " हैंडपिक्ड" होता है। अब किसी न्यायमूर्ति के बारे में जिसने अपना काम शुरू कर दिया है, उसके बारे में आप यह कह सकते हैं ? इस देश की प्रतिपक्ष की नेता संसद में एक न्यायमूर्ति के खिलाफ टिप्पणी करती हैं कि वह " हैंडपिक्ड" हैं। अभी से उसके खिलाफ हो गए।

श्री पवन कुमार बंसल : आप उनकी क्या बैकग्राउंड जानते हो ?

श्री हरिन पाठक : हां, मैं जानता हूं कि बैकग्राउंड किसकी क्या होती है। आपने जो भी पत्रिकाएं पढ़ी हैं, क्या वे सच हैं। आपने जो भी कहा क्या, वह सच है। अब यह जो दवे कमीशन की रिपोर्ट आई है, बहुत बड़ी रिपोर्ट है। 1985 के दंगों के बाद उन्होंने उसके प्रकरण 6 में जो कि गुजराती में है पूरी रिपोर्ट है । मैं उसकी हिन्दी करता जाऊंगा। " गुजरात के दंगे और आंदोलनों का इतिहास " उनका पहला वाक्य मैं पढ़ता हूं। मुझे तुरंत इसकी हिन्दी करनी है। प्रकरण 6 का पहला वाक्य यह है कि जो मैं कहता हूं कि गुजरात में बार-बार दंगे होते हैं, जो दवे कमीशन ने भी कहा है। 'गुजरात में पुनरावृत्तिक दंगों के कारणों को समझना अगर हो तो गुजरात राज्य के दंगों और आंदोलनों के इतिहास को समझना पड़ेगा।' चाहे वह 2002 का दंगा हो, चाहे 1985 का दंगा हो मगर समझना पड़ेगा कि वहां दंगे बार-बार क्यों होते हैं? दंगे नियंत्रण में क्यों नहीं आते? क्या नरेन्द्र मोदी को बदलने से दंगे कंट्रोल में आ जाएंगे ? एक व्यक्ति खड़ा होकर कह दे कि मैं गारंटी लेता हूं कि यदि नरेन्द्र मोदी को बदल देंगे तो दंगे बंद हो जाएंगे।... (व्यवधान) इसका मतलब यह है कि आप इन दंगाइयों से मिले हुए हैं।...(व्यवधान) आपको मालूम है कि दंगे कौन करते हैं। इसलिए आप कहते हैं कि नरेन्द्र मोदी हट जाएंगे तो दंगे बंद हो जाएंगे। ... (व्यवधान) दंगे के कारणों में जस्टिस दवे साहब अपनी रिपोर्ट में क्या लिखते हैं कि पुलिस शहर में सफल क्यों नहीं होती, वह लिखते हैं कि यह जो शहरी कोर्ट का विस्तार है, मैं आपको अहमदाबाद की जॉग्रफी भी बता दूं क्योंकि कई प्रतिनिधि मंडल गये हैं। वे वहां एयरपोर्ट से सीधे कैम्प और कैम्प से सीधे सर्किट हाउस और फिर मीटिंग और फिर वापसी। पचास लाख की आबादी का शहर है। पुराने शहर का नाम कर्णावती था। उसके बाद वह अहमदाबाद बना। आज

उसकी पचास लाख की आबादी है। शहर तीन हिस्सों में बंटा है। एक पूर्व का विस्तार जिसमें गरीब मजदूर लोग रहते हैं, जिसे मैं रिप्रेजेंट करता हूं। बीच वाला शहरी विस्तार जिसे कोर्ट विस्तार कहते हैं और नदी के पश्चिम छोर का विस्तार जरा समृद्ध विस्तार है, वह पश्चिमी अहमदाबाद में है । सारे मोहल्ले कोट के विस्तार में है। दंगा आजकल कहां होता है? आपने टी.वी. पर पांच नाम सुने होंगे। अहमदाबाद शहर में जो विस्तार है, उसमें से पांच नाम रोज टी.वी. पर सुनते होंगे। एक है कालुपुर, दूसरा है दरियापुर, तीसरा है जमालपुर और चौथा जुहापुरा है और पांचवा गोमती पर राजपुर है। ये पांच विस्तार हैं जहां हिन्दू मुसलमानों की बस्ती है। कभी-कभी कुछ इलाकों में कालूपुर में अगर 80 प्रतिशत मुसलमान हैं तो उनके बीच दो मोहल्ले हिन्दुओं के हैं। जुहापुरा जहां 90 प्रतिशत मुसलमान हैं तो उसकी एक कि.मी. की दूरी पर कोई हिन्दू सोसायटी की बस्ती है। जमालपुर जो पूरा विस्तार मुसलमानों का है, वहां शायद कोई एक-दो मोहल्ला बचा होगा जो दलितों का है और 400-500 लोगों की आबादी बसती होगी।

जो कोट विस्तार है, जब दंगे भड़कते जाते हैं तब दवे कमीशन लिखते हैं कि इस शहर की ज्योग्राफी कैसी है। हमारे यहां जिसे पोल कहते हैं, यानी स्ट्रीट, ये पूरा विस्तार - कायदानि संस्थासाये रक्षणपुरू पाडे छे; - यानी कानून का पालन करने में कितनी कठिनाइयां होती हैं, उस पर दवे कमीशन ने लिखा है कि पुलिस क्यों सफल नहीं होती, दंगे क्यों नहीं रुकते। वे कहते हैं कि कोट विस्तार अजोड़ है। पोल में पोल, गली में गली में और वह छोटी संकड़ी सी गली, जहां दो व्यक्ति एक साथ नहीं जा सकते, उसमें नानी पोल और गलियों के दरवाजे मजबूत हैं, जिससे तूफान के दरम्यान पुलिस को व्यवस्था कायम करने के लिए बहुत तकलीफ होती है। जब दंगे होते हैं तब बड़ी संख्या में चोरी-छिपे, अलग-अलग गलियों के रास्ते से सैंकड़ों-हजारों की संख्या में इस तरफ लोग मुख्य रास्ते पर उमड़ आते हैं, पुलिस का घेराव किया जाता है। पुलिस आए, उससे पहले तूफान करके उन्हीं गलियों में से लोग भाग जाते हैं, जिससे पुलिस को उन्हें पकड़ने में भी तकलीफ होती है। ऐसी स्थिति इस शहर की है।

महोदय, मैंने अपने भााण में उस दिन भी कहा था कि हम इसकी जड़ में जाएंगे, लेकिन आज मुझे इस बात का दुख है, मैं कब से सुन रहा हूं और करीब 27 माननीय सदस्यों ने भााण कियास, मैं किसी पर आरोप नहीं करने वाला हूं, मुझे थोड़ा सा समय दीजिए। आपने जो बात कही है वह सही है। मैंने उस दिन भी कहा था कि नियम 193 के अंतर्गत 11 मार्च को हमने जो चर्चा की तो उस चर्चा में से क्या निकलना चाहिए था, जैसा ममता जी ने कहा कि कोई ऐसा सुर निकले, जिससे ये दंगे रुकें, दोबारा न हों। आपने मुख्य मंत्री को 1985 में हटा दिया, लेकिन फिर 1991-92-95 और 2000 में दंगे हुए और फिर कभी भी हो सकते हैं, क्या संसद की जिम्मेदारी नहीं है। यहां कितने महानुभाव बैठे हैं, जिनका मैं आदर एवं सम्मान करता हूं, जिनके चरण स्पर्श करना मैं अपना अधिकार समझता हूं। क्या हम सब की कोई जिम्मेदारी नहीं थी कि इसके बारे में हम सोचें। मगर यह नहीं सोचा जाता है। यह सोचा जाता है कि इसका कैसे राजकीय लाभ उठाया जाए। चन्द्रशेखर जी, 11 तारीख को हमने सवा आठ घंटे चर्चा की। इन सारे दंगों को मैं दो हिस्सों में

बांटता हूं । मैं उसका प्रमाण भी थोड़ी देर के बाद रखूंगा। एक 27 तारीख की घटना है। चतुर्वेदी जी, आपने जो कहा, उसे सुन कर मुझे बड़ा दुख हुआ। आपके प्रति मुझे बड़ी श्रद्धा है। वैसे तो सभी मेरे मित्र हैं, लेकिन आपने यह साबित करने की कोशिश की कि वहां भाजपा ने ाडयंत्र किया कि आने वाला चुनाव गुजरात में कैसे जीता जाए, इसीलिए सब कुछ हुआ। इसका मतलब यह हुआ कि 27 तारीख को भी गोधरा कांड भाजपा ने कराया। यह कहा गया कि हमने ट्रेनें जलाई, हिन्दुओं के बच्चे हमने जलाए, ताकि चुनाव जीत जाएं। अगर यह आपकी मानसिकता है तो मुझे दुख होता है कि संसद में चर्चा का स्तर कहां तक जाता है। प्रधानमंत्री जी पर आरोप लगाए जाते हैं कि आपने ऐसा क्यों कहा। मैंने उस दिन ईमानदारी के साथ कहा था, जब प्रतिपक्ष की नेता आदरणीय सोनिया जी ने कहा कि हम पार्टी से ऊपर उठ कर सोचें तो मैं सबसे कहूंगा कि आप अपने हृदय पर हाथ रखकर देखिए, अपनी आत्मा से पूछिए कि अगर 27 तारीख की खौफनाक घटना गोधरा में न होती तो क्या आज गुजरात की ऐसी स्थिति होती।

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी : जी हां, होती।

श्री हरिन पाठक : नहीं होती, क्यों होती।... (व्यवधान)

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी : मैं आरोप लगाता हूं और जिम्मेदारी के साथ लगाता हूं।... (व्यवधान)

श्री हरिन पाठक : उपाध्यक्ष महोदय, प्रधान मंत्री जी पर टिप्पणी कर दी। जिनके जीवन के बारे में आपने सोचा तक नहीं, पढ़ा तक नहीं। पढ़ा भी है तो आपको अपने पर इतना अभिमान हो गया कि आप सीधे प्रधान मंत्री जी पर टिप्पणी करने लगे। मैंने पढ़ा था 1984 के सभी अखबारों में रात के ढाई बजे एक साठ साल का आदमी लूंगी पहनकर के 6 रायसीना रोड से, अपने घर से दौड़ता हुआ निकला जब उसने निर्दोा सिखों की मरने की चीखें सुनीं। जो टोली सिखों को मार रही थी उनके सामने खड़ा हो गया और कहा कि तुम्हें मेरी लाश पर से होकर गुजरना होगा तब तुम इनको हाथ लगा सकते हो। वह आदमी और कोई नहीं था वह विराट कद का आदमी आज के प्र
ाधान मंत्री माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी हैं।

हम जब किसी की मृत्यु में जाते हैं तो उनके संबंधियों को आश्वासन देने के लिए सफेद कपड़े पहनकर जाते हैं। चाहे आदमी जैसा भी हो, कहते हैं कि जो हुआ है वह ठीक नहीं हुआ है। वहां जाकर उनकी वेदना को, उनके घाव को मरहम लगाते हैं। अगर प्रधान मंत्री जी ने उनके घावों पर मरहम लगाने की कोशिश की तो क्या कोई गलत बात की। अगर 27 तारीख की घटना निंदनीय है तो जैसा मैंने कहा कि मैं इन घटनाओं को दो हिस्सों में रखना चाहता हूं। सत्ताईस, अठ्ठाइस, उन्नतीस, एक और दो तारीख की घटनाएं। सुबह से 25 लोगों ने जो भी चर्चाएं कीं वे सारी घटनाएं 11 मार्च की चर्चा में आ चुकी। 11 मार्च से पहले ये सारी घटनाएं हो चुकी। गोधरा का हत्याकांड 27 तारीख को हुआ। नरौड़ा की दर्दनाक घटना 28 तारीख को हो गयी जिसमें 90 लोगों को जलाया गया। उसी दिन दोपहर को एहसान जाफरी और उनके परिवार को ...(व्य

वधान) मुझे सच्चाई कहने से कोई रोक नहीं सकता है। जो चार बड़ी-बड़ी शर्मनाक, खौफनाक, दर्दनाक घटनाएं हुईं और जिनकी निंदा हर व्यक्ति को करनी चाहिए, वे थीं गोधरा, नरौड़ा के लोगों और गुलमर्ग के लोगों को जलाया जाना, महसाणा-साबरकाठा के सरदार पुरा में लोगों को जलाया जाना। पांच तारीख के बाद छुट-पुट घटनाएं होती रहीं। आज सुबह 12 बजे से अब तक सारी घटनाओं पर बातचीत हो गयी। लेकिन उसके बाद क्या हुआ? 11 तारीख से पहले इन सारे दंगों का मानवीय हल निकालने के बजाए उनको राजनैतिक रूप दे दिया गया। फिर ये घटनाएं जारी रहीं। सुबह से सभी ने यहां पर अखबार पढ़े हैं। माननीय उपाध्यक्ष जी, मैंने आपके लिए एक कागज लिखकर रखा है। अगर आप कहें तो मैं उसे आपको दे दूं क्योंकि यहां कहा गया कि अखबार पढ़े जाएंगे या नहीं पढ़े जाएंगे। फिर सोनिया जी ने भी तीन-चार अखबार यहां पढ़े।

सब लोगों ने अखबार पढ़े। मेरे पास 5 मार्च से लेकर आज तक गुजरात के सभी सात दैनिक अखबारों की कटिंग्स हैं। हमारी पार्टी का इन अखबारों से कोई लेना-देना नहीं। ये समाचार पत्र हैं - ' गुजरात समाचार ' ' संदेश ' ' जनसत्ता ' ' लोकसत्ता ' ' समभाव ' ' जय हिन्द ' और ' जन्म-भूमि' । इन अखबारों की 50 लाख प्रतियां गांव-गांव तक जाती हैं। इन अखबारों की एक महीने तक क्या क्या हैडलाइन्स रहीं, वह पढ़कर अपना वक्तव्य समाप्त करूंगा। हम सब मानते हैं कि अखबारों में मोटी-मोटी तीन तरह की बातें छपती हैं। हम राजनैतिक नेताओं का निवेदन कि हम ने संसद में यह कहा, नहीं कहा तो भी वह अखबारों में छप जाता है। दूसरा, बड़े विद्वान- जैसे मणिशंकर जी या बड़े-बड़े लोगों के आर्टिकल छपते हैं। तीसरी बात यह है कि न सिर्फ आर्टिकल छपता है, न सिर्फ निवेदन छपता है, मगर वो छपता है यानी अखबार जो वे लिखते हैं अपनी रिपोर्टिंग । अखबारों ने जो देखा, उसकी तस्वीर ली जमीनी सच्चाई को जाना और जो पत्रकार होते हैं उनकी जान पर हमला होता है तो भी जाकर सच्चाई लाते हैं, वो छपता है । मैं इनकी हैडिंग पढ़ने जा रहा हूं …(व्यवधान) मैं यह क्यों पढ़ने जा रहा हूं? सच्चाई कड़वी होती है सबसे पहले अखबार वालों ने हम लोगों पर ताना मारा है - *

SHRI R.L. JALAPPA (CHIKABALLAPUR): What is the time limit, Sir?

MR. DEPUTY-SPEAKER: We have extended the time till the Motion under Rule 184 is disposed of.

श्री हरिन पाठक : उन्होंने यह आर्टिकल लिखा है- ' गुजरात के सांसद चुप-चुप बैठे हैं संसद में, गुजरात से बाहर के आलिया-मालिया गुजरात की माता का वस्त्र हरण करके चले जा रहे हैं। हम गुजरात के संसाद होकर गुजरात की दुखभरी स्थिति को क्यों नहीं बताते हैं । ' 26 तारीख को यह अखबारो में छापा है। मेरा कर्तव्य बन जाता है। इसलिये मैने कहा कि मैंने सात अखबारों के नाम लिये हैं।

SHRI MADHUSUDAN MISTRY : This is too much. They have never said like that. This is not expected from you. … (*Interruptions*)

SHRI PRAVIN RASHTRAPAL : Do you admit that you are a ..*

*.*Expunged as ordered by the Chair.*

SHRI HARIN PATHAK: I do not agree. However, I agree that I must tell the truth to the nation. … (*Interruptions*)

SHRI MADHUSUDAN MISTRY : We do not expect this from you. … (*Interruptions*)

SHRI HARIN PATHAK: It is my duty to tell the truth to the Parliament; it is my duty to tell the truth to the people of the country. … (*Interruptions*)

SHRI MADHUSUDAN MISTRY : I can cite an example from Gujarat. Are you going to cite an example from Gujarat?

11 मार्च के पहले कच्छ और भुज में शांति थी। वॉयलेन्स की एक भी घटना सौराट्र के कच्छ और भुज में नहीं हुई। गुजरात समाचार, 3 मार्च, 2002, अंजार में हनुमान मूर्ति का खंडन और दंगो की शुरूआत। 3 मार्च, अहमदाबाद में शांति। गृह मंत्री जी अगर भााण करेंगे तो उसमें कहेंगे कि किस-किस दिन कर्फ्यू था। गांधी रोड पर चंद्रविलास होटल के पास 37 दुकानें आग से भस्मीभूत।

श्री मधुसूदन मिस्त्री : आपकी 11 मार्च की चर्चा में आ गया।

श्री हरिन पाठक : किसी ने नहीं कहा । आपके हर सवाल का जवाब इसमें आ गया है। आप कहेंगे कि फिर आप रोकते क्यों नहीं हो। अगर ऐसे तत्व हैं तो आप उन्हें रोकते क्यों नहीं हो, उसका जवाब इसी में है। आपके मन की हर दुविधा का इसमें समाधान है। 4 मार्च - मेन रिलीफ रोड पर एस.आर.पी. तम्बू चौकी पर महिलाओं का हमला। ये महिलाएं अल्पसंख्यकों के कुछ कट्टरवादी तत्वों की रिश्तेदार थीं। 4 मार्च -सूरत, नैनीनाथ मंदिर पर सशस्त्र भीड़ का हमला। कालूपुर, ढाई हजार महिलाओं ने पुलिस थाने को घेर लिया। 9 मार्च - शंकर सिंह जी आपको मालूम है, आप इसके साक्षी हैं कि कालूपुर में क्या स्थिति है। अहमदाबाद में कालूपुर, जुहापुरा, जमालपुर ऐसे क्षेत्र हैं, जहां आठ पुलिस चौकियों में पुलिस जाने से डरती है। वहां जाने की पुलिस की हिम्मत नहीं है। यह घेराव करने की बात आज की नहीं है। 1992 में एक एन्टी-सोशल कट्टर वादी, जिसका नाम अब्दुल लतीफ था, उसने पांच जगह से 1991 में कारपोरेशन का चुनाव लड़ा

था और वह पांचों जगहों से चुनाव जीत गया। उसके खिलाफ आर.डी.एक्स से लेकर हजारों खून करने का इल्जाम था। उसे पकड़ने के लिए एक दिन पुलिस गई। उसके समर्थकों ने 1992 में कालूपुर पुलिस स्टेशन को घेरा। उसके बाद मुझे मालूम है कि शंकर सिंह जी जब मुख्य मंत्री थे, तब उन्होंने लतीफ को पकड़ा था, लेकिन वह कूदकर कहीं भाग रहा था, तब पुलिस ने उसे मार दिया था। ... (व्यवधान) पार्टी कौन सी होती है, बी.जे.पी. को छोड़कर, उसके सभी पार्टियों से रिश्ते थे। प्रेम दरवाजा, बागड़ीवास वहां के 600 दलित, पीड़ित नागरिक भगवान के भरोसे थे। संदेश - 22 मार्च - नंगी तलवारों के साथ दौड़ते हुए हिंसक टोले ने शहर में अफरा-तफरी मचाई। 22 मार्च - इसकी तरफ मैं संसद का ध्यान जरूर दिलाना चाहूंगा कि कौन शुरू करता है। शंकर सिंह जी आपको इसका जवाब चाहिए कि दंगा 11 मार्च के बाद भी क्यों चालू रहा। 22 मार्च को पूरे शहर में शांति थी। विधान सभा चालू थी, संसद भी चालू थी। शुक्रवार था, ढाई बजे अचानक एक जगह कालुपुर से हजारों लोग निकल पड़े और खेडी बाजार, सिंधी बाजार में 150 दुकानें खाक हो गईं। पुलिस पर गोलियां दागीं और पेट्रोल बम मारे गये। 21 मार्च - समभाव। दूसरा अखबार - जैसे गोधरा में हुआ, हूबहू मोड़ासा में एक हजार के टोले ने एल.आई.सी. बिल्डिंग को घेर लिया। अगर पुलिस समय पर नहीं पहुंचती तो उस बिल्डिंग में जितने लोग थे, सब मारे जाते।

वडोदरा के पुलिस कमिश्नर टुटेजा पर एसिड से हमला हुआ, यह 2 अप्रैल की बात है। अभी-अभी कालूपुरा में विदेशी राकेट लांचरों से हमला किया जाता है। मैं ज्यादा नहीं पढ़ूंगा क्योंकि आपको अच्छा नहीं लगता है। आप बता रहे थे कि परसों तीन लोग दंगों में मारे गए। वे कौन लोग थे जो मारे गए? वे दंगों में नहीं मारे गए बल्कि मंसूरीवाड़ कालूपुरा में रात के साढ़े तीन बजे वे बम बनाते थे। ...(व्यवधान)

श्री शिवराज वी.पाटील : आपकी ही तो सरकार वहां पर है।

श्री हरिन पाठक : इसलिए मैं कहता हूँ कि टोली आती है। ... (व्यवधान)

श्री शिवराज वी.पाटील : जिम्मेदारी किसकी है?

श्री हरिन पाठक : जिम्मेदारी सबकी है। इनको कौन भड़काता है, कौन शरण देता है यही तो स वाल है। ...(व्यवधान) शरणार्थियों की बात की जाती है। देवेगौड़ा जी ने भी चिन्ता व्यक्त की, 1969 में दंगे हुए, लेकिन कोई शरणार्थी कैम्प नहीं खोला गया, 1985 में दंगे हुए, लेकिन कोई शरणार्थी कैम्प नहीं खोला गया। 1995 में दंगे हुए लेकिन कोई शरणार्थी कैम्प नहीं खोला गया, हमारी सरकार के समय में हुआ तो हमारी सरकार ने एन.जी.ओ. के साथ मिलकर सारे कैम्प खोले और उन्हें सारी सुविधाएं दीं। क्या हमने कोई गुनाह कर दिया? ...(व्यवधान) मैं अपनी बात खत्म करूंगा। मैं कहना चाहता हूँ कि संसद को सोचना होगा कि सांप्रदायिक दंगों को राजनैतिक रूप देकर हम समाज का भला नहीं करेंगे। इस्तीफों से यह समस्या हल होने वाली नहीं है। समाज

बंट चुका है, यह सच्चाई है। ... (व्यवधान) मेरे कहने का अर्थ यह नहीं कि मैं किसी पर आरोप लगा रहा हूँ, मगर इसलिए सदन से कहना चाहता हूँ कि सिर्फ पिछले एक महीने से ... (व्यवधान) मैं इसीलिए यह बात सदन में रखना चाहता हूँ। मेरी भावना कोई दूसरी नहीं है मगर पिछले दो महीने से ऐसी हवा चली है देश भर में और आप नियम 184 का नोटिस भी देखिये, सिर्फ उसमें यह कहा गया है नायडू जी कि जैसे सिर्फ अल्पसंख्यकों पर हमले होते हैं, बहुसंख्यकों पर कुछ नहीं हुआ। 36 दलितों को मारा गया। 22 तारीख को मैं और जार्ज साहब जब चैम्बर ऑफ कामर्स में बैठे थे, शहर में शांति थी। ढाई बजे एक पुलिस वाले को खींचकर तलवार से उसके तीन टुकड़े कर दिये गये। सिर्फ अल्पसंख्यकों पर नहीं होता है। बहुसंख्यकों पर भी पिछले डेढ़ महीने से गुजरात और अहमदाबाद में दलित, शोाति, पीड़ित, बहुसंख्यक, सभी कौम के लोगों पर इन आततताइयों का आतंक मचा है। इसलिए मैं कहता हूँ कि इस पर हमें गहराई से सोचना चाहिए। सोनिया जी ने ठीक कहा कि पार्टी से ऊपर उठकर हमें सोचना चाहिए। आप भी ऊपर उठिये, मुलायम जी आप भी ऊपर उठिये। प्रधान मंत्री जी तो जब से राजनीति में आए हैं, उससे पहले से उनका सारा जीवन राट्र और समाज को समर्पित है, आप क्या उनको पार्टियों में बांधेंगे।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं क्षमा चाहता हूं अगर मेरी इन बातों से किसी को दुख हुआ हो मगर यह बताना जरूरी था। यह जमीनी सच्चाई है कि गुजरात में हमारा समाज बंट चुका है। गुजरात में सबका मन बंटा है, उनका दिल बंटा है, उनकी आत्मायें बंटी हैं। कम से कम नियम 184 के अन्तर्गत आज आप उनको और संसद को बांटने का काम मत करिये। यहां से गुजरात में क्या मैसेज जायेगा ? यही मैसेज जायेगा कि कुछ लोग उसकी तरफदारी करते हैं और कुछ लोग इसकी तरफदारी करते हैं। मैं कहना चाहता हूं कि क्या गुजरात में यह सही मैसेज जायेगा ? मेरी प्रार्थना है कि इस समाज को बांटने से रोकने का काम करना चाहिए। उस दिन, 11 तारीख को भी प्रार्थना की थी कि हम सब इस राजनीति से ऊपर उठकर जैसा अभी कहा गया कि ऐसी बात यहां से गुजरात में भेजें, ममता दीदी ने कहा कि सब मिलकर शांति के लिए कोशिश करेंगे तो मुझे लगता है कि सही अर्थ में गुजरात में शांति स्थापित होगी।

" दुनिया में अंधेरा है, एक चिराग जला दो,

सोते हुए भारत को उठो फिर से उठा दो,

आपस में लड़े हैं, खून भी बहुत बहा है,

जो कुछ भी हुआ है, अच्छा है. उसे भूला दो,

न हिन्दू, न मुसलमान, न सिख न ईसाई,

शौदा है वतन हम दुनिया को दिखा दें।"

आओ, हम सब आगे आकर भारत के संविधान में आस्था व्यक्त करें। भारत की बिन साम्प्रदायिकता किसी पार्टी की देन नहीं है। हमारी बिन साम्प्रदायिकता हमारी संस्कृति में है। जब से धरती पैदा हुई, जब से इंसान पैदा हुआ तब से इस भारत में बसने वाला हिन्दू भी बिन साम्प्रदायिक है। उसे किसी पार्टी के सर्टीफिकेट की जरूरत नहीं है। हमारे यहां वेदों की ऋचायें लिखी हैं। हर कमरे में वेदों की ऋचायें लिखी हैं। उपनिाद् के श्लोक लिखे हैं। आपकी कुर्सी पर सत्यमेव जयते लिखा है। क्या यह साम्प्रदायिक सूत्र है ? आओ, हम मिलकर गुजरात में शांति स्थापित करने के लिए एक आवाज में बात करें।

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI : Sir, at what time we will have voting? Will the Debate go on throughout the night?

MR. DEPUTY-SPEAKER: It will not go on throughout the night.

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI : If the time of the voting is fixed, that will be better. The hon. Home Minister has to speak, and the hon. Prime Minister has also to reply.… (*Interruptions*)…The time for voting should be fixed… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: There are some smaller parties which have, so far, not been given a chance to contribute in the discussion. I will give chance to them to speak briefly. We will finish the debate as early as possible.

… (*Interruptions*)

SHRI SONTOSH MOHAN DEV (SILCHAR): Sir, there is no arrangement about tea or snacks for Members or staff. This is not fair.… (*Interruptions*)

श्री तरित बरण तोपदार (बैरकपुर) : उपाध्यक्ष महोदय, क्या सबको एक-एक घंटा बोलने के लिए

मिलेगा ?

उपाध्यक्ष महोदय : सबको पांच-पांच मिनट ही मिलेंगे।

कुंवर अखिलेश सिंह : उपाध्यक्ष महोदय, कल पहली मई है और पहली मई को मजदूर दिवस है। मेरा आपसे विनम्रतापूर्वक आग्रह है कि 12 बजे तक बहस कराई जाये और बाकी बहस को दूसरे दिन यानी 2 मई में ले जाया जाये।

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI : Sir, May 1 is a holiday. How can we conduct the business on a holiday?… (*Interruptions*)

श्री पवन कुमार बंसल : उपाध्यक्ष महोदय, खाने का कोई इंतजाम नहीं है। … (व्यवधान)

स्टॉफ के लिए भी खाने का कोई इंतजाम नहीं है।

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: 1st May is a holiday technically. After 12 o'clock, it is 1st May. What should we do? It is a difficulty. … (*Interruptions*)

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI : 1st May is declared as a holiday by the Government. … (*Interruptions*)

श्री अनंत गंगाराम गीते : गुजरात में जो घटना घटी है, उस पर यहां चिन्ता जताई जा रही है, उस पर यहां चर्चा हो रही है। इस सदन के लिए क्या महत्वपूर्ण है - गुजरात पर हुई चर्चा या एक मई की छुट्टी, यह पहले तय कर लें। …(व्यवधान)

कुंवर अखिलेश सिंह : एक मई मजदूर दिवस है।… (व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: The only alternative left is to request the Prime Minister to give his reply and then, go for voting. If the House agrees, we can do it.

… (*Interruptions*)

SEVERAL HON. MEMBERS: Yes. … (*Interruptions*)

SHRI SHIVRAJ V. PATIL : We leave it to you. … (*Interruptions*)

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : हम 11 बजे से सबका भााण सुन रहे हैं, हमारा क्या होगा।... (व्यवधान) यह क्या फैसला हो रहा है। दो मई को करें, वह हमें मंजूर है लेकिन क्या वैसे ही वोटिंग हो जाएगी। हम 12 बजे से एक मिनट के लिए ऐबसैंट नहीं हुए, नाश्ता, भोजन सब साफ है। ...(व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: There are as many as 18 hon. Members to speak. We may allow the Members of the parties not represented so far to speak now. There may be four or five parties. Even then, we will cross 12 o'clock. I will be guided by the leaders as to how we have to proceed now. Otherwise, even if we request the hon. Leader of the House to give his reply and then if we go for voting, then also, we will cross 12 o'clock. Therefore, technically, we will not be able to complete it now.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Jha, please allow me to speak. You are not allowing the Chair even to make an observation.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Prabhunath Singh, will you please resume your seat?

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: I would like to be guided by the leaders as to whether we have to adjourn the House to take it up on the 2nd May or to continue now.

SEVERAL HON. MEMBERS: We can continue now.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Okay. We will continue.

Please do not interrupt. Every hon. Member will take only 10 minutes only.

श्री रघुनाथ झा (गोपालगंज) : यह क्या हो रहा है। ...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : आप क्या करते हैं।

…(व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Bangarappa, it is the sense of the House. What can I do? Every hon. Member will take five minutes each.

श्री मुलायम सिंह यादव : सदन की भावना है, आप चलाएं, लेकिन कम से कम आपकी कृपा हो जाए कि कौन कितना बोलेगा तो ठीक रहेगा, नहीं तो कल 12 बजे तक हाउस चलता रहेगा।

उपाध्यक्ष महोदय : कल का तो पता नहीं, लेकिन आज 12 बज गए हैं।

श्री मुलायम सिंह यादव : कहीं न कहीं कोई स्टेंड लेना पड़ेगा।

उपाध्यक्ष महोदय : इसलिए तो निर्णय लिया है।

श्री मुलायम सिंह यादव : ठीक है चलाइए, लेकिन ऐसा कब तक चलेगा, कहीं न कहीं तो स्टेंड लेना पड़ेगा।

उपाध्यक्ष महोदय : अनरिप्रजेंटिड पार्टियों के लिए पांच-पांच मिनट तय किए हैं।

श्री मुलायम सिंह यादव : कोई निर्णय तो लें कि दो बजे तक चलेगा या ढाई बजे तक चलेगा।

उपाध्यक्ष महोदय : दो बजे तक।

… (व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: We have wasted more time like this than in deliberations.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Now, five minutes each would be given to the parties which have not been given time so far.

श्री रघुनाथ झा : सबको पांच-पांच मिनट का समय दे दें।… (व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: What is this happening? Hon. Members, either you take your seats or you may go out.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Let there be order in the House. Again, you are wasting the time of the House.

… (*Interruptions*)

श्री सलीम आई. शरेवानी (बदायूं) : हम लोग यहां 542 सदस्य हैं। इस सदन में हिन्दुस्तान के कोने-कोने से आते हैं। हर बिरादरी और मजहब के लोगों की हम नुमाइंदगी करते हैं। जो गोधरा में हुआ, उसकी एक लफ्ज से पूरे सदन को निंदा करनी चाहिए, वह गलत हुआ, नहीं होना चाहिए। उसके बाद जो गुजरात में हुआ, उसकी भी एक आवाज से हमें निंदा करनी चाहिए।

उपाध्यक्ष महोदय : सुबह 12 बजे से यही हो रहा है और अब रात के 12 बजने वाले हैं। Your suggestion ought to have come 12 hours earlier. You could have benefited us.

श्री सलीम आई. शेरवानी : मैं सुझाव दे रहा हूं कि यह हिन्दू-मुसलमान की बात नहीं है, यह इन्सानियत का खून हो रहा है, बेगुनाहों का खून हो रहा है। अगर एक आवाज से हम इसकी निंदा नहीं करेंगे तो हमारे मुल्क में ये दंगे खत्म नहीं होंगे। हम लोगों का यह फर्ज बनता है कि बेगुनाहों के खून को हम रोकें। इसलिए मैं पूरे हाउस से अपील करना चाहता हूं कि हम एक लफ्ज से इसकी निंदा करें।

उपाध्यक्ष महोदय :अब यहां से शुरूआत करते हैं। मैं मि. राशिद अलवी को बोलने के लिए पुकार रहा हूं।

1. <u>hrs.</u>

श्री राशिद अलवी (अमरोहा) : डिप्टी स्पीकर साहब, मैं आपका शुक्रगुजार हूं कि रात के ठीक 12 बजे बहुजन समाज पार्टी, जो काफी बड़ी पार्टी है, जिसके 13 सदस्य हैं, उसे आपने पांच मिनट बोलने का समय दिया। हमारी पार्टी संसद में सातवीं सबसे बड़ी पार्टी है, लेकिन करीब 20वें या 25वें नम्बर पर आप मुझे बुला रहे हैं, फिर भी मैं धन्यवाद पेश करता हूं।

सुबह से गुजरात के इस इश्यू पर तमाम राजनीतिक दलों के नेताओं के भााण मैं सुन रहा हूं। आरोप और काउंटर एलीगेशन एक-दूसरे पर इस हाउस में लगाए जा रहे हैं। पिछले 54 साल का

इतिहास गुजरात के अंदर जो कुछ हुआ, वह बार-बार यहां पर रिपीट किया गया। एक राजनीतिक दल दूसरे राजनीतिक दलों पर इल्जाम लगाता है कि जब आप सरकार में थे तो हिन्दुस्तान के अक्लियतों का खून इस तरह बहा था। दूसरा राजनीतिक दल दूसरे राजनीतिक दल पर यह इल्जाम लगा रहा है कि जब आप सरकार में हैं तो अक्लियतों का खून इस मुल्क के अंदर इस तरह बहा। मैं अक्लियतों की तरफ से पूछना चाहता हूं कि मैं किससे सवाल करूं, मैं किसके आगे हाथ फैलाऊं कि जो खून इस मुल्क में बह रहा है, उसके लिए कौन जिम्मेदार है ?

मैंने जार्ज फर्नांडीज साहब का भााण सुना। जार्ज साहब मेरे लिए बहुत काबिलेएहतराम हैं। जब मैं स्कूल में पढ़ता था तो जार्ज साहब की तकरीरें सुनता था। मैं खुदा से दुआ मांगता था कि मैं भी ऐसी तकरीरें करने लगूं, जैसी वे करते हैं। लेकिन आज जार्ज साहब ने जो आर्ग्युमेंट दिए, उसका मुझे अफसोस है। 1984 के अंदर जो दंगा दिल्ली में हुआ, मेरे पास अल्फाज नहीं हैं, जिनसे मैं उसकी निंदा कर सकूं। एक बदतरीन वाक्या हुआ था। लेकिन यह दलील नहीं दी जा सकती कि 1984 में आपकी सरकार में ऐसा हुआ था इसलिए दूसरी सरकार में ऐसा हो रहा है। पाठक साहब कह रहे थे। मुझे उनकी एक बात बहुत अच्छी लगी। उन्होंने कहा कि 1984 के अंदर एक इन्सान सड़कों पर खड़ा हो गया, उसने तूफान को, उस बदतमीजों को रोकने की कोशिश की। मैं बैठे-बैठे सोच रहा था, काश गुजरात के अंदर भी ऐसा एक इन्सान आ जाता और खड़ा हो जाता तो शायद गुजरात में ऐसा वाक्या नहीं होता। गुजरात के अंदर जो कुछ हुआ, वह हिन्दू और मुसलमान का सवाल नहीं है। गोधरा के अंदर जो कुछ हुआ, उसकी निंदा करने के लिए मेरे पास अल्फाज नहीं हैं। नियम 193 के तहत जब इस हाउस में बहस हुई थी, तो मैंने शिद्दत के साथ उसकी निंदा की थी। लेकिन दुनिया का कोई ईमानदार आदमी, दुनिया का कोई सियासतदां यह नहीं कह सकता कि गोधरा में ऐसा हुआ था इसलिए बाद में गुजरात में जो वाक्यात हुए, वे सही हैं।

मेरे पास वजीरे-आजम का बयान है। जैसा आपने कहा कि गोधरा के वाक्यात की निंदा करनी चाहिए, उसके बाद भी जो वाक्यात हुए, उनकी भी निंदा करनी चाहिए। मैं इसको एप्रिशिएट करता हूं, लेकिन गुजरात में दो महीने से लगातार वाक्यात हो रहे हैं, उससे न सिर्फ मुल्क में, दुनिया के अंदर हमारा सिर शर्म से झुक जाता है। हमारे पास उसको डिफेंड करने के लिए कोई अल्फाज नहीं हैं। मुझे तकलीफ इस बात की है कि इस हाउस के अंदर एक-दूसरे पर आरोप लगाए जा रहे हैं। हम यह नहीं सोच रहे कि गुजरात के वाक्यात को किस तरह से हम ठीक कर सकते हैं। कैसे वहां की समस्या का समाधान कर सकते हैं। जब तक ईमानदारी से बैठकर यह फैसला नहीं होगा कि गुजरात जैसे वाक्यात इस मुल्क के अंदर दोबारा न हो, ऐसे वाक्यात को रोका नहीं जा सकता। मैं सरकार से कहना चाहता हूं, वे तमाम लोग जो इस आग के अंदर तेल छिड़कने का काम कर रहे हैं, मैं किसी पार्टी का नाम नहीं लेना चाहता हूं।

<u>00.05 hrs</u>. (Dr. Laxminarayan Pandey in the Chair)

लेकिन मेरे पास अखबार के बहुत सारे इंटरव्यूज हैं। मीडिया के अंदर बहुत सारे बयानात मैंने पढ़े हैं जिसके अंदर कहा गया है कि डा. परवीन दुगाड़िया ने कहा कि

"What is wrong in Gujarat becoming lab of Hindutva? "

आगे कहा कि : Muslims can have laboratories Madarsas to terrorise Bharat. इस तरीके की जुबान गुजरात के दंगों को खत्म नहीं कर सकती। इस तरीके की घटनाएं आग को भड़काने का काम कर सकती हैं। मैं कहना चाहता हूं कि तलवार की तरफ एक धार होती है। जब तलवार चलाई जाती है तो इंसान के जिस्म में जख्म पैदा करती है लेकिन फिरकापरस्ती की तलवार दो धार की होती है जो इंसान को भी मारती है और मुल्क को भी मारती है। ऐसी किसी तलवार का जो भी कोई आदमी साथ देगा, सरकार की जिम्मेदारी होती है कि उसके खिलाफ कार्रवाई की जाये। आज इस पार्लियामेंट के अंदर हम एक-दूसरे के ऊपर कीचड़ उछाल सकते हैं। लेकिन आने वाला इतिहास ईमानदारी के साथ लिख देगा कि कौन सही था और कौन गलत था। हमें इतिहास से सबक लेना चाहिए कि आज चार सौ साल के बाद भी पूरी दुनिया अकबर-ए-आजम को मानती है कि वह सैकुलर आदमी था। आज चार सौ साल के बाद भी जहांगीर को माना जाता है कि वह इंसाफ का सबसे बड़ा नंबरदार था। आज सैकड़ों साल के बाद भी नादिर शाह को याद किया जाता है कि दिल्ली के अंदर जब वह दाखिल हुआ था तो चांदनी चौक के अंदर इंसानों की लाशें बह गई थीं। चांदनी चौक के दोनों तरफ बनी हुई गंदी नालियों के अंदर इंसानों का खून बहा था। इतिहास कभी किसी को माफ नहीं करता है। इस मुल्क के अंदर अगर अकलियत रह गई है और 1947 की अकलियतों ने इस मुल्क के अंदर रहना तय किया तो यह उनका अपना फैसला था और यह फैसला उनका इसलिए था कि वे इस मुल्क को अपना मुल्क मानती थीं। मैं तारीख के पन्नों को पलटना नहीं चाहता हूं लेकिन तारीख के पन्ने पलट-पलटकर मैं यह साबित कर सकता हूं कि हिन्दुस्तान की आज़ादी की लड़ाई में अकलियतों ने कितना खून बहाया था। मौलाना अबुल-कलाम आज़ाद, अहमदनगर की जेल के अंदर थे। वे जेल की दीवारें आज भी इस बात की गवाह हैं कि मौलाना आज़ाद की बीबी और बहन बाहर दम तोड़ती रहीं लेकिन मौलाना आज़ाद जेल से बाहर नहीं निकले। पंडित जवाहर लाल नेहरू जब मौलाना आज़ाद के पास सरकारी हुकुम लेकर गये कि आपकी बीबी बीमार है। आपको जेल से बाहर जाने की इजाजत मिल सकती है, आप चले जाइए। तब मौलाना आज़ाद ने कहा था कि मुझे हिन्दुस्तान की आज़ादी अपनी बीबी और बहन की जान से ज्यादा अजीज़ है। जिन मदरसों का जिक्र चल रहा था- मौलाना हुसैन अहमद-मदनी, मौलाना उबेदुल्लाह सिन्धी, मौलाना शेखुल-हिन्द महमूदल हसन, मौलाना बरकतउल्ला साहब, एक लम्बी फेहरिस्त मैं हाउस को बता सकता हूं। रेशमी रुमाल की तारीख आज भी तारीख के पन्नों के अंदर है कि इस मुल्क को आज़ाद कराने के लिए किस तरह से लड़ाई लड़ी थी। माल्टा के अंदर जेलों के अंदर बंद रहे। इस मुल्क की आज़ादी के लिए बंद रहे। लेकिन आज वो सारे बुजुर्ग और उस वक्त जब यह लड़ाई लड़ी थी तो न कोई हिन्दू था और न कोई मुसलमान था। ऊधमसिंह भी वह लड़ाई लड़ रहे थे, चन्द्रशेखर आज़ाद भी वह लड़ाई लड़

रहे थे, बिस्मिल भी लड़ाई लड़ रहे थे और अशफाकउल्ला भी लड़ाई लड़ रहे थे लेकिन उन्होंने वह सपना नहीं देखा था कि आज़ाद हिन्दुस्तान के अंदर हिन्दू और मुसलमान बन जाये। यह सपना नहीं देखा था कि धर्म के नाम के अंदर इस मुल्क के अंदर लड़ाई होगी और एक-दूसरे का गिरेबान एक-दूसरे के हाथों में होगा। एस. राधाकृणनन जी मुल्क के सबसे ज्यादा काबिले-एतराम शख्शियत माने जाते हैं। उन्होंने दिसम्बर 1946 में कांस्टीट्यूट असैम्बली में कहा कि :

> "Whether they are Hindus or Muslims, Princess or prisoners, they belong to this country. It is not possible for us to think that we belong to a separate identity. "

वही बात मौलाना आज़ाद ने जामा मस्जिद के अंदर तकरीर कर दी जब मुसलमानों ने अपने बोरिया-बिस्तर बांध दिये थे और पाकिस्तान जाने की बात कर रहे थे। तब मौलाना आज़ाद ने जामा मस्जिद के अंदर मुसलमानों को बुलाकर तकरीर की थी। वह तारीख-ए-तकरीर जिसमें मौलाना ने कहा था कि हिन्दुस्तान के मुसलमानों, यह मस्जिद के अजीमो-शान-मीनारें तुमसे स वाल करती हैं।

तुम इन मीनारों को छोड़ कर पाकिस्तान जाओगे तो इन मीनारों के साए के अंदर कौन नमाज़ पढ़ेगा। मस्ज़िद के हौज का पानी तुमसे ये सवाल करता है, इसे पीछे छोड़ कर तुम अगर पाकिस्तान चले जाओगे तो इस हौज के किनारे बैठ कर कौन वज़ु करेगा। मैंने जब भी जुबान खोली, तुमने मेरे होठों को बंद कर दिया। मैंने जब भी तुम्हे रास्ता दिखाने का काम किया, तुम दूसरे रास्ते पर चल पड़े। यह दौर वह दौर था, जब मुस्लिम लीग अपने शवाब पर थी, लेकिन इस कौम के रहनुमा वे लोग थे, जिन्होंने हिन्दुस्तान के अंदर सेक्युलरिज़्म की ज्योति जलाई थी और उसके लिए लड़ाई लड़ रहे थे। आज अगर उन सब को यह एहसास हो कि इस मुल्क में किस तरीके के वाक्यात हो रहे हैं तो शायद उनका सिर शर्म से झुक जाए। ढाई हजार साल पहले महात्मा बुद्ध ने कहा था कि भारत की संस्कृति और परम्परा के अंदर अहिंसा और सत्य ही एक रास्ता है। भगवान महावीर ने कहा था कि अहिंसा और सत्य ही एक रास्ता है। महात्मा बुद्ध ने कहा था कि तमाम प्राणियों पर दया करना हर प्राणी का फर्ज है। सिर्फ इंसान की बात नहीं है, जानवरों तक के लिए उन्होंने यही कहा था। जैन धर्म के अंदर मुंह पर कपड़ा इसलिए बांधा जाता है ताकि कोई जीव मुंह में न चला जाए और वह गुनाहगार न बन जाए।

महोदय, रामायण के अंदर भरत ने जब राम से पूछा कि सबसे बड़ा धर्म क्या है तो भगवान राम ने कहा - परहित सरिस धर्म नहीं भाई, पर पीड़ा सम नहीं अधमाई - दूसरे का भला करने के बराबर दुनिया में कोई दूसरा धर्म नहीं है। इससे बड़ा मजहब नहीं है कि दूसरे का भला किया जाए और दूसरे को दुख देने के बराबर कोई पाप नहीं है - यह भगवान राम ने कहा था। गीता के अंदर भग वान कृण ने कहा था - ईश्वर: सर्व भूतानाम ह्रदय से अर्जन तिठती। हे अर्जुन, खुदा सभी प्राणियों

के दिल के अंदर मौजूद है। गीता के अंदर यह नहीं कहा कि सिर्फ हिन्दुओ के अंदर मौजूद है, मुसलमानों के अंदर नहीं या मुसलमानों के अंदर मौजूद है, हिन्दू के अंदर नहीं।... (व्यवधान)

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : जा सुराज प्रिय प्रजा दुखारी, ते नृप होही नरक अधिकारी।

श्री राशिद अल्वी : महोदय, गीता के चेप्टर दस, श्लोक 20 में भगवान ने कहा है - "I am the soul of all the creations." चेप्टर 13, श्लोक 13 और 17 में कहा है कि संसार के कण-कण के अंदर मैं मौजूद हूं। शिकागो के अंदर विवेकानंद जी ने कहा है - "For my Master, every religion is part and parcel of the same eternal religion."

महोदय, गीता के अंदर आगे कहा गया है कि जो भी मेरी पूजा जिस तरह करता है - चाहे वह मंदिर या मस्ज़िद में जाकर करे, मैं उसे स्वीकार करता हूं। यही बात कुरान के अंदर है - लकुम दीनाकुम वलायदी - मेरा दीन मेरे लिए और तुम्हारा दीन तुम्हारे लिए। जिस दीन पर तुम चलना चाहते हो उस पर चलो। इससे बड़ी सेक्युलरिज़्म की कोई दूसरी परिभााा नहीं हो सकती। मैं अदब के साथ कहना चाहता हूं।... (व्यवधान) मैं आपसे यही दरख्वास्त कर रहा हूं कि इसमें राजनीति मत कीजिए। तीन को ओथ होनी है या तीन को नहीं होनी है, मैं आपको एक बात कहना चाहता हूं कि अगर आप सेक्युलरिज़्म के इतने बड़े अलम्बरदार हैं तो आपको कहना चाहिए कि मायावती जी आगे बढ़िए, हम आपकी सरकार बनाएंगे। आपने एक बार भी नहीं कहा - क्या यही आपका सेक्युलरिज़्म है और आप चाहते हैं कि यूपी के चीफ मिनिस्टरशिप के लिए कांग्रेस आपको सपोर्ट करे। आप रोज कांग्रेस को गालियां दे रहे हैं, क्योंकि वे आपको सपोर्ट करने को तैयार नहीं हैं, लेकिन कल जब वह प्रधानमंत्री जी बनना चाहते थे तो आपने भी सपोर्ट नहीं किया था - यह कोई सेक्युलरिज्म नहीं है।...(व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : आप जो चाहेंगे, बोलेंगे और गलत बोलेंगे।... (व्यवधान)

श्री राशिद अल्वी : कल सोनिया गांधी जब कांग्रेस की प्रधान मंत्री बन सकती थी, तब समाजवादी पार्टी ने सपोर्ट नहीं दी ।

श्री मुलायम सिंह यादव : यह असत्य बोल रहे हैं। इनका बोलना बंद कीजिए, वरना इसका जवाब करारा मिलेगा। ... (व्यवधान) ...* ये किस तरह की बातें बोल रहे हैं।

श्री राशिद अल्वी : ये असंसदीय भााा का प्रयोग कर रहे हैं। ये असंसदीय शब्द हैं लेकिन जो कुछ मैं कह रहा हूं पूरी शिद्दत के साथ कह रहा हूं। मैं अपने अल्फाज़ वापस नहीं ले रहा हूं।... (व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : यह असंसदीय भााा नहीं है।

सभापति महोदय (डॉ लक्ष्मीनारायण पाण्डेय) : असंसदीय शब्द कार्यवाही से निकाल दिये जाएंगे।

नागर विमानन मंत्री (श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन) : यह असंसदीय भाषा है इसे कार्यवाही से निकाल दिया जाए।

श्री राशिद अल्वी : अगर यह भाषा संसदीय भाषा है तो मैं कुछ नहीं कहना चाहता हूं।

सभापति महोदय : रिकार्ड देखकर अगर कोई असंसदीय शब्द होंगे तो वे निकाल दिये जाएंगे।

श्री राशिद अल्वी : सर, सवाल यह नहीं है। अगर मुलायम सिंह जी जैसे बड़े नेता इस जुबान का इस्तेमाल संसद में करेंगे तो संसद की कोई गरिमा नहीं रह जाएगी। …(व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : आप क्या पार्लियामेंट के अंदर असत्य बोलोगे। क्या एमपी वैसे ही बनकर आये हो, राजनीति करके नहीं आये हो। क्या सदन के अंदर इतना असत्य बोलोगे। बोलने का मौका मिलता है तो आप राजनीति करते हो। …(व्यवधान)

सभापति महोदय : हमारे पास समय की वैसे ही कमी है, आप अब समाप्त कीजिए।

श्री राशिद अल्वी : सर, जो बात मैं कह रहा हूं वह मैं फिर दोहरा रहा हूं और अपने अल्फाज को वापस नहीं ले रहा हूं। गुजरात पर मैं बोल रहा था लेकिन सुमन जी ने कहा इसलिए मुझे बोलना पड़ा। ऐसा नहीं

**Expunged as ordered by the Chair.*

है कि इस संसद के अंदर जितने लोग बोले या मुलायम सिंह जी की पूरी तकरीर गुजरात के ऊपर ही है, इधर-उधर की बातें उन्होंने नहीं की है। मैं आखिर में इतना ही कहना चाहता हूं कि …(व्यवधान)

सभापति महोदय : मुलायम सिंह जी, आप बैठ जाइये।… (व्यवधान)

श्री राशिद अल्वी : सर, जो 184 का मोशन है उसे मैं पढ़ना चाहता हूं :-

> "That this House expresses its grave concern over the failure of the administration in ensuing the security of minority community in

various parts of the country, specially in Gujarat…"

सर, यह कोई ऐसा मोशन नहीं है जिसे आंखें बंद करके बना दिया गया है। इसमें सिर्फ गुजरात की बात नहीं है। मोशन के अंदर " वेरियस पार्ट्स ऑफ द कंट्री" हैं। जहां कांग्रेस की सरकारें हैं तथा वे वेरियस पार्ट्स भी जहां लैफ्टिस्ट्स की सरकार है। मैं माननीय सोमनाथ चटर्जी की बहुत इज्जत करता हूं लेकिन सीपीएम को अमेंडमेंट लाना पड़ा क्योंकि वेरियस पार्ट्स पर उन्हें एतराज है।

कांग्रेस को अमेंडमेंट लाना पड़ेगा, अगर वेरीयस पार्ट्स शब्दों पर ऐतराज है। यह मोशन डैलीब्रेटली लाया गया है, फिक्स करने के लिये लाया गया है। मैं यही कहना चाहता हूं कि लाशों पर राजनीति नहीं की जा सकती। यह मुमकिन नहीं कि लाशों पर राजनीति की जाये। मैं बहुत ही अदब के साथ कहना चाहता हूं कि जब बिजनौर में दंगे हुए थे, उस समय जनता दल की सरकार थी। मेरे पास वे फोटोग्राफ्स रखे हैं जिसमें एक इनसान गन्ने के खेत के अंदर पड़ा हुआ है और उसे सूअर सूंघने का काम कर रहा है। यह उस समय की सरकार का काम था। मेरी तवज्जह को इधर-उधर कर दिया गया। जो भी गुजरात में वाकयात हुआ, उसकी अलफाज में निन्दा नहीं की जा सकती। मेरे पास गुजरात के बारे में पूरी एलबम मौजूद है। कोई भी इनसान इन फोटो को देखने के बाद खाना नहीं खा सकता और कोई इनसान ऐसा नहीं जिसके आंसू न झड़ जायें। वहां जिन्दा इनसानों को जलाया गया, ये उसकी फोटो है। कोई भी इन्सानियत, कोई मज़हब या धर्म इजाजत नहीं देता कि इस तरह के वाकयात पेश करे।

मैं सरकार से मतालबा करता हूं कि सरकार सोसायटी के टूटने के बजाये सोसायटी के अंदर जो वहां के हिन्दू-मुसलमान इख्तलाफात हो गये हैं, सार्वजनिक रूप से डिवाइड हो गये हैं, उसे खत्म करे। लॉ एंड ऑर्डर स्टिक करे। गोधरा के अंदर जिन लोगों ने इन्सानों को जलाया है और उसके बाद दूसरे वाकयात के लिये जो जिम्मेदार हैं, अगर सरकार उन जिम्मेदार लोगों को कनॉट प्लेस के अंदर खड़ा करके गोली मारने का काम करेगी, हर एक इस देश में उसकी हिमायत करेगा, उसकी मुखालिफत नहीं करेगा। साथ ही मैं सरकार से अपील करूंगा कि सी.बी.आई. को इंस्ट्रक्शन्स दी जायें कि हर मामले में 60 या 90 दिन के अंदर चार्जशीट फाइल की जाये ताकि वे लोग आसानी से ज़मानत पर न छूट सकें। मैं सरकार से यह भी मतालबा करूंगा कि बड़ा दिल करके जितना रिलीफ दे सकें, इनको देना चाहिये। जो लोग बेघर हो गये हैं, सरकार की जिम्मेदारी है कि पूरे तरीके से उन्हें मकानात देने चाहिये। जो मारे गये हैं, उन्हें पूरी तरह से कम्पनसेशन देना चाहिये। इसके साथ यह भी कहना चाहूंगा कि जो बच्चे इम्तिहान देने नहीं जा सके, जैसा सुप्रीम कोर्ट ने फैसला दिया है, उन बच्चों को दूसरी बार, तीसरी बार मौका मिलना चाहिये ताकि वे इम्तिहान दे सके और उनका वक्त न खराब हो। अब मैं एक शेर के साथ अपनी बात समाप्त करूंगा :

खून फिर खून है टपकेगा तो जम जायगा,

खून फिर खून सौ शक्ल बदल सकता है,

ऐसी शक्लें कि मिटाओ तो मिटाये न बने,

ऐसा नारा कि दबाओ तो दबाये न बने,

ऐसे शोले कि बुझाओ तो बुझाये न बने।

At last, the leadership of the *Bahujan Samaj* Party has decided to oppose the Motion.

SHRI BHARTRUHARI MAHTAB (CUTTACK): Mr. Chairman, Sir, already 12 hours have passed since we have been discussing this Motion. Within that, some hours have been disrupted. I have a sore throat.

I would appreciate If I am not interrupted while expressing myself on behalf of my party. I hope, I would be allowed.

As a benevolent participant of NDA, BJD has been supporting all the moves that the NDA has taken and is taking under the able leadership of Shri Atal Bihari Vajpayee. On 17^{th} of April, in the General Body meeting - before lakhs of people – at Bhubaneswar, a resolution was passed confirming our commitment towards secularism. At the same time, the founder President of our party and the Chief Minister of Orissa has categorically stated that BJD will remain with NDA as long as NDA is there to serve this country.

Whatever I am going to say here relates to the opinion of my party. That opinion is, within the last 12-1/2 hours, we have been discussing about the symptoms of the disease that has affected our body politic, that has affected our nation. Accusations and counter-accusations have been made and obstructions have also been created repeatedly. A remedy can only be

found if the disease is to be identified. In some quarters on this side, to a greater extent, something has been expressed by the Convenor of NDA, Shri Fernandes. The disease is this. What attempt has been made within the last 55 years to remove the ill will that has been created for many long years? It has been stated in this House that 'divide and rule' was the policy of the British Government. But I would like to humbly state in this House that the Britishers only implemented, that was this disease in our society, for many hundred years ago.

Before the Britishers arrived, there were tensions within the society. There were clashes in the society. There were communal flare-ups in the society not only between Muslims and Hindus but also between different communities of Hindu society. At one point of time, some thousand years ago, the Buddhist monasteries were destroyed. Jain pilgrimages were destroyed. There were different opinions within our society. Orissa is a State where many years ago a confluence took place between the Aryan race and the Dravidian race.

About a thousand years ago, there was a great emperor Chola Gangadeva. He brought all the sects together. He brought the presiding deity from the tribals and named Him the Supreme Being - Lord Jagannath

who is the lord of the universe.

It is a place where all sects meet, where all belief merges, and all faith is one. And for the last thousand years or more, we believe in that. We believe in respecting all religions; not only tolerance but also we respect all religions. The disease within our Indian society is intolerance. What have we done? I think, many of us will remember and understand the word `*malechcha*'. *Malechcha* is a word which has been repeatedly used in different granthas. … (*Interruptions*) What I was mentioning is that *malechcha* word has been used and we have to understand the psychology because there has been a psychology of minority, specially within the Muslim community of separtism, which has been because of the Hindu society, is exclusivism not only very recently but that has been there for more than thousand years. That has led to separatism in that society, in that community. If the Hindus feel that they are exclusive, it gives rise to

another community to always remain as separatist. Number of attempts has been made by a number of saints of this land, irrespective of their belief or faith that different communities should come together.

We have a *pooja* and that has been there not only in Bengal or in Orissa or in Bihar but also in a number of villages in Uttar Pradesh. We call it *Satyanarayan Pooja* and I find that here in Delhi market when I go round to do my shopping, *Satyanarayana Path* is done in Hindi also. What is this pooja? … (*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN : Your party's time is only six minutes.

SHRI BHARTRUHARI MAHTAB : Sir, my predicament is that whenever I stand on behalf of my party, you are in the Chair and you have been very unkind to me.

I do not have many things to say. Leave aside *Satyanarayana Pooja Path* and I would come to this point. Why is this hostility still there? Shri Rashid Alvi has rightly stated about Abul Kalam Azad. He was a moderate. He has rightly stated what Abul Kalam Azad had stated before Jama Masjid. But did the society accept him as their leader? A large number of people went away and they were in support of Pakistan. But I am reminded of another thing. I do not think that any Member has stated this. But many people from Gujarat know where was Mohammad Ali Jinnah born. We call it a land of Gandhi but where was Mohammad Ali Jinnah born.

What was his opinion in 1925? What was his opinion later on? Khilafat Movement was also criticized here in this House. I have a different opinion on that. But where was Mohammad Ali Jinnah born? He was born in the same land in Gujarat where Gandhi was born. That land also gave birth to Jinnah. We should also remember that. We should also remember that a large section of people, who stayed back in India, did not think of leaving this land. What were those people who left for good pastures called then? What are they called today? They are Muhajirs. They do not get the respect. They do not command that respect. They are not getting the respect in that country they chose. But repeatedly there has been a word

that has been used here in this House is Sadyantra, conspiracy. They repeatedly do this. My hunch is and I would like to reiterate that in Godhra, there was a great design. The design was when the whole country was turning into a cauldron, just a spark was needed, and Godhra did that spark.

I was told by one of my elders today that we carry matchbox in our pockets. It is a safety matchbox. We light the *chulha* to cook our food. We light the lantern to give us light. But there are times when someone just lights it and drops it on the ground and does not care douse the fire. The fire slowly spreads. But this fellow says that he did not light up all the villages, If the fire spread, it is the wind which carried the fire. I had just dropped the matchstick here. That is the problem which we all should remember. Who lighted the matchstick? How has the situation created in Gujarat?

When the Motion is that we will be discussing situations in the country, specially, in Gujarat, I would commend the attempt and the commitment by the NDA Government. Immediately after Godhra incident instructions were sent to different States. Be it Congress-ruled States or non-Congress-ruled States, be it supporters of NDA or they are opposed to NDA, immediately instructions were sent. The State machinery in different States were alerted. Is it not a credit of this Government and also of those State Governments which ensured that communal conflagration has been confined only to certain pockets of Gujarat? It has not spread throughout the country. Had this happened 55 years ago? Should not we commend this Government that they have tried their best to create a feeling of belonging among those who have felt neglected? But I would like to come to another point that it is education and economic development which basically the Muslim society and the minorities are not getting. They have not got that much of support within the last 55 years. They are not developing as others are doing. More importance should be given to those sections.

I was pained to see that for more than six days, the House was adjourned. We come from a State which is poor. Every day the State Government has to manage finance. It has to draw overdraft to manage the State machinery and we are unable to speak about that here. We are unable to speak about

the poor people in this House. The whole Parliament was stalled for six days only on this issue. And today we are discussing it.

What is the problem that affects large sections of people in this country? Is it secularism or non-secularism? Or, is it poverty and affluence? Or, is it the nagging threat at our borders with Pakistan where Pakistan is indulging in cross-border terrorism? Or, is it not the fact that China, on the other hand, is competing with us on the economic front which is more important ?

My only point here is based on what I have learnt during my little career in politics and in public life. Why is the communal frenzy continuing in Gujarat for two months? What happened in 1969 that for six months communal tension prevailed and killings were committed? When there is no fear of law, it breeds crime. When there is a lack of fear of punishment, the fall out of the prolonged legal process results in increased communal frenzy and crime. I was told that 36,000 people have been booked but has the State Government identified the ringleaders, as was mentioned by the hon. Minister Shri Harin Pathak, one of whom was killed some ten years ago. Have the ringleaders been identified from either community? It is required to be done now. … (*Interruptions*)

कुंवर अखिलेश सिंह : सभापति महोदय, इस हिसाब से तो सुबह हो जाएगी।… (व्यवधान)

श्री प्रियरंजन दासमुंशी : कांग्रेस के लिए आपका टाइम होता है लेकिन बाकी लोगों के लिए आपका कोई टाइम नहीं है। ..(व्यवधान)

SHRI BHARTRUHARI MAHTAB : When two thousand years ago a child was born in Bethlehem, thousands of children were killed just because somebody apprehended that the Son of God was getting born. Similarly, during the rule of Kamsa in Mathura, when Devaki's *ashtama garva* was born, lakhs of children were killed. As was mentioned by Shri Vaiko, children were killed in Nellie in 1983. So also, in 2002, children have been killed in Gujarat. Have we progressed ? There is a necessity to educate ourselves but the world phenomenon today is that the more we educate ourselves and the more economically developed we are, there is more communal frenzy and more inhuman activity going on.

I think, India has to show the light. Under the able leadership of Shri Atal Bihari Vajpayee, that light would, I think, be shown to the world that within this diversity our unity lies. We can survive this. We have survived the 1992 happenings. We have survived the 1947 events. Those were dark chapters of history. So, we will overcome this dark chapter also. As Indians, we will overcome this black chapter and remove this black spot from the minds of all the affected persons.

On behalf of my party, I oppose the Motion.

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : सभापति महोदय, हम संक्षेप में बोलेंगे।

सभापति महोदय : आप समय की सीमा को स्वयं जानते हैं। ध्यान रखिए।

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : सभापति महोदय, सबसे पहली प्रार्थना आसन से यह है कि समाचार - भाग 2 (संसदीय तथा अन्य मामलों संबंधी सामान्य जानकारी) का जो बुलेटिन प्रकाशित हुआ है, उसमें नियम 189 के अधीन गृहीत प्रस्ताव में हम लोगों का नाम भी लिखा हुआ है। लेकिन हमने जो प्रस्ताव दिया था, वह नहीं है दूसरा है। इसलिए इसे सुधार कर बुलेटिन फिर से वितरण कराया जाए।

इसीलिए अमेंडमेंट देना पड़ा। हम लोगों का प्रस्ताव ही इसमें नहीं है लेकिन जिस प्रस्ताव पर बहस हो रही है और इसके भी खिलाफ लोग जा रहे हैं। यह भााण में या वोट मे कह रहे हैं कि हम खिलाफ करेंगे। हमें इससे पता लगता है कि कुंए में साम्प्रदायिकता की भांग घोली गई है। मतलब इसमें कौन सी बात है जिस पर लोग इतने आतुर हैं कि खिलाफ में वोट करने को तैयार हैं। गुजरात में अल्पसंख्यक समुदाय की सुरक्षा सुनिश्चित करने में प्रशासन की विफलता पर गहरी चिंता व्यक्त करते हैं। शेरवानी सीधे आदमी हैं। कह रहे थे कि केवल निंदा कर दी जाये। चिंता व्यक्त करने में तो लोग खिलाफ कर रहे हैं और कहते हैं कि सर्व-सम्मत निंदा कर दी जाये। क्या मतलब है कि इन्होंने प्रस्ताव पढ़ा भी है या नहीं पढ़ा है। दो महीने चार दिन हो गये हैं, इससे बढ़कर क्या विफलता होगी और उस पर चिंता व्यक्त करने के लिए कहते हैं कि हम खिलाफ करेंगे।

श्री ब्रह्मानन्द मंडल (मुंगेर) : चिंता में भी राजनीति है जिसके लिए यह हो रहा है।... (व्यवधान)

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : आप अड़े रहे हैं। राम विलास पासवान अभी आये हैं। ...(व्यवधान)

उसके बाद खंड दो है कि 'यह सभा सरकार से आग्रह करती है कि वह अल्पसंख्यक समुदायों में विश्वास बहाल करने और उन्हें सुरक्षा देने के लिए प्रभावशाली कदम उठाये। ' इसमें भी राजनीति कर रहे हैं कि यह सभा सरकार को यह न कहे कि अल्पसंख्यक की सुरक्षा करिए, उन्हें विश्वास में लीजिए। भााण में तो सब लोग उपदेश कर रहे हैं। इस प्रस्ताव के लोग क्यों खिलाफ जा रहे हैं? ये लोग चाहते हैं कि दंगे हों और अल्पसंख्यक को खत्म कर दिया जाये अथवा ये कहते हैं कि 63 दिनों तक दंगा चूंकि नहीं रुका, मारकाट जारी है और जार्ज साहब बहुत तेजी से दावा करते हैं कि वहां सेना पहुंच गई थी लेकिन सेना पहुंचने के बाद भी दंगा नहीं रुक रहा है। ये वहां जाकर शांति मार्च भी कर आये परंतु फिर भी दंगा नहीं रुक रहा है क्या इस विफलता पर भी हम चिंता नहीं करें ? अल्पसंख्यकों की सुरक्षा के लिए सरकार प्रभावशाली कदम उठाये, क्या इसके भी खिलाफ करेंगे? बाद में दंगा हो जाये, खून-खराबा हो जाये, देश का नाश हो जाये, क्या तब ये लोग इस प्रस्ताव का समर्थन करेंगे ? इन लोगों ने इस प्रस्ताव को पढ़ने का काम भी किया है या नहीं ? या फिर चूंकि विपक्ष ने एकजुट होकर 184 के तहत प्रस्ताव दे दिया है और प्रधान मंत्री जी दंगा रोकने के लिए बैठक नहीं बुला सके लेकिन सरकार बचाने के लिए, एनडीए की बैठक बुलाना, समझाना ये सब तरह के काम किये हैं। हमें समझ में नहीं आ रहा है कि क्या होने वाला है? अभी प्रस्ताव के भी खिलाफ हो रहे हैं। गुजरात में जो लोगों को सजा हो रही है सो तो हो रही है, उनके चलते हम लोगों को इस बहस से क्या सजा हो रही है, यह देखिए। दंगा होने के बाद गृह मंत्री वहां पहुंच गये। एक महीने के बाद प्रधान मंत्री गये और उसके बाद भी दंगा नहीं रुक रहा है। क्यों नहीं रुक रहा है, क्यों वहां पर सेना की मौजूदगी के बावजूद भी मारकाट जारी है? फिर भी रोज 2-4-8-10 लोग मारे जाते हैं। एक दिन खाली नहीं जा रहा है। क्या कारण है? बहस बहुत हो रही है। यह चिंता या दुख का विाय है कि नहीं है? देश कैसे बचेगा? जार्ज साहब ने भााण किया तो हम चकित रह गये। भााण में कह रहे थे कि पहले से देश में दंगा होते रहे हैं, ऐसा ही दंगा पहले हुआ। भूल-चूक बदमाशी हर कौम में हो सकती है, कहीं-कहीं गुंडे हो सकते हैं।

कोई भी दंगे कहीं भी हों।... (व्यवधान)

श्रीमती भावनाबेन देवराजभाई चिखलिया (जूनागढ़) : इस तरीके से ट्रेन में किसी को कभी जिन्दा भी नहीं जलाया गया, जो दंगे हुए हैं, उनका कारण यही है। ...(व्यवधान)

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : ठीक बात है, ट्रेन में लोगों को जिन्दा जलाया। हम अभी तक नहीं जानते कि ट्रेन की जो जली हुई बोगी है, उसे वहां से हटाया गया, उसे मरम्मत के लिए ले जाया गया या नहीं। उस ट्रेन को म्युजियम की तरह रखा गया।... (व्यवधान) वह एक महीने तक वहीं पर थी, पता नहीं उसे वहां से हटाया गया या नहीं। यह दंगे बढ़ाने वाला काम है या नहीं।

महोदय, कोई दुर्घटना हो, कहीं मार-काट हो तो पुलिस वाले जांच-पड़ताल कर लेते हैं। उसके बाद उसे जल्दी से जल्दी वहां से हटा दिया जाता है ताकि उसे देख कर अन्य लोग दुखी न हो और दंगे न भड़कें, लेकिन इस सरकार की तरफ से दंगे भड़काने का काम हुआ है। उस ट्रेन को म्युजियम की तरह, प्रदर्शन के तौर पर रखा गया है। हमें नहीं पता कि उसे अभी तक वहां से हटाया गया या नहीं। ये इसका जवाब दें। किसी रेल की बोगी में इस प्रकार से आग लगे तो उसका कितने दिनों तक प्रदर्शनी करने का कानून है, उसके मैनेजमेंट का क्या सिस्टम है, उसे कितने दिनों तक वहां से हटाया जाएगा। गृह मंत्री, रेल मंत्री, सब उसमें शामिल हैं। इससे पता चलता है कि वहां कैसे शासन चल रहा है।

महोदय, हम लोग जब प्रधानमंत्री जी का बयान सुनते हैं तो सोचते हैं कि यह देश कैसे बचेगा। उड़ीसा असेम्बली पर हमला हुआ। प्रधानमंत्री जी ने बयान दिया। खबर आई थी कि जो हमलावर थे वे प्रधानमंत्री जिन्दाबाद का नारा लगा रहे थे। यह सुन कर इन्होंने कहा कि यदि वे हमारा जिन्दाबाद कर रहे हैं, उन्होंने ऐसा काम किया तो मैं मर जाना पसन्द करूंगा। महोदय, जो प्र ाधानमंत्री हैड ऑफ द स्टेट और हैड ऑफ द कंट्री है, जब इस तरह के दंगाई, इस तरह की कार्य वाही या आपराधिक घटना हो और उस पर प्रधान मंत्री बोलें, यह नहीं कि मैं सख्ती करूंगा, कार्य वाही करूंगा, मैं मर जाना पसंद करूंगा, फिर इस देश को कैसे कोई बचा सकता है। जब प्र ाधानमंत्री जी का इस तरह का बयान था, जिनके पास देश को बचाने का जिम्मा है और सारी पा वर है, वे कह रहे हैं कि हम मर जाना पसंद करेंगे, महोदय, फिर इस देश का क्या होगा।

महोदय, लोग कहते हैं कि नरेन्द्र मोदी जी ने कहा कि एक्शन का रिएक्शन था। 28 तारीख को याद किया जाए, जब यहां यह सवाल उठा कि 27 तारीख को वहां दंगे हुए। गोधरा में लोग जला दिए, मार दिए या खून-खराबा हुआ और जुल्म हुए।... (व्यवधान) हिन्दुस्तान का गृह मंत्री 27वें घंटे में भी कुछ नहीं बता पा रहा है। वह बताएं भी क्या? गोधरा में हिंसा हुई है तो उसकी प्र ातिक्रिया होगी। हाउस में बोला, कोई सुनने वाला, देखने वाला नहीं। हाउस में हिन्दुस्तान के गृह मंत्री जी का बयान होना चाहिए कि चाहे कोई भी दंगाई हो, उसे हम कुचल देंगे, हम देश को बर्बाद नहीं होने देंगे। उस जगह पर प्रधान मंत्री जी का बयान था कि मैं मर जाना पसंद करूंगा । गृह मंत्री जी ने कहा कि गोधरा में जो कांड हुआ है उसकी प्रतिक्रिया होगी। अब प्रतिक्रिया तो जान ही नहीं छोड़ रही है, जब कि आज 63 दिन हो गए हैं। नरेन्द्र मोदी, क्रिया या प्रतिक्रिया के न्यूटन्स लॉ की बात बोलेंगे तो इसे कैसे कोई रोक सकता है। ...(व्यवधान) 27वें घंटे में हिन्दुस्तान का गृह मंत्री तैयार नहीं था।

उनके क्षेत्र में दंगा हुआ। गृह मंत्री से देश में कहीं भी दंगा होने पर तुरंत पहुंचने की अपेक्षा की जाती है लेकिन वे पहुंचे पांचवें दिन और प्रधान मंत्री जी पहुंचे एक महीना बाद। ... (व्यवधान) वहां से आकर के गृह मंत्री जी ने नरेन्द्र मोदी को क्लीन-चिट दे दी कि वहां ठीक काम हो रहा है।

-

-

00.56 hrs. (Mr. Deputy Speaker in the Chair)

उपाध्यक्ष महोदय, आज 63 दिन हो गये, गोधरा कांड को आधार बनाकर सांप्रदायिक दंगे हो रहे हैं, इससे बढ़कर जघन्य अपराध कुछ नहीं हो सकता है। गोधरा कांड कैसे हुआ, क्यों हुआ, अभी तक जांच में बात नहीं आ रही है। प्राइमा-फैसी में कहा गया, सरकार की तरफ से बयान आया, लगता है कि गोधरा कांड में आईएसआई का हाथ है। लेकिन 63 दिन के बाद भी इसका पता क्यों नहीं चल रहा है। सदन और देश जानना चाहता है कि 63 दिन के बाद भी गोधरा कांड क्यों हुआ, कैसे हुआ, क्या कारण थे, कौन लोग थे, इसकी जानकारी क्यों नहीं हो रही है। इसलिए मेरा संदेह है कि गोधरा कांड भी इन लोगों का ाडयंत्र है। जो गणेश को दूध पिला सकता है वह गोधरा कांड भी करवा सकता है। कुछ अन्यायी लोग इस प्रकार करते हैं कि कुछ हिंदुओं को कट वा दो, फिर हिंदू लोग क्रोध में आयेंगे तो फिर मुसलमानों को काटना शुरू कर दो। …(व्यवधान)

श्री विजय गोयल : आप कुछ भी सदन में बोलते जा रहे हैं यह बात तो ठीक नहीं है। आप इल्जाम लगा रहे हैं कि गोधरा के अंदर जो कुछ हुआ वह खुद हिंदुओं ने करवा दिया, राम-सेवकों ने राम-सेवकों को मरवा दिया।

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : माननीय गृह मंत्री जी बैठे हैं, वह बताएं कि यह किसकी जिम्मेदारी है? यह त्यागपत्र दे दें, ये विफल हुए हैं। ये बताएं कि गोधरा कांड तथा उसके बाद के कांड किसकी विफलता हैं तथा गोधरा कांड को रोकने की जिम्मेदारी किसकी थी?

श्री रतिलाल कालीदास वर्मा : बिहार में जो रोज हत्याएं हो रही हैं उनके लिए कौन जिम्मेदार है?

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : उपाध्यक्ष महोदय, हम लोग तो विपक्षी पार्टी के हैं और इसकी आलोचना करेंगे ही, यह बात दुनिया के लोग जानते हैं। नेशनल ह्यूमन राइट्स कमीशन के जो शख्स चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया रहे हैं वे आरजेडी के हैं, सीपीएम या कांग्रेस के हैं। उन्होंने कहा कि जो गंभीर मामले हैं उनकी सीबीआई से जांच कराओ, सुप्रीम-कोर्ट के जज से जांच कराओ, स्पेशल कोर्ट्स बनाओ और जब तक दंगाइयों पर सख्त कार्रवाई नहीं होगी, दंगा नहीं रुक सकता है। अब देश-विदेश में हिंदुस्तान की छवि खराब हो रही है लेकिन माननीय जार्ज साहब को परवाह नहीं है, कहते हैं कि पहले भी इस तरह से छवि बहुत खराब हुई है, इसीलिए कोई खास मामला नहीं है। सरकार का कहना है कि बाहर वाले क्यों बोल रहे हैं, यह तो हिंदुस्तान का अंदुरुनी मामला है।

01.00 hrs.

हम लोग सवाल उठाते हैं तो कहते हैं कि यह स्टेट का मामला है । एन.डी.ए. के अंदर सवाल उठाते हैं तो कहते हैं कि भाजपा का मामला है। किसी पार्टी को सुनने के लिये तैयार नहीं है। इसलिये, उपाध्यक्ष महोदय, हिन्दुस्तान के अंदर भाजपा में भी श्री शान्ता कुमार जैसे भले लोग हैं जिन्होंने बयान दिया कि नरेन्द्र मोदी का त्याग पत्र होना चाहिये। खुराना जी भी आर.एस.एस. के बारे में बोले थे। अब आर.एस.एस. ने भी यह कहकर अपना पल्ला झाड़ लिया कि नरेन्द्र मोदी हटे या रहे, हम नहीं बचायेंगे। इसलिये देशभर के इंटलैक्चुअल्स, नामी-गरामी, कलाकार, विचारक, चिन्तक जितने भी लोग हैं, मैं चुनौती देता हूं कि एक भी व्यक्ति नरेन्द्र मोदी के पक्ष में हो। सब लोगों ने मांग की है और बयान दिया है कि नरेन्द्र मोदी को हटाया जाये क्योंकि बिना उसे हटाये दंगे नहीं रुक सकते। इसलिये हम लोग भी मांग करते हैं कि नरेन्द्र मोदी को बर्खास्त किया जाये, जेल के अंदर बंद किया जाये, गृह मंत्री त्याग-पत्र दें ...(व्यवधान)... (कार्यवाही वृत्तान्त में सम्मिलित नहीं किया गया।)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Nothing will go on record.

*(Interruptions)**

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : जैसे अफगानिस्तान में तालिबान ने बौद्ध मूर्तियों को तोड़ा, उनका सत्यानाश हो गया। उसी प्रकार साबरमती में महात्मा गांधी आश्रम पर हमला होने पर उन दंगाइयों का सत्यानाश सुनिश्चित है। जो संत-महात्माओं के साथ छेड़खानी करता है, वह बच नहीं पायेगा। इसलिये हिन्दुस्तान के इन तालिबानों का सत्यानाश होना है। ये लोग तालिबानी हुकूमत चलाना चाहते हैं। हमारी मांग है कि नरेन्द्र मोदी हटाये जायें, गृह मंत्री त्याग पत्र दें। यदि नहीं तो प्र ाधानमंत्री हटाओ, देश बचाओ। मैं नियम 184 के तहत लाये गये इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

*Not Recorded.

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव (झंझारपुर) : उपाध्यक्ष महोदय, आज इस सर्वोच्च सदन में जो चर्चा हो रही है, वह विाय न केवल गंभीर बल्कि संवेदनशील है। इस विाय पर जिस वातावरण में बहस हो रही है और जिस तनातनी में बहस की जा रही है, उससे जो वातावरण का निर्माण हो रहा है, क्या गुजरात पर उसका कुप्रभाव नहीं पड़ेगा?

उपाध्यक्ष महोदय, मैंने आपको एक पत्र लिखा था कि जिस तरह से इस बहस को जरनलाइज किया जा रहा है. कोई हिन्दुत्व के नाम से जरनलाइज कर रहा है, कोई शुडो सैकुलर हैं और जिस तरह से बहस को घसीटा जा रहा है, इसका प्रभाव करोड़ों लोगों पर पड़ेगा। उपाध्यक्ष

महोदय, मैंने पर्सनली एक पत्र आपको लिखकर टी.वी. के बारे में रिक्वैस्ट की थी कि सदन मे क्या हो रहा है कि सदन का वक्त और असर किस दिशा में जा रहा है? सब बड़े-बड़े नेता लोग तो 40-40 मिनट या एक घंटा बोल चुके हैं, हम छोटे बुद्धि वाले लोगों के लिये समय नहीं है। जब चेयर से नियमन हो गया है तो आपके आदेश का पालन करना ही है। मैंने बोलना तो बहुत था लेकिन अब बोल नहीं पा रहा हूं।

जैसा कि लग रहा है, इसलिए हम नटशैल में दो-तीन बातें कहना चाहते हैं। जॉर्ज साहब हमारे बड़े बुजुर्ग समाजवादी नेता है। मैं उनका बड़ा आदर करता हूं। जब मैं बचपन में दसवीं क्लास में पढ़ता था तो जॉर्ज साहब को सुनने के लिए जाता था। वह कहीं भी आते थे तो हम ट्रेन से चढ़कर दरभंगा पहुंच जाते थे। जहां भी कोई आंदोलन चलता था, कहीं साम्प्रदायिक सद्भाव का मूवमैन्ट चलता था, उस समय श्री कर्पूरी ठाकुर नेता था, वह बहुत पहले से बड़े नेता थे। वह आज से नेता नहीं हैं। 1977 में जब जॉर्ज साहब पटना के गांधी मैदान में आये थे तो मीडिया के लोगों ने कुछ छाप दिया था। उनकी इतनी फोर्सफुल जुबान थी, उनकी जुबान में इतनी ताकत थी और मैं चाहता हूं कि वह ताकत हिन्दुस्तान के सब प्रतिनिधियों को मिले, मैं ऐसी कामना करता हूं। परन्तु जार्ज साहेब के आज के भााण से बडी निराशा मिली है ।

उपाध्यक्ष महोदय, जॉर्ज साहब आज इतिहास की चर्चा कर रहे थे। कु. उमा भारती भी इतिहास की चर्चा कर रही थीं। इतिहास का क्या मतलब है, इसकी बुनियाद क्या है। आज जिस तरह के गुजरात में हालात हैं, यानी देश के किसी भी भाग में इस तरह से यदि दंगा भड़कता है और जिस तरह से दंगा भड़कता है, उसमें इंसानियत का कत्ल हुआ है, उसकी बुनियाद क्या है। उसकी बुनियाद के बहुत सारे कारण हो सकते हैं। लेकिन इतिहास को मिटाने की जब तक किसी को इजाजत दी जाती रहेगी, तब तक यह बुनियाद नहीं मिट सकती। इतिहास से मेरा मतलब यह है कि चाहे सोमनाथ का मंदिर हो, विवादित बाबरी मस्जिद का ढांचा हो, आगरा का ताजमहल हो, लाल किला हो, लोक सभा या संसद हो, चाहे कोई विधान सभा हो - यह किस समय निर्माण हुआ। इतिहास किसी देश का एक घटनाक्रम है, यह किसी कौम का नहीं है, ऐसा मेरा मानना है। बड़े-बड़े नेता इतिहास को अपने ढंग से परिभाातित करते हैं। लेकिन मेरा निवेदन है कि इतिहास हिन्दुस्तान का घटनाक्रम है, यह हिन्दुस्तान की धरोहर है। यह न हिन्दू का है न मुसलमान का है, यह भारत का गौरव है। इसलिए इसे कोई मिटा नहीं सकता है। इसे मिटाने नहीं देना चाहिए और जो इसे मिटाता है, उसे माफ नहीं करना चाहिए, तभी देश में साम्प्रदायिक सद्भाव बढ़ेगा। इस मामले में मेरा नजरिया एकदम साफ और स्पट है। मेरे पास समय कम है नहीं तो मैं इतिहास को पूरी तवज्जह देता।

भारतीय इतिहास में हिन्दू धर्म में उदारवादियों और कट्टरपंथियों के बीच पिछले पांच हजार सालों से लड़ाई चल रही है, लेकिन रक्तपात नहीं हुआ। हिन्दू धर्म में इन दोनों के बीच जो लड़ाई चल रही है उसमें रक्तपात या खूनखराबा नहीं हुआ जबकि और धर्मों में हुआ है। हम उनके बारे में

बताना नहीं चाहते हैं लेकिन शिया-सुन्नी से लेकर कई ऐसे धर्म हैं, जिनमें रक्तपात हुआ है, लेकिन हिन्दू धर्म में उदारपंथियों और कट्टरपंथियों के बीच जो लड़ाई पांच हजार वर्ों से चल रही है, यह कोई नई बात नहीं है, यह आज की बात नहीं है। शेरवानी जी ने बड़ा अच्छा प्रस्ताव किया, लेकिन आज जिस तरह की घटना घटी है, क्योंकि आज तक उदारवादियों और कट्टर वादियों का झगड़ा चला आ रहा है, इसमें कभी एक की जीत होती है और कभी दूसरे की जीत होती है, लेकिन यह मामला समाप्त नहीं हो रहा है। जो भी इस मामले को समाप्त करने के लिए चलता है, वह मारा जाता है, मरता नहीं है। महात्मा गांधी जी ने हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बंटवारे के बाद जो साम्प्रदायिक सद्भाव का रास्ता बताया था, उसमें गांधी जी मरे नहीं थे, मारे गये थे। जो इस बात के लिए लड़ाई और संघर्ा करता है, वह मरता नहीं है। आदमी डरता है, मनुय तो मरता है। लेकिन जो बड़े आदमी होते हैं, बड़ी चीज के लिए लड़ते हैं, वे मारे जाते हैं, मरते नहीं हैं। मैं इस बात को यहीं खत्म करता हूं।

उपाध्यक्ष महोदय, आज गोधरा के संदर्भ में बड़ी जोर से चर्चा हो रही है। आपको याद होगा कि माननीय सदस्य कटियार जी सबसे पहले सदन के आसन तक चले गये थे। मुझे वह दिन याद है, जब हमारे बी.जे.पी. के भाइयों ने कहा था कि आज 27 तारीख है, आज सामान्य बजट है, इसे पास होने दीजिए, यह परम्परा रही है। इसके बाद इस पर चर्चा होगी। सभी पार्टियों ने कमोबेश इसकी निन्दा की। प्रैस के जरिये भी सब लोगों ने इसकी निन्दा की है । लेकिन तिल का ताड़ बनाया गया है। इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि गुजरात में जो दुर्भाग्यपूर्ण घटना हुई हैं, गोधरा कांड से हमारा साम्प्रदायिक सदभाव कलंकित हुआ है। इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि गुजरात में जितना साम्प्रदायिक सद्भाव और सामाजिक समरसता का माहौल बिगड़ा है, उसे रिस्टोर करने में वर्ों लग सकते हैं। वहां अभी तक हिंसा थमी नहीं है। इसलिए यह राट्रीय चिंता का विाय है। यह किसी राज्य की कानून-व्यवस्था का सवाल नहीं है।

क्योंकि यहां पर लंबे अर्से तक जो सांप्रदायिक दंगों का सिलसिला चला है, निश्चित रूप से सेक्यूलरिज्म की नींव को झकझोर दिया है। इसे मानना चाहिए। इसमें किसी पक्ष की बात नहीं है। आप भी इसे स्वीकार करते हैं। हरिन पाठक जी अच्छा बोल रहे थे कि यह बिल्कुल गलत हुआ है जो कुछ भी हुआ है। कुछ और भी इस तरह के स्वर आए थे। मैं इसलिए कहना चाहता हूँ कि गोधरा कांड के दोायों को कड़ी से कड़ी सज़ा मिले और जांच आयोग के सामने जो भी तथ्य आप दे रहे हैं, मजबूती से उनको दीजिए ताकि इस प्रकार से इंसानियत को जलाने की कोशिश कभी नहीं हो सके। साबरमती में जो दोाी हैं, वहां इस तरह से जो घटना हुई है और जो दोाी लोग हैं गोधरा के, क्या उनको सरकार चिह्नित कर पाई है? यह कैसे फेल्योर नहीं है? हम जानना चाहते हैं कि गोधरा के जो दोाी लोग हैं, क्या आज तक सभी दोायों को चिह्नित किया गया? संसद पर हमला हुआ विदेशी आतंकवादियों द्वारा और चार दिन में सब पता चल गया लेकिन गोधरा में अभी तक दोायों को चिह्नित नहीं किया गया। कभी 41 की सूची निकलती है, कभी एक आदमी को चिह्नित किया जाता है। खैर, यह तो कमीशन बताएगा। अभी तक लिस्ट ही जारी

हो रही हैं लेकिन दो महीने हो गए, लिस्ट नहीं बन पा रही है। ऐसा कभी नहीं हुआ कि मारे गए लोगों की सूची जारी नहीं होती। जब भी इस तरह की घटना होती है तो मारे गए लोगों की सूची जारी होती है। साबरमती एक्सप्रेस में जो लोग जिन्दा जलाए गए, क्या उनके नाम वाली रेलवे की आरक्षण सूची को प्रकाशित किया गया, सार्वजनिक किया गया ताकि पता चले कि कौन रामभक्त थे और कौन अन्य यात्री जा रहे थे। लेकिन उसकी प्रतिक्रिया हो गई । मैं इसलिए कहना चाहता हूँ कि प्रतिक्रिया हुई बड़े जोर शोर से। मैं कहना चाहता हूँ कि वहां पारदर्शिता का अभाव रहा है। गोधरा कांड के पश्चात् संपूर्ण गुजरात में जो बंद का आह्वान किया गया, हम 1974 में जयप्र ाकाश जी के आंदोलन में थे तो आडवाणी जी, नीतीश जी तथा रामविलास जी भी उसमें थे। उसमें यह था कि जो संगठन बंद का आह्वान करता था उसको सबसे पहले गिरफ्तार किया जाता था। गोधरा के बाद जो प्रतिक्रिया हुई और गुजरात में बंद का काल दिया गया वह किस संगठन ने दिया था? क्या उसके किसी आदमी को गिरफ्तार किया गया?

मैं अपनी बात खत्म करना चाहता हूँ। यदि गोधरा की स्वाभाविक प्रतिक्रिया होती, न्यूटन का लॉ है क्रिया और प्रतिक्रिया - क्रिया के अनुपात में प्रतिक्रिया होती है - यह न्यूटन का थर्ड लॉ है क्योंकि हम साइंस के विद्यार्थी हैं, लेकिन उसका एक और लॉ है लॉ ऑफ ग्रैविटी। जब ये दोनों टकराते हैं तो धरती के नीचे चले आते हैं। लॉ ऑफ ग्रैविटेशन हमने बी.एस.सी. में फिजिक्स में पढ़ा है। पता नहीं उनको, शायद मालूम नहीं था। इस तरह की बात कहना किसी प्रशासक के लिए अच्छी बात नहीं है। गोधरा कांड की स्वाभाविक प्रतिक्रिया नहीं कहें तो ठीक बात है। स्वाभाविक प्र ातिक्रिया होती तो एक दो दिनों में, तीन-चार दिनों में समाप्त हो जाती। दो महीने-तीन तक कांड नहीं चल सकता था। दो माह से ऊपर हो गए हैं। शासन आपके हाथ में है तो जवाबदेही भी आपकी है अन्यथा इस तरह की घटना की जवाबदेही कौन लेगा? मैं इसलिए कहना चाहता हूं कि बहुसंख्यक यदि हमलावर होगा तो न कोई पलटन उसे रोक सकती है, न फौज रोक सकती है, न जार्ज साहब की सेना उसे रोक सकती है। हमारे देश में बहुसंख्यकों को उदारवादी होना पड़ेगा और जो कट्टरपंथी हैं, जो आतंकवादी हैं उनको कुचलना होगा शासन के जरिये। लेकिन बहुसंख्यक अगर हमलावर हो जाएंगे तो क्या होगा।

मैं इसलिए शुरू से आग्रह कर रहा था कि बहस का जो तरीका है, इससे दंगा नहीं रुकेगा। मेरी राय है कि दंगा और बढ़ेगा, जो गुजरात में भी बढ़ सकता है, देश के अन्य भागों में भी बढ़ सकता है। बहुसंख्यक हमलावर हो जाएंगे तो लोकतंत्र में कोई फौज या पलटन या पुलिस उसे रोक पाएगी, हमें तो ऐसा भरोसा नहीं है।

इसलिए इस स्थिति की गंभीरता को स्पट कर देना चाहता हूं। अंत में मैं कहना चाहता हूं कि आज बहुत से लोगों ने वहां 800-900 लोगों की मरने की फिगर दी है। आज जो भी रुख होगा, उसको हम देखेंगे, सुनेंगे लेकिन हम समझते हैं कि आज कुछ पोजीटिव संकेत होगा क्योंकि केन्द्र सरकार शुरू से ही इसमें इंटरेस्टेड है। यह राज्य का मामला नहीं है। केन्द्र सरकार ने शुरू से ही

इसमें रुचि ली है जैसे अभी जार्ज साहब बता रहे थे। केन्द्र सरकार अगर इसमें रुचि नहीं लेती तो यहां से विपक्ष की नेत्री सर्वदलीय डेलीगेशन लेकर न जाती। इसके बाद माननीय प्रधान मंत्री जी के निर्देश पर पहली बार महामहिम राज्यपाल जब गुजरात में, उनकी अध्यक्षता में सर्वदलीय राहत पुनर्वास समिति बनी। हम कैसे कह सकते हैं कि इसमें केन्द्र सरकार ने रुचि नहीं ली। माननीय प्र ाधान मंत्री ने खुद गुजरात जाकर दौरा किया। दौरा करने के बाद भी स्थिति सामान्य नहीं हुई। दौरे के क्रम में माननीय प्रधान मंत्री जी ने वहां के मुख्यमंत्री को राजधर्म की याद दिलाई। यहां तक कहा कि यह बर्बरता बहुत शर्म की बात है। हम बाहर जाकर क्या मुंह दिखायेंगे ? केन्द्र ने इसमें रुचि नहीं ली, ऐसी बात नहीं है। केन्द्र ने जरूर रुचि ली है। फलाफल कुछ नहीं निकला क्योंकि वहां आज तक सामान्य स्थिति नहीं है। आज तक वहां कानून व्यवस्था सामान्य नहीं हुआ है। वहां जनता को विश्वास में लेने की जरूरत है। वहां सामान्य स्थिति बहाल करने की जरूरत है। सबसे ज्यादा जो 800-900 बेगुनाह लोगों का कत्ल हुआ है, उसके लिए कौन जिम्मेदार होगा ? गोधरा में जिन निर्दो़ा 57 आदमियों को जलाया गया, उनके दो़ायों को किस कानून के तहत सजा दी जायेगी। क्या आपने सजा देने के लिए कोई कटघरा निर्धारित किया है ? कानून का कोई मापदंड है। मैं साफ कहना चाहता हूं कि माननीय प्रधान मंत्री जी के दौरे के बाद साबरमती आश्रम पर हमला हुआ। पत्रकारों की पिटाई हुई। वहां हिसा का दौर अभी भी थमा नहीं है। सारे विकल्प केन्द्र सरकार के सामने खुले हैं। बिहार में जब रा़ट्रपति शासन लागू हुआ था, मणिपुर में रा़ट्रपति शासन हुआ, उस समय हमने उसका सपोर्ट किया था कि वहां राज्य प्रशासन या कांस्टीट्यूशनल ब्रेकडाउन है और वहां सामान्य स्थिति नहीं है। क्या वहां गुजरात में धारा 356 लागू नहीं हो सकती ? इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि वहां गुजरात में धारा 356 लागू हो और केन्द्र सरकार वहां का प्रशासन अपने हाथ में लेकर हिंसा का दौर हटाये। यही मेरा निवेदन है।

श्री राम विलास पासवान (हाजीपुर) : उपाध्यक्ष महोदय, आज सदन में जो प्रस्ताव आया है, मैं उसके समर्थन में खड़ा हुआ हूं। यह प्रस्ताव इतना वेजीटेरियन है, इतना हल्का प्रस्ताव है कि इससे किसी को कोई डिफर करने की आवश्यकता नहीं थी। मैंने जार्ज साहब और ममता बनर्जी से कहा था कि यह सदन के लिए सबसे अच्छी बात होती कि इस प्रस्ताव को बिना वोटिंग के स र्वसम्मति से पास कर दिया जाये और इस तरह के उदाहरण हैं। यहां अटल जी हैं। गृहमंत्री श्री आडवाणी जी हैं, जार्ज साहब हैं। 1977 में मैं पहली बार जीतकर आया था। उस समय बिहार में बेलछी की घटना घटी थी। वहां रा़ट्रपति शासन था। मैं सरकारी बेंच से नियम 184 का प्रस्ताव लेकर आया। बिजनस एडवाइजरी कमेटी मे इस पर बहुत हल्ला हुआ। बिजनस एडवाइजरी कमेटी ने उस प्रस्ताव को मंजूर कर लिया।

उस समय मोरारजी भाई प्रधान मंत्री थे, होम मिनिस्टर चौधरी साहब थे। उसके बाद सारी डिबेट शुरू हुई जो करीब 12 घंटे तक चली। बेलछी की घटना से ही कांग्रेस की पुनरावृत्ति भी हुई थी। उस समय इंदिरा जी वहां गई थीं। उस समय हाउस में चर्चा और चर्चा के बाद प्रधान मंत्री ने उठकर कहा कि बेलछी में हत्या हुई है, वह पूरे देश शर्म की बात है । यह कोई एक एक पार्टी

का मामला नहीं है, यह पूरे देश का मामला है। सदन इस प्रस्ताव को एडाप्ट करता है। और पूरे सदन ने उसे मान लिया। उससे न तो सरकार की कहीं प्रतिठा गिरी और न ही प्रधान मंत्री की कहीं प्रतिठा गिरी। पूरे देश में एक संदेश गया कि पूरा का पूरा सदन दलितों और कमजोर वर्ग पर हत्या हो रही है या होगी, उसके खिलाफ एक है और कहीं कोई पार्टी पोलिटिक्स नहीं है। सब लोग एक साथ खड़े होंगे । मैं यह समझता था कि वही चीज आज होनी चाहिए थी। अभी भी मौका है, इस प्रस्ताव में क्या लिखा हुआ है, इसमें लिखा है कि "यह सभा देश के विभिन्न भागों में विशोरूप से गुजरात में अल्पसंख्यक समुदाय की सुरक्षा सुनिश्चित करने में प्रशासन की असफलता पर अपनी गहरी चिंता व्यक्त करती है" । इसमें कहीं केन्द्र सरकार का नाम नहीं है। प्र ाशासन की विफलता को स्वीकार करते सब कोई हैं। ममता जी का अभी भााण हुआ और वे तो इससे भी आगे बढ़ गईं कि यह दंगा स्टेट स्पांसर्ड है। गृह मंत्री जी गए थे और उन्होंने कहा कि यहां का प्रशासन आशा के अनुरूप काम नहीं कर रहा है। प्रधान मंत्री जी गए और रोने लग गए। रोते-रोते उन्होंने कहा कि मैं बाहर किस मुंह से जाऊंगा। यहां राजधर्म का पालन होना चाहिए। यह प्रशासन की असफलता है। प्रस्ताव में केन्द्र सरकार से सिर्फ इतना कहा गया है कि " यह सभा चिंता व्यक्त करती है और सरकार से अनुरोध करती है कि वह अल्पसंख्यक समुदाय में विश्वास बहाल करने में और उनकी रक्षा करने का प्रभावी कदम उठाए सदन आपसे सिर्फ इतनी मांग कर रहा है कि आप ठोस कदम उठावें । यदि हम इतनी बड़ी घटना की निंदा नहीं कर सकते तो फिर हम यहां क्या कर रहे हैं। इसलिए मैंने कहा कि यह मामला किसी पार्टी का नहीं है। सबसे बड़ा राट्र होता है, राट्र के बाद पार्टी होती है और पार्टी के बाद व्यक्ति होता है। नेशनल इंटरेस्ट, फिर पार्टी इंटरेस्ट और फिर इंडीविजुअल इंटरेस्ट। लेकिन देश में जब व्यक्ति और पार्टी का हित देशहित से ऊपर चला जाता है, तो देश पर खतरे के बादल मंडराने लगते ।

मैं दूसरी बात कहना चाहता हूं कि इसमें अल्पसंख्यक शब्द है। हो सकता है कि किसी को इससे आपत्ति हो इसलिए आप अल्पसंख्यक शब्द के बदले साम्प्रदायिक दंगा शब्द कर सकते हैं। इस देश में कौन अल्पसंख्यक है, कौन लोग कहां से आए हैं। इस देश में अल्पसंख्यक की परिभााा क्या है। बहुत लोग कहते हैं कि मुसलमान बाबर की औलाद हैं। इतिहास हमने भी पढ़ा है। बाबर 1526 में आया था। जब बाबर आया था, तो इस देश में इब्राहिम लोधी राज कर रहा था। उसके पहले खिल्जी वंश का राज था। खिल्जी वंश के पहले गुलाम वंश था। गुलाम वंश के पहले मोहम्मद गौरी था। 1100 ईस्वी से इस देश में मुसलमान शासक रहे । बाबर के साथ 1200 लोग आए थे। आज हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, बंग्लादेश तीनों को मिला कर 35 करोड़ मुसलमान हैं। ये क्या 1200 की औलाद हैं। कौन बने हैं मुसलमान, इसी परिवार से गए हैं। सबसे ज्यादा गरीब परिवार से गए हैं। सबसे ज्यादा दलित वर्ग के लोग गए हैं। कौन सिख है, गुरू गोविंद सिंह जी ने बिहार में सिख धर्म की स्थापना की। केश, कंघी, कड़ा, कृपाण और कच्छ से सिख धर्म की स्थापना हुई। यहां बूटा सिंह जी हैं, जो दलित वर्ग से हैं। जाट सिख हैं, सब लोग यहीं के हैं। आदिवासी हैं, जो क्रिश्चिएन हैं। ये सब यहीं के हैं। बुद्धिस्ट कौन लोग हैं, क्या कोई जापान के लोग हैं। बाबा साहेब अम्बेडकर के साथ दस लाख लोगों ने बौद्ध धर्म को स्वीकार किया था। ये सब दलित हैं।

कोई विदेशी तो नहीं, यह देश की चौहद्दी है। हमने कभी देश की चौहद्दी को देखा है। ये कौन हैं नार्थ-ईस्ट, मणिपुर, मिजोरम, मेघालय, नागालैंड, त्रिपुरा, असम जाइए, सब क्रिश्चिएन लोग रहते हैं। पंजाब में चले जाइए, जो बोर्डर इलाका है, वहां सिख रहते हैं। कश्मीर जो बोर्डर का इलाका है, वहां मुसलमान रहते हैं। लेह और लद्दाख जो हमारा बोर्डर है वहां बुद्धिस्ट रहते हैं। हम घर को कितना भी मजबूत बना लें, लेकिन बाउंड्री कमजोर रहेगी, तो चोर के घुसने का खतरा रहता है। यह चारों तरफ से हमारी जो बाउंड्री है, यहां अल्पसंख्यक समुदाय के लोग हैं। जो कूछ गुजरात में हो रहा है उससे हर घर में एक एक्सट्रीमिस्ट पैदा होने का खतरा है । हिन्दू मारे जाएं या मुसलमान लेकिन जिसके घर का आदमी मारा जाता है, उसको पता चलता है कि दर्द क्या है। राम विलास पासवान ने इस दर्द को झेला है। 1984 की घटना की सब याद दिला रहे हैं। उस समय मैं 12 राजेन्द्र प्रसाद रोड पर रहता था । प्रधान मंत्री जी उसी रास्ते से सवेरे टहलने जाया करते थे। जब 1984 का दंगा हुआ तो सिखों को बचाने में मेरा पूरा का पूरा घर जलाया गया था। कर्पूरी ठाकुर से लेकर हम सब लोग वहीं थे। किस तरह से हम लोग बचे थे, यह हम ही जानते हैं। बाबरी मस्जिद की जब घटना घटी थी तो हमारा घर जलाया गया था। हमने दलित वर्ग में जन्म लिया है, लेकिन हमने हमेशा इन्सानियत के लिए लडा है। जब मंडल कमीशन का मामला आया था, जितने लोग पिछड़ी जाति के नेता बनते हैं, उस समय किसी का पता नहीं था। उस समय संसद में 1980 से लेकर 1985 तक यही राम विलास पासवान था, जिसने मंडल कमीशन को लागू करने हेतु लड़ने का काम किया था। जब हमारे पास कल्याण मंत्रालय आया, तो किसी को मालूम नहीं था कि मंडल कमीशन की सिफारिश क्या है। सोली सोराबजी थे, उस दिन प्रधान मंत्री जी के सामने कह रहे थे कि राम विलास पासवान क्लास लेते थे। हम क्लास लेते थे और बता देते थे कि मंडल कमीशन कास्ट का नहीं, क्लास का मुद्दा है और मंडल कमीशन की सिफारिश को लागू किया । चाहे बाबा साहेब अम्बेडकर का मामला हो, चाहे महिला का सवाल हो सबके लिए संर्घा कर रहे हैं । बगीचे में हर तरह के फूल हैं। हिन्दू भी हैं, मुसलमान भी हैं, सिख भी हैं, ईसाई भी हैं, दलित भी हैं, ब्राह्मण भी हैं। बगीचे का वही माली अच्छा होता है, जिसके बगीचे में हर तरह का फूल खिलता है। यह देश तब तक मजबूत नहीं होगा, जब तक यहां हर वर्ग के लोग अपनेआप को सुरक्षित महसूस नहीं करेंगे। अल्पसंख्यक हमारे ही कुल के हैं। पांच पीढ़ी, दस पीढ़ी, पन्द्रह पीढ़ी पहले चले जाइए, क्या राम विलास पासवान और शाहनवाज एक ही मां-बाप की संतान नहीं हैं, देश की आजादी के लिए फांसी के फंदे को चूम लिया वह खुदी राम बोस हिन्दू था। फांसी के फंदे को जिसने चूम लिया, सरदार भगत सिंह सिख थे। फांसी के फंदे को जिसने चूम लिया वह अशफाकउल्लाह खां मुसलमान था। उसने बिस्मिल की पंक्ति कही थी कि " सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है।" यह कहकर वे फांसी के फंदे को चूम लिए थे। बहादुर शाह जफर मुगलों के अंतिम बादशाह थे। उन्हें अंग्रेज पकड़कर रंगून ले गए अंग्रेज ने कहा था " दमदमे में दम नहीं है, खैर मांगो जान की, ऐ जफर बस हो चुकी है तेग हिन्दुस्तान की।" बहादुरशाह जफर को वहीं दफना दिया गया। दो गज जमीं भी न मिली कुए यार में, मैं इतना बदनसीब हूं कि अपनी मातृभूमि में भी दो गज जमीं नहीं

मिली। यदि हम हिन्दू की दृटि से देखेंगे तो मुसलमान दूसरा नजर आएगा, यदि मुसलमान की नजर से देखेंगे तो हिन्दू दूसरा नजर आएगा। लेकिन यदि हम यह देखें कि यह हमारा खून है, हम एक ही परिवार के हैं तो कहीं कोई दूसरा नजर नहीं आएगा। परिवार मे यह नहीं देखा जाता कि छोटा बच्चा क्यों दूध पी रहा है। परिवार में जो कमजोर होता है, उसके लिए विशो व्यवस्था की जाती है, आज चाहे गोधरा की घटना हो या गुजरात की, मुसलमान सड़क पर निकल रहे हैं, सारे के सारे हिन्दू निकल रहे हैं। चाहे वे प्रैस के लोग हों या दूसरे लोग हों। उनमें हिन्दुओं की शिरकत ज्यादा है। जो लोग अलग-अलग संगठन के हैं, जिनको राजनीति से कोई मतलब नहीं है, वे संघा कर रहे हैं। आज गुजरात की घटना गुजरात की नहीं रह गई है। स्वयं प्रधान मंत्री जी जब गुजरात गये थे, पार्लियामेंट्री डैमोक्रेसी में स्विच एक जगह पर होता है। यदि वही स्विच दस जगह पर कर देंगे तो एक व्यक्ति स्विच को ऑन करेगा और दूसरा ऑफ करेगा। हमेशा पॉवर का स्विच एक रहता है। प्रधान मंत्री जी जब वहां गये थे तो लोगों में विश्वास जगा कि जरूर नेतृत्व परिवर्तन होगा लेकिन उसके बाद जब कुछ नहीं हुआ तो लोगों को निराशा हाथ लगी है। मैं चाहता हूं कि जो सदन की एलाईज पार्टी की और आम लोगों की भावना है, उसका आदर किया जाना चाहिए। तर्क दिया जा सकता है। तर्क पक्ष और विपक्ष दोनों में भी दिया जा सकता है। वोट की राजनीति है। प्रधान मंत्री जी की स्वयं की लाइन है कि लाशों के ढ़ेर पर कभी राजनीति नहीं चाहिए । इसलिए मैं आपसे आग्रह करूंगा कि यह प्रस्ताव बहुत ही सादा है। इस प्रस्ताव को सदन के सभी लोगों को स्वीकार करना चाहिए। वहां के नेतृत्व का परिवर्तन किया जाना चाहिए औऱ पार्लियामेंट का डेलीगेशन अलग-अलग बनाइए। आप दस-बीस कमेटी बनाइए। अलग-अलग कमेटी को जिम्मेदारी दीजिए और उन कमेटीज में हर पार्टी के नेता रहने चाहिए। अलग-अलग जिले में जाएं, एक-दो दिन रहें और वहां के लोगों के जो घाव हैं, उन पर मरहम लगाने का काम करें और उनको विश्वास में लेने का काम करें। उसके बाद देखिए कि एक नया माहौल देश में क्रिएट होता है या नहीं अगर सिर्फ यह मानकर चलेंगे कि यह गुजरात का मामला है, यह पार्टी का मामला है, इसका देश से कोई मतलब नहीं है तो ठीक नहीं होगा। मैंने इस्तीफा दिया तो बहुत बड़ा क्रांतिकारी कदम नहीं उठाया। मेरी नीयत यह भी नहीं थी कि हम सरकार को डीस्टेबिलाइज करें लेकिन मुझे संतोा है। जितने देश से टेलीफोन नहीं आ रहे हैं, उतने विदेश से टेलीफोन आ रहे हैं और सब कह रहे हैं कि एक अच्छा काम हुआ है। ये टेलीफोन इसलिए आ रहे हैं कि लोगों के मन में कहीं न कहीं इस बात का दर्द है कि जो कुछ हो रहा है उससे देश का मस्तक विदेश में शर्म से झुक रहा है । मुसलमान अल्पसंख्यक है और विदेश में तो हिन्दू अल्पसंख्यक हैं। वहां भी

दूसरे धर्म के लोग यही कहना शुरू करें कि कौन बहुमत में है और कौन अल्पसंख्यक में है तो हमारे यहां तो पहचानना मुश्किल हो जाता है कि आदमी किस धर्म का है, दाढ़ी बढ़ा ली तो उस व्यक्ति को सिख या मुसलमान भी समझा जा सकता है। लेकिन विदेश में सीधे रंग-भेद के कारण समझा जाएगा कि यह हिन्दू है। वहां अल्पसंख्यक हिन्दू हैं। इसलिए इसको न अल्पसंख्यक के रूप में तौला जाए और न बहुसंख्यक के रूप में देखा इसको इस रूप में देखा जाये कि यह देश कैसे मजबूत होगा। मै समझता हूं कि यह देश तब तक मजबूत नहीं होगा जब तक कि देश में रहने

वाले हर व्यक्ति को देश और नेतृत्व के प्रति विश्वास नहीं होगा। मैं फिर सदन से आग्रह करूंगा कि इस प्रस्ताव में ऐसा कुछ भी नहीं है कि सरकार के ऊपर सेंशर मोशन आ रहा है या भारत सरकार से इस्तीफा मांगा जा रहा है। यह इतना ही है कि इस घटना की हम निंदा करते हैं, प्रशासन का वहां फेलियर रहा है और भारत सरकार वहां कारगर कदम उठाए। लाखों की संख्या में वहां लोग शिविर में हैं, जो लोग पाकिस्तान से हिन्दुस्तान में चले आए, आज तक वे इस घाव को नहीं भूल पाये हैं। जो हिन्दू कश्मीर से चले आये हैं, वे भी घाव को नहीं भूल पाये हैं। तो जो लोग गुजरात से दूसरी जगह पर जाएंगे तो क्या वे घाव को भूल जाएंगे ? हम बाहर वालों से लड़ेंगे या घर में एक नया एक्सट्रीमिस्ट पैदा करेंगे? इसलिए मानवता की दृटि से इसे देखना चाहिए और इस प्रस्ताव के हक में सबको वोट देकर इसे सर्वसम्मति से पास करना चाहिए। ... (व्यवधान)

SHRI OMAR ABDULLAH (SRINAGAR): Mr. Deputy-Speaker Sir, I rise on behalf of the Jammu and Kashmir National Conference to participate in this discussion under Rule 184. By and large over the last almost thirteen and a half hours the minorities in this country have been looking for a discussion not on apportioning blame on what has happened, who has done what, but they are looking towards the future, where we have gone wrong, how we can address the situation, how we can ensure that incidents like Godhra and Gujarat do not take place again, and how we can build confidence in the minorities again.

As Shri Ram Vilas Paswan has rightly said, what is a minority community in one part of the country is a majority community in another. Minorities in Gujarat are the majority community in Jammu and Kashmir. So, you cannot look at a situation in isolation. The State that I belong to, the State of Jammu and Kashmir, had almost an unblemished history of communal harmony until our neighbours across the border did everything to tarnish that history. In 1947 when the rest of the country was burning, it was Mahatma Gandhi who looked at Jammu and Kashmir and said: "While the rest of the country looks dark to me, it is in Jammu and Kashmir that I see a ray of light". My grandfather had one of his slogans in his political campaign which to this day the National Conference follows in their election campaign and otherwise: " इस शेरे कश्मीर का क्या इरशाद, हिन्दू-मुस्लिम-सिख इत्तिहाद। " That is, the unity of Hindu, Muslim, Sikh and all other communities.

Yet, unfortunately today we are deeply pained by the situation that we see prevailing in Gujarat. It is a situation that to this day, more than two months after the initial outbreak of violence, forces the President of India to express his anguish at the continued violence and the continued deaths in that State. A lot has been said about how Godhra justifies or in some way has given rise to violence in Gujarat. Nobody in his right mind can justify what happened in Godhra, the killings of those innocent people being burnt to death in the train. No religion and no individual can justify it. But, then to seek to justify the deaths of – even if you go by the official figures – more than 800 people in riots after riots because of what happened in Godhra is equally reprehensible.

It has been taught to us that an eye for an eye makes the whole world blind. But, we want to forget that; we want to believe that revenge killing is the right way to go about a situation. This is not the way in which we can continue. What is it that has caused this divide between communities; what is it that has caused this violence to erupt between Hindus and Muslims; what is it that gave rise to the killings in Godhra? People have gone into the malaise of economic disparities, the malaise of lack of opportunities for minorities, etc. But, a very large part of it, the way I see it, has to go with the fact that religion and communalism have begun to play a large role in politics today. Minority communities in particular, people belonging to backward castes, Scheduled Castes and Scheduled Tribes are now treated more as vote banks than as genuine community members of India. We appeal to a particular section of a community because we want their votes. Nine out of ten times we get their votes and then we forget about what we have appealed to them for. This is a malaise that has crept into our system and this is a malaise that we really need to work towards removing. This is not something that one political party can do. This is something that all of us together must make a concerted effort to amend and to correct.

It has been suggested that Godhra was the result of foreign hand and that foreign intelligence agencies had a role to play in the massacre in Godhra. I am not going to join that debate even for a moment. It is possible. Investigations are still on. Let us see what is the result. Let us, for a

moment, assume that this assumption is correct that foreign hand had a role to play in the massacre in Godhra, then are we not our worst enemies? Have we not played directly into the hands of those who perpetrated that crime in Godhra? Did we not respond in exactly the same way they wanted us to respond? All they wanted is to play the Hindu-Muslim divide. They wanted to set some part of the country a live wire. It is because diplomatically we were ahead; we were way ahead of our neighbour; we have the moral high ground; we have the traditions of our democracy; we have the traditions of our secularism; and we have the traditions of our plurality. These were the questions that they could not answer. Yes, they could project themselves as being part of the struggle against terrorism. But on the points of secularism and on the points of democracy, our neighbour had no answer. So, if Godhra is a crime that they perpetrated, then today General Musharraf and his Government must be sitting and laughing at us. It is because even they could not have imagined that the response to what they have done could have been as overwhelming in their favour as it is today. Today, unfortunately we are on the defensive. We may not like to admit it. But the fact of the matter is that today India is batting on the back foot. We are constantly having to reaffirm our secular credentials in the face of newspaper reports carrying stories of people dying every day. The fact that terrorists and militant organisations have recognised this weakness of ours, is reflected in the fact that after more than thirteen years of terrorist violence in Jammu and Kashmir, for the first time, a temple, Raghunath Mandir, was attacked in Jammu. If, in thirteen years, a temple has not been attacked in Jammu, why now, in the aftermath of Gujarat, are we beginning to see an attack on the temple in a Muslim majority State? It is because they have found our weakness. They have found our weakness that they are able to exploit. They have seen that India is vulnerable to Hindu-Muslim divide and they are seeking to take advantage of it. Even though they made this effort in Jammu and Kashmir hoping that they could stir up violence, fortunately good sense prevailed on the people and violence did not take place. Is Gujarat and the violence being perpetrated there between the communities, the view of the majority of Indians? No. How can it ever be? If that is the view of majority of Indians, then today we would have had Gujarat in every State in India. Gujarat, unfortunately, is a minority on both the sides. The minority of the

community that was responsible for what happened in Godhra and minority of the Hindu community that was responsible for the violence that followed after that. But it is a sad fact of life that it is always the militant minority that is heard. The silence of the fundamentally secular majority is never recognised. What needs to be done in Gujarat? What can we do to ensure that situation like this does not arise? It is because a lot in the debate has been about pointing blame. You did this in this year. This has happened now. You were responsible for that. This has been the result here. This was never the purpose of this debate. The purpose of this debate, as far as the minority community and as far as this country as a whole is concerned, is to suggest ways and means to ensure that we never have to face this violence. It is shameful that after 55 years of Independence, we have to face the problem that we do. What can we do? Obviously, there is a need to go down even harder on the elements, on both the sides, that are still responsible for the violence. There are still militant elements on both the sides of Hindus as well as Muslims that allow this violence to continue. That must stop.

See the conditions in camps. The conditions under which the migrants, who have been forced to leave their homes, to what I heard, are absolutely tragic.

And things need to be done to improve the conditions they live under. The today's figure I heard was that in a camp of 20,000 people, there are 12 toilets. Sir, 12 toilets are there for 20,000 people. Men are asked to bathe on one day and women on another day. They get half a bucket of water every alternate day. These are unacceptable conditions that need to be addressed.

The Non-Governmental Organisations need to be given a free hand to work there to improve the situation. We need to work more to de-politicise the administration and police. Let the officials, who are doing a good job, remain there. Do not mess around with the officials. The officials get the feeling that they are being punished for doing their work.

We need to reduce the role of communalism in politics. Something in our electoral process has to be done to reduce it. A colleague of mine in the

Government, looking at the U.P. example, said that in Uttar Pradesh you no longer cast your vote but you vote your caste. This is the telling reflection on the situation in our country and the way it is developing.

Administrative reforms are absolutely vital. Non-interference and effective handling must be allowed in our administration without partisanship. There have been longstanding recommendations by the National Police Commission that have been completely ignored. These, we believe, are absolutely essential to be implemented. Reforms are essential in the criminal justice administrative system. These will all have far-reaching effects on ensuring that a situation like the Gujarat is never allowed to happen. We must never discriminate on the basis of religion. No community in this country must be given a feeling that it is a second-class community and its citizens are second-class citizens. To allow a situation wherein a Muslim victim of violence is given rupees one lakh and a Hindu victim of violence is given Rs.2 lakh is unacceptable in a country where the founding fathers of the country laid so much emphasis on the secular credentials and our secular polity. In fact, this is another area where we play directly into the hands of our neighbours across the borders. They have always accused us by saying one thing. Whenever they have tried to inflame passions in Jammu and Kashmir and whenever they take advantage of India's Muslim minority, particularly in the Middle-East and the Arab world they have always said it. They have always said that the Muslims in India are second-class citizens. We have always said that it is not like that and the Muslims in India are equal to everybody else; there is no difference and the law is blind as far as the Hindus, Muslims, Christians, Sikhs, Jains and everybody else are concerned. But, unfortunately, in Gujarat, for a short while, we allowed it to be conveyed that there is one group which is qualified for a higher relief and there is another group which is qualified for less. This, unfortunately, was the situation that caused us a great degree of embarrassment and it should never be allowed to be repeated.

The National Conference is not calling for the resignation of Shri Narendra Modi. In fact, we do disagree with his handling of the situation. We do believe that there was a lot more that the Government in Gujarat could

have done. But we do not believe that it is right for a political party, particularly for a political party like the National Conference that has been in the wrong side of article 356 of the Constitution on so many occasions, to call for the dismissal or the resignation of the Chief Minister of Gujarat. We believe that there are three ways in which he will go. It is either according to his own conscience looking at the situation which will dictate it; or his party will demand his resignation or, finally, we are proud of our democratic credentials that at the end of the day he will face the electorate. Certainly, the electorate will decide whether what he has done in Gujarat is right or not. That is the decision that we cannot make for him.

The National Conference, in all its wisdom, after having looked at the Resolution, having weighed its pros and cons, having looked at the position that we are in today, has decided that it is in the best interest of ourselves and our future to abstain in this vote and that is the decision that we have taken. I will end my brief speech, Mr. Deputy-Speaker, Sir, with a small poem, which is more as a prayer that I have grown up with in my school. It has been written by Rabindranath Tagore. It is a feeling, I believe, that we must all take to our heart because it is a poem, it is a prayer that really will lead to a better India.

He says that:

"Where the mind is without fear and the head is held high;

Where knowledge is free;

Where the world has not been broken up into fragments by narrow

domestic walls;

Where words come out from the depths of truth;

Where tireless striving stretches its arms towards perfection;

Where the clear stream of reason has not lost its ways into the dreary

desert sand of dead habit;

Where the mind is led forward by Thee into ever widening thought and action;

Into that heaven of freedom my Father, let my country awake."

I hope, Mr. Deputy-Speaker, Sir, that after 55 years of Independence, we will awaken to what is expected of us.

With these words, I thank you.

श्री जी.एम.बनातवाला (पोन्नानी) : जनाब डिप्टी स्पीकर साहब, अक्लियत मुखालिफ फसादात और अक्लियतों के गैर महफूज होने पर ईवान में तजवीज पेश हुई है, मैं उस तजवीज की ताइद, हिमायत और सपोर्ट में खड़ा हुआ हूं। यह तजवीज समाजवादी पार्टी के लीडर ने पेश की है। अपोजीशन की मुख्तलिफ तजवीज आई थी, हमारी भी तजवीज थी, लेकिन मुझे जो हैरत है वो इस बात पर है कि इस वक्त जो तजवीज ईवान के सामने है, वह निहायत ही कमजोर, खोखली, बोदी और डिफैक्टिव तजवीज है कि जो सदन के सामने है। इस पर मैं रंज, गम, गुस्से और मायूसी का किस कदर इजहार कर सकता हूं। हैरत है, तजवीज की मैं ताइद कर रहा हूं, लेकिन मुझे तरमीम देनी पड़ी। इसलिए हैरत है कि इस तजवीज में जो इस वक्त ईवान के सामने हैं, न तो गुजरात के साथ इंसाफ किया गया, न तो गुजरात पर कोई शार और मजबूत तरीके से फोकस लिया गया है और न ही इस तजवीज के अंदर इस बात का जो मतालिबा है कि गुजरात की मौजूदा हुकूमत को बर्खास्त कर दिया जाए। इस तजवीज में क्या कहा जा रहा है कि हां, कुछ मुअस्सिर कदम लिये जाएं, कुछ इफैक्टिव स्टैप्स लिये जाएं, कुछ कदम लिये जाएं।

डिप्टी स्पीकर साहब, एक हफ्ते तक लोक सभा मुअत्तल रही, कोई काम नहीं हो सका। क्या मतालिबा था। क्या मतालिबा इतना ही था कि वहां यह हुकूमत उठे और कुछ कदम ले ले। क्या यह मतालिबा था ? आठ दिन तक लोक सभा चल नहीं सकी, मुअत्तल रही और मतालिबा रहा तो यह मतालिबा रहा कि गुजरात की हुकूमत को बर्खास्त करो - इसलिए कि जब तक वह है, तब तक इंसाफ नहीं हो सकेगा, तब तक अमन-शांति नहीं हो सकेगी, तब तक कोई काम नहीं बन पड़ेगा। लेकिन इस तजवीज के अंदर इन जज्बातों का कोई इजहार नहीं है। हां, तकरीरों में कहा गया है, लेकिन तजवीज में सिर्फ इतना कि कदम उठा लो, कुछ कदम उठा लो। अब यह हुकूमत पर छोड़ दिया गया है कि वह क्या कदम उठाये और क्या कदम न उठाये। यह तजवीज, पिछले हफ्ते लोक सभा में जो हालत बनी, उसकी मुखालिफ तजवीज मालूम होती है। इसलिए हमारी भी एक तरमीम वहां पर है, मेरा भी एक अमैन्डमैन्ट वहां है और इस अमैन्डमैन्ट में साफ तौर पर कहा गया है कि दफा 356 दस्तूरे हिंद को आयद की जाए ताकि गुजरात में हुकूमत बर्खास्त हो।

मैं सभी से अपील करूंगा कि गुजरात इंसाफ मांग रहा है, गुजरात अमन चैन और शांति मांग रहा है और इसकी खातिर इस तरमीम की ताईद की जाए, इस अमेन्डमेंट को सपोर्ट किया जाए और खास तौर से अपोजीशन में जो सदस्य बैठे हुए हैं, उनसे अपील करूंगा । हफ्ता भर तक आपकी कुर्सी तक पहुंचकर नारे लगाए गए कि गुजरात की हुकूमत बर्खास्त करो और आज तजवीज पेश की गई कि हां, जो कदम आप मुनासिब समझो वह कदम उठा लो - यह देश के साथ इंसाफ नहीं है। इसमें कोई शक नहीं है कि मुखतलिफ मुकामात पर अकलियत मुखालिफ फसादात हुए। इसके जिम्मेदार जो हैं, जिन्होंने हालात को भड़काया, वो फासिस्ट कम्यूनल एलीमेन्ट्स, हमारे सामने मौजूद हैं। कर्नाटक हो, महाराट्र हो, यूपी हो, राजस्थान हो, कितनी ही रियासतों के नाम मैं लेता चला जाऊं। अगर कर्नाटक की बात मैंने की तो मेरे पास एक लंबी लिस्ट है सारे गांवों की कि पिछले दो-तीन हफ्ते में तमाम गांवों में जो फसादात हुए हैं। मैं इनके नाम कहां कहां तक बताऊं - होदेआलूर, ऊन-होसूर, सोलेभानवी, कोलार, चकबलापुर, बेलगाम सिटी फोर्ट रोड, बीजापुर, कुतूर, जामकडी, ऐसी कितनी जगहें हैं, कहां तक नाम लूं। महाराट्र के लिए कहा गया कि 50 से 60 फसादात हुए। इस साल भी हुए। मालेगांव में मस्जिदें तबाह व बरबाद, इबादतगाहों पर हमले, कितनी जानें हलाक, पावरलूम सेन्टर तबाह और बरबाद, आज भी वहां पर कितनी जगह महाराट्र के अंदर टेन्शन है और इकोनॉमिक बॉयकॉट की भी बात की जाती है। लेकिन जहां मैं यह कह रहा हूँ, गुजरात का फसाद कोई फसाद नहीं था। यह वहां की हुकूमत की सरपरस्ती में कत्ले आम और कार्नेज है। यह गवर्नमेंट की तरफ से और उसकी सरपरस्ती में नस्लकुशी है जिसे जैनोसाइड कहते हैं। लूटमार, आतिशजनी, जिन्दा जला देना, इश्तमाई, असमतजरी, रेप, क्या नहीं वहां पर हुआ, और ये नस्लकुशी, गैस सेलेन्डर, फायर बॉम्ब्स, all kinds of inflammable chemicals का वहां इस्तेमाल हुआ। कैमिकल वारफेयर और जैनोसाइड हमने वहां देखा। फिर इलेक्ट्रिक करंट का प्रयोग हुआ- यहां पर कितने वाकये पेश किये जाएं। अहमदाबाद में मेहसाणा में पाउडर और लिक्विड के पैकेट्स मौजूद थे बड़ी तादाद में हमलावरों के पास और आतिशजनी के वाकये हुए हैं। मेहसाणा, सरदारपुर गांव और कितनी जगहों का कहा जाए। मकानों के आस-पास पानी फेंककर हाई वोल्टेज करंट दौड़ा दिया गया। यह नस्लकुशी नहीं, जैनोसाइड नहीं तो फिर क्या है? अगर मैं अपने ही मुल्क की सबसे बड़ी ऐवान में पहुंचकर यह बात न कहूं तो कहां कहूं? इस बात पर गौर करना होगा। जबर्दस्त माली नुकसान हुआ जिसका कोई अंदाजा नहीं। मैं समझता हूँ कि गुजरात में खास तौर से पिछले चंद बरसों में तिजारत और भी आगे बढ़ गई हैं ।

02.00 hrs.

चाहे वह तिजारत होटल कम्प्यूटर, टेक्सटाइल्स, ट्रांसपोर्ट, आटोमोबाइल, एजेंसीज, बिल्डिंग कंस्ट्रक्शन में कितने आगे बढ़ गये हों। उनको तबाह और बर्बाद करके रख दिया गया है। इख्तसादी तौर पर कंडेम कर दिया गया है । माइनोरिटीज के विाय में, नैशनल ह्यूमन राइट्स के विाय में मुखतलिफ वफूद यूरोपियन यूनियन तक सब आकर अपनी रिपोर्ट दे चुके हैं। वक्त नहीं है

कि मैं सजेशन्स दे सकूं। इन सबकी रिपोर्ट के अंदर सजेशन मौजूद हैं। पुलिस और एडमिनिस्ट्रेशन जिस तरह से जानिबदार रहा और पार्शल रहा, उसकी दास्तान इस हाउस में मैं पहले भी पेश कर चुका हूं। अदालती इंक्वायरी हो रही है लेकिन इंसाफ की कोई उम्मीद नजर नहीं आती। एक फार्मर पुलिस चीफ मिस्टर रिबेरो क्या कहते हैं ? ... (व्यवधान)

मैं खत्म कर रहा हूं। उनसे पूछा गया कि इस अदालती इंक्वायरी से क्या इंसाफ हो सकेगा? यह एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ पुलिस जो फर्जेशिनासी नहीं थी । क्या उनको सजा हो सकेगी ? He replied: "Not unless the Government goes, and another - which does not have sympathy for rioters – takes their place.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Please conclude, Shri Banatwalla.

श्री जी.एम.बनातवाला :यह हालत है। कितनी ही चीजें हैं जो कहने के लिए रह गयी हैं। आप मुझे बैठ जाने के लिए कहते हैं। अभी मुझे गोधरा के बारे में कहना है। अगर उसके ऊपर नहीं कहूंगा तो मुझसे कहा जायेगा कि तुमने उसे कंडम नहीं किया। हम पहले भी कंडेम कर चुके हैं। आज भी कंडेम कर रहे हैं। लेकिन गुजरात गोधरा का रद्देअमल और रिएक्शन होता तो मुल्क के दूसरे हिस्सों में भी होता लेकिन ऐसा नहीं हुआ। यह गोधरा सिर्फ बहाने के तौर पर इस्तेमाल किया गया है। हम गोधरा के इंसीडेंट को कंडेम करते हैं। यह एक बहाना बनाया गया है। एक मनसूबाबंदी के साथ तबाह और बर्बाद करने की कोशिश की गई है। यहां पर चीफ मिनिस्टर बैठे हुए हैं। चीफ मिनिस्टर कहता है कि ऐसे जजों की फेहरिस्त तैयार की जाए जो हकूमत के खिलाफ फैसले देते हैं, क्या इंसाफ की तवक्को की जाए । वह कहते हैं कि रिलीफ के कैम्पों में आतंकवादी हैं। अब इन कैम्पों के अंदर जहां बुनियादी इंसानियत सहूलियतें नहीं हैं, उन कैम्पों के अंदर उन्हें परेशान किया जा रहा है। पुलिस कैम्पों के अंदर घुसकर उन लोगों पर गोली चलाती है, फायरिंग करती है। कैम्प के अंदर भी फायरिंग होती है। बाहर दुकानें लूटी जाती हैं। ... (व्यवधान) एफ.आई.आर. उनके खिलाफ कर दी जाती है। ...(व्यवधान) यह मासूम, लुटे-पिटे, मजलूम और बर्बाद हैं। इसके बाद यहां पर भी इन हालात को रखना, ह्यूमन राइट्स कमीशन ने, माइनोरिटीज कमीशन ने कहा कि ऐसे पुलिस अफसरान का तबादला किया गया, जो फर्जेशिनास थे। उनको वापिस लाया जाये । लेकिन गुजरात हुकूमत के कान पर जूँ तक नहीं रेंगती। इम्तहान के सिलसिले में क्या कहा गया ? केवल इतना कहा गया कि कुछ इलाके सेंसटिव इलाके हैं। उन इलाकों के बजाय सेफ इलाके लिये जायें लेकिन वे मानने को तैयार नहीं थे। आज कहा गया कि हम सिक्योरिटी देंगे। बसें गई लेकिन सिक्योरिटी नहीं थी। कितनी जगह बसें गई जो लेट थीं ? बच्चों का कितना वक्त बर्बाद हो गया।

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri G.M. Banatwalla, please conclude now. Now, Captain Inder Singh.

श्री जी.एम.बनातवाला : मैं एक बात कह कर खत्म करता हूं। अदालत ने कहा है कि इम्तिहान दुबारा होने चाहिए लेकिन वे सेफ जगह पर हों। अगर हम अमन चाहते हैं, शान्ति चाहते हैं, हम कितने भी सजैशन्स दें, मोदी सरकार उस पर अमल करने वाली नहीं है।... (व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri G.M. Banatwallah, please conclude now. This is too much.

श्री जी.एम.बनातवाला : हुकुमत को हटाए बिना वहां किसी किस्म का... (व्यवधान)

लिहाजा मैं ऐवान से इस बात की गुजारिश करता हूं कि मेरे अमैंडमैंट को कबूल किया जाए कि गुजरात की सरकार बरखास्त की जाए। शुक्रिया।

कैप्टन (सेवानिवृत्त) इन्द्र सिंह (रोहतक) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि आपने इस चर्चा में नेशनल लोक दल पार्टी की ओर से मुझे बोलने का समय दिया। हमारी पार्टी उस आधार पर टिकी हुई है जिसको हमारे संविधान में धर्मनिर्पेक्षता दी गई है। हमारे नेता ताऊ देवी लाल ने हमें यह शिक्षा दी थी कि जब आप सदन में जाएं तो एक पंचायत के रूप में वहां अपना चरित्र रखें। हमने गांव की पंचायत देखी है, बुजुर्गों की पंचायत भी देखी, जिनके चरित्र में हमने देखा कि वे निपक्ष और निकाम भाव से न्याय करते थे। उसी नेता की शिक्षा के अनुसार हम यह समझते थे कि मैं पहली बार इस सदन में आया। यहां बहुत तजुर्बेकार सदस्य मौजूद हैं। उन्होंने कई सालों तक लगातार इस सदन में तजुर्बा किया है। हम समझते थे कि इस सदन में हम उनसे कोई बढ़िया बात सीखेंगे। लेकिन नहीं, हम ऐसा नहीं देख पा रहे हैं। हम जब अपनी पार्टी की तरफ देखते हैं, अपने प्रदेश की तरफ देखते हैं तो यह देख कर चलते हैं कि हमारी पार्टी हमारे नेता की नीतियों को शत-प्रतिशत लागू करते हुए, धर्मनिर्पेक्षता में पूर्णरूप से विश्वास रखते हुए प्रदेश का संचालन कर रही है और इस प्रकार कर रही है जिसमें प्रदेश में 36 कौम एक साथ चल कर अपने विकास में अग्रसर हैं।

आज एक सदस्य ने हमारी धर्मनिर्पेक्षता पर एक टिप्पणी की। जब से हरियाणा का वजूद हुआ है, हरियाणा के अंदर कोई धार्मिक उन्माद नहीं है, कोई जातिवाद नहीं है, क्षेत्रीयवाद नहीं है, अगर कोई बात है तो केवल यह है कि हम विकास की ओर चल रहे हैं। उन्होंने यहां तक भी बताया कि जो नेशनल डैमोक्रेटिक ऐलायंस के घटक हैं।

उनकी चुनावों में क्या हालत हुई है, यह शायद माननीय सदस्य को पता नहीं है। यमुना नगर के चुनाव में यह कहने वालों की जगह तीसरे नम्बर की थी। इसलिए हमें सोचकर बोलना चाहिए।

यहां हम ऐसे ही नहीं आए हैं। हम 100 करोड़ से ज्यादा जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसलिए हम हिन्दू और मुसलमान के बीच फूट डालकर वोट की राजनीति न करें। हम यहां इसलिए आए हैं कि हम देश से भूख हटा सकें, विकास के काम कर सकें, लोगों को सही दिशा में ले जाए सकें न कि यहां वोट की राजनीति करें। गुजरात की चर्चा जब सुबह शुरू हुई, उससे पहले 11 मार्च को भी इस पर चर्चा हुई थी। फिर 27 और 28 फरवरी को गोधरा और गुजरात के अंदर जो कुछ हुआ, हमारे नेता चौधरी ओम प्रकाश चौटाला जी ने उसकी घोर निंदा की। वाकई में वह निंदनीय बात भी हुई थी। मैं यहां पर यह कहना चाहता हूं कि जो कुछ वहां हुआ, उसको यहां वोट की राजनीति, पार्टी पोलिटिक्स से ऊपर उठकर सोचना चाहिए। हम उस समस्या का निदान नहीं कर सके तो इसके परिणाम अच्छे नहीं होंगे। वहां निंदनीय घटना हुई। लेकिन इसको तूल क्यों दिया गया। इस सदन में बहस से उस आग के अंदर घी डालने का काम किया गया। प्रैस और मीडिया की तरफ से जो कुछ दिखाया गया, उसने भी कोई अच्छा काम वहां नहीं किया। हम लोग आग लगाने के लिए यहां नहीं बैठे हैं। हम देश के अंदर एकता पैदा करने के लिए यहां आए हैं। क्या हम यह नहीं समझते, क्या हम इस बात को भूल गए कि हमारी सशस्त्र सेनाएं किस हाल में बोर्डर पर अपना जीवन व्यतीत कर रही हैं। हमारे ऊपर चारों तरफ से खतरा मंडरा रहा है। हम उन ताकतों का शिकार होना चाहते हैं, जो हमारे अंदर फूट डालकर हमारी दुर्गति करना चाहती हैं।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं सशस्त्र सेनाओं की बात करता हूं तो मेरे मित्रों को यह बात अच्छी नहीं लगती। जब जार्ज साहब के मुंह से सशस्त्र सेना की बात निकली तो एक तरफ से आवाज आई कि वे वहां क्यों बैठी हैं। उनको मालूम नहीं कि हमारे लाल अपनी छाती सामने रखकर वहां खड़े हैं और अपनी जान देकर हमारी सीमाओं की रक्षा कर रहे हैं। शायद उनको यह पता नहीं जिनके बेटे-पोते नहीं मरते। हमारे हरियाणा में हम रोजाना ऐसे दाह-संस्कार अटेंड करते हैं। आप इस बात को फिरकापरस्ती की तरफ ले जाना चाहते हैं, केवल इसलिए कि आगे चुनाव आने वाले हैं और एक कौम के वोट बटोर कर कुर्सी पर आ सकें। आप कफन का प्रचार करते हैं, यह भी सही नहीं है। आपने कारगिल युद्ध के समय जो प्रचार किया, वह भी नहीं किया जाना चाहिए था। आप हमारी सेनाओं का मनोबल गिराना चाहते हैं, मैं यह स्पट कहना चाहता हूं।

बात वही कहिए जिससे हमारे अंदर सौहाद्र पैदा हो जिससे इस देश के अंदर शांति पैदा हो। मुझे बहुत कम समय दिया गया है। मैं अपनी बात कुछ पंक्तियों के साथ समाप्त करता हूं :

" जल गया घर मेरा, कैसे बताऊं तुमको,

मेरे अपने ही थे घर को जलाने वाले।

आग को न होती अपने पराये की पहचान,

यह बात भूल गये आग लगाने वाले,। "

अगर हम वोट की राजनीति से ऊपर उठेंगे और मैं पार्टी के पक्ष की बात कहूंगा। अगर इस बात को आप अपने मन में डाल लें क्योंकि आप मेरे से तो बुजुर्ग बहुत हैं। मैं अपनी पार्टी की ओर से इस प्रस्ताव का विरोध करता हूं क्योंकि यह प्रस्ताव राजनीति से प्रेरित है। इसके अंदर पूरी वोट की राजनीति है और अगर यह न होता तथा मैं मिसाल अब दूंगा कि प्रियरंजन दास मुंशी जी और सोमनाथ चटर्जी जी, मैं उस बंगाल के हादसे का गवाह हूं, ममता बैनर्जी जी यहां बैठी हुई है, उनकी टांग तोड़ी गई और मुसलमानों के एक गांव को बिल्कुल बर्बाद किया गया। उन लोगों का आज तक पता नहीं है। एक लाख लोग आज भी शिविरों में बैठे हुए हैं, क्या उनकी भर्त्सना करना ये भूल गये थे? इसलिए मुझे इनके प्रस्ताव पर विश्वास नहीं है। इसलिए मैं और मेरी पार्टी इसका विरोध करती है।

श्री जोवाकिम बक्सला (अलीपुरद्वारस) : उपाध्यक्ष महोदय, इस गंभीर विाय पर जो चर्चा हो रही है, उसमें भाग लेने के लिए आपने मुझे मौका दिया, इसके लिए धन्यवाद देना चाहता हूं। पिछले दो महीने से भी ज्यादा दिन हो गये हैं, गुजरात में जो साम्प्रदायिक घटनाएं हो रही हैं, उन घटनाओं से पूरे देश के लोगों में अस्थिरता पैदा हो गई है। विशोकर गोधरा कांड जो हुआ, गोधरा कांड की निंदा हम लोगों ने पहले भी की है और हमारी पार्टी आरएसपी की ओर से आज गोधरा कांड की निंदा करने के लिए मैं यहां पर खड़ा हुआ हूं।

नियम 184 के तहत बहस करने के लिए जो प्रस्ताव यहां लाया गया है, मैं उसके पक्ष में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। आज गुजरात में जो घटनाएं हो रही हैं, बेगुनाह लोगों को मारा जा रहा है, बच्चों को मां की गोद से छीनकर उनकी हत्याएं की जा रही हैं। दो महीने से भी ज्यादा गुजर गए, लेकिन आज भी स्थिति नियंत्रण में नहीं है। वहां जो प्रदेश की सरकार है और सरकार को नेतृत्व देने वाले जो मुख्य मंत्री हैं, उन्हें मैं इन सब घटनाओं का जिम्मेदार मानता हूं। आज वहां जो घटनाएं और नरसंहार हो रहा है, बेगुनाह लोगों की हत्याएं हो रही हैं,... (व्यवधान) सम्पत्ति की जो लूट हो रही है, उसके लिए वहां के मुख्य मंत्री को मैं दोाी ठहराता हूं। साथ ही साथ केन्द्र में जो सरकार है, भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में जो सरकार केन्द्र में है, उसमें लालकृण आडवाणी जी, गृह मंत्री और प्रधानमंत्री जी ने भी वहां की घटनाओं का सही रूप से आकलन नहीं किया। यही वजह है कि वहां जो घटनाएं हो रही हैं, उन पर केन्द्र का भी कोई नियंत्रण नहीं है।

महोदय, अभी रक्षा मंत्री जी ने टिप्पणी की। उन्होंने कहने की कोशिश की और जस्टीफाई करने की कोशिश की कि इसके पहले भी दंगे एवं अत्याचार हुए हैं, महिलाओं पर बलात्कार हुए हैं, इसलिए अभी जो गुजरात में घटनाएं हो रही हैं, वे स्वाभाविक हैं। जार्ज फर्नान्डीज़ जी, इस तरह की टिप्पणी करके गुजरात के लोगों को आप क्या संदेश देना चाहते हैं, क्या जस्टीफाई करना चाहते हैं कि जो घटनाएं गुजरात में हो रही हैं, नरसंहार, दंगे गुजरात में हो रहे हैं, चूंकि इसके

पहले भी 1984 में इसी तरह की घटनाएं हुईं, इसलिए आज वहां जो घटनाएं हो रही हैं, वे जस्टीफाइड है। हमारे रक्षा मंत्री जी इस देश को क्या संदेश देना चाहते हैं। इस देश में हम लोग जो सम्प्रदायिक सौहार्द बरकरार रखना चाहते हैं, उसे यह नट करने का संदेश भेजना चाहते हैं। रक्षा मंत्री जी देश में आग लगाने की कोशिश करना चाहते हैं। इसलिए मैं चाहता हूं कि यथाशीघ्र कुछ करें, कल का इंतजार नहीं करना चाहिए। समय काफी निकल चुका है, दो महीने से भी ज्यादा समय गुजर चुका है, अब और इंतजार करने का वक्त नहीं है। इसलिए मैं यह गुजारिश करूंगा, मेरी और मेरी पार्टी की ओर से यह मांग है कि वहां के मुख्य मंत्री, श्री नरेन्द्र मोदी को तुरंत बरखास्त किया जाए। इसमें केन्द्र सरकार भी बराबर की दोाी है, इसलिए प्रधानमंत्री जी को भी इस्तीफा दे देना चाहिए, क्योंकि जिस तरह प्रधान मंत्री बयानबाजी कर रहे हैं, ... (व्यवधान) जिस तरह की बयानबाजी प्रधान मंत्री जगह-जगह पर अपने बयानों को परिवर्तित रूप में प्रस्तुत करने की कोशिश कर रहे हैं, अपने भावों का प्रकटीकरण करने की कोशिश कर रहे हैं। ... (व्य वधान) गुजरात में जो घटनाएं हो रही हैं, वे देश के लिए कलंक हैं। कभी वह कहते हैं कि इस तरह की घटनाएं होने के बाद मैं विदेश किस मुंह से जाऊंगा। ... (व्यवधान) कुछ समय बाद अपने बयान को परिवर्तित करते हुए कहते हैं कि नरेन्द्र मोदी जो कुछ कर रहा है, वहां की स्थिति को नियंत्रण में लाने के लिए भरसक कोशिश कर रहे हैं और उसे शाबाशी देते हैं - इस तरह प्रधान मंत्री जी दो तरह के बयान देना चाहते हैं। ... (व्यवधान) मैं जानना चाहता हूं कि इसके पीछे केन्द्र सरकार की मंशा क्या है? ... (व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Joachim Baxla, please resume your seat.

... (*Interruptions*)

श्री जोवाकिम बखला : महोदय, वहां जो घटनाएं हो रही हैं, उन्हें नियंत्रित करने के लिए यह संकल्प आया है। ...(व्यवधान)

केन्द्र सरकार क्या-क्या उपाय करने जा रही है। इन्हीं शब्दों के साथ मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करते हुए मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

* श्री रतिलाल कालीदास वर्मा : उपाध्यक्ष महोदय, 184 के अन्तर्गत गुजरात की स्थिति पर आज बहस हो रही है। मुझ से पहले माननीय सदस्यों ने गुजरात की स्थिति पर काफी प्रकाश डाला है लेकिन किसी भी घटना की सही जानकारी के लिए उसके उद्‌गम के कारणों की जानकारी प्राप्त करना अति महत्व का होता है। गोधरा के अंदर 27 फरवरी को साबरमती एक्सप्रेस ट्रेन में जो राम भक्त रामलला के जन्म स्थान के दर्शन कर अपने घर लौट रहे थे और जिनका इंतजार घर वाले बड़ी बेसब्री से कर रहे थे, उस वक्त उन्हें क्या मालूम था कि हमारे मां बाप और भाइ घर आने से पहले ही बीच में जिन्दा जला दिये जायेंगे। सुबह 7.30 बजे गोधरा में आतताइयों ने ट्रेन रोक कर

उनके ऊपर पैट्रोल, केरोसिन डालकर जिन्दा जला दिया। उनमें 26 महिलायें, 21 पुरूा और जो आज का बालक कल का भारत है, ऐसे ही 12 बाल भारत को आग में भून दिया गया।

उपाध्यक्ष महोदय, यहां बैठे हुए बहुत से वरिठ सदस्यों ने, हमारी प्रतिपक्ष नेत्री महोदय ने भी उस जले हुए डिब्बे में मरने वालों की भस्म देखी है। उस डिब्बे में ध्यान से सुनने का प्रयत्न अगर किसी माननीय सदस्य ने किया हो तो वहां मासूम बच्चों की चित्कारें सुनायी देती, बच्चों को बचाने के लिए तड़पती मां दिखायी देती, और परिवार का पालन करने वाले पिता दिखायी देता और जिन्होंने जलाने का जघन्य अपराध किया है, उनकी मारो काटो, जलाओ की गूंज सुनाई देती, लेकिन अफसोस है कि उस डिब्बे को केवल घटना की निशानी के रूप में ही देखा गया। इन जली हुयी लाशों को देखकर पत्थर भी पिघल जाये, कितना ही बेरहम इंसान हो तो उसके भी दिल में रहम आ जाये लेकिन इन गोधरा के आतताईयों ने यह कदम उठाते हुए जरा भी नहीं सोचा। एक दूसरे से जुड़े हुए शव दिखायी दिये तब जनता का आक्रोश जाग उठा और जगह जगह पर हिन्दु समुदाय के द्वारा प्रतिक्रिया हुयी।

सभापति महोदय, अगर यह 27 फरवरी की घटना न होती तो कुछ भी नहीं होता और इसके साथ साथ 27 की घटना की यदि उसी दिन उसके प्रति सर्वपक्षीय और सभी लोगों के द्वारा निन्दा की जाती तो यह आक्रोश कुछ कम हो सकता था। लेकिन जब 28 की घटना घटी जब साम्प्रदायिकता की आग में सब जलने लगा, हाहाकार मच गया तब निन्दा और विरोध प्रदर्शन किया गया। क्या 27 फरवरी के दिन मरने वाले इंसान नहीं थे, क्या वे किसी का परिवार नहीं था, क्यों उस दिन खामोश रहे ? इस बात पर आज सारे

*Laid on the Table.

देश में प्रश्नचिन्ह लगा है। मेरा तो यह कहना है कि 27 तारीख को जो घटा वह भी जघन्य अपराध है और जो 28 तारीख को घटना घटी वह भी उतनी ही खराब है। लेकिन आज इसकी चर्चार् के लिए खासकर कांग्रेस ओर विपक्ष ने 7-7 दिन सदन चलने नहीं दिया अगर चर्चार् का उद्देश्य राजनीतिक लाभ उठाने का नहीं होता तो किसी भी नियम के तहत यह चर्चार् हो सकती थी लेकिन 184 के तहत ही चर्चार् हो , उसके लिए धरना देकर बैठ गये। लेकिन कांग्रेस यह भूल जाती है कि इस घटना का सूत्रधार कांग्रेस का ही पदाधिकारी था, कांग्रेस के ही एक प्रकोठ के सदस्य थे, जिनका नाम है, पंचमहल जिले के हाजीबिलाल, मोहम्मद कलूटा, सलीम शेख, अब्दुल मजीद दांतिया तथा अब्दुल रज्जाक और उसके साथी ही हैं। कांग्रेस के लोगों ने शांतिप्रिय गुजरात, धर्मप्रेमी गुजरात और सद्भाव का प्रचार करने वाले गुजरात, अपने राट्रपिता महात्मा गांधी

के गुजरात को आग की ज्वाला में झोंक दिया। पूरे गुजरात के बारे में बार बार चर्चार् करवा कर पूरे देश में ही नहीं सारे विश्व में बदनाम करने का दुस्साहस किया है।

माननीय सभापति जी, आज गुजरात के अंदर, जहां दंगे हो रहे हैं, उनमें अहमदाबाद और बड़ौदा शहर हैं। लेकिन अहमदाबाद में भी सिर्फ 6-7 वार्डो में ही ये दंगे आज भी जारी हैं, जिनमें दानीलीमड़ा, बहरामपुरा, जमालपुर, रायखड़, गोमतीपुर, राजपुर, शाहपुर, जुहापुरा इत्यादि हैं। आपको सुनकर ताज्जुब होगा कि जिन वार्डों की मैंने गिनती करवायी है,उनमें मुस्लिम समुर्दाय के साथ साथ दलित समुर्दाय के लोग भी रहते हैं। 28 की घटना के बाद 72 घंटों में दंगाइयों पर पूरा नियंत्रण कर लिया गया था लेकिन ये दंगे धार्मिक कट्टरवादी अनिठ तत्वों द्वारा बार बार इन दलित बस्तियों पर हमला आज तक होता आ रहा है। इन हमलों में कहीं इनके घर जलाये गये, इनके घरों को लूटा गया और इनकी हत्यायें हुयी हैं। मेरी जानकारी के मुताबिक अब तक 40 दलितों की हत्या हो चुकी है। मरने वालों में कुछ को जिन्दा जलाया गया, कुछ प्राइवेट फायरिंग में मारे गये कुछ पैट्रोल बम से मारे गये और तलवार जैसे घातक हथियारों को इस्तेमाल किया गया। इसमें अपने ही लोक सभा के माननीय कांग्रेस के सदस्य श्री प्रवीण राट्रपाल के निजी संबंधी एवं पूर्व सांसद महेश कनोडिया जहां रहते थे, वे अपने ही मोहल्ले के दरवाजे से 200 गज की दूरी पर स्कूटर से उतार कर बाप और बेटे पर कातिलाना हमला किया गया, जिसमें 19 र्वाीय नीतिश परमार ने अपनी जान गंवा दी। इन्होंने कोइ गुनाह नहीं किया था। बाप बेटे को विश्वास था कि हम हिन्दू मुस्लिम साथ साथ ही रहते हैं, बचपन में साथ साथ खेले हैं, हम एक दूसरे से परिचित हैं इसलिए वे बाहर निकले लेकिन दंगाईयों ने इनकी जान नहीं बख्शी। ऐसी ही एक दूसरी घटना है, जिसे सुनकर आपका दिल दहल जायेगा। राजपुर-गोमतीपुर के छोटे वणकरवास में रहने वाले सेल टैक्स कर्मचारी श्री देवानंद सोलंकी होली मनाने के लिए अपने घर आये थे। दोनों बस्तियों के बीच में 10 फुट का अंतर है, उन्हें खींच कर ले गये। उसको जान से मार दिया गया। सिर्फ मारा ही नहीं गया बल्कि उसके शरीर के 26 टुकड़े कर दिये गये और टुकड़े भी न पहचाने जायें, इसके लिए उन पर एसिड डाल दियाग या। आठ दिन तक तो मालूम ही नहीं पड़ा कि वे हैं कहां, लेकिन मरने वालों के परिवारों ने जिद ही पकड़ ली कि हमें जिन्दा या मुर्दा हमारे भाइ चाहियें। तब जाकर 8 दिनों के बाद हत्यारे पकड़े गये और वे शवों के टुकड़े, जो कहीं गाड़ दिये गये थे, उसको दंगाइयों ने बाहर निकाल कर दिखाया।

आज इस क्षेत्र की सकराघांची की चाल, सलियावाली चाल, प्रतापनगर, अशोक नगर, छोटा वणकरवास, बड़ा वणकरवास, नरसिंह भगत की चाल आदि पीड़ित क्षेत्रों की मुलाकात यदि दिल्ली से आनेव ले प्रतिनिधिमंडल ने ली होती तो वास्तविकता सामने आ जाती। इस क्षेत्र से ही कांग्रेस के विधायक श्री शैलेस परमार और अहमदाबाद के उप महापौर खेमचंद सोलंकी, दोनों ही कांग्रेस के प्रतिनिधि हैं, जब वे दलित बस्ती में गये तो उन्हें दलित समाज के आक्रोश का सामना करना पड़ा, उन्हें वहां से अपना मुंह छिपा कर भागना पड़ा। आज कांग्रेस के किसी भी समाज के प्र ातिनिधि वहां नहीं जा सकते। दानी लीमड़ा, बहरामपुर और जमालपुर क्षेत्र के पार्ाद, जो कि कांग्रेस

की टिकट से चुने गये हैं, वे भी दलित समाज की बस्ती में घुस नहीं सकते क्योंकि दलित समाज ने यह महसूस किया है कि इनकी शह एवं छत्रछाया में ही ये दंगे हो रहे हैं तथा निर्दो दलित अपनी जान गंवा रहे हैं।

माननीय सभापति महोदय, ये मरने वाले दलित भाइ वाों से इन बस्तियों में रहते थे। यह पहला दंगा नहीं है। इससे पहले भी गुजरात में दंगे होते रहे हैं, 1969, 1970, 1985, 1990, 1992 एवं 2002 में। जब जब हिन्दु मुस्लिम दंगे हुए हैं, दलित लोग अपने घर छोड़कर, अपना मोहल्ला छोड़कर और कहीं जाकर बसने लगे। आज जमालपुर में ऐसे अनेक मोहल्ले हैं, जहां के दलित लोग अपना घर छोड़कर बहरामपुर और दानिलीमड़ा में बसने आ गये तथा स्वर्ण समाज के लोग नदी के उस पार चले गये।

दानीलीमड़ा, जमालपुर, वैजलपुर, राजपुर गोमतीपुर और बहरामपुरा में रहने वाले भयभीत दलित रात रात भर सो ही नहीं पाते हैं। यहां भी उन्हें मुसीबतें झेलनी पड़ रही हैं। पूरी पूरी रात उन्हें दहशत रहती है और अनायास चारों ओर से हमला शुरू हो जाता है। उनके घर जला दिये जाते हैं, उन्हें लूटा जाता है, इसलिए कि दानीलीमड़ा का दलित समाज अपना घर बेचकर जाने लगें और उनके घर सस्ते दामों पर बिकने लगे। लेकिन अल्पसंख्यक समुर्दाय के लोग यह घर खरीद न सकें इसके लिए स्थानीय दलित प्रतिनिधियों ने कलैक्टर के द्वारा आदेश जारी किया कि हिन्दू के मकान की खरीद फरोख्त या रजिस्ट्री नहीं होगी। लेकिन दलित समाज इतना डर गया है कि वे घर छोड़ कर भाग रहे हैं और आज इनकी बस्तियां, जो कि दलित समाज की थीं उजड़ गयी हैं। दानीलीमड़ा में स्वर्ण समाज का पूरा गांव था लेकिन पूरा गांव और उनकी सोसायटियां अल्पसंख्यक समाज ने खरीद लिया है और स्वर्ण समाज अन्य जगह पर चला गया है लेकिन यह दलित समाज जाये तो जाये कहां, अब किसी को किसी पर भी भरोसा नहीं है और न तो उसके पास पैसा ही है। आज मिलें बंद होने के कारण इनका जीना मुश्किल हो गया है और उनकी जो मजदूरी है वह मुस्लिम समुर्दाय के छोटे मोटे उद्योगों के साथ जुड़े हुए हैं। आज उनकी रोजी भी छूट गयी है, उनका घर भी छूट गया, उन्हें जीवन जीना दूभर हो गया है। गुजरात सरकार की ओर से राहत शिविर खोले गये हैं लेकिन यह समाज इतना स्वाभिमानी है कि भूखा मर जायेगा लेकिन हाथ नहीं फैलायेगा। राहत शिविर नहीं जायेगा। ये लोग आज अपने रिश्तेदारों के घर में जा कर रह रहे हैं। इसलिए सरकारी आंकड़ों में उनकी गिनती बहुत ही कम है। सरकार की ओर से जो आर्थिक सहायता देनी चाहिये उनमें इन दलित समाज के प्रति भी ध्यान दिया जाये। सामाजिक संस्थायें, विश्व हिन्दू परिाद और संघ के कार्यकर्ताओं द्वारा जीवनोपयोगी वस्तुयें बांटी गयी हैं, तो कुछ राहत मिली है लेकिन फिर भी गरीब परिवार को जीवन काटना मुश्किल हो गया है। वे राहत शिविरों में नहीं होने के कारण कैशडोल नहीं मिलता, राशन नहीं मिलता। होम गार्डो पर गलत उंगलियां उठाकर होम गार्डो की डयूटी रद्द कर दी। 90 प्रतिशत होमगार्ड दलित समाज के हैं, उनकी डयूटी रद्द होने के कारण उन्हें पैसे नहीं मिलते, आज वे भी परेशान हैं। रिलीफ

" कैम्प में नहीं फिर भी मजबूर हैं, मदद पाने से बहुत दूर हैं,

मुंह पर उनके नहीं नूर है, लेकिन जीवन दुख से भरपूर है।"

मान्यवर, दो दिन पहले अहमदाबाद जिले के वैजलपुर क्षेत्र में बलदेवनगर, विभाग 1 और 2, दयालपार्क, रतनदीप सोसायटी, शांतिनाथ, झलक अपार्टमेंट, बालेश्वर भाग 1 और 2, पी एंड टी आये हुए हैं, जहां मेरे संसदीय क्षेत्र के लोग, दलित समाज के लोगों की सोसायटियां आयी हुयी हैं। जुहापुरा में रात से सुबह 4.00 बजे तक पैट्रोल बम, प्राइवेट फायरिंग, राकेट लांचर, विदेशी बमों के द्वारा आतंक मचाया हुआ था। इतने बड़े पैमाने पर लोगों का हमला होता है कि एकबारगी तो मिलिट्री भी स्तब्ध रह जाती है। आपको जानकार ताज्जुब होगा कि मेरे एक परिचित श्री सिन्धुभाइ मकवाना, जो कांग्रेस के जमालपुरा के पूर्व पार्षद हैं। ये दलित समाज की बस्ती में रहते हैं। नौगजापीर का टेकरा, हाजीबिन का टेकरा, चोर गली, रायखड और उनके चारों ओर मुस्लिम समुर्दाय के लोग रहते हैं। हर रात को हमले होते हैं और रक्षा के लिए पुलिस सहायता के लिए मुझे फोन करते हैं और मुझसे जो संभव होता है, मैं उनको सहायता पहुंचाने का प्रयत्न करता हूं।

आज गुजरात में एक वर्ग विशो के कुछ कटटरपंथियों के द्वारा दलित तथा आदिवासी हिन्दु बंधुओं पर जो अत्याचार हुए उससे उनका जीना मुश्किल हो गया है। माननीय महोदय, ज्यादा न कहते हुए अब तो कहना पड़ रहा है कि कोइ लौटा दे मेरे बीते हुए दिन, मेरे प्यारे प्यारे दिन। जन्म के पहले न कोइ हिन्दू होता है न मुसलमान होता है, जन्म के बाद ही उस पर मुहर लगा दी जाती है। " हिन्दु-मुसलमान की बातें बहुत हो गयी अब तो कहना पड़ेगा कि तू हिन्दू बनेगा न मुसलमान बनेगा, इंसान की औलाद है इंसान बनेगा। " और भगवान से कहता हूं कि हे मालिक तेरे बंदे हम, नेकी पर चले और बदी से टले ताकि हंसते हुए निकले दम। ऐसी हमें शक्ति दे। मैं कांग्रेस और ि वपक्ष से प्रार्थना करता हूं कि - साथी हाथ बढ़ाना, एक अकेला थक जाये तो मिलकर बोझ उठाना। लेकिन आज बोझ बढ़ाने का प्रयत्न किया जा रहा है। अतः शांति स्थापित करने के लिए हम इनका सहयोग चाहते हैं। अगर भारतीय जनता पार्टी और उसके सहयोगियों के साथ पूरा ि वपक्ष इमानदारी से अगर हाथ बढ़ाते हैं तो मेरे देश की धरती सोना उगले उगले हीरा-मोती।

आज चारों ओर खून खराबा देखने को मिलता है। उसको रोकने के लिए - संभल कर रहना अपने घर में छुपे हुए गद्दारों से। आखिर में आज जो लोग राहत शिविरों में रह रहे हैं उनसे भी प्रार्थना करना चाहता हूं कि - आ अब लौट चलें, तुझ को पुकारे गांव तेरा। अब गुजरात राज्य के तथा समग्र भारत के समय की मांग है कि छोड़ो कल की बातें, कल की बात पुरानी, नये दौर से लिखेंगे मिलकर नयी कहानी, हम हिन्दुस्तानी। और यह कहानी होगी, सहृदयता की, एकता की, अस्मिता की, प्राचीन विरासत की और अखण्ड तथा सुदृढ़ भारत के निर्माण की।

दंगों से प्रभावित क्षेत्र निम्नलिखित हैं

राजपुरा गोमतीपुर क्षेत्र

1. छोटा वणकरवास
2. बड़ा वणकरवास
3. हीरालाल की चाल
4. खाडावाली चाल
5. काशीभाइ की चाल
6. सात चाल
7. मगन कुम्हार की चाल
8. सात चाल के पिछले हिस्से का डेहला
9. शकरा घांची की चाल
10. प्रतापनगर
11. मनहरनगर
12. सिल्वर मिल की चाल
13. तुलसी पाक
14. झूलता मिनारा की चाल
15. मगन कुम्हार की चाल
16. नटवर वकील की चाल
17. वीरा भगत की चाल
18. पापटियावड़के पिछले हिस्से की चाल
19. रक्ख्याल क्षेत्र में राजीव नगर
20. अमीधारा सोसायटी
21. मेघधारा सोसायटी
22. रक्ख्याल का वाल्मीकि वास
23. रक्ख्याल चार रस्ता पर की 40 ओरड़ियों (कमरे)

वैजलपुर

1. बलदेव नगर विभाग 1 एवं 2
2. बालेश्वर विभाग 1 एवं 2
3. रतनदीप सोसायटी
4. संत संगम सोसायटी
5. कृण रा हाऊस
6. भागयोदय सोसायटी
7. दयालपार्क

8. शमा सोसायटी
9. सिद्धि सोसायटी
10. शांतिनाथ सोसायटी
11. बृज सोसायटी
12. बैजलपुर का वणकरवास
13. मकरबा रोड पर बने दलितों के छपरे
14. वेणुगोपाल सोसायटी

इस पूरी सोसायटी को लूट लिया गया है एवं जला भी दिया गया है। इसके बीच में मात्र 40 फुट की रोड पर दलित एवं दूसरी ओर मुस्लिम रहते हैं। मुसलमान आधुनिक हथियारों से लैस होकर दलित घरों पर आक्रमण कर लूट पाट एवं मारकाट करते हैं।

गुजरात के घटनाक्रम एवं सरकार द्वारा किय गये सुरक्षा एवं राहत प्रबंधों का विवरण निम्नलिखित है जैसेकि

दिनांक 27 फरवरी, 2002

गोधरा -

7.48 पर चैन पुलिंग

- फलिया सिगनल के पास

5000 लोगों की उग्र भीड़ द्वारा पैट्रोल बमों से साबरमती एक्सप्रेस के डिब्बा क्रमांक एस5-6 में आग लगायी गयी। कुल 59 व्यक्ति मारे गये, जिसमें 26 महिलायें, 21 पुरूा एवं 12 मासूम बच्चे शामिल थे।

43 घायल

- सभी को सिविल अस्पताल ले जाया गया।
- पहले चार दिन में 3684 लोगों को सेना की सहायता दी गयी।
- पुलिस बुलायी गयी।
- संवेदनशीलन क्षेत्रों में 4 टुकड़ियां आर एफ एवं सी आइ एस एफ तैनात की गयी।

दिनांक 28 फरवरी, 2002

- बड़ौदा में प्रातः 8.00 बजे एवं अहमदाबाद में दोपहर 12.20 बजे निोध आज्ञा (कर्फ्यू) लागू की गयी।

- 28 फरवरी को रात्रि के दूसरे प्रहर में सेना बुलायी गयी तथा 26 कोलम सेना पहुंची।
- सेना सूरत एवं भावनगर भेजी गयी।

कानून व्यवस्था

- पुलिस द्वारा 9436 चक्र फायरिंग किये गये।
- पुलिस द्वारा 13243 अश्रु गैस के गोले दागे गये।
- पूरे गुजरात में कुल 176 व्यक्ति पुलिस फायरिंग से मारे गये।
- पुलिस द्वारा 37545 लोगों को गिरफ्तार किया गया।
- कुल 3653 अपराध रजिस्टर किये गये।
- विशो 1971 से आज तक पूरे राज्य में 443 साम्प्रदायिक दंगे हुए।
- 5406 शांति बैठकें बुलायी गयीं।
- 1067 सद्भावना शांति यात्रायें निकाली गयीं।

शांति और सौहार्द

- राहत शिविरों में कुल 3532 स्टेटमेंट लिये गये
- राहत शिविरों में 283 एफ आई आर दर्ज की गयी
- पूरे प्रांत में 6000 हज यात्रियों को अपने अपने घरों तक सुरक्षित एवं ससम्मान पहुंचाया गया
- एच एस सी एवं एस एस सी की परीक्षायें सम्पन्न हुयीं, जिनमें 95 से 98 प्रतिशत छात्रों ने परीक्षायें दीं
- 12 मार्च को महाशिवरात्रि, 25 मार्च को मोहर्रम, 27, 28 मार्च को होली एवं घुलेटी प र्व शांति से मनाये गये।
- रामनवमी उत्सव एवं महावीर जयन्ती भी सौहार्दपूण वातावरण में सम्पन्न हुए
- 1700 गांवों में पंचायत के चुनाव हुए जिसमें 75 प्रतिशत मतदाताओं ने शांतिपूर्ण हिस्सा लिय एवं कहीं भी अप्रिय घटनायें घटित नहीं हुयीं

राहत शिविरों में समुचित व्यवस्थायें

- चलती फिरती दुकानों द्वारा जीवनावश्यक वस्तुयें वितरित की गयीं
- अहमदाबाद कर्फ्यूग्रस्त क्षेत्रों में 56,000 किलोग्राम आलू एवं प्याज सस्ती दरों में उ पलब्ध कराये गये
- चिकित्सा सेवायें उपलब्ध करायी गयीं
- मृतकों के आश्रितों को 1.50 लाख रूपया देने की घोाणा की गयी
- 519 मामलों में 451.20 लाख रूपये प्रदान किये गये

- शारीरिक रूप से 10 प्रतिशत घायल को 5000 रूपया प्रति व्यक्ति
- 10 से 30 प्रतिशत हुए घायल को 15000 रूपया प्रति व्यक्ति
- 30 से 40 प्रतिशत हुए घायल व्यक्ति को 25 हजार रूपया प्रति व्यक्ति एवं 40 प्रतिशत से अधिक घायल को 50000 रूपये प्रति व्यक्ति राशि प्रदान की गयी
- कुल 651 लोगों को 15.82 लाख् रूपये की सहायता राशि प्रदान की गयी।

नकद सहायता

- 38123 लोगों में कुल 6057 लाख रूपये वितरित किये गये
- वह परिवार जिसमें अधिक से अधिक 5 व्यक्ति हों, को 15 रूपया प्रति व्यक्ति प्रतिदिन के हिसाब से 15 दिन तक दिये गये

घरेलू सामान वितरण

- प्रति परिवार 1250 रूपया। 16636 परिवारों को कुल 206.81 लाख रूपये की घरेलू सामग्री वितरित की गयी।
- राहत शिविरों में चलती फिरती सेवायें, चिकित्सा, शौचालय एवं स्नानागार तथा शुद्ध पेय जल की व्यवस्था मुहैया करवायी गयी।
- आंगनवाड़ियों की मार्फत पोाणयुक्त आहार 11624 बच्चों एवं 4690 माताओं को ि वटामिनयुक्त आहार वितरित किया गया।

दिनांक 25 अप्रैल, 2002 तक चल रहे राहत शिविरों का ब्यौरा

जिला कुल शिविर शरणार्थियों की संख्या

अहमदाबाद शहर 55 73579

आणंद 14 8307

पंचमहाल 7 7535

साबरकांठा 10 7566

महसाणा 5 1764

बड़ौदा 4 3568

खेड़ा 2 566

दाहोद 6 2516

कुल 103 105121

- कुल दंगा प्रभावित 12, 138 लोरी एवं गल्ले वालों में से 5636 लोगों में 360.36 लाख रूपये की आर्थिक सहायता प्रदान की गयी।

आवास सहायता

- 13887 मकान आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त हुए, उसमें 8411 मकान मालकों को 895.43 लाख रूपये की आर्थिक सहायता प्रदान की गयी
- पूर्ण क्षतिग्रस्त मकान कुल 5536, जिसमें से 2701 को 484.41 लाख रूपये की सहायता प्रदान की गयी।

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Ajoy Chakraborty.

श्री प्रभुनाथ सिंह : उपाध्यक्ष जी, बोलने की कोई समय-सीमा तय कर लीजिए, नहीं तो हमारा वोट सरकार के समर्थन में मान लीजिए और हमें जाने दीजिए।

SHRI AJOY CHAKRABORTY (BASIRHAT): Hon. Deputy Speaker, Sir, I rise to support the Motion moved under Rule 184. I feel shattered and with a broken heart, I am participating in this discussion regarding Gujarat where the secular fabric and the secular spirit of our country is totally destroyed. What Gujarat has witnessed is not a riot, it is a terrorist attack, followed by systematic, calculated and planned massacre and genocide.

Hon. *Rashtrapatiji* has expressed his anguish and agony over the Gujarat tragedy, Gujarat carnage. I am sorry to say that in the land of Mahatma Gandhi, who is respected throughout the world due to his non-violent movement, in the land of Mahatma Gandhi, the massacre, the carnage started on 27th February and is continuing up-till now. In the land of

Mahatma Gandhi, the Fundamental Rights of the citizens are being violated and the safety, equality and dignity of the citizens is being fully destroyed. Our Prime Minister, Shri Atal Bihari Vajpayee has visited Gujarat and has advised the Gujarat seers to discharge their *Rajdharma.* He also told those in the camp that they are the refugees in their homeland. He also said in Gujarat that how can he show his face outside the country. But I am sorry to say that the real face of Shri Atal Bihari Vajpayee was shown in Goa, in the BJP Executive Committee meeting. At a public rally, he criticised the Islamic fundamentalism - we also condemn the Islamic fundamentalism - but not a single word he uttered regarding the Hindu fundamentalism. The opener Member from the BJP side, Kumari Uma Bharati told about *Sarva Dharma Samanaya.* I remind Kumari Uma Bharati that in Gujarat, how their party, how their *Sangh Parivar* is performing the *Sarva Dharma Samanaya.* In Gujarat, mosques and Dargahs were razed and were replaced by the statue of Hanuman and saffron flags. Some Dargahs in Ahmedabad city crossing have overnight been demolished and the Dargah sites covered with building and road material. They were bulldozed so efficiently that those spots are not distinguishable from the rest of the road.

Sir, some *dargahs* in Ahmedabad city crossing have, overnight, been demolished and their sites covered with road-building material and the sites were bulldozed so efficiently that these spots are indistinguishable from the rest of the roads. … (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Chakraborty, please conclude now.

SHRI AJOY CHAKRABORTY : Traffic now plies over these former *dargahs* as though they never existed. Sir, on the mode of the killings, I may say that the activities of the *Sangh Parivar,* the barbarous acts of the *Sangh Parivar* were no less than the heinous crimes of the Talibans in Afghanistan. The mode and the nature of the killings have been explained in detail by our leader Shri Somnath Chatterjee. Many hon. Members have narrated in detail about the killings. I need not repeat the same. I only say that the Police administration and the civil administration have totally collapsed in Gujarat. … (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Chakraborty, please conclude now.

SHRI AJOY CHAKRABORTY : I am concluding. Sir, selected places were targeted by the police firing. The common and innocent people were misled by the Police in the hands of the rioters. If the Police or the administration was serious enough in their duty, then the riots could have been stopped within a few hours. I may say that what is happening in Gujarat is with the active connivance of the police. … (*Interruptions*) The riots, the carnage and the massacres in Gujarat are continuing. The highest levels of bureaucracy and the administration have totally kept mum and silent. I would say that the State Government has utterly failed in its duties in stopping the carnage in Gujarat.

We are, therefore, justified in our demand of the immediate removal of the Chief Minister Shri Narendra Modi. We know that Shri Narendra Modi is the darling of the BJP. So, he should be removed by the Central Government, the hon. Prime Minister and the hon. Minister of Home Affairs. … (*Interruptions*) It is very much our demand that for his failure to bring peace and communal harmony in Gujarat, the Chief Minister Shri Narendra Modi should be immediately removed from his post. The Allies of the NDA are very much justified in their demand for the removal of the Chief Minister of Gujarat, Shri Narendra Modi.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Ajoy Chakraborty, please conclude now. Shri Sultan Salahuddin Owaisi to speak now.

SHRI AJOY CHAKRABORTY (BASIRHAT): Sir, we appeal to the hon. Prime Minister that for the sake of the common people of Gujarat, for the unity and integrity of the nation and for the sake of the innocent people of the State of Gujarat the Chief Minister Shri Narendra Modi should be removed immediately.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Nothing will go on record except the speech of Shri Owaisi.

*(Interruptions)**

SHRI AJOY CHAKRABORTY (BASIRHAT): Sir, I am just concluding. I once again reiterate our demand for the immediate removal of the Chief Minister of Gujarat. Thank you.

*Not Recorded.

श्री सुल्तान सल्लाउद्दीन ओवेसी (हैदराबाद) : जनाब डिप्टी स्पीकर साहब, ऐवान में जो तहरीर पेश की गई है और जनाब बनातवाला साहब ने जो तकरीर पेश की है, मैं उसकी ताईद करता हूं। इसके साथ ही साथ मै यह कहना चाहता हूं कि अब तक जितनी तकरीरें यहां हुई हैं, मुझे ऐसा महसूस हुआ कि हर पार्टी इधर से अपना स्कोर बढ़ा रही है और उधर से भी हर पार्टी अपना स्कोर बढ़ा रही है, लेकिन हमारे सामने सवाल अकलियतों की जिन्दगी का है। गुजरात में जो कुछ हो रहा है, उनके ताल्लुक से यहां सवाल आना चाहिये कि उन लोगों को क्या सहूलियतें फरहाम की गई हैं, उन पर क्या मुसीबतें गुज़र रही हैं लेकिन अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि दोनों तरफ से अपना अपना स्कोर बता रहे है। आखिर अकलियतों को जो मुसीबतें आ रही हैं, उनका हल निकालने की जरूरत है। मैं चाहूंगा कि आप खुद इसके लिये गौर करें। जनाब जॉर्ज साहब दो महीने के बाद गुजरात गये। फारसी में एक शेर है जो तरमीम के साथ अर्ज है : बादह खराबी है गुजरात, जॉर्ज बेदार शुद।

दो महीने के बाद आप गुजरात गये और कहते हैं कि इतनों को गिरफ्तार किया गया और उनमें इतनी अक्लियतों के हैं। लेकिन कभी आपने क्या उनकी दफा को देखा। अक्लियतों के ऊपर जो पुलिस ने दफे लगायें हैं वे नाकाबिले जमानत हैं, वे छूट नहीं सकते। आपने बताया कि इतने गिरफ्तार हैं, मेरे भाई जरा अंदर जाकर देखो, अक्लियतों का ख्याल करो। इतनी मौहब्बत में न चले जाओ। बहरहाल, गौर करके देखें तो आपको मालूम होगा कि आखिर किस तरीके से यहां के जो हालात बनाये गये हैं, वहां सैकड़ों मसाजिद को शहीद कर दिया गया, दरगाहों को खत्म कर दिया गया और आज वहां कैम्पों को बर्खास्त करने की बात की जा रही है। इस डिक्टेटरशिप जहन का अंदाजा आप यहां कर सकते हैं कि अगर अकबात यहां उसका पुकारा करके रोकने की कोशिश की जाती है। यह आपका जवाब है, आप बतायें कि इनका जहन यहां साफ हो रहा है। आप कैम्पों को बर्खास्त करने की बात करते हैं और कहते हैं कि कैम्पों के अंदर गैर- समाजी अनासिर हैं - आखिर कौन लोग हैं जो मर रहे हैं, जिनके बच्चे मरे, जिनकी बीवियों का रेप किया गया। जिनका सब कुछ खत्म कर दिया गया, वे पड़े हुए हैं। वे भी आपको अच्छे नहीं दीख रहे हैं।

अफसोस की बात है कि किस तरीके से आप कर रहे हैं। हमने वहां जाकर देखा, मिलकर बात की, पुलिस स्टेशन के ऊपर मिनिस्टर ने कब्जा किया और वहां से उन्हें वायरलैस से इत्तला दी जा रही थी कि किस तरीके से हंगामा किया जाए - क्या आप उनकी तुरंत इंक्वायरी करायेंगे। मेरा मुतालिबा है कि सुप्रीम कोर्ट के एक बरसरे इख्तिदार जज के जरिये इसकी तहकीकात कराई जाए, उसकी रिपोर्ट को फाइनेलाइज माना जाए। जब तक यह हुकूमत बरकरार है, उस वक्त तक कोई मसला हल होने वाला नहीं है। हमारा काम यह है कि इस नरेन्द्र मोदी को फौरी बर्खास्त किया जाए। फर्नान्डीज साहब यकीनन आप वहां गये, लेकिन होम मिनिस्टर साहब आपको भी तो वहां जाना चाहिए था। आप वहां नहीं गये। इसी के लिए एक शायर ने कहा है -

गीरते अहले चमन का क्या हुआ, छोड़ आये आशियां जलता हुआ।

कम से कम आप वहां जाकर देखते और कुछ करते। हमारे वजीरे आजम ने यह समझा कि बस चार स्टेट्स में हार चुके हैं, अब महज सिर्फ एक यही रह गया है, हंगामा खड़ा कर दो, इसके बाद हमें कुछ हासिल हो सकेगा। लेकिन यह जानिये कि आपके पैरों के नीचे से जमीन खिसकती जा रही है। हम समझते थे कि आप बीमार हैं और घुटने के ऑपरेशन के बाद आप अच्छे फैसले करेंगे। लेकिन हमारी समझ में नहीं आ रहा है कि आपके क्या-क्या फैसले हो रहे हैं। मैं यह कहूंगा कि हमारे पासवान साहब ने जो इस्तीफा दिया है, यकीनन वह काबिले-मुबारकबाद है। मैं उन्हें इसके लिए मुबारकबाद देता हूं। इसके साथ ही मैं अपने तेलुगु देशम को भी कहूंगा कि इनके लिए यह ठीक है -

साफ छुपते भी नहीं, सामने आते भी नहीं, कैसा परदा है कि चिलमन से लगे बैठे हैं।

MR. DEPUTY-SPEAKER: Now, the next speaker, Shri Amar Roy Pradhan.

श्री सुल्तान सल्लाउद्दीन ओवेसी : यह तेलुगु देशम आखिर इधर से उधर और उधर से इधर क्यों हो रही है। आखिर आप किधर हैं, मेरी समझ में नहीं आता।

MR. DEPUTY-SPEAKER: Please conclude now.

श्री सुल्तान सल्लाउद्दीन ओवेसी : आखिर उसकी हिसाब क्या है। आज पूरे आंध्र प्रदेश में पुकारा हो रहा है। चंद्रबाबू नायडू ऐसे नेता हो गये हैं कि जो अपने ससुरे का नहीं हुआ वह तुम्हारा क्या होगा। आप क्या करेंगे, बोलिये।

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Owaisi, please conclude now.

श्री सुल्तान सल्लाउद्दीन ओवेसी : आज आपके पास क्या आपकी स्टेट का एक भी मुसलमान ओहदेदार किसी जिम्मेदार ओहदे पर है, क्या कोई आई.ए.एस. या कोई पुलिस अफसर है। आप बता नहीं सकते। …(व्यवधान) आप बच्चे हैं, मेरे सामने क्या बात करेंगे।

SHRI AMAR ROY PRADHAN (COOCHBEHAR): Mr. Deputy-Speaker, Sir, thank you for giving me a chance to speak. I support the Motion moved by Shri Mulayam Singh Yadav. At the same time, I appeal to the entire House to support the Motion.

Sir, with deep shock, agony and anguish, I must say that for the last 63 days, killing, arson, looting and raping are going on in Gujarat. It seems to me that Gujarat has become a slaughterhouse for Shri Modi to slaughter the minority community. Muslims are being butchered there. Somebody puts the number of people who were killed as 800; somebody puts the number as 4,000 and, according to some newspaper reports, it is more than 3,000. It is not a question of number. When a son is killed, I cannot say to his mother that your foster son has been killed; I will say that your only son has been killed. When a wife loses her husband, I cannot say that she lost her only husband. When a mother watches her minor daughters being raped by the hooligans, then it becomes a question of whether the Gujarat Government is functioning in a civilised manner.

I do not know why Shri George Fernandes and Shri Vaiko have been defending the case by referring to 1981 Nellie Carnage in Assam. They were referring to 1984 riots. In this way, do they like to justify what is happening today in Gujarat? Sir, I think, the Modi Government is very much reluctant to do anything. The Gujarat Government has shown blatant apathy, if not a direct complicity in the violence. Violence is going on unabatedly.

Recently, we received another shock. I know Shri Atal Bihari Vajpayee since the days of February 1958. I saw him later on in 1971. I know that BJP originally was a part of RSS or the *Hindu Mahasabha* . I know that they are the fundamentalist forces, but even then, I thought that there was some per cent of secularism in the mind of hon. Vajpayee. After what he

said in Goa, I know that he is no longer a secular person. The cat is out of the bag. I know that a wolf is moving wearing a deer skin.

It is a matter of regret that the Prime Minister of our country has been linked with the communal forces, the Hindu fanatics. Therefore, this country cannot run smoothly. Mr. Prime Minister, you have forgotten that you have some duty under articles 20, 25 and 355 of the Constitution. You have forgotten secularism, you have forgotten your duty under the Constitution and you have forgotten all these things. You are trying to defend the Chief Minister, Shri Narendra Modi, at any cost. It is a matter of regret. I would also like to say that you have rejected the report of the National Human Rights Commission.

The report of the Minorities Commission has been dismissed by the State as well as by the Central Government. Is it the way we are showing respect to the basic values of our democracy?

Sir, at the end I would like to submit that we should all condemn the incident that occurred in Godhra and also condemn the incidents that are taking place in Ahmedabad and in such other places. The Narendra Modi Government should go and must go immediately. We should pay our attention for those people who are in distress at the moment and for those who have been forced to live under the open sky. The law and order situation must be improved and communal harmony must be restored in the State.

Sir, with these few words, I conclude my speech.

SHRI MANI SHANKAR AIYAR (MAYILADUTURAI): Mr. Deputy-Speaker Sir, after an interregnum of thirteen or fourteen months we had, this afternoon, the perverse pleasure of listening to Shri George Fernandes expressing his smug satisfaction... (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: You will get your chance after him. I will call your name.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Nagmani, you are a three- Member party and you will get chance. I will give you five minutes. Please do not disturb now.

… (*Interruptions*)

SHRI MANI SHANKAR AIYAR : Sir, by slip of tongue he said that the Army had arrived in Ahmedabad on the 27th of February. The fact that they did not arrive nor were sent for on the 27th is of the utmost significance. Whereas the total number of troops that were brought in was only 12 columns or about 600 *jawans,* the State Government had, at that time, at its disposal more than 10,000 policemen. Had they been deployed, the situation could have been brought under control. But, as military intelligence has reported, because the State Government did not take immediate steps to deploy them the situation was not brought under control and violence has continued right up till this day. … (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Nagmani, what is wrong with you? Please resume your seat. I have given the floor to him.

… (*Interruptions*)

SHRI MANI SHANKAR AIYAR : The contrast between the way the Army has been handled under Shri George Fernandes's dispensation and the way in which it was deployed earlier has been sharply brought out in statements by Major General Eustace D'Souza (Retd.) of the Maratha regiment. … (*Interruptions*)Sushri Uma Bharti pointed out that Godhra is a highly sensitive area… (*Interruptions*) It was the proper deployment of the Maratha regiment in Godhra in 1948, 1953, 1955 and in 1985 which brought the situation under control within a few hours … (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Nagmani, I told you that you are a three-Member party and you will get a chance to speak for five minutes.

… (*Interruptions*)

SHRI MANI SHANKAR AIYAR : Then why is it that where deployment of the Army has restored normalcy in a matter of a few hours in all those previous 54 years that Shri George Fernandes was talking about, why under his control we have seen this disaster continuing?… (*Interruptions*)

The reason, Sir, is that on the 27 th of February, it became completely clear that the local non-secular forces, in collaboration with the Government, were determined to provoke a pogrom. Why? It is because they picked up the bodies; they took them to Ahmedabad; and statements were made there which indicated what they were up to. The VHP declared a *bandh* and the local unit of the BJP joined in the *bandh.* The Government of Gujarat, far from stopping the *bandh* , gave all the assistance to it. It was Shri Harin Pathak here who confirmed that most of the killing took place on the 28th of February during the course of the *bandh*. It was from the morning of that day till into the evening that much of the killing took place. At that time, the State Government was not deploying its police forces, and the army of Shri George Fernandes was pretending to save the country at the borders when it was really within the country that we were being seriously destabilised. … (*Interruptions*)

SHRI GEORGE FERNANDES: Sir, what is he arriving at? … (*Interruptions*)

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YASHWANT SINHA): Sir, he cannot refer to Indian Army as the Army of Shri George Fernandes. … (*Interruptions*)

We cannot accept it. … (*Interruptions*) What is this? … (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: I will look into the record and if anything of that kind is there, I will expunge it.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Hon. Members, please take your seats. I am asking him.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Mani Shankar Aiyar, you have used the words "Army of Shri George Fernandes was pretending…"

… (*Interruptions*)

SHRI MANI SHANKAR AIYAR : I do not recall that… (*Interruptions*)

SHRI VAIKO : Sir, he has to apologise..… (*Interruptions*)

SHRI PRAMOD MAHAJAN: Sir, he should withdraw and apologise… (*Interruptions*)

SHRI MANI SHANKAR AIYAR : Sir, if I said it, you may remove it from the records… (*Interruptions*)…If I have said it, I will withdraw it.… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Please withdraw those words.

… (*Interruptions*)

SHRI MANI SHANKAR AIYAR : Should I continue my speech?… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Have you withdrawn those words?

SHRI MANI SHANKAR AIYAR : Certainly, Sir… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: He has withdrawn those words.

… (*Interruptions*)

SHRI MANI SHANKAR AIYAR : Mr. Deputy-Speaker, Sir, on 27th February, the Prime Minister of India … (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Hon. Members, please.

… (*Interruptions*)

SHRI MANI SHANKAR AIYAR : On 16th March, 2002, the Prime Minister said that whatever has happened in Godhra, it is shameful for everybody… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Hon. Members, please take your seats.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Nothing will go on record.

*(Interruptions)**

MR. DEPUTY-SPEAKER: He has withdrawn those words.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Nothing will go on record.

*(Interruptions)**

3.00 hrs.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Nothing is audible. We cannot do anything.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Mani Shankar Aiyar, it is not recorded.

(Interruptions)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Mani Shankar Aiyar, it is not recorded; it is not going into the proceedings.

(Interruptions)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Mani Shankar Aiyar, it is not being taken down. Reporters are not in a position to hear you. Nothing is going on record.

*(Interruptions)**

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Mani Shankar Aiyar, I have already told you. Please hear me. Whatever you are saying is not being recorded. It is not audible.

… (*Interruptions*)

*Not Recorded.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Will you please repeat it later? Nothing is being taken down now.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Nothing is being taken down. Nothing is going on record.

*(Interruptions)**

MR. DEPUTY-SPEAKER: I ask all of you to sit down.

… (*Interruptions*)

SHRI GEORGE FERNANDES: The Army was not pretending. They were protecting our borders… (*Interruptions*)

SHRI MANI SHANKAR AIYAR : Mr. Deputy-Speaker, Sir, there were some words that you read a few minutes ago… (*Interruptions*). Let me just complete. Sir, there were a few words which you read out as my having said.

MR. DEPUTY-SPEAKER: This is what is said:

> "At that time, the State Government was not deploying its police force and the Army of Shri George Fernandes was pretending to save the country at the borders when it was really within the country that we were being seriously destabilised. "

… (*Interruptions*)

SHRI MANI SHANKAR AIYAR : Sir, can you just show it to me?… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: I will read it again:

> "At that time, the State Government was not deploying its police force and the Army of Shri George Fernandes was pretending to save the country at the borders when it was really within the country that we were being seriously destabilised. "

*Not Recorded.

SHRI MANI SHANKAR AIYAR : Sir, I wish to withdraw and apologise… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Now, will you please go back to your seats?

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: He has already apologised. Now the hon. Prime Minister will intervene.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Jha, he has already apologised.

… (*Interruptions*)

SHRI MANI SHANKAR AIYAR : In view of the fact that I have apologised and withdrawn those words, the not-recorded portion of my speech may be recorded.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Yes; in view of the apology tendered by the hon. Member and the withdrawal of the objectionable words, I am directing his speech to be recorded.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: His speech was not recorded. I did not record his speech.

SHRI PRAMOD MAHAJAN: Then how will people know what for he apologised?

SHRI RAM NAIK: What he said should remain on record and his apology also should remain on record.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Yes, that particular word and his apology will form part of the record. Otherwise how will it make sense? The remaining part of his speech, from that portion onwards, was not recorded. So, now I have allowed the remaining part of his speech to be laid on the Table.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: I cannot call everybody for this debate. Otherwise, till morning I will have to sit here. Now the Prime Minister.

प्रधान मंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी) : उपाध्यक्ष जी, मैं चर्चा का जवाब देने के लिए खड़ा नहीं हुआ हूं। मुलायम सिंह जी ने जो प्रस्ताव पेश किया था … (व्यवधान)

श्री नागमणि (चतरा) : उपाध्यक्ष महोदय, आप हमारे साथ अन्याय क्यों करते हैं। बिहार में लूट हो रही है और हम बिहार के बारे में बोलते हैं और आप गुजरात-गुजरात करते हैं। बिहार में लूट-खसौट का साम्राज्य स्थापित हो गया है। …(व्यवधान)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : उपाध्यक्ष महोदय, गुजरात के दंगो में जो बेघर हुये हैं और जिनके पुनर्वास का मामला सदन और देश के सामने है, उस बारे में सरकार की तरफ से एक एलान करना

चाहता हूं... (व्यवधान)

श्री रामदास आठवले (पंढरपुर) : उपाध्यक्ष महोदय, हम 15 घंटे से यहां बैठे हुये हैं और आप भी यहां हैं..

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Ramdas Athawale, please resume your seat.

… (*Interruptions*)

श्री रामदास आठवले :उपाध्यक्ष महोदय, मणिशंकर जी के बाद मेरा नाम था।

उपाध्यक्ष महोदय : ऐसे तो 5-6 और आदमी हैं तथा उसके लिये साढे चार- पांच बजे तक बैठना पड़ेगा।

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: How can I accommodate everybody?

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Athawale, you cannot speak on every subject.

… (*Interruptions*)

SHRI PRAMOD MAHAJAN: Shri Athawale is becoming the virtual Leader of the Opposition. Every time, he wants to speak before the Prime Minister speaks. … (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: If the House agrees, we will hear both of them.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Four or five other Members are there to speak. I cannot allow this.

… (*Interruptions*)

श्री नागमणि : उपाध्यक्ष महोदय, मेरा पाइंट ऑफ ऑर्डर है। हम लोकसभा में तीन सदस्य हैं, क्या हमें बोलने का मौका नहीं मिलेगा?… (*Interruptions*)

श्री प्रभुनाथ सिंह : उपाध्यक्ष महोदय, एक पार्टी के सदस्य 40-40 मिनट बोलें। इनका पार्टी का 3 मैम्बर्स हैं, क्या इनको बोलने का मौका नहीं मिलेगा? ऐसे सदन नहीं चलने वाला है।

उपाध्यक्ष महोदय : नहीं चलना है क्या?

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: I cannot allow everybody to speak on every subject. Do not compel me to do this.

… (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: I want to know the consensus of the House. We can start the Prime Minister's speech and then finish it. हाउस का ओपीनियन लेकर हमें काम करना पड़ता है।

… (व्यवधान)

श्री नागमणि : उपाध्यक्ष महोदय, आप मेरे साथ क्यों अन्याय कर रहे हैं। कई मैम्बरों को आपने इतना समय दिया और मुझे पांच मिनट भी बोलने का समय नहीं दे रहे हैं।…(व्यवधान) आपने पोटो पर बहस के समय हमें बोलने का समय नहीं दिया। गुजरात के प्रस्ताव पर बोलने का समय नहीं दिया।

MR. DEPUTY-SPEAKER: If you agree, let him speak for five minutes.

… (*Interruptions*)

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : Everybody is trying to decide for the Chair. A wonderful scenario is developing! Where is this House coming to?… (*Interruptions*)

SHRI DENZIL B. ATKINSON (Nominated) :Mr. Deputy Speaker Sir, I am thankful for the opportunity provided to me by my party to speak on

the motion moved by Shri Ramji Lal Suman.

Sir, on the eve of Independence many Western observers predicted that the country would "get Balkanised, the Indian States would revolt, (Thank God it has not happened) the writ of law would not run, (as though those who make the laws observe them), there would be no safety of property or life (it happened when Indira Gandhi was assassinated), no virgin or rupee would be safe in the country." (we see this happening in Bihar, courtesy the Congress)

In this hour of trial, it is necessary for us to remind ourselves that religious bigotry has never been a part of our history or tradition. In no other country have the followers of so many sects and sub-sects co-existed so happily. Religious persecution has always been an anathema to our people. Long long ago, an illustrious son of India, Emperor Ashoka told his people "Do not quarrel about religions, concord is meritorious. Do not imagine that you have a complete hold on Truth. (Opposition please note) You may not have it; no religion has a monopoly of Truth; you must try to know the God above all gods who is expressed in different ways and different individuals."

Sir, after the assassination of Smt Indira Gandhi, an Indian citizen by birth, Congress activists brutally butchered about 4000 Sikhs, all Indians by birth. The reason " a Sikh security man stationed at her residence fired the bullets from his service weapon. He was not planted to carry out the assassination. The response of Shri Rajiv Gandhi about the hideous killings is well known to us. The life of one individual snapped the lives of a few thousand, about ten thousand taking their families into consideration, and they belonged to a minority community. I liken this to the thousands of Indians, thank God for at that time Indians recognized themselves only as Indians and not on lines of religion, when at the behest of the British rulers, Indian policemen were forced to shoot dead their own countrymen or to ruthlessly beat them up. And the opposition using an hand, sickle or hammer aided by light, not enlightenment, of a lantern, riding on a cycle are officiants of the half moon and star. And let us not forget that an ex Prime Minister and the Congress Party’s Prime Ministerial candidate was exterminated and just security/police personnel were killed in the bomb

blast. Not a single Congress or a personal aide was among those killed as they were out of the range of the bomb explosion. Sir, I am one among crores of Indians who are firmly convinced that there was a larger conspiracy behind the crime.

The Sabarmati Express arrived at Godhra station on Feb. 27, 2002 at 7.43 a.m. several hours behind schedule. It departs at 7.48 a.m. Compartment S-6 filled with Ramsevaks, I refer to them as pilgrims, were returning to their homes after paying reverence at Ayodhya, the birth-place of Lord Rama. Barely having traveled about 700 to 800 meters from Godhra station, chain pulling was resorted to. Within the next few minutes the doors to the coach were blocked, may be even locked from outside. A mob of a few thousand mounted the most barbaric attack on unarmed pilgrims. Using fist sized stones to break the glass windows and then hurling petrol & diesel bombs into the compartment, they stood guard till the coach was ablaze, till not a whisper was heard and not a finger moved. They left only when sirens were heard of the police and fire extinguishing vehicles. And on reaching the spot what do the police and other officials find. Charred remains, beyond identification, of 12 innocent children, 26 women and 20 men, all Indian citizens. What was it that the opposition expected ? That the ISI sponsored killers be embraced, garlanded and paraded as heroes. When several Indians are mercilessly killed, escape routes blocked, does one expect calm? Did not Congress men go about killing Sikhs with violence and cruelty ? And over how many days did this indiscriminate slaughter carry on! How many years did it take for a court decision? One can form a mental image of what form of harassment the witnesses were subjected to during this long period.

There are alleged reports of some incident at Dahod station, the last halt before Godhra. Here it is said that passengers on the train belonging to a particular community were asked to get down. 36 persons who suffered burn injuries were rushed to the Godhra Civil hospital. No parrallel can be found in history of a crime so dastardly. What can any right thinking citizen judge from so ghastly a moral wrong doing? Except of course from those who committed the uncivilized act, their colleagues and who knows, their patronizers. The investigation agencies and the judicial commission

should spare no stone unturned to get to the truth. But we have to search for the reason behind such a gruesome act. Indian troops are stationed along the borders with our friendly enemy. Gujarat has a lengthy border and the troop concentration could have been massive. Infiltrating into Indian territory was impossible. Entry of trained terrorist recruited from within India were not able to cross over to carry out the plans of their masters. Several days earlier there was the Ayodhya / Babri Masjid confrontation. The Government was committed that the ruling of the Court would be obeyed. Chaos. Yes chaos was the next resort and this the crafty enemy took advantage of expecting that kindling of a fire in one area would spread to other parts of the country and that it would be absolutely necessary to call in the armed forces to quell the riots. And with the stand taken by the opposition to disrupt Parliament, to carry wrong messages to the people so that confusion prevails it became easier for the enemy nation to cash in on a government riddled with finding solutions to the numerous problems.

I charge the opposition with misleading the nation and the House with malicious statements to the electronic and print media that minorities all over the country are disturbed lot; that the people of the country want the scalp of Narendra Modi; that Gujarat is burning. Narendra Modi has the support of the majority in the State Legislature and it is only when they or he decides it is not desirable to stay as the Chief Minister for a moment longer, will democracy prevail.

Communal elements are being encouraged systematically by pseudo secularists and vote-bankers. Such an attack, should it have been on any other community, would have voices bring down the Himalayas. The appeasement of a particular community by the opposition is well known. Are we not aware of the praises showered by a particular political party on the culprits after local elections in Godhra..And to which political party these cowards owe their allegiance to. You need to stand up and be counted among those fostering continuous, unabated and shameless violence. Yet when thousands of Indians in different parts of the country have been brutally murdered, women raped, property destroyed, bread winners of the family tortured and killed, children among the victims, not a whisper is

heard, not a tear shed. As the victims are not from a minority section, pseudo secularists pretend that nothing serious has happened. Are we not aware that this has taken place in different parts of the country since 1947. Is a count available of how many Muslims and Hindus, Sikhs or Christians were killed immediately before and after attaining Independence. Records indicate how Muslims were used just for securing their votes. Whereas they were deprived of education and work, today the conditions the majority of the community live in are due to the callous attitude of the earlier governments, both at the center and in the states. The mohallas they reside in were and a good number even today are not provided with sanitation such as toilets or drainage; no legalized electricity connections; no water pipe lines or overhead tanks not even hand pumps no primary, higher primary schools or colleges, no adult education, medical centers or dispensaries. A large number do not have a roof above their heads. Are these the promises of Gandhiji to this community when they decided to stay back in India and be counted as Indians. Tall promises were there before any election and they have been continuously fooled even in the case of providing facilities for the Haj.

Then why so much of appeasement today. There is a well-set mind-set. The population of the community, in spite of the so-called ‘family planning’ is reaching unchecked figures, which is disastrous for the community but certain political parties are happy – they dream of a larger vote-bank. This is evident when last year Bombs were placed within the precincts of a few churches and temples – there was a hue and cry by the opposition that it was the handiwork of the communal forces and a Chief Minister was also dragged in. When the truth was unfurled not a single voice condemned the group even in the debate. Every opposition leader strayed from raising their voice. The reason : Elections were round the corner and the Muslim votes (not Indian votes according to these pseudo secularist parties) were crucial and any condemnation of the group would be received with a reaction against them.

India is hospitalable even to its critics and foreigners cagerly accept the invitation. They repeatedly use the word ‘jihad’ but are ignorant that the Quran itself amply clarifies that the ‘holy war’ was against the unbelievers

and idolaters. This early Madina surah (2:216) was received in the second year of Muhammad's arrival at Madina, asking him to wage a Jihad against his persecutors. Unfortunately some of the surahs were hurtful to the Christian community when they relate to Jesus and Marry. What, may I ask the Nosey Parkars, was their reaction to the destruction of the WTC? What have you achieved in Afghanistan? Destruction or defeating the AL Qaida! No figures were given to the world of human lives that were snuffed out.

India is more than capable of solving the internal issues as we are of getting the culprits involved in the attacks on the J & K Assembly and Parliament Buildings.

Let me tell you about the magnanimity of the Christian community in India. Thumba was a sleepy fishing village and Indian experts and scientists chose the area for setting up the country's first sounding rocket facility over 40 years ago. There existed nothing but church and a few hundred fishermen, mostly Christians living in thatched huts. The Bishop of Trivandrum, Rt. Rev. Peter Bernard Pereira, gifted the land in which St. Mary Magdalene's Church stood and also persuaded the fishermen to vacate their dwellings for a better cause. The entire acquisition process was completed within 100 days. Let no one in the country take the Christian community for granted. We unlike the larger group among the minorities have contributed immensely to the nation in different fields without any discrimination, are literate and filled with wisdom. All Indian born citizens, our patriotism goes beyond imagination. Deeply committed to serving our Indian brothers and sisters, not involving religion, most compassionate, charitable, extremely tolerant we are a largely educated community and every party is aware that we cannot be taken for granted when it comes to voting at elections. We are not a vote-bank for any party. And we have found differential treatment meted out to us which I do not wish to talk about wasting the precious time of the August House. When you speak of minorities in general, it pains us that when we are not involved in any such fuelled incidents, we too are being brought into the picture. Perhaps the Sikh, Parsee and other minority groups would join me in echoing these sentiments.

One wonders what would have been the reaction in a country where Christians are in a majority should a similar incident such as the one that took place at Godhra occur to a bus or compartment carrying pilgrims from Lourdes, Fatima, St. Peters or any other major pilgrimage center back to their homes. We are all aware of the WTC incident – the fall out on civilians, chiefly women and children. Were any figures released ? And today a few of these nations are preaching to us. Do we not know what happened in Ireland? Or for that matter in Iraq ? Let them learn to keep their house in order before embarking on the confusion in another's house.

The first step towards reviving the spirit of tolerance is to forget that you represent political parties. Rise above selfish ends and set an example to the people at large that you are Indian first and Indian last. It is time to rise above being Hindus and Muslims and Sikhs and Christians. When "hungamas" are created on the floor of the house, the people feel hurt. Let us show to the world that we are sensitive, civilized people. Look at how the Americans reacted to the Sept. 11, 2001 event. All Senators and Congress men as well as the American nation stood by the President. The opposition could have created an uproar and said that there was intelligence failure. They could have dubbed their President as incompetent and preseed for his resignation. But what they did can be a fitting example for us to emulate. People all over the country are more worried over the loss of hundreds of working hours because of our un-parliamentary behaviour. We make laws for people to follow and break rules set up by us. Democracy is a system of governance by discussion. How can we function as a democracy in the midst of so many uproarious disruption of proceedings of the House? Why should the public pay taxes is the question being asked? If the salt itself loses its saltishness, with what can you make other things saltish?

Here's where the opposition and the all party visits to Gujarat were a total failure. Not a single word of advice inside or outside the House as to how peace and normalcy could be restored. Mudslinging to meet partisan ends was all that was heard. Yes we could have condemned the initial wanton barbarian act and the hideous tortures that followed. But we have tried to score points over the bodies of the dead. What a shame?

Before I conclude, Sir, let me speak to the Muslim community from the floor of this August House. You owe your spiritual life to Allah not to Imams and Mullas or false appeasement from Political parties or self-interested Muslim leaders. I ask whether they, fed you when you were hungry; provided you with a shelter; wrapped you with a cloth when naked, attempted to remove illiteracy, provided medical care, visited you and spared a few moments to console you when faced with problems. I know the answer is No. I call upon you today to ignore those who have been using you for selfism. Negate those who spread hatred; those who breach peace and enjoy the tranquility, job and love that is found in our great country. Sir, I reject this arrogant, desperate and contaminated motion moved by Shri Ramji Lal Suman and others.

श्री लाल कृण आडवाणी : उपाध्यक्ष महोदय, मेरे सहयोगी श्री जॉर्ज फर्नांडीज जब बोले तो उन्होंने एक ही वाक्य से आरम्भ किया कि गुजरात में आज जो कुछ हो रहा है वह कोई नई बात नहीं है। 55 साल से यही चलता आया है। मुझे कुछ अटपटा लगा। मैं यह स्वीकार करूंगा कि जिस प्रकार से उन्होंने कहा, उससे ऐसा आभास होता था जैसे मानो कोई सहज बात हो रही है। यह इसलिए हो सकता है कि उनका पर्सपैक्टिव रिट्रोस्पैक्टिव 55 साल का है। लेकिन मैं बहुत दुखी हूं, आज जो कुछ गुजरात में हो रहा है, क्योंकि मेरा पर्सपैक्टिव रिट्रोस्पैक्टिव छोटा है, चार साल से हम लोग सरकार में हैं और जब हम आये थे तब से लेकर यह आशंका लोगों को थी कि इनकी सरकार आई है, अब देश में साम्प्रदायिक सौहार्द नहीं रहेगा, साम्प्रदायिक घटनाएं बढ़ जायेंगी और साम्प्रदायिक दंगे होंगे। वाजपेयी जी ने 1998 में सरकार संभाली, तब से लेकर आज तक हम जब भी कहीं देश में या विदेश में बोलते थे तो इस बात का जिक्र जरूर करते थे कि हमारी एक बहुत बड़ी उपलब्धि है कि हमारे इन चार सालों में पूर्व इतिहास की तुलना में साम्प्रदायिक घटनाएं कम से कम हुई हैं, न्यूनतम हुई हैं। हमारा इस मामले में ट्रैक रिकार्ड बहुत अच्छा है। इसलिए मैं मानता हूं कि विशोकर आज जो कुछ गुजरात में हुआ है, वह गोधरा से आरम्भ हुआ, लेकिन उसके बाद जो कुछ होता रहा है, वह निश्चित रूप से दुख की बात है, वेदना की बात है, व्यथा की बात है और हम चाहेंगे कि अपनी वेदना, व्यथा हम जितनी जल्दी समाप्त कर सकें, करें। सरकार के मन में यह बात है और इसीलिए मुझे आज उन्होंने जब ऑपरेटिव पार्ट बताया। नेशनल कांफ्रेन्स साधारणत : हमारे एन.डी.ए. का हिस्सा है, जब उन्होंने बताया कि वह इस मामले में एब्सटेन करेंगे तो मेरे मन में खेद जरूर हुआ। मुझे पता नहीं उमर जी सदन में हैं या नहीं, लेकिन उनका भााण बहुत अच्छा था, सब दृटि से इतना उत्तम भााण था। उसमें था कि इस प्रकार की बहस में से क्या निकलना चाहिए। इस प्रकार की बहस में We should not only be

scoring points but we should give a direction to the country. इस बात को उन्होंने सही रूप में कहा कि अगर आज इस सदन की बहस को लोग देखते, गुजरात वाले देखते या बाहर वाले देखते तो उन्हें उससे कोई दिशा नहीं मिलती। इससे कोई संदेश भी नहीं मिलता। मैं मानता हूं कि श्री उमर ने आखिर में जो कहा, वह सबसे महत्वपूर्ण था कि हमारे सामने चार साल में जो सबसे बड़ी समस्या रही है और कम से कम गृह मंत्रालय की दृटि से अगर मैं देखता हूं तो सबसे बड़ी समस्या क्रास बॉर्डर टैरेरिज्म की रही है।

पाकिस्तान द्वारा आरंभ किया हुआ प्राक्सी वार। उस युद्ध में हम जब धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे, और उनके विरुद्ध एक प्रकार से विश्व का जनमत हमने खड़ा कर दिया, एक बार तो उन्होंने कारगिल का युद्ध भी कर लिया। हमारी इन सेनाओं के कारण, जिनके सम्मान को लेकर, जिनके मौराल को लेकर अभी अभी हमारे बीच में विवाद हो गया, उन सेनाओं के कारण हम उस पर शानदार विजय प्राप्त कर पाए, लेकिन प्राक्सी वार में भी, क्रास बार्डर टैररिज्म के मामले में भी, एक ओर तो हम लगातार तीन साल से विदेश मंत्री, रक्षा मंत्री, प्रधान मंत्री, विश्व भर के जनमत को सचेत करते आए हैं कि यह दूसरे प्रकार का युद्ध है, आपको हमेशा चिन्ता रहती है कि कहीं न्यूक्लियर वार न हो जाए लेकिन उससे भी भयंकर यह वार है जिसमें एनिमी दिखेगा नहीं। प्रधान मंत्री ने तो अमेरिकन कांग्रेस में भी जाकर उनको सचेत किया, चेतावनी दी कि ऐसा मत समझिये कि आपकी जो दूरी है बाकी विश्व से वह आपके लिए हमेशा सुरक्षा की गारंटी बनी रहेगी और किसी दिन आपको भी यह भुगतना पड़ सकता है जो हम भुगत रहे हैं। 11 सितम्बर को जब वहां कांड हो गया, न्यूयार्क में और वाशिंगटन में उन्होंने उसको भुगता तो उसके बाद एक जबर्दस्त परिवर्तन आया विश्व जनमत में जिसके कारण हमारा शत्रु जिसने प्राक्सी वार छेड़ रखा था, वह एक प्रकार से कौर्नर हो गया था।

मैं मानता हूँ कि इन दिनों में जो कुछ हुआ गोधरा और गुजरात में, उसके कारण सबसे अधिक किसी को आनन्द प्राप्त हो रहा है तो उन्हीं को हो रहा है, और लगता है कि जैसे श्री उमर ने कहा कि हाई ग्राउंड था भारत का डैमोक्रेसी के मामले में, मौराल के मामले में, कम्युनल हार्मनी के मामले में, हमारा कम्यूनल हार्मोनी के मामले में भी इतना बढ़िया रेकार्ड है, वह सब चौपट करने का मौका मिल गया। मैं विश्लोण करता हूँ, गुजरात की रिपोर्ट पूरी लेता हूँ तो साफ दिखाई देता है कि गोधरा की घटना बहुत निन्दनीय है। उसके बाद जो घटनाएं हुईं जिनमें से चार का उल्लेख बार-बार हुआ है, वह चाहे नरोदा पाटिया की हो, चाहे बैस्ट बेकरी बड़ौदा की हो, चाहे मेहसाणा में सरदारपुरा की हो, गुमानपुरा की हो, गुलबर्गा सोसाइटी की हो, ये सभी के सभी कांड सर्वथा निन्दनीय हैं। यह बात सही है जो प्रधान मंत्री ने कहा कि अगर गोधरा कांड न होता तो संभव है यह कुछ नहीं होता। लेकिन कुछ लोगों का यह कहना कि वह तो होना ही था, इस प्र ाकार की बात कहकर हम किसी का भला नहीं करते, हम शायद अपने शत्रुओं के हाथ में कोई हथियार देते हैं। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि गोधरा की घटना के कारण वह जस्टिफाइ हो गया। Godhra may explain what happened after that, but Godhra cannot

justify either Naroda or Mesana or any other killing. मैं तो यह कहूंगा कि जिस देश में रुल ऑफ ला है वहां पर Even revenge against a wrongdoer can have no justification, can have no place in the rule of law but revenge against an innocent person…. वह इनोसेन्ट हिन्दू हो या मुसलमान हो, रिवेन्ज के लिए किसी सभ्य समाज में स्थान नहीं हो सकता। There can be no place in a civilised society. It can only be deemed as barbaric. और ये बार्रबरिक घटनाएं हमें पिछले दिनों में देखनी पड़ी हैं जो बहुत अफसोस और दुख की बात है। चिन्ता की बात है कि इसको कैसे खत्म किया जाए या बंद किया जाए। मैं कोई लंबी बात इसमें नहीं करूंगा, सिवाय इसके कि अगर हमें जरा सा भी आभास होता कि वहां की सरकार ने जान-बूझकर यह करवाया है जैसा लगातार कहा जाता है, तो शायद वाजपेयी जी और यह सरकार निश्चित रूप से उसके खिलाफ काम करते। मैं मानता हूँ कि कहीं-कहीं पर कुछ कमी रह गई होगी, कहीं-कहीं पर एडमिनिस्ट्रेशन की हो, पुलिस की हो, किसी की कमी ज़रूर रही है, लेकिन यह कहना कि Deliberate carnage, State-engineered mayhem, and State-engineered genocide.

क्षमा कीजिए, कम से कम मैं जितनी जानकारी कर सकता हूं, व्यक्तिगत रूप से और क्या जानकारी से इतना बड़ा अंतर हो गया है--Between the Press outside Gujarat and the Gujarati Press, जिसका उल्लेख अभी हरिन पाठक जी के भााण में हुआ, वह अंतर इस कारण है कि बहुत बार हमारे मन में कुछ इमेज बन जाती है। पोलिटिकल होने के कारण स्वाभाविक रूप से हम चाहते हैं कि उसके कारण कुछ पोलिटिकल परिणाम निकलें ताकि जो भयंकर घटनायें वहां हुई हैं, मुझे अच्छी तरह से याद है जब पिछले साल गुजरात में भूकम्प आया था,उस भूकम्प पर हुई सारी बहस के बाद आपरेटिव पार्ट यही था कि श्री केशू भाई पटेल जी इस्तीफा दें। आज मुझे ताज्जूब नहीं होता कि श्री नरेन्द्र मोदी इस्तीफा दें--यह आपरेटिव पार्ट बन जाता है। हमारी सरकार की यह मान्यता है कि श्री नरेन्द्र मोदी के इस्तीफा देने से समस्या का हल नहीं होता। हम समस्या का हल निकालना चाहते हैं और इस समस्या का हल सिक्योरिटी के लैवल पर, कठोर कदम उठाकर, हर अपराधी के खिलाफ, चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान हो, कार्यवाही हो, इसकी व्यवस्था हम करना चाहते हैं। रिहैबिलिटेशन रिलीफ के स्तर पर ठीक प्रकार की व्यवस्था हो जाये, उसमें किसी प्रकार की कमी न रहे और रिलीफ कैम्प में लोगों को ज्यादा दिन न रहना पड़े, इस बात की व्यवस्था करने की दिशा में जो भी आवश्यक कदम उठाने हैं, वे हम उठायेंगे। उसका कुछ दिग्दर्शन माननीय प्रधान मंत्री जी अपने वक्तव्य में करेंगे।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं सबका आभार मानता हूं कि आपने इस बहस में भाग लेकर एक प्रकार से रात्रि को साढ़े तीन बजे तक इस विाय के महत्व को देखते हुए देश के सामने इसका जिक्र किया है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : उपाध्यक्ष महोदय, मैं फिर यह स्पट कर देना चाहता हूं कि मैं चर्चा का उत्तर देने के लिए खड़ा नहीं हुआ हूं। चर्चा का उत्तर श्री मुलायम सिंह जी को देना है। प्रस्ताव उनका था इसलिए सदन उन्हें सुनने के लिए तैयार रहे। मैं सिर्फ सदन को सूचित कर रहा हूं। जहां तक मेरा सवाल है, रिहैबिलिटेशन के बारे में पैकेज की घोाणा करने के साथ-साथ मुझे दो बातें और कहनी हैं। एक यह कि इस बहस में मेरे ऊपर आरोप लगाया गया और बार-बार यह आरोप दोहराया गया कि मैं अपने वक्तव्य को बदलता रहता हूं। मैं आज कुछ कहता हूं, कल कुछ कहता था और परसों कुछ और कहूगा। मैं इस आरोप का खंडन करना चाहता हूं। मेरा सार्वजनिक जीवन सबके सामने है। मेरे विचारों से मतभेद हो सकता है लेकिन मैं अपने वक्तव्य को क्यों बदलूंगा ? मैंने किस स्वार्थ को सिद्ध करना है? कौन सा राजनीतिक लक्ष्य पूरा करना है ? कहा जाता है कि आपने गुजरात में कुछ कहा है और गोवा में कुछ कहा है--यह बात सच नहीं है। मैंने जो गुजरात में कहा, वही मैंने गोवा में कहा है। ... (व्यवधान) मेरे सारे भााण टेप किये हुए हैं। पूरी तरह से छपे हुए हैं। उनमें हेरफेर की गुंजाइश नहीं है। मैंने जो कहा, वह मैं उद्धृत करना चाहता हूं। मेरे ऊपर आरोप है कि मैंने इस्लाम का विरोध किया। यह भी मेरे ऊपर आरोप है कि मैंने मुसलमानों का विरोध किया। ऐसा लगता है कि मेरी जिंदगी की सारी कमाई यहीं खत्म होने जा रही है। मेरा कोई विरोधी इस तरह का आरोप मेरे ऊपर लगाये, इसे मैं अपने ऊपर लांछन समझता हूं। जीवन में मैंने कभी भी भेदभाव नहीं किया, न धर्म के आधार पर न जन्म के आधार पर और न जाति के आधार पर, लेकिन आज यह राजनीति का चक्र ऐसा है जो मेरी सारी प्रतिठा को पीस रहा है। मुझे दुख होता है। मैंने जो कुछ कहा ... (व्यवधान) इस्लाम के बारे में मैंने जो कुछ कहा, वह इस प्रकार है।

इस्लाम के दो रूप हैं - एक इस्लाम ऐसा है जो सबको सहन करता है, जो सच्चाई के रास्ते पर चलने की सीख देता है, जो संवेदना और दया सिखाता है। लेकिन आजकल जिस इस्लाम को लेकर मिलिटैंसी अपनाई जा रही है, उसमें सहिणुता के लिए कोई स्थान नहीं है। वह जेहाद के नारे पर चलता है और सारी दुनिया को अपने सांचे में ढालने का सपना देखता है।

मैं अपनी यात्रा की बात कर रहा हूं। मैं सिंगापुर और कम्बोडिया गया था। आपको सुन कर ताज्जुब होगा और मुझे भी वहां ताज्जुब हुआ कि सिंगापुर में अल कायदा के कुछ आतंकवादी पकड़े गए। सिंगापुर के शासक कभी सोच भी नहीं सकते थे कि उनके देश में भी अल कायदा सक्रिय होगी, उनके देश में भी अल कायदा ाडयंत्र रचेगी। वहां 15-16 लोग पकड़े गए और गुप्त जांच चल रही है। इस सच्चाई का पता लगाया जाए। यही इंडोनेशिया में हो रहा है और यही मलेशिया में हो रहा है। जहां-जहां ऐसे मुसलमान हैं, वे मिल कर रहना नहीं चाहते, औरों के साथ घुलना-मिलना नहीं चाहते और शान्तिपूर्ण ढंग से अपना प्रचार करने के बजाए, आतंक से, भय से, डरा-धमका कर अपने मत का प्रचार करना चाहते हैं। दुनिया इस खतरे के प्रति जागरूक हो गई है। इसमें क्या आपत्ति की बात है।

मगर इसके साथ-साथ एक आरोप और जुड़ा हुआ है कि मैं इस्लामिक फंडामैंटलिज़्म की आलोचना करता हूं मगर हिन्दू फंडामैंटलिज़्म की आलोचना नहीं करता। यह भी गलत है। अभी थोड़े दिन पहले श्री मल्कानी द्वारा लिखित ' इंडिया फर्स्ट' किताब का मुझे विमोचन करना पड़ा और उस वक्त मैंने भााण दिया है। उस किताब में हिन्दुत्व का गुणगान है, मगर मैंने कहा कि हिन्दुत्व उदार होना चाहिए, उदात्त होना चाहिए। अगर हम हिन्दुत्व की बात करें तो मुझे वि वेकानन्द का हिन्दुत्व पसन्द है लेकिन संकुचित और संकीर्ण हिन्दुत्व पसन्द नहीं है। मेरे कुछ साथियों ने इसको बुरा माना। उनकी राय अलग हो सकती है। लेकिन मैं आलोचना करने से चूका नहीं और जब कभी कसौटी का वक्त आया है, मैंने ऐसा कदम उठाया है जो इस बात को सिद्ध करे कि देश को उदार रास्ते पर जाना है, सामंजस्य के रास्ते पर जाना है, समन्वय के रास्ते पर जाना है। यही भारतीय संस्कृति का संदेश है। लेकिन आज मेरी छवि को बिगाड़ने के लिए ये आरोप लगाए जा रहे हैं कि जैसे एक दिन में एक भााण ने मुझे समाप्त कर दिया। एक आरोप मानो मेरे लिए ऐसा जहर बन गया जिसका कोई अंत नहीं दिखाई देता।

उपाध्यक्ष महोदय, मैंने एक विाय का उल्लेख किया है। दूसरा विाय है आज के भााण में ...(व्य वधान)

एक माननीय सदस्य : कल के भााण में।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मैं कह रहा हूं आज के भााण में, आप कह रहे हैं कल के भााण में। ि वरोधी दल की नेत्री ने अपने भााण में मेरा उल्लेख किया था। उन्होंने मुझसे अपील की है कि मैं दलबंदी से ऊपर उठूं और देश के व्यापक हितों का विचार करूं। मैं उनके विचारों की कद्र करता हूं। दलबंदी से हम सबको ऊपर उठना है। मैंने गुजरात में जो कुछ देखा है, सुना है और अनुभव किया है, उससे मुझे भविय के बारे में बड़ी आशंका पैदा होती है। अगर हम मिल कर, जो नया जहर पैदा हो रहा है, उन्माद, उसे मैं पागलपन का नाम दूंगा,

मैं नहीं जानता एक-दो कथाएं प्रचलित हो रही हैं, वे कहां तक सच हैं। लेकिन जिस प्रकार की ज्यादतियों के समाचार मिल रहे हैं, नारी के साथ अपमान की घटनाओं की चर्चा हो रही है, उससे कभी-कभी ऐसा लगता है कि क्या समाज का स्वरूप बदल गया है। दंगा एक चीज है। कटुता और कट्टरता भी मैं समझ सकता हूं, मगर मनुय का इतना गिरना कि बलात्कार हो और बलात्कार करने वाले को लज्जा न हो, शर्म से उसका सिर झुक न जाए और समाज उसके लिए कठोर शब्दों का प्रयोग न करे या अपनी भावनाओं को प्रकट न करे, तो यह समझना चाहिए कि एक ऐसा रोग लग गया है, इसको अगर हमने इलाज नहीं किया तो वह हमारी सारी सभ्यता और संस्कृति को खा जाएगा। यह एक नया संकट है।

मुझे मालूम है मराठी के एक पत्र ने अपना सम्पादकीय लिखा। उन्होंने जो लिखा, कोई गलत न समझे इस समय ऐसी बात कहना, मैं नहीं जानता कहां तक ठीक साबित होगी। उसने लिखा कि

मुसलमान भाइयो, आप क्यों शिकायत करते हैं, क्या आपके साथ ज्यादतियां हो रही हैं, यह तरूण भारत का एडिटोरियल है, आप क्यों शिकायत करते हैं, यह तो हिन्दू समाज ने आपका ही जो पाठ पढ़ा है, अब उसको व्यवहार में ला रहे हैं। जो आचरण हो रहे हैं, वे निंदनीय हैं, गर्हणीय हैं। एक ठसक थी हमारी कि हम कुछ काम नहीं करेंगे, जिनकी मर्यादा चली आ रही है, पुराने जमाने से, लेकिन मैं सुनकर धक रह गया कि अच्छे-अच्छे घर के लोगों ने दुकानें लूटीं। कोई सामान की उनको कमी नहीं थी। यह लूट की प्रवृत्ति कैसे पैदा हो रही है, मैंने यहां तक सुना है कि सामान लूट लिया और घर जाकर देखा कि यह अच्छा नहीं है, फिर वापस उसी कार से ले गए, जिससे लेकर आए थे। जो पसंद नहीं था, उसको छोड़ दिया और दूसरा सामान ले आए। ये घटनाएं अगर सच हैं तो सचमुच में दुख पहुंचाने वाली हैं।

महिलाओं के साथ जो बर्ताव हुआ है, महिलाओं का एक प्रतिनिधिमंडल आया था। उसने महिलाओं से बात की। उन्होंने एक शर्त लगाई कि हमारी आपकी बात तब होगी, जब यहां कोई अखबार वाला नहीं होगा, लाउडस्पीकर नहीं होगा, टी.वी. नहीं होगा और कोई पुरूा भी नहीं होगा। महिलाओं का प्रतिनिधिमंडल आया है तो महिलाओं से बात करेगा। महिलाओं से बातें हुईं। जो बातें करके गईं, उनसे मैंने पूछा कि जो कथाएं प्रचलित हो रही हैं, जो किस्से बता जा रहे हैं, उनमें कहां तक सच्चाई है, तो मुझे बताया गया कि उसमें सच्चाई जरूर है, लेकिन थोड़ी है। उसको बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया जा रहा है। यह दुर्भाग्य की बात है। वह एक अलग पहलू है। इस सारे गुजरात के कांड में मीडिया की जो भूमिका रही है, उस पर गम्भीरता से विचार करने की जरूरत है। आप कहेंगे कि यहां मैं मीडिया की आलोचना कर रहा हूं। मीडिया को बलि का बकरा बना रहा हूं, लेकिन हत्या का दृश्य बार-बार दिखाना, आग में जली हुई लोगों की लाशों का प्र ादर्शन करना, केवल समाचार के रूप में नहीं, समाचार तो एक बार दिया जा सकता है, लेकिन उसको लगातार दिखाना,

श्री बसुदेव आचार्य : रोज घटना घट रही है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : रोजाना घटनाएं घट रही हैं, तो उनको रोकना चाहिए। यह हम सबका काम है कि उनको रोकें।

श्री तरित बरण तोपदार : क्या मीडिया रोकेगा ?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मीडिया भी इसमें सहायक हो सकता है।

मीडिया को भी अपनी भूमिका निभानी है। मीडिया को हम नियंत्रित नहीं करना चाहते। मीडिया चलाने वाले स्वयं बैठे हैं और वे सोचें कि उनके लिए क्या आचार संहिता होनी चाहिए। पहले ऐसा तय हुआ था कि साम्प्रदायिक दंगों के समय में लोगों के नाम नहीं दिये जाएंगे, यह नहीं बताया जाएगा कि कितने मुसलमान मरे और कितने हिन्दू मरे। आजकल तो यह कोई मर्यादा नहीं है।

क्या इससे साम्प्रदायिकता नहीं फैलती ? इसके लिए भी कोई आचार की पद्धति हो सकती है और इसको सब मिलकर तय करें।

श्री अमर राय प्रधान (कूचबिहार) : अभी तक तो आप लोगों ने नहीं किया। …(व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Please do not disturb him.

… (*Interruptions*)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : सोनिया जी ने अभी अपने भााण में मुझसे कहा कि मैं दलबंदी से ऊपर उठूं। मैं उठना चाहता हूं लेकिन मैं अकेला नहीं उठ सकता। इसके लिए सोनिया जी को भी मेरे साथ उठना पड़ेगा। दलबंदी अगर छोड़नी है तो सब छोड़े। अगर राट्र सर्वोपरि है, इंडिया फर्स्ट है तो फिर आइए।… (व्यवधान)

श्री सोमनाथ चटर्जी : आप लोगों ने क्या किया ? …(व्यवधान) यह सब आपने ही शुरू किया। …(व्यवधान)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : आपने ही शुरू किया है।… (व्यवधान) जब मैंने यह बात कही कि अगर साबरमती एक्सप्रैस मे जले हुए लोगों के बारे में सदन इकट्ठा होकर एक स्वर से प्रबल शब्दों में निंदा करता तो शायद दूसरे दिन की घटनाएं नहीं होती और यह विचार केवल मेरा नहीं था। आज चन्द्रशेखर जी यहां बैठे हुए हैं, इसलिए मैं उनके सामने कह रहा हूं। उन्होंने ही यह बात उस दिन कही थी कि देखिए हम उसे रोकना चाहते हैं। चन्द्रशेखर जी उस दिन संसद की बैठक जो शोर-शराबे के कारण भंग हो गई थी, उसको चाहते थे कि इकट्ठी रहे और साबरमती एक्सप्रैस की दुर्घटना के बारे में कहें लेकिन सैशन नहीं हो सका। सोनिया जी ने कहा कि आपको सैशन करने से किसने रोका था? मैं तो अकेला सैशन नहीं कर सकता था। …(व्यवधान) बजट होने के बाद जब हम दूसरे दिन मिले तो चन्द्रशेखऱ जी चाहते थे कि सब मिलकर इकट्ठे होकर उसकी निंदा करें। आज हम अलग-अलग कह रहे हैं कि हमने निंदा की थी, हमने निंदा की थी लेकिन सदन का एक समवेत स्वर सारे देश को जगाने वाला, इस बारे में, …(व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Please do not interrupt him.

… (*Interruptions*)

SHRI RUPCHAND PAL : You are the Leader of the House.

… (*Interruptions*)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : आपने सैशन नहीं होने दिया।... (व्यवधान)

कुंवर अखिलेश सिंह : उपाध्यक्ष महोदय, गोधरा की घटना पर हमने कार्य-स्थगन प्रस्ताव दिया था। ...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : अखिलेश जी, उनको डिस्टर्ब मत करिए।

... (व्यवधान)

श्री प्रियरंजन दासमुंशी : आपके घर में उस दिन सोनिया जी पहुंची। आपने नहीं बुलाया था।

वह खुद आपके घर गई। ...(व्यवधान)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : कार्य-स्थगन प्रस्ताव तो सत्ता पक्ष और विपक्ष को बांटता है। ...(व्यवधान)

श्री बसुदेव आचार्य : आपने मीटिंग क्यों नहीं बुलाई?... (व्यवधान)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : हमने मीटिंग नहीं बुलाई। सदन चल रहा था। आपने उसको चलने नहीं दिया।... (व्यवधान) जो बीत गई, वह बात गई। अब हम भविय की ओर देखें।

... (*Interruptions*)

SHRI SOMNATH CHATTERJEE (BOLPUR): Did he not say that? I am obliged to know.… (*Interruptions*)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अच्छा चलो, उसे छोड़िए।... (व्यवधान) जो बीत गई, वह बात गई, अब हम भविय की तरफ देखें। ...(व्यवधान)

श्री प्रियरंजन दासमुंशी : महोदय, 28 तारीख को हाउस चला। ...(व्यवधान) प्रधानमंत्री जी क्या कह रहे हैं।...(व्यवधान)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : उपाध्यक्ष महोदय, अगर मैं गलती पर था तो मैं अपनी गलती मानता हूं। मुझे और अधिक प्रयत्न करना चाहिए था, लेकिन कहीं न कहीं मन में यह भाव था कि गोधरा की घटना परिणाम के रूप में इतना भयंकर आकार नहीं लेगी। कहीं न कहीं यह भाव मन में था और वह गलत था। उसका कितना गहरा असर हुआ है, यह मुझे बाद में पता लगा। पहली बार जब मैं उसके बारे में बोला तो मैंने उन दोनों को एक साथ रखा था। गोधरा के बदले के रूप में

जो कुछ हुआ है, उसका औचित्य सिद्ध नहीं किया जा सकता, दोनों निन्दनीय हैं। आखिर आज सोनिया जी को कहना पडा कि हमने निन्दा की थी, यह कहने की जरूरत क्यों पड़ी?… (व्यवधान) मैं फिर कहता हूं, उस बात को छोड़ दीजिए वह पुरानी बात थी, आगे हम क्या करना चाहते हैं।… (व्यवधान)

SHRI PRAVIN RASHTRAPAL : Let us accept his Motion. … (*Interruptions*)

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : Sir, let there be a Substitute Motion. Let a Substitute Motion be drafted. Let the House, in one voice, express a view. Let us have it. … (*Interruptions*)

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI : You condemn both Godhra and Gujarat violence. … (*Interruptions*)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : हम दोनों कंडेम करते हैं।

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI : You bring it before the House. … (*Interruptions*)

SHRIMATI SONIA GANDHI (AMETHI): Let us have a unanimous Resolution now. Let us have it now. … (*Interruptions*)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मैं इसका स्वागत करता हूं लेकिन जो लोग बेघरबार हो गए हैं, उनके लिए मैं पैकेज की घोाणा कर दूं। …(व्यवधान) तब तक आप चर्चा कर लीजिए कि किस तरह का सदन का अभिमत हो।… (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय, आप मदद करें। हम नहीं चाहते कि सदन इस सवाल पर बंटे। …(व्यवधान) हमारे वोट कम हैं, हम इसलिए यह बात नहीं कह रहे हैं। हम बहुमत में हैं, लेकिन यह अल्पमत और बहुमत का सवाल नहीं है।… (व्यवधान) आज देश का सम्मान दाव पर लगा है, और यह सदन आगे बढ़ कर कदम बढ़ाए तो वातावरण बदल सकता है। आपकी अनुमति से मैं इसे पढ़ता हूं –

> "Rehabilitation of those who lost their homes, belongings and means of livelihood and immediate revival of normal economic activities in all the riot affected areas now remain primary national task. They need to be addressed with utmost expedition,

understanding and sympathy. The spirit of spontaneous support and brotherhood demonstrated by all sections of the society in Gujarat in the aftermath of the devastating earthquake has to be kindled once again. The rehabilitation package has to be comprehensive and cover all strata of society.

I announce an immediate package of assistance of Rs.150 crore to Government of Gujarat to carry out its implementation. … (*Interruptions*) This package of assistance will primarily include reconstruction and repair of damaged houses and shops, both in rural and urban areas, provision of assistance to all the self-employed categories who lost their earning assets, financial support for re-commencing business commercial and industrial activities ..."

It also includes revival of educational, medical and other institutions in the affected areas and special programmes to benefit widows and children.

This package will be fully supplemented by loans and assistance from banks and financial institutions on liberal and concessional terms as were extended following the earthquake of January 26, 2001.

The active involvement of HUDCO and the National Housing Bank for building and reconstruction of houses and shops would be enlisted. Similarly, financial institutions would be asked to catalyse industrial and economic activities. In this endeavour, the National Minorities Finance and Development Corporation would be enabled to play a supportive role.

Convergence of employment and welfare schemes like *Prime Minister's Rozgar Yojana and Sampurna Gramin Rozgar Yojana* , would be promoted, where necessary, be suitably augmenting the provisions under them. It will be ensured that no one affected by the communal riots is left out of this relief and rehabilitation.

This rehabilitation package is in addition to a comprehensive relief package that I had announced when I visited Ahmedabad on April 4, 2002. Since March, relief in one form or another is already in hand. To enhance

the vital need for immediate rehabilitation, the Government will ensure that this package is implemented within four months. For this, the Cabinet Secretariat has been asked to monitor the work of implementation on a weekly basis.

SHRI KAMAL NATH : Will he report to the House? … (*Interruptions*)

SHRI K. YERRANNAIDU : Sir, the hon. Prime Minister has given his reply. We made four demands. Some demands have been covered by the hon. Prime Minister. The foremost one is this. We have demanded the change in leadership to create faith and harmony among the people of Gujarat and to create normalcy and communal harmony in Gujarat. It has not been covered. So, in protest, we decide to walk out from the House.

03.58 hrs.

(At this stage, Shri K. Yerrannaidu and some other

hon. Members left the House.)

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI : Sir, the supporting party from outside has walked out from the House. What could be the unanimity now? … (*Interruptions*)

श्री मुलायम सिंह यादव : उपाध्यक्ष महोदय, 16 घंटे की लम्बी बहस हो गयी है। हम आपके समक्ष सबसे पहले इस सदन के सभी माननीय नेताओं का और माननीय सदस्यों का आभार व्यक्त करते हैं।

4.00 hrs.

इस महत्वपूर्ण एवं गंभीर बहस में सभी ने महत्वपूर्ण सुझाव दिये हैं और चिन्ता भी व्यक्त की गई है। विपक्ष एवं सत्ता पक्ष के साथियों ने खुलकर अपने सुझाव दिये हैं। मैं विश्वास करता था कि माननीय प्रधानमंत्री जी और गृह मंत्री जी कुछ ज्यादा कहते । गुजरात के दंगाग्रस्त क्षेत्रों का दौरा करने राट्रीय मानवाधिकार आयोग, अल्पसंख्यक आयोग या विभिन्न गैर-सामाजिक संगठन के सदस्य गये। इसके अलावा सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल और हमारे मोर्चे का प्रतिनिधिमंडल भी गया।

सभी ने यह अहसास किया कि इसमें सरकार की खुल्लम-खुला कमजोरी थी। उस सरकार के बारे में कुछ न कहना और केवल तारीफ कर देना और यह कहना कि प्रशासन की गलती हो सकती है, मुख्यमंत्री की गलती नहीं, इससे हम सहमत नहीं हैं। मुख्यमंत्री के बयान ने आग मे घी डालने का काम किया है। इतना भंयकर दंगा हुआ जिसके बारे में गृह मंत्री जी ने सच्चाई से अपना अफसोस ज़ाहिर किया है। प्रधानमंत्री जी ने कुछ बातें सही मानी लेकिन आप लोगों को जो शक और शुबहा हो रहा है कि बलात्कार की घटनायें सच हैं या नहीं? जैसा बताया गया कि कुछ ऐसी घटनायें हुई हैं लेकिन सच और गम्भीर बात यह है कि यदि उन महिलाओं की चोटें देखें तो वे कहती हैं कि उनके लिये क्या बचा है। हमने कल भी बताया था कि महिलायें अपनी चोटें दिखाने के लिये तैयार हैं और हमने देखी हैं। हमारी मानवता को रौंदा गया है। हम सब को शर्म आनी चाहिये। इससे पूरे देश को शर्मिन्दगी उठानी पड़ रही है। अंतर्राट्रीय स्तर पर हमारी छवि खराब गई है जिसे गृहमंत्री जी ने स्वीकार किया है। हम इस सारी बहस में नहीं जाना चाहते लेकिन मैं इतना कहना चाहता हूं कि यह शंका दूर कीजिये कि हम लोग सदन नहीं चलाने देते हैं। हम तो सदन की कार्यवाही चलाना चाहते हैं। हमारी कोई बड़ी मांग नहीं थी। रक्षा मंत्री जी ने कहा कि मोरारजी दोसाई ने अनशन किया तो उस समय गुजरात के मुख्यमंत्री को हटाया गया। क्या हम लोगों द्वारा अनशन किये जाने के बाद ही वहां के मुख्यमंत्री को हटाया जायेगा? यह कोई अच्छी बात नहीं है। हमें परम्पराओं का पालन करना चाहिये तो अच्छी बात होती। जब मोरारजी भाई ने अनशन किया, उस समय हम यहां नहीं थे लेकिन 1975 की पूरी राजनीति के बारे में सब जानते थे कि क्या हुआ । माननीय रक्षा मंत्री जी को उस मर्यादा का पालन करना चाहिये था। इनकी संस्कृति का रास्ता कैसे बदल गया और क्या हो गया।

उपाध्यक्ष महोदय, केरल में जब पहली सरकार बनी थी, केवल 6-7 मजदूरों की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। डा. राम मनोहर लोहिया ने फरुर्खाबाद जेल से टेलीग्राम देकर कहा था कि निर्दो और निहत्थे लोगों पर गोली चलाने के वह पक्षधर नहीं हैं। सरकार को वहां इस्तीफा दे देना चाहिये। वहीं से समाजवादी नेताओं में मतभेद शुरू हुआ । राट्रीय सम्मेलन में इस पर कितनी गम्भीर चर्चा हुई कि कुछ ही वोटों से डा. राम मनोहर लोहिया का प्रस्ताव गिरा था। रक्षा मंत्री जी उसी संस्कृति से हैं और उन्हें उस संस्कृति को निभाना चाहिये था। डा. लोहिया की इन बातों से प्रभावित होकर हम फरुर्खाबाद में विद्यार्थी जीवन में जेल गये थे। इतनी गंभीर चर्चा की परम्परा और संस्कृति से निकलकर आये हैं कि आपको एक मिनट में इस्तीफा दे देना चाहिये था, समर्थन भले ही करते रहते लेकिन रक्षा मंत्री बनकर नही रहते।

अगर उनमें जरा भी समाजवादी संस्कृति बची हो तो आपको गुजरात के मुख्यमंत्री से तत्काल इस्तीफा लेना चाहिए था । इसीलिए हमने आपको नेता माना था, इसीलिए हम आपसे जरूर कह सकते हैं, आप नहीं कह सकते थे कि आपको इस्तीफा मांगना चाहिए था।

उपाध्यक्ष महोदय, जहां तक मीडिया का सवाल है, इस पर हमें आपत्ति है। चूंकि यह दोतरफा है, प्र धान मंत्री जी इसे दोनों तरफ की बातें कहनी चाहिए। श्री हरिन पाठक जी ने जो अखबार पढ़कर सुनाये और दिखाये वे स्थानीय अखबारों की बहुत बड़ी चिंता है। हम वहां गये थे तो हरिन पाठक जी, जो माननीय रक्षा राज्य मंत्री हैं, उन्होंने अखबारों से पढ़कर सुनाया और सब लोगों के सामने दिखाया। उन्होंने हमारे पूरे प्रतिनिधिमंडल को दिखाया। सबका कहना था कि स्थानीय अखबारों ने बहुत जबरदस्त तरीके से इन घटनाओं को लिखकर सरकार का सहयोग दिया । इसकी भी बात करनी चाहिए। ऐसा नहीं है कि बाहर के लोगों ने वहां जाकर देखा है। उनकी मानसिकता यह नहीं थी कि कुछ सच या गलत है। उन्होंने वह सही लिखा है कि वहां के लोगों ने पक्षपात किया है, उसकी बात कहनी चाहिए थी। अगर दोनों तरफ की बात करते तो हमें संतोा होता। हमें जो माननीय गृह मंत्री जी आपसे उम्मीद थी, आपको गहरा धक्का लगा है, लेकिन आपके संघ परि वार के नेता क्या कहते हैं, सबसे पहले मैं आपको बताना चाहता हूं कि शायद ये बातें आप मान लेंगे तो जैसा मैंने कई बार कहा है कि दूरियां कम हो जायेंगी। इसीलिए मैं कहना चाहता हूं कि आपने कुछ एहसास किया है। लेकिन आपका स्वयं सेवक संघ क्या चाहता है - उसने पहले उत्तर प्रदेश में सारे प्रशासन के वरिठ अधिकारियों की बैठक बुलाई और मीटिंग बुलाकर उन्हें प्रोत्साहित किया कि आपको शाखाओं मैं जाना चाहिए। उसमें आई.पी.एस. और आई.ए.एस. अफसरों को बुलाया गया था। लेकिन दो जर्बदस्त विरोध हम लोगों ने किया तथा यह बन्द हुआ । वरना उत्तर प्र देश में भी आग लगा दी गई होती। इस पर आपको रोक लगानी पड़ेगी। दूसरी तरफ मुसलमानों को, उन्होंने यह सच कहा कि अल्पसंख्यकों को बहुसंख्यक हिन्दुओं के कृपाकांक्षी होकर रहने की आदत डालनी पड़ेगी और अगर आदत नहीं डालेंगे तो स्वेच्छा से नहीं तो दबाव से, भय से, आतंक से मजबूर कर दिया जायेगा। ... (व्यवधान) यह पूरे हिन्दुस्तान के मीडिया में है।

श्री प्रमोद महाजन : मुलायम सिंह जी, आगे कभी बोल लीजिए, आज छोड़ दीजिए। आज इन सब पर दया कीजिए।

श्री मुलायम सिंह यादव : सबसे अच्छा यही है कि आप हमारे प्रस्ताव को पास कर दीजिए, हम अभी तुरंत बैठ जाते हैं। आप हमारा प्रस्ताव स्वीकार कर लीजिए। आगे के लिए सारा विवाद खत्म हो जायेगा। हम आपसे विनम्र निवेदन कर रहे हैं कि प्रधान मंत्री जी डेढ़ सौ करोड़ रुपये बहुत मामूली रकम है। गुजरात में कम से कम दस हजार करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। इसलिए वहां आपको और ज्यादा से ज्यादा धनराशि देनी चाहिए। आपने लूट के सच को स्वीकार किया है और वहां की दुकानों का भी आपको पता चल गया होगा जब किसी दुकान पर सामान लेने गये, इससे अच्छा प्रमाण आपको क्या मिलेगा, वहां उनका कितना नुकसान हुआ, उस अनुमान के साथ आप पूरा मुआवजा नहीं दे सकते। हम मानते हैं कि सरकार नहीं दे सकती। लेकिन इतना तो दे दीजिए, चूंकि बरसात आने में दो महीने रह गये हैं और बरसात आने के पहले उनके रहने का इंतजाम हो जाए या उनके रोजगार का और खाने-पीने का इंतजाम हो जाए। चूंकि जिस तरीके से इसकी बुनियाद डाली गई है जिससे आगे चलकर आपको सोचना पड़ेगा कि इसका क्या कारण

है। यह सरकार की जिम्मेदारी है और हम उसमें पूरा सहयोग देने के लिए तैयार हैं। अब वहां संयुक्त बस्तियों में हिन्दू और मुसलमान रहने के लिए तैयार नहीं हैं। ये दूरियां आज इतनी बढ़ गई हैं, आजादी के समय इतनी दूरियां नहीं थीं। भले ही हमारे देश से पाकिस्तान अलग हो गया था, लेकिन यहां के रहने वाले हिन्दू और मुसलमानों में इतनी दूरियां नहीं बढ़ी थीं। वे लोग अब संयुक्त बस्तियों में रहने के लिए तैयार नहीं हैं। हम हिन्दुओं के पास गये तो वे बोलते थे कि हम भी मुस्लिम बस्तियों में नहीं रहेंगे।

मुसलमानों के बीच में तो साफ साफ था कि हम नहीं रह सकते। ये दूरियां जो बढ़ी हैं, जो दिल टूटे हैं, उनको जोड़ने का प्रयास गंभीरता से करें और इसके लिए एक ही उपाय था सबसे बड़ा जिससे उनकी भावनाओं को बहुत संतोा हो जाता अगर प्रधान मंत्री यहीं पर मुख्य मंत्री की बर्खास्तगी और राट्रपति शासन लगाने का ऐलान करते। मैं पुनः सबको धन्यवाद देते हुए कहना चाहता हूँ मेरी पूरे सदन से अपील है कि देश की एकता और लोकतंत्र की रक्षा के लिये हमारे प्रस्ताव का समर्थन करें। हमें उम्मीद है कि प्रधान मंत्री जी और गृह मंत्री जी हमारे भााण के बाद वहां के मुख्य मंत्री को बर्खास्त करेंगे और राट्रपति शासन लागू करेंगे। इन्हीं शब्दों के साथ मैं सदन का आभार व्यक्त करते हुए अपनी बात खत्म करता हूँ।

MR. DEPUTY-SPEAKER: I shall now put the amendment No.2 moved by Shri G.M. Banatwalla to the vote of the House.

The amendment was put and negatived.

MR. DEPUTY-SPEAKER: I shall now put the amendment moved by Shri Rupchand Pal to the vote of the House.

The amendment was put and negatived.

MR. DEPUTY-SPEAKER: I shall now put the amendment moved by Shri Priya Ranjan Dasmunsi to the vote of the House.

The amendment was put and negatived.

MR. DEPUTY-SPEAKER: I shall now put the motion moved by Shri Mulayam Singh Yadav to the vote of the House.

The question is:

> "That this House expresses its grave concern over the failure of the administration in ensuring the security of minority community in various parts of the country, specially in Gujarat, and urges upon the Government to take effective steps to restore confidence of the minority communities and to protect them."

SOME HON. MEMBERS: Sir, we want a division.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Let the Lobbies be cleared--.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Now, the Secretary-General to say about the automatic vote recording machine.

SECRETARY-GENERAL: Kind attention of the hon. Members is invited to the following points in the operation of the automatic vote recording system:-

1. Before the Division starts every hon. Member should occupy his or her own seat and operate the system from that seat only.
2. As may kindly be seen that the red bulbs at the display boards on either side of the hon. Speaker's Chair are already glowing. This means that the voting system has been activated.
3. For voting please press the following two buttons simultaneously immediately after sounding of the first gong, viz.,

    1. One red button in front of the Hon. Member on the head phone plate and also
    2. In any of the following buttons fixed on the top of the desk of seats: For Ayes – green colour; for Noes – red colour and for Abstain – yellow colour.

1. It is essential to keep both the buttons pressed till the second gong sound is heard and the red bulbs are off.
2. IMPORTANT : The hon. Members may please note that the vote will not be registered if both buttons are not kept pressed simultaneously till the sounding of the second gong.
3. Please do not press the amber button (P) during Division.

4. Hon. Members can actually "see" their vote on the display boards and on their desk unit.
5. In case vote is not registered, they may call for voting through slips.
6. Hon. Members who have not been allotted seat numbers may record votes of their choice through Division slips provided by the Division clerks. They may indicate their names, identity card number, constituency and State on the slips.

MR. DEPUTY-SPEAKER: The lobbies are cleared.

The question is:

> "That this House expresses its grave concern over the failure of the administration in ensuring the security of minority community in various parts of the country, specially in Gujarat, and urges upon the Government to take effective steps to restore confidence of the minority communities and to protect them."

The Lok Sabha divided:

Division No. 2 AYES 04.16 hrs.

Abdullakutty, Shri A.P.

Acharia, Shri Basu Deb

Ahamed, Shri E.

Aiyar, Shri Mani Shankar

Ajaya Kumar, Shri S.

Alva, Shrimati Margaret

*Ambareesha, Shri

Ambedkar, Shri Prakash Yashwant

Amir Alam, Shri

Athawale, Shri Ramdas

Baghel, Prof. S.P. Singh

Banatwalla, Shri G.M.

Bangarappa, Shri S.

Bansal, Shri Pawan Kumar

Barman, Shri Ranen

Basavanagoud, Shri Kolur

*corrected/recorded through slip.

Basavaraj, Shri G.S.

Basu, Shri Anil

Bauri, Shrimati Sandhya

Baxla, Shri Joachim

Begum Noor Bano

Bhadana, Shri Avtar Singh

Bhagora, Shri Tarachand

Bhatia, Shri R.L.

Bhaura, Shri Bhan Singh

Bhuria, Shri Kantilal

Bind, Shri Ram Rati

Botcha, Shri Satyanarayana

Brar, Shri J.S.

Bundela, Shri Sujan Singh

Chakraborty, Shri Ajoy

Chakraborty, Shri Swadesh

Chandra Shekhar, Shri

*corrected/recorded through slip.

Chatterjee, Shri Somnath

Chaturvedi, Shri Satyavrat

Chaudhary, Shri Ram Raghunath

Chennithala, Shri Ramesh

Choudhary, Col. (Retd.) Sona Ram

Choudhary, Shrimati Reena

Chowdhary, Shri Adhir

Chowdhary, Shrimati Santosh

Chowdhury, Shri Bikash

Choudhury, Shrimati Renuka

Das, Shri Nepal Chandra

Dasmunsi, Shri Priya Ranjan

Deepak Kumar, Shri

*Das, Shri Khagan

Dev, Shri Sontosh Mohan

Deve Gowda, Shri H.D.

Dome, Dr. Ram Chandra

*corrected/recorded through slip.

Dudi, Shri Rameshwar

Dullo, Shri Shamsher Singh

Eden, Shri George

Farook, Shri M.O.H.

Gamang, Shrimati Hema

Gamlin, Shri Jarbom

Gandhi, Shrimati Sonia

Gavit, Shri Manikrao Hodlya

George, Shri K. Francis

Ghatowar, Shri Paban Singh

*Gogoi, Shri Dip

Hamid, Shri Abdul

Handique, Shri Bijoy

Hansda, Shri Thomas

Hassan, Shri Moinul

Jaffer Sharief, Shri C.K.

Jaiswal, Shri Jawahar Lal

*corrected/recorded through slip.

Jaiswal, Shri Shriprakash

Jalappa, Shri R.L.

Jigajinagi, Shri Ramesh C.

Jos, Shri A.C.

Kamal Nath, Shri

Karunakaran, Shri K.

Kaur, Shrimati Preneet

Khan, Shri Abul Hasnat

Khan, Shri Sunil

Krishnadas, Shri N.N.

Kurup, Shri Suresh

Kyndiah, Shri P.R.

Lahiri, Shri Samik

Lepcha, Shri S.P.

Mahale, Shri Haribhau Shankar

Mahant, Dr. Charan Das

Mahato, Shri Bir Singh

*Makwana, Shri Savshibhai

*corrected/recorded through slip.

Mandal, Shri Sanat Kumar

Mandlik, Shri Sadashivrao Dadoba

*Mann, Shri Simranjit Singh

Meena, Shri Bherulal

*Mistry, Shri Madhusudan

Mohan, Shri P.

Mollah, Shri Hannan

Muniyappa, Shri K.H.

Muraleedharan, Shri K.

Murmu, Shri Rupchand

Muttemwar, Shri Vilas

Naik, Shri A. Venkatesh

Narah, Shrimati Ranee

Nishad, Capt. Jai Narain Prasad

Ola, Shri Sis Ram

Osmani, Shri A.F. Golam

Owaisi, Shri Sultan Salahuddin

*corrected/recorded through slip.

Pal, Shri Rupchand

Panda, Shri Prabodh

Paswan, Shri Ram Vilas

Paswan, Shri Ramchandra

Patel, Shri Atmaram Bhai

Patel, Shri Dahyabhai Vallabhbhai

*Patel, Shri Dharm Raj Singh

Patel, Shri Dinsha

Patel, Shri Tarachand Shivaji

Patil, Shri Amarsinh Vasantrao

Patil, Shri Bhaskarao

Patil, Shri Prakash V.

Patil, Shri R.S.

Patil, Shri Shivraj V.

Patil, Shri Uttamrao

Pilot, Shrimati Rama

*corrected/recorded through slip.

Pramanik, Prof. R.R.

Premajam, Prof. A.K.

Puglia, Shri Naresh

Radhakrishnan, Shri Varkala

Rajbangshi, Shri Madhab

Rajendran, Shri P.

Rajukhedi, Shri Gajendra Singh

Ramulu, Shri H.G.

Rashtrapal, Shri Pravin

Rau, Shrimati Prabha

Rawat, Shri Ramsagar

Reddy, Shri N. Janardhana

Reddy, Shri S. Jaipal

Reddy, Shri Y.S. Vivekananda

Riyan, Shri Baju Ban

Rizwan Zahir, Shri

Rongpi, Dr. Jayant

Roy, Shri Subodh

Roy Pradhan, Shri Amar

Saiduzzama, Shri

Sanadi, Prof. I.G.

Sangma, Shri Purno A.

Sangtam, Shri K.A.

Sar, Shri Nikhilananda

Saradgi, Shri Iqbal Ahmed

Saroj, Shri Tufani

Saroj, Shrimati Sushila

*Scindia, Shri Jyotiraditya M.

Sen, Shrimati Minati

Seth, Shri Lakshman

*Shahabuddin, Mohd.

Shakya, Shri Raghuraj Singh

Sharma, Capt. Satish

Shervani, Shri Saleem I.

*Shinde, Shri Sushil Kumar

Shukla, Shri Shyamacharan

Singh Deo, Shri K.P.

Singh, Kunwar Akhilesh

*corrected/recorded through slip.

Singh, Sardar Buta

Singh, Shri Balbir

Singh, Shri C.N.

Singh, Shri Chandra Bhushan

Singh, Shri Charanjit

Singh, Shri Khel Sai

Singh, Shri Lakshman

Singh, Shri Rajo

Singh, Shri Ram Prasad

Singh, Shri Rampal

Singh, Shri Th. Chaoba

Singh, Shri Tilakdhari Prasad

Singh, Shrimati Kanti

Singh, Shrimati Rajkumari Ratna

Singh, Shrimati Shyama

Sivakumar, Shri V.S.

Sorake, Shri Vinay Kumar

Subba, Shri M.K.

Sudarsana Natchiappan, Shri E.M.

Sudheeran, Shri V.M.

Suman, Shri Ramji Lal

Sunil Dutt, Shri

Suresh, Shri Kodikunnil

Tiwari, Shri Sunder lal

Topdar, Shri Tarit Baran

Vaghela, Shri Shankersinh

Verma, Shri Beni Prasad

Verma, Shri Rajesh

Verma, Shri Ram Murti Singh

Verma, Shri Ravi Prakash

Vyas, Dr. Girija

Wadiyar, Shri S.D.N.R.

Wangcha, Shri Rajkumar

Yadav, Shri Akhilesh

Yadav, Shri Balram Singh

Yadav, Shri Devendra Singh

Yadav, Shri Mulayam Singh

Zahedi, Shri Mahboob

NOES

A. Narendra, Shri

Acharya, Shri Prasanna

Adhi Sankar, Shri

Aditya Nath, yogi

Adsul, Shri Anandrao Vithoba

Advani, Shri L.K.

Ahmad, Shri Daud

Alvi, Shri Rashid

Ananth Kumar, Shri

Angle, Shri Ramakant

Argal, Shri Ashok

Arya, Dr. (Shrimati) Anita

Atkinson, Shri Denzil B.

Azad, Shri Kirti Jha

Baalu, Shri T.R.

Babban Rajbhar, Shri

'Bachda', Shri Bachi Singh Rawat

Badnore, Shri Vijayandra Pal

Bainda, Shri Ramchander

Bais, Shri Ramesh

Baitha, Shri Mahendra

Baliram, Dr.

Bandyopadhyay, Shri Sudip

Banerjee, Kumari Mamata

Banerjee, Shrimati Jayashree

Barwala, Shri Surendra Singh

Behera, Shri Padmanava

Bhagat, Prof. Dukha

Bhargava, Shri Girdhari Lal

Bishnoi, Shri Jaswant Singh

Biswas, Shri Ananda Mohan

Bose, Shrimati krishna

Chakravarty, Shrimati Bijoya

Chandel, Shri Suresh

Chaubey, Shri Lal Muni

Chaudhary, Shri Haribhai

Chaudhary, Shri Ram Tahal

Chaudhri, Shri Manibhai Ramjibhai

Chauhan, Shri Bal Krishna

Chauhan, Shri Nandkumar Singh

*Chauhan, Shri Shriram

*Chautala, Shri Ajay Singh

Chikhalia, Shrimati Bhavnaben Devrajbhai

Choudhary, Shri Nikhil Kumar

Choudhry, Shri Padam Sen

Chouhan, Shri Nihal Chand

Chouhan, Shri Shivraj Singh

D’Souza, Dr. (Shrimati) Beatrix

Dahal, Shri Bhim

Dattatreya, Shri Bandaru

Delkar, Shri Mohan S.

Devi, Shrimati Kailasho

Dhikale, Shri uttamrao

*Diler, Shri Kishan Lal

Diwathe, Shri Namdeo Harbaji

Durai, Shri M.

*Corrected/Recorded through slip.

Elangovan, Shri P.D.

Fernandes, Shri George

Gadhavi, Shri P.S.

Gandhi, Shri Dilipkumar Mansukhlal

Gandhi, Shrimati Maneka

Gangwar, Shri Santosh Kumar

Gautam, Shrimati Sheela

Gavit, Shri Ramdas Rupala

Gawali, Kumari Bhavana Pundlikrao

Geete, Shri Anant Gangaram

Gehlot, Shri Thawar Chand

Giluwa, Shri Laxman

Goel, Shri Vijay

Gohain, Shri Rajen

Gudhe, Shri Anant

Gupta, Prof. Chaman Lal

Haque, Mohammad Anwarul

Hussain, Shri Syed Shahnawaz

Indora, Dr. Sushil Kumar

Jadhav, Shri Suresh Ramrao

Jag Mohan, Shri

Jagathrakshakan, Dr. S.

Jain, Shri Pusp

Jaiswal, Dr. M.P.

Jaiswal, Shri Shankar Prasad

Jatiya, Dr. Satyanarayan

Javiya, Shri G.J.

Jayaseelan, Dr. A.D.K.

Jha, Shri Raghunath

Joshi, Dr. Murli Manohar

Joshi, Shri Manohar

Kamble, Shri Shivaji Vithalrao

Kannappan, Shri M.

Kanungo, Shri Trilochan

Kashyap, Shri Bali Ram

Kaswan, Shri Ram Singh

Katara, Shri Babubhai K.

Kataria, Shri Rattan Lal

Kathiria, Dr. Vallabhbhai

Katiyar, Shri Vinay

Kaushal, Shri Raghuvir Singh

Khabri, Shri Brijlal

Khaire, Shri Chandrakant

Khan, Shri Mansoor Ali

Khandelwal, Shri Vijay Kumar

Khandoker, Shri Akbor Ali

Khanduri, Maj. Gen. (Retd.) B.C.

Khanna, Shri Vinod

Khunte, Shri P.R.

Khurana, Shri Madan Lal

Kriplani, Shri Shrichand

Krishnamraju, Shri

Krishnan, Dr. C.

Krishnaswamy, Shri A.

Kulaste, Shri Faggan Singh

Kumar, Shri Arun

Kumar, Shri V. Dhananjaya

Kuppusami, Shri C.

Kusmaria, Dr. Ramkrishna

M. Master Mathan, Shri

Mahajan, Shri Y.G.

Mahajan, Shrimati Sumitra

Maharia, Shri Subhash

Mahtab, Shri Bhartruhari

Mahto, Shrimati Abha

Majhi, Shri Parsuram

Malhotra, Dr. Vijay Kumar

Malik, Shri Jagannath

Malikarjunappa, Shri G.

Mandal, Shri Brahma Nand

Mane, Shri Shivaji

Manjay Lal, Shri

Manjhi, Shri Ramjee

Mann, Shri Zora Singh

Maran, Shri Murasoli

Meena, Shrimati Jas Kaur

Meghwal, Shri Kailash

Mehta, Shrimati Jayawanti

Mishra, Shri Ram Nagina

Mishra, Shri Shyam Bihari

Mohale, Shri Punnu Lal

Mohite, Shri Subodh

Mookherjee, Shri Satya Brata

Moorthy, Shri A.K.

Muni Lall, Shri

Murmu, Shri Salkhan

Nagmani, Shri
Naik, Shri Ram

Naik, Shri Shripad Yasso

Nayak, Shri Ananta

Nitish Kumar, Shri

Oram, Shri Jual

Palanimanickam, Shri S.S.

Pandey, Shri Ravindra Kumar

Pandeya, Dr. Laxminarayan

Panja, Dr. Ranjit Kumar

Panja, Shri Ajit Kumar

Paranjpe, Shri Prakash

Parste, Shri Dalpat Singh

Pasi, Shri Suresh

Passi, Shri Raj Narain

Paswan, Dr. Sanjay

Paswan, Shri Sukdeo

Patasani, Dr. Prasanna Kumar

Patel, Dr. Ashok

Patel, Shri Chandresh

Patel, Shri Deepak

Patel, Shri Mansinh

Patel, Shri Prahlad Singh

Pathak, Shri Harin

Patil, Shri Annasaheb M.K.

Patil, Shri Balasaheb Vikhe

Patil (Yatnal), Shri Basangouda R.

Patil, Shri Danve Raosaheb

Patil, Shri Jaysingrao Gaikwad

Patnaik, Shrimati Kumudini

Patwa, Shri Sundar Lal

Pawaiya, Shri Jaibhan Singh

Ponnuswamy, Shri E.

Potai, Shri Sohan

Prabhu, Shri Suresh

Pradhan, Dr. Debendra

Pradhan, Shri Ashok

Prasad, Shri V. Sreenivasa

Radhakrishnan, Shri C.P.

Radhakrishnan, Shri Pon

Rai, Shri Nawal Kishore

Raja, Shri A.

Raje, Shrimati Vasundhara

Ram Sajivan, Shri

Ram, Shri Braj Mohan

Raman, Dr.

Ramachandran, Shri Gingee N.

Ramshakal, Shri

Rana, Shri Kashiram

Rana, Shri Raju

Rao, Shri Ch. Vidyasagar

Rao, Shri S.B.P.B.K. Satyanarayana

Rathwa, Shri Ramsinh

Ravi, Shri Sheesh Ram Singh

Rawat, Prof. Rasa Singh

Rawat, Shri Pradeep

Ray, Shri Bishnu Pada

Reddy, Shri A.P. Jithender

Renu Kumari, Shrimati

Rudy, Shri Rajiv Pratap

Sahu, Shri Anadi

Sahu, Shri Tarachand

Sai, Shri Vishnudeo

Samantray, Shri Prabhat

Sanghani, Shri Dileep

Sangtam, Shri K.A.

Sankeshwar, Shri Vijay

*Sankhwar, Shri Pyare Lal

Sarkar, Dr. Bikram

Sathi, Shri Harpal Singh

Sengupta, Dr. Nitish

*Corrected/Recorded through slip.

Sethi, Shri Arjun

Shah, Shri Manabendra

Shandil, Col. (Retd.) Dr. Dhani Ram

Shanmugam, Shri N.T.

Shanta Kumar, Shri

Shashi Kumar, Shri

Sikdar, Shri Tapan

Singh Deo, Shrimati Sangeeta

Singh, Capt. (Retd.) Inder

Singh, Ch. Tejveer

Singh, Dr. Ram Lakhan

Singh, Kunwar Sarv Raj

Singh, Shri Ajit

Singh, Shri Bahadur

Singh, Shri Brij Bhushan Sharan

Singh, Shri Chandra Pratap

Singh, Shri Chhattrapal

Singh, Shri Digvijay

Singh, Shri Jai Bhadra

Singh, Shri Maheshwar

Singh, Shri Prabhunath

Singh, Shri Radha Mohan

Singh, Shri Ramanand

Singh, Shri Ramjivan

Singh, Shri Rampal

Singh, Shri Vishvendra

Sinha, Shri Manoj

Sinha, Shri Yashwant

Solanki, Shri Bhupendrasinh

Somaiya, Shri Kirit

Srikantappa, Shri D.C.

Swain, Shri Kharabela

Swami, Shri Chinmayanand

Swami, Shri I.D.

Thakkar, Shrimati Jayaben B.

Thakur, Dr. C.P.

Thakur, Shri Chunni Lal Bhai

Thirunavukkarasar, Shri Su

Thomas, Shri P.C.

Tiwari, Shri Lal Bihari

Tomar, Dr. Ramesh Chand

Tripathee, Shri Ram Naresh

Tripathi, Shri Prakash Mani

Tripathy, Shri Braja, Kishore

Tur, Shri Tarlochan Singh

Uma Bharati, Kumari

Vaiko, Shri

Vajpayee, Shri Atal Bihari

Varma, Sh. Ratilal Kalidas

Vasava, Shri Mansukhbhai D.

Veerappa, Shri Ramchandra

Venkataswamy, Dr. N.

Venugopal, Shri D.

Verma, Dr. Sahib singh

Verma, Prof. Rita

Verma, Shri Rajesh

Vetriselvan, Shri V

Vijayan, Shri A.K.S.

Virendra Kumar, Shri

Wanaga, Shri Chintaman

Yadav, Dr. (Shrimati) Sudha

Yadav, Shri Bhal Chandra

Yadav, Shri Dinesh Chandra

Yadav, Shri Hukumdeo Narayan

Yadav, Shri Jagdambi Prasad

*Yadav, Shri Ramakant

Yadav, Shri Sharad

Zawma, Shri Vanlal

*Corrected/Recorded through slip.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Subject to correction, the result of the division is:

Ayes: 182

Noes: 276

The motion was negatived.

MR. DEPUTY-SPEAKER: The House stands adjourned to meet again on Thursday, the 2nd May, 2002 at 11 a.m.

04.25 hrs

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock

on Thursday, May 2, 2002/Vaisakha 12, 1924 (Saka).

*Ayes : Shri Ram Vilas Paswan, Shri Dharam Raj Singh Patel, Shri Simranjit Singh Mann, Mohd Shahabuddin, Shri Sushil Kumar Shinde, Shri Ambareesna, Shri Ram Rati Bind, Shri Khagan Das, Shri Jyotiraditya Madhavrao Scindia, Shri Dip Gogoi and Shri Madhusudan Mistry.

Corrected/recorded through slips.

*Noes : Shri Kishan Lal Diler, Shri Shriram Chauhan, Shri Ajay Singh Chautala, Shri Pyare lal Sankhwar, Shri Ramakant Yadav corrected/recorded through slips.

–

–

–

–

–